राजा रसालू

चयन और अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Itihas-Raja Rasalu (History--Raja Rasalu)
Cover Page picture : Raja Rasalu
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Punjab

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

इतिहास सीरीज़ 5

राजा रसालू 7

राजा रसालू का परिचय 9

राजा रसालू – 1 17

1–1 राजा रसालू कैसे पैदा हुआ 19

1–2 राजा रसालू दुनियाँ में कैसे आया 25

1–3 राजा रसालू के दोस्तों ने उसे कैसे छोड़ा 25

1–4 राजा रसालू ने राक्षसों को कैसे मारा 30

1–5 राजा रसालू जोगी कैसे बना 34

1–6 राजा रसालू की राजा सरकप के शहर की यात्रा 40

1–7 राजा रसालू ने राजा की सत्तर बेटियों को कैसे झुलाया 47

1–8 राजा रसालू ने राजा सरकप के साथ चौपड़ कैसे खेली 50

राजा रसालू – 2 66

2 पूरन भगत की कहानी या रसालू का जन्म 68

2–1 रसालू की शुरू की ज़िन्दगी 99

2–2 राजा रसालू गुजरात में 109

2–3 राजा रसालू का विद्रोह 115

2–4 शिकारी राजा – राजा रसालू और मीरशिकारी 132

2–5 राजा रसालू और हंस 151

2–6 राजा रसालू और राजा भोज 163

2–7 राजा रसालू और गंडगढ़ के राक्षस 173

2–8 तिल्यार नाग और सुन्दर काग 203

2–9 राजा रसालू और राजा सिरीकप 227

2–10 कोकिला का धोखा 251

2–11 रानी कोकिला की किस्मत 276

2–12 राजा रसालू की मौत 291

परिशिष्ट 308
राजा रसालू – **3** 319
3–1 राजा रसालू 321

इतिहास सीरीज़

प्रारम्भ में हमने एक सीरीज़ प्रारम्भ की थी "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिसके अन्दर हमने संसार के कई देशों की लोक कथाऐं और दंत कथाऐं प्रकाशित की थीं। ऐसा करते समय देखा गया कि एक तरह की कहानी कई देशों में कही जा रही है तो एक और सीरीज़ बनायी गयी "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कहानियॉ शामिल की गयी थीं जिनकी तरह की कहानियॉ और दूसरे देशों में भी उपलब्ध थीं। इस सीरीज़ में **20** से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। इसके बाद लोक कथाओं की कुछ क्लासिक पुस्तकों का भी अनुवाद किया गया। इनकी संख्या भी **30** से ऊपर पहुॅच गयी।

अब यह एक नयी सीरीज़ प्रारम्भ की जा रही है "इतिहास" नाम की सीरीज़। यह बहुत ही मजेदार सीरीज़ है। इस पुस्तक में दी गयी कहानियॉ लोक कथाऐं नहीं हैं और न ही कहानियॉ हैं बल्कि सच्ची घटनाऐं हैं। इतिहास हमारे उस आधुनिक जीवन शैली की नींव डालता है जिस पर आज हम खड़े हुए हैं और जिस पर हमारा भविष्य बनता है। इतिहास हमारी पृथ्वी का भूगोल बनाता है। इतिहास हमारा समाज बनाता है। इतिहास हमारी भाषा बनाता है। इतिहास हमारी सभ्यता और संस्कृति बनाता है।

पर यह पुस्तकें इतिहास की भी नहीं है क्योंकि इसमें ऐसी एतिहासिक घटनाऐं भी नहीं दी गयीं हैं जो आपको इतिहास की पुस्तकों में मिलें। यहॉ केवल वही विषय सामग्री दी गयी है जो इधर उधर मिलनी कठिन है या नहीं भी मिल सकती है।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब पुस्तकें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो इसलिये ये कहानियॉ यहॉ सरल बोलचाल की हिन्दी भाषा में लिखी गयी है। कहीं कहीं विदेशी विषय सामग्री भी है तो उनमें उनके चरित्रों और स्थानों के नाम सही उच्चारण जानने के लिये अंग्रेजी में फुटनोट्स में दिये गये हैं। इसके अलावा भी बहुत सारे शब्द भारतीयों के लिये नये होंगे वे भी चित्रों द्वारा समझाये गये हैं।

ये सब पुस्तकें "इतिहास सीरीज़" के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में आप सबके ज्ञान के घेरे को बढ़ायेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

राजा रसालू

इतिहास सीरीज़ की पहली पुस्तक थी – “तेरह महीने वाला अकेला देश”। इस सीरीज़ की दूसरी पुस्तक थी “हमारे महान लोग”। इस संग्रह में अपने पुराने और नये समय में हुए बड़े बड़े जाने पहचाने लोगों के बारे में उनकी अपनी ज़िन्दगी में हुई कुछ ऐसी घटनाऐं संकलित की गयी हैं जो बहुत सारे लोग नहीं जानते और जो आसानी से नहीं मिलतीं। जिन्होंने शायद उनको बड़ा आदमी बनने में भी सहायता की जिन्होंने आज उन्हें बड़ा आदमी बनाया। उसके बाद इस सीरीज़ में और भी कई पुस्तकें लिखी गयीं जिनकी सूची इस पुस्तक के अन्त में दी हुई है।

इतिहास सीरीज़ की यह पुस्तक राजा रसालू के बारे में है जो पंजाब का एक मशहूर चरित्र है। इसके विषय में एक स्थान पर कम मिलता है इसलिये इस पुस्तक को प्रकाशित करने का मुख्य उद्देश्य है उसके विषय में बिखरी हुई जानकारी को एक स्थान पर इकट्ठा कर के प्रस्तुत करना।

इस पुस्तक के पहले भाग में “राजा रसालू–**1**” की लोक कथाऐं स्टील की लिखी हुई पुस्तक[1] से ली गयी हैं। इस पुस्तक के दूसरे भाग “राजा रसालू–**2**” में चार्ल्स स्विनरटन की लिखी कुछ और हुई कुछ और लोक कथाऐं उनकी “पंजाब की प्रेम कथाऐं”[2] पुस्तक से ली गयी हैं। “राजा रसालू–**3**” में उनके विषय में कुछ और सामग्री दी हुई है जो दूसरी पुस्तकों और इन्टरनैट आदि से ली गयी है।

इस प्रकार ये कुछ दंत कथाऐं हैं जो राजा रसालू के विषय में पंजाब में बहुत प्रचलित हैं। ये कथाऐं बच्चों के ज्ञान की सीमा को बढ़ायेंगी और उनको पंजाब के इस महान चरित्र के व्यक्तिगत जीवन के बारे में जानने और समझने में सहायता करेंगी। आशा है कि ये दंत कहानियॉ बच्चों को मज़ेदार लगेंगीं और उनकी जानकारी बढ़ायेंगी।

---

[1] “Tales of the Punjab”, by Flora Annie Steel. London, Macmillan & Co Limited. 1894. 43 Tales.
This book is available in English at the Web Site :
http://digital.library.upenn.edu/women/steel/punjab/punjab-1.html
Available in HIndi from hindifolktales@gmail.com

[2] “Romantic Tales Fron the Panjab”. By Charles Swynnerton. 1903. 422 pages.
Available in HIndi from hindifolktales@gmail.com

राजा रसालू का परिचय[3]

राजा रसालू की कहानी कई जगह कई लेखकों द्वारा लिखी हुई पायी जाती है। इस पुस्तक में जहाँ जहाँ रसालू के विषय में जो भी कुछ लिखा मिला है उस सभी को एक जगह पर एकत्रित कर लिया गया है। इसलिये इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य है उसके विषय में जो कुछ भी कहीं भी लिखा हुआ मिला है उसे एक साथ रखना।

इस पुस्तक में राजा रसालू के विषय में बहुत कुछ दिया गया है जैसे राजा रसालू कौन था। उसने अपने जीवन में क्या क्या किया। वह कैसे मरा आदि आदि।

राजा रसालू की कथा को हम ऐसे ही खत्म नहीं कर सकते जब तक कि हम उसके खुद के बारे में कुछ कह न लें क्योंकि इसके साथ कई दंत कथाऐं और जुड़ी हुई हैं।

चार्ल्स का कहना है कि "सबसे पहली बार राजा रसालू की कहानी पश्चिम के लोगों को जनरल एबौट[4] के द्वारा पता चली जो 19वीं शताब्दी के मध्य में भारत सरकार में काम करते थे। सन् 1854 में पहली बार उन्होंने उसके कारनामों का एक भाग कलकत्ता में प्रकाशित किया।[5]

---

[3] This description is based on the "Introduction" part of the book written by Charles Swynnerton "Romantic Tales From the Panjab". 1883. 422 pages.

[4] General Abbott

[5] "Journal of the Asiatic Society". Bengal. 1854. pp 123-163.

दूसरा प्रकाशन उत्तरी सिन्धु नदी के किनारे पर बसे "गाज़ी" से **1883** में मेरे द्वारा प्रकाशित किया गया जिसे मैंने सीधे ज़बानी सुन कर लिखा था।[6]

इसका अगला प्रकाशन उसी साल, यानी **1883** में, किसी और ने बम्बई में प्रकाशित किया। यह उसका सबसे अलग वर्णन था।

1884 के आरम्भ में राजा रसालू के विषय में मैंने एक पुस्तक प्रकाशित की "पंजाब के हीरो के कारनामे, राजा रसालू" जिसमें मैंने राजा रसालू के विषय में उनके ग्यारह कारनामे लिखे थे[7] जिनमें से कुछ मेरे गाज़ी में लिखे हुए लेख से लिये गये थे पर अधिकतर दो कथा गाने वालों से सुन कर लिखे गये थे – शरफ और जूमा।

कुछ साल बाद एक और कथा गाने वाला मिल गया था जिसका नाम शेर था जो हज़ारा ज़िले के अबौटाबाद का रहने वाला था। इसके द्वारा सुनायी गयी कहानियॉ मेरे इस चौथे संग्रह का आधार बनीं। अब यह मेरा संग्रह राजा रसालू की कहानियों के विषय में अन्तिम संग्रह है।[8] ये चार रूप जो कई स्थानों पर एक दूसरे से मेल नहीं खाते पर दूसरे स्थानों पर एक दूसरे को पूरा करते हैं।

---

[6] Published by Charles Swynnerton in "Folklore Journal" of May 1883.

[7] "Adventures of the Panjab Hero, Raja Rasalu". Newman. 1884. Available at : https://archive.org/details/in.ernet.dli.2015.180910/page/n6/mode/1up

[8] "Romantic Tales Fron the Panjab". By Charles Swynnerton. 1903. 422 pages. Available at : https://archive.org/details/cu31924023641230/page/n16/mode/1up

जो लोग लोक कथाओं के तुलनात्मक अध्ययन में थोड़ी सी भी रुचि रखते हैं उनके लिये राजा रसालू की कहानियाँ बहुत पुरानी कहानियाँ हैं।

इस बीच फ्लोरा ऐनी स्टील ने अपनी पुस्तक "पंजाब की लोक कथाऐं" प्रकाशित की जिसमें उन्होंने उसके बारे में आठ कहानियाँ दी हैं। ये सब कहानियाँ उन्होंने **1894** में प्रकाशित की थीं।[9] उसके बाद ही चार्ल्स स्विनरटन की यह पुस्तक **1903** में प्रकाशित हुई।[10]

विक्रमाजीत ने **544** एडी में कोरूर की लड़ाई में म्लेच्छों को हरा कर अपना राज्य स्थापित किया। इनके राज्य की सीमा पश्चिम में काबुल तक जाती थी। राजा शालिवाहन ने **113** साल बाद विक्रमाजीत को जीत कर अपना राज्य स्थापित किया। इन तारीखों के अनुसार शालिवाहन ने अपना राज्य **700** एडी में स्थापित किया और राजा रसालू उनका बेटा था। यह वही समय था जब मुसलमानों ने मध्य एशिया में अपना धर्म फैलाना शुरू किया।

राजा रसालू सियालकोट का एक राजपूत था और सियालकोट जैसा कि इसके नाम से पता चलता है स्याल लोगों का गढ़ था। यह स्याल जाति वहाँ अभी तक मौजूद है और अपने आपको राजा रसालू की सन्तान मानती है।

---

[9] "Tales of the Punjab", by Flora Annie Steel. London, Macmillan & Co Limited. 1894. 43 Tales. This book is available in English at the Web Site : http://digital.library.upenn.edu/women/steel/punjab/punjab-1.html". Its Hindi translation is available from hindifolktales@gmail.com as an e-Book.

[10] "Romantic Tales From the Panjab". By Charles Swynnerton. Westminster, Archibald Constable. 1903. 422 p. 7 Tales. Its Hindi translation is available from hindifolktales@gmail.com as an e-Book

इनकी पुरानी राजधानी काशमीर में जम्मू की सीमा के पास थी। वहाँ के ब्राह्मण लोगों का कहना है कि उसे महाभारत के मशहूर राजा "साल" या "शल्य" ने बसाया था जो स्याल जाति के मूल पूर्वज थे। यह भी कहा जाता है कि रसालू शब्द जो "रसाल" या "रसालुआ" रूप में भी पाया जाता है न तो किसी व्यक्ति का नाम है और न ही किसी के लिये रखा जाने वाला नाम है बल्कि इसका मतलब है "स्यालों का राजकुमार"।

अगर ऐसा है तो यह नाम गान्धार के काबुल के किसी राजा का नाम भी हो सकता हो जो मुसलमानों के हमलों से पहले वहाँ रहता हो जैसे कि राजा कल्लर जो करीब **850** एडी में था और स्यालपतिदेव के नाम से जाना जाता था।

इस नाम से साफ पता चलता है कि स्यालपतिदेव कोई रखा हुआ नाम नहीं था। यह तो किसी साम्राज्य का टाइटिल है जिसका मतलब होता है "स्यालों का सरदार"।

अगर राजा रसालू शब्द का यह मतलब है तो राजा होदी के नाम का भी यही मतलब निकाला जा सकता है। पेशावर की घाटी में यह राजकुमार होदी के नाम से मशहूर था। यह शब्द जलालाबाद के आसपास "ऊदे" के रूप में पाया जाता है और ऊदे ऊदेनगर का एक प्रान्त है जिसे यूनानी लोग "ऊदियाना" कह कर पुकारते थे जिसे काबुल नदी के पानी से सींचा जाता था।

इससे यह साबित होता है कि दोनों ही नाम किसी व्यक्ति के अपने नाम नहीं हैं बल्कि साम्राज्य के टाइटिल हैं। हालॅकि इनका यह विवरण ऐतिहासिक उद्देश्य की दृष्टि से बिल्कुल बेकार है पर फिर भी ध्यान देने योग्य है।

राजा रसालू की कहानियों के लिखते समय चार्ल्स स्विनरटन को एक बात और समझ में आयी जो उनके मस्तिष्क में लाहौर के अजायबघर देखने से आयी थी। तभी उन्होंने अपनी "राजा रसालू के कारनामे" प्रकाशित की थी जिसका एक कारनामा झेलम शहर से भी सम्बन्धित है।

इस कथा के अनुसार वहीं पास में ही एक जगह है जहॉ बहुत सारे राक्षस पत्थर में बदल दिये गये थे। झेलम पर उन्होंने इन पत्थर की मूर्तियों को या उनसे सम्बन्धित किसी निशान को काफी ढूॅढा पर उसमें उन्हें कोई सफलता नहीं मिली। क्योंकि पता लगाने पर यही पता चला कि ऐसी कोई जगह कभी न तो थी और न कभी देखी गयी थी।

पर उनका कहना है कि "जैसे ही मैं लाहौर के अजायबघर में घुसा तो मैंने वहॉ पुरानी मूर्तियॉ देखीं और तभी हाल में ही वहॉ लाया गया एक लिंग रूपी पत्थर देखा जो भगवान शिव का प्रतीक था और जिस पर सबसे ऊपर एक आदमी का सिर बना था।

मैंने अजायबघर की देखभाल करने वाले से पूछा तो उसने बताया कि उसे अभी झेलम के पास से लाया गया है। कुछ

इन्जीनियरों को जब वे एक पुल की नींव खोद रहे थे तब वह वहॉ उन्हें जमीन में कई फीट नीचे मिला है।”

यह राक्षस जिसे पत्थर में बदल दिया गया था ब्राह्मणों की उन मूर्तियों में से हो सकता था जिन हिन्दुओं मुसलमानों के पहले पहले हमलों के समय मुसलमान पूरी तरह से नष्ट नहीं कर सके उन हिन्दुओं की मूर्तियों को उन्होंने जमीन में गाड़ दिया।[11] यह मूर्ति वहॉ **1000** साल से भी पहले की दबी हुई थी।

राजा रसालू की कहानियॉ रानी लूना के यौवन के दिनों से आरम्भ होती हैं जब वह अपने सौतेले बेटे पूरन से मिलती है।[12] पूरन बारह वर्ष का एक सुन्दर नौजवान लड़का था और उसकी सौतेली मॉ लूना उससे कुछ ही बड़ी सुन्दर स्त्री थी।

बारह वर्ष का वह सुन्दर नौजवान लड़का अपने बारह वर्ष अलग महल में रह कर पूरे कर के जब बाहर निकला[13] तो वह सीधा पिता के दरबार में गया जहॉ पिता ने उससे उसकी अपनी मॉ और अपनी सौतेली मॉ दोनों मॉओं से मिलने जाने के लिये कहा।

---

[11] Here the author Charles Swinnerton writes, I feel embarrassed to quote this here in Hindi that is why I am quoting it here as a footnote, “This interesting relic, this “giant turned into stone,” must have been one of the many Brahmanic phallic idols which had fallen before the zeal of the first Muhammadan invaders who, as they could not utterly destroy, used sometimes to bury the images of the uncircumcised dogs of India, a fact of which I have had ocular testimony on more than one occasion.

[12] This story is exactly like its counterpart story of Phaedra and Hippolytus, in which hero declines the offer of his step-mother.

[13] The incident of living in a separate palace forms a most striking feature. Puran passes into this palace and there remains for years, twelve in number, corresponding to the number of the months in the year, and of the signs of the Zodiac, and then is brought back to the earth again by an exercise of supernatural power.

वह पहले अपनी सौतेली माँ से मिलने गया। वह उसे देखते ही उससे प्रेम करने लगी पर पूरन ने उसके प्रेम को अनुचित कह कर ठुकरा दिया जिससे नाराज हो कर रानी लूना ने राजा से शिकायत कर के उसे जंगल में फिंकवा दिया।

बारह वर्ष तक वह जंगल में हाथ पैर कटे पड़ा रहा कि एक दिन गुरू गोरखनाथ जी ने आ कर उसे ठीक किया और उसे अपना शिष्य बना लिया।

शिष्य बना कर इन्होंने उसे उसके पिता के पास भेजा। पिता ने उसे पहुँचा हुआ जान कर उससे एक पुत्र की प्रार्थना की। उसने राजा को चावल का एक दाना दिया और उसे अपनी पत्नी लूना को खिलाने के लिये कहा जिससे उसे सन्तान हो जायेगी।

इस प्रकार रसालू का जन्म हुआ।

राजा रसालू – 1

इस पुस्तक के पहले भाग में राजा रसालू की सारी कहानियाँ फ्लोरा ऐनी स्टील की पुस्तक में से ली गयी हैं। ये गिनती में कुल आठ हैं और ये सभी यहाँ दी हुई हैं। हालाँकि सबसे पहले ये कहानियाँ चार्ल्स स्विनरटन ने **1884** में “पंजाब के हीरो के कारनामे ः राजा रसालू” में लिखी थीं पर ये कहानियाँ फ्लोरा ऐनी स्टील ने **1894** में प्रकाशित की थीं।[14]

[14] “Tales of the Punjab”, by Flora Annie Steel. London, Macmillan & Co Limited. 1894. 43 Tales. This book is available in English at the Web Site : http://digital.library.upenn.edu/women/steel/punjab/punjab-1.html”. Its Hindi translation is available from hindifolktales@gmail.com as an e-Book.

1-1 राजा रसालू कैसे पैदा हुआ[15]

एक बार की बात है कि एक बहुत बड़ा राजा था जिसका नाम था राजा सालबाहन[16]। उसके दो पत्नियाँ थीं। उसकी बड़ी वाली पत्नी नाम था अछरा और उसके एक बहुत सुन्दर बेटा था जिसका नाम था पूरन।[17]

उसकी छोटी रानी का नाम था लोना। हालाँकि वह बहुत रोयी कई मन्दिरों में गयी बहुत प्रार्थनाऐं कीं पर उसको खुशी देने वाला कोई बच्चा नहीं हुआ।

इसलिये एक बुरी और धोखेबाज स्त्री होने के नाते उसके दिल में जलन और गुस्सा घर कर गया। उसने राजा सालबाहन के दिमाग को उसके बच्चे छोटे पूरन के खिलाफ भड़काने वाले विचार भर दिये।

और जब छोटा पूरन बड़ा होने वाला था तो उसका पिता तो उससे बहुत बुरी तरीके से जलने लगा। एक दिन उसे इस गुस्से का दौरा सा पड़ा तो उसने उसके हाथ पैर काट डालने का हुक्म दे दिया।

---

[15] How Raja Rasalu Was Born. (Tale No 32 of the Book)

[16] King Saalbaahan

[17] Elder Queen Achhra had a son named Pooran

राजा सालबाहन अपनी इस बेरहमी से भी सन्तुष्ट नहीं था तो उसने उसे एक कुॅए में फेंक देने का हुक्म दे दिया।[18] खैर फिर भी पूरन मरा नहीं जैसा कि उसके पिता ने उसके लिये चाहा था या आशा की थी क्योंकि भगवान ने उस भोलेभाले बच्चे की रक्षा की।

वह कुॅए की तली में आश्चर्यजनक रूप से ज़िन्दा रहा जब तक गुरू गोरखनाथ[19] जी उधर की तरफ आये। उन्होंने देखा कि पूरन ज़िन्दा है तो उन्होंने न केवल उस भयानक जेल से उसको निकाला बल्कि अपने जादू के ज़ोर से उसके हाथ पैर भी फिर से वापस ला दिये।

इस वरदान के लिये कृतज्ञ हो कर पूरन फ़कीर बन गया और अपने कानों में पवित्र कुंडल पहन कर गुरू गोरखनाथ जी का शिष्य बन कर घूमने लगा। तब से उसका नाम पूरन भगत पड़ गया।

पर जैसे जैसे समय गुजरता गया तो उसका मन अपनी मॉ को देखने के लिये करने लगा सो गुरू गोरखनाथ ने उसको वहॉ जाने की इजाज़त दे दी।

वह अपने घर की तरफ चल पड़ा और एक बहुत बड़ी दीवार से घिरे हुए बागीचे में आ कर ठहर गया जहॉ वह पहले कभी अपने बचपन में खेला करता था।

---

[18] This well can still be seen on the road between Sialkoat and Kallowaal Road.

[19] Guru Gorakhnath Ji was the Brahmanical opponent of reformers of 15th century and possessed most miraculous powers, especially over snakes. By any computation Puran Bhagat must have lived before him. Puran Bhagat was the brother of Raja Rasalu. Their many stories are popular like Vikramaditya and Bhartrihari, the saint and philosopher in Southern region

वहाँ आ कर उसने देखा कि उस बागीचे की तो कोई ठीक से देखभाल ही नहीं कर रहा है। वह उजाड़ और बंजर सा पड़ा था। उसमें पानी आने जाने वाले रास्ते टूटे हुए थे और सूखे पड़े थे। उसके पेड़ों की पत्तियाँ सब झड़ चुकी थीं। यह सब देख कर वह बहुत दुखी हो गया।

उसने वहाँ की सूखी जमीन पर अपने पीने का पानी छिड़का और रात भर उसके हरे हो जाने की प्रार्थना की। लो जैसे ही उसने प्रार्थना शुरू की कि पेड़ों में से पत्ते निकलने लगे। घास दिखायी देने लगी फूल खिल गये और फिर वह बागीचा वैसा ही हो गया जैसा पहले कभी था।

इस आश्चर्यजनक घटना की खबर तो बिजली की तरह से सारे शहर में फैल गयी। बहुत सारे लोग ऐसे पवित्र संत को देखने के लिये वहाँ आये जिसने यह आश्चर्यजनक काम किया था।

राजा सालबाहन और उनकी दोनों रानियों ने भी महल में यह खबर सुनी तो वे भी उनको अपनी आँखों से देखने के लिये वहाँ गये।

पर पूरन भगत की माँ रानी अछरा अपने प्यारे बेटे के लिये इतना रोयी थी कि आँसुओं ने उसको अन्धा सा कर दिया था। वह भी वहाँ गयी तो पर उसको देखने के लिये नहीं बल्कि उस आश्चर्यजनक फ़कीर से अपनी आँखों की रोशनी माँगने के लिये।

इसलिये बिना यह जाने कि वह किससे यह वरदान माँग रही थी वह पूरन भगत के पैरों पर गिर पड़ी और उससे अपनी आँखों की रोशनी की वापसी की भीख माँगने लगी।

और लो इससे पहले कि वह अपनी आँखों की रोशनी माँगती उसकी आँखों की रोशनी तो वापस आ चुकी थी और वह देखने लग गयी थी।

धोखेबाज रानी लोना जो इन सारे सालों से केवल एक बेटा ही माँग रही थी और वह उसको नहीं मिला था, जब उसने इस ताकतवर फ़कीर को देखा तो यह भी उस फ़कीर को पैरों में गिर पड़ी और उसने उससे राजा सालबाहन को ख़ुश करने के लिये एक वारिस माँगा।

तब पूरन भगत बोला उसकी आवाज गम्भीर थी — "राजा सालबाहन के तो पहले से ही एक बेटा है। वह कहाँ है? अगर तुम्हें भगवान से अपनी इच्छा पूरी करानी है तो सच बोलना रानी लोना तुमने उसके साथ क्या किया।"

तब स्त्री की बेटा पाने की जो पुरानी इच्छा थी उसने उसके घमंड को जीत लिया और हालाँकि उसका पति फ़कीर के सामने उसके पास ही खड़ा था फिर भी उसने सच बोल दिया कि कैसे उसने उसके पिता को धोखा दिया और बेटे को मरवा दिया।

सुन कर पूरन भगत खड़ा हो गया। उसने अपने हाथ उसकी तरफ बढ़ा दिये और मुस्कुरा कर धीमे से बोला — "यह ठीक है

रानी लोना यह ठीक है। देखो मैं राजकुमार पूरन हूँ जिसको तुमने मार दिया था पर भगवान ने उसको ज़िन्दा रखा।

मेरे पास तुम्हारे लिये एक सन्देश है। तुम्हारी गलती माफ की जाती है पर भूली नहीं जा सकती। तुम्हारे एक बेटा जरूर होगा जो बहुत अच्छा और बहादुर होगा। लेकिन वह भी तुम्हें वैसे ही रुलायेगा जैसे तुमने मेरी माँ को रुलाया है।

लो ये चावल के दाने लो इन्हें खा लेना और तुम्हारे एक बेटा हो जायेगा पर वह बेटा तुम्हारा बेटा नहीं होगा। क्योंकि जैसे मैं अपनी माँ की आँखों से दूर रहा ऐसे ही वह भी तुम्हारी आँखों से दूर रहेगा। अब शान्ति से जाओ तुम्हारी गलती माफ की जाती है पर भुलायी नहीं जा सकती।"

रानी लोना अपने महल वापस आ गयी और जब बच्चे के जन्म का समय आया तो उसने तीन जोगियों से अपने बच्चे की किस्मत के बारे में पूछा जो उसके दरवाजे पर भीख माँगने आये थे।

उनमें से सबसे छोटे जोगी ने कहा — "वह एक लड़का होगा और वह एक बहुत बड़ा आदमी बनेगा। पर **12** साल तक तुम उसका मुँह मत देखना। क्योंकि अगर तुमने या उसके पिता ने **12** साल से पहले उसका चेहरा देखा तो तुम यकीनन मर जाओगी।

तुमको यह करना चाहिये कि जैसे ही बच्चा पैदा हो उसको नीचे तहखाने में भेज देना चाहिये और **12** साल तक उसको सूरज की रोशनी भी नहीं देखने देनी चाहिये।

जब **12** साल खत्म हो जायें तब तुम उसको बाहर ला सकती हो। फिर उसे नदी में नहलाना और नये कपड़े पहना कर अपने सामने मॅगवाना। उसका नाम राजा रसालू होगा और उसकी प्रसिद्धि दूर दूर तक फैलेगी।"

सो जब राजकुमार पैदा हुआ तो उसको उसकी आयाओं और नौकरों आदि के साथ नीचे जमीन में बने तहखाने में भेज दिया गया। जो आराम एक राजकुमार की हैसियत से उसको मिलते वे सब उसको वहीं दे दिये गये।

उसके साथ साथ उसके लिये एक बच्चा घोड़ा भी भेज दिया गया जो उसी दिन पैदा हुआ था। एक तलवार एक भाला और एक ढाल भी उस दिन के लिये भेज दी गयी जब राजा रसालू दुनियॉ में राजा बन कर आयेगा।

सो वह बच्चा वही पलता रहा बड़ा होता रहा अपने तोते से बात करता रहा। उसकी आयाऐं और नौकर उसको वह सब सिखाते रहे जो एक राजकुमार को जानने की जरूरत थी।

1–2 राजा रसालू दुनियाँ में कैसे आया[20]

सो रसालू दुनियाँ से दूर सूरज की रोशनी से दूर महल के तहखाने में रहा। इस तरह रहते रहते उसको वहाँ 11 साल बीत गये। वह बड़ा हो रहा था लम्बा हो रहा था ताकतवर हो रहा था। लेकिन केवल अपने घोड़े के साथ खेल कर और अपने तोते से बात कर के।

लेकिन जब उसका 12वाँ साल शुरू हुआ तो उसके दिल में अपने माहौल को बदलने की इच्छा जागी। उसकी इच्छा हुई कि वह ज़िन्दगी की आवाजें सुने जो उसके पास महल की इस जेल में बाहर से आती रहती थीं।

एक दिन उसने सोचा "मुझे बाहर जा कर देखना चाहिये कि ये कहाँ से आती हैं और यह आवाजें कौन करता है। जब उसने अपनी आया से इस बारे में बात की तो उसकी आया ने उससे कहा कि उसको अभी एक साल और रुकना चाहिये। तो वह बहुत ज़ोर से हँस पड़ा और बोला — "मैं किसी भी आदमी के लिये अब इससे ज़्यादा यहाँ बन्द नहीं रह सकता।"

सो उसने अपने घोड़े भौंर ईराकी[21] पर जीन कसी। खुद उसने अपना चमकता हुआ जिरहबख्तर पहना और दुनियाँ देखने के लिये

[20] How Raja Rasalu Went Out in the World   (Tale No 33 of the Book)

[21] Bhaunr Iraqi was the name of the horse kept with Rasalu. But it may be "Bhaunri Raakhee" which means "kept underground", because Iraqi means Arabian and it might be an Arabian horse.

बाहर निकल पड़ा। पर उसने अपनी आया की बात मानी जो वह अक्सर उससे कहा करती थी।

सो जब वह नदी के पास आया तो वह अपने घोड़े से उतरा उसमें नहाया धोया नये कपड़े पहने। अपने नये कपड़े पहन कर वह अपने सुन्दर चेहरे और बहादुर दिल के साथ अपने पिता के राज्य में आ पहुँचा।

वहाँ जा कर वह एक कुँए के पास कुछ सुस्ताने के लिये बैठ गया। वहीं कुछ स्त्रियाँ अपने अपने मिट्टी के घड़ों में पानी भर रही थीं। जब वे उसके पास से जा रही थीं तो उनके भरे हुए घड़े उनके सिरों पर ठीक से रखे हुए थे।

यह देख कर नौजवान राजकुमार ने उन सब घड़ों पर पत्थर मारे और सबको तोड़ दिया। उनके घड़े टूट गये उनका पानी बिखर गया और स्त्रियाँ सारी की सारी भीग गयीं।

रोती चिल्लाती वे महल पहुँचीं और राजा से शिकायत की कि कोई ताकतवर राजकुमार चमकता जिरहबख्तर पहने तोते को अपनी कलाई पर बिठाये और साथ में एक घोड़ा लिये कुँए के पास बैठा है और उसने उनके घड़े फोड़ दिये हैं।

जैसे ही राजा ने यह सुना तो उसे पता चल गया कि वह जरूर ही राजकुमार रसालू होगा जो **12** साल से पहले ही बाहर निकल गया। जोगी की बात को याद करते हुए कि अगर उसने उसको **12** साल से पहले देखा तो वह मर जायेगा उसकी इतनी भी हिम्मत नहीं

हुई कि वह अपने लोगों को भेज कर उसे पकड़वा ले क्योंकि उसको पकड़ कर फैसले के लिये तो वे उसी के पास ले कर आयेंगे।

इसलिये उसने उन स्त्रियों को समझा बुझा कर वापस भेज दिया। उनको लोहे और पीतल के घड़े इस्तेमाल करने की सलाह दी। जिस किसी के पास ऐसे घड़े नहीं थे उसको वैसे घड़े सरकारी खजाने से दिलवा दिये गये।

पर जब राजकुमार रसालू ने स्त्रियों को लोहे और पीतल के घड़े ले कर कुँए पर वापस आते देखा तो वह बहुत ज़ोर से हँस पड़ा। उसने अपने तेज़ तीर और कमान निकाली और उन तेज़ तीरों से उनके घड़ों में छेद कर दिये मानो वे मिट्टी के बने हों।

उसके बाद भी राजा ने उसे नहीं बुलाया तो वह अपने घोड़े पर चढ़ा और अपनी जवानी और ताकत के घमंड में महल की तरफ चल दिया। वह दरबार में घुसा तो उसने वहाँ अपने पिता को काँपता हुआ बैठा पाया।

उसने इसे पूरी इज़्ज़त के साथ झुक कर नमस्ते की पर राजा सालबाहन ने उसको देखने से पहले ही उससे अपना मुँह फेर लिया और जवाब में एक शब्द भी नहीं कहा।

तब राजकुमार रसालू ने डाँटने के अन्दाज में उससे कहा जो सारे दरबार में गूँज गया —

मैं तो यहाँ आपको नमस्ते करने आया था न कि कोई नुकसान पहुँचाने
मैंने ऐसा क्या किया है जिसकी वजह से आपने मुझसे मुँह फेर लिया

राज्य और दंड की कोई ताकत नहीं जो मुझे ललचा सकते
मैं तो इससे भी ज़्यादा अच्छा इनाम पाना चाहता हूॅ

यह कह कर वह अपने दिल में कड़वाहट और गुस्सा लिये दरबार से बाहर चला गया। पर जैसे ही वह महल की खिड़कियों के नीचे से गुजरा तो उसने अपनी मॉ के रोने की आवाज सुनी।

इस आवाज ने उसका दिल पिघला दिया। इससे उसका गुस्सा तो चला गया पर उसके दिल में एक अकेलापन छा गया क्योंकि उसके माता और पिता दोनों ही ने उसे छोड़ दिया था। वह बड़े दुख से रो पड़ा —

ओ महलों में रहने वाली तू मुझे रो रो कर मत सुना
अगर तू मेरी माता है तो मुझे कोई अच्छी सलाह दे
क्योंकि मेरी ज़िन्दगी तो अब शुरू होने वाली है

और रानी लोना ने उसको रोते रोते जवाब दिया —
मॉ तुझे यह सलाह देती है बेटे और इस सलाह को तू हमेशा अपने साथ रखना
तू चारों तरफ राज करेगा पर तू अपने आपको ठीक और शुद्ध रखना

इस तरह राजा रसालू की मॉ ने राजा रसालू को तसल्ली दी और उसने अपनी किस्मत बनानी शुरू की। वह अपना घोड़ा भौंर ईराकी और अपना तोता अपने साथ ले गया। दोनों ही उसके जन्म से ही उसके साथ रह रहे थे।

इन दोनों विश्वस्त दोस्तों के अलावा उसके दो दोस्त और भी थे – एक बढ़ई लड़का और एक सुनार लड़का, जिन्होंने यह कसम खा रखी थी कि वे राजकुमार का साथ कभी नहीं छोड़ेंगे। इस तरह से उनका एक अच्छा साथ था।

जब रानी लोना ने उनको जाते देखा तो वह अपनी खिड़की से उनको तब तक जाते देखती रही जब तक कि वे ऑखों से ओझल नहीं हो गये और केवल धूल उड़ती नहीं दिखायी दी।

फिर उसने अपने हाथों में सिर रख लिया और रो पड़ी —

ओ बेटे तू मुझे अब बहुत थोड़ा दिखता है अब तो मुझे धूल ही ज़्यादा दिखायी देती है
क्योंकि जिस मॉ का बेटा उससे दूर हो वह तो खुद भी धूल जैसी ही है

1–3 राजा रसालू के दोस्तों ने उसे कैसे छोड़ा[22]

सो राजकुमार रसालू अपने पिता का राज्य छोड़ कर दुनियाँ देखने चल दिया। पहले दिन वह काफी दूर चला। वह एक अकेले जंगल में आ गया। फिर यह देख कर कि यह एक अकेली सी जगह है और रात कुछ ज़रा ज़्यादा ही अँधेरी है उन सबने यह तय किया कि वे लोग बारी बारी से पहरा देंगे।

उन्होंने अपने पहरे के समय को तीन हिस्सों में बाँट लिया। बढ़ई के हिस्से में पहला हिस्सा आया, सुनार ने दूसरा हिस्सा लिया और राजकुमार को तीसरे हिस्से में पहरा देना था।

तब सुनार ने अपने मालिक के लिये घास का एक बिछौना बनाया और इस बात से डरते हुए कि कहीं ऐसा न हो कि राजकुमार का दिल अपने पुराने माहौल को याद कर के खराब न हो जाये उसने उसको उत्साहित करने के लिये यह कहा —

अब तक तो तुम बहुत मुलायम बिस्तर में खेले हो
पर आज की रात घास ही तुम्हारा बिस्तर है
फिर भी तुम दुखी मत होना अगर तुम्हारी किस्मत तुम्हें खराब दिन दिखाये
बहादुर लोग उस पर ज़रा भी ध्यान नहीं देते

जब राजकुमार रसालू और सुनार का बेटा सो गये और बढ़ई का बेटा पहरा दे रहा था तो पास की एक झाड़ी से एक साँप निकल

[22] How Raja Rasalu's Friends Forsook Him (Tale No 34 of the Book)

आया और सोते हुए लोगों की तरफ बढ़ा तो बढ़ई के बेटे ने पूछा — "तुम कौन हो और तुम इधर क्यों आये हो?"

सॉप बोला — "मैंने अपने चारों तरफ के 12 मील के दायरे में सबको नष्ट कर दिया है। तुम कौन हो जिसने यहॉ आने की हिम्मत की है?"

कह कर सॉप ने बढ़ई के बेटे के ऊपर हमला किया तो बढ़ई का बेटा उससे लड़ा और उसे मार दिया। उसे मार कर बढ़ई के बेटे ने उसे अपनी ढाल के नीचे छिपा दिया और अपने दोनों साथियों को इस बारे में कुछ नहीं बताया कि कहीं वे डर न जायें। क्योंकि सुनार के बेटे ने भी यही सोचा कि कहीं राजकुमार हताश न हो जाये।

जब पहरा देने की राजकुमार रसालू की बारी आयी तो एक अनजानी आफत[23] झाड़ी में से निकल आयी। राजकुमार रसालू ने उसका बहादुरी से सामना किया और ज़ोर से चिल्लाया — "कौन हो तुम और यहॉ क्यों आये हो?"

तब उस आफत ने कहा — "मैंने अपने चारों तरफ के 36 मील के दायरे में सबको मार दिया है तुम कौन हो जिसने यहॉ आने की हिम्मत की है?"

इस पर राजकुमार रसालू ने अपने चमकती हुई तलवार खींच ली और उस आफत को उसने अपने तेज़ तीरों से छेद दिया जिससे वह अपनी गुफा में भाग गया। राजकुमार रसालू ने उसका गुफा तक

[23] Translated for the words "Unspeakable Terror" – Aafat is the original word.

पीछा किया और उसे मार कर फिर पहरा देने के लिये अपनी जगह शान्ति से आ गया।

सुबह होने पर राजकुमार रसालू ने अपने सोते हुए साथियों को उठाया तो बढ़ई के बेटे ने अपना इनाम यानी उस साँप का शरीर उसको दिखाया जो उसने उस रात मारा था।

राजकुमार बोला — "अरे यह तो एक छोटा सा साँप है। यहाँ गुफा में आ कर देखो मैंने क्या मारा।"

और जब सुनार और बढ़ई के बेटों ने उस आफत को देखा तो वे तो बहुत डर गये। वे उसके पैरों पर गिर गये और उन्होंने उससे शहर जाने की इजाज़त माँगी।

उन्होंने कहा — ओ ताकतवर राजकुमार रसालू। तुम तो एक राजकुमार हो एक हीरो हो तुम तो ऐसी आफतों से लड़ सकते हो। पर हम लोग तो केवल मामूली लोग हैं। हम अगर तुम्हारे साथ रहे तो तुम यकीनन ही मारे जाओगे। ये चीज़ें तुम्हारे लिये तो कुछ नहीं हैं पर हमारे लिये तो ये मौत हैं। मेहरबानी कर के हमें जाने दो।"

राजकुमार रसालू ने उनकी तरफ बड़े दुख से देखा और कहा कि जैसा वे चाहें वैसा करें।

वह बोला —

सदा न फूलें तोरियाँ ओ साथी सदा न सावन होय
सदा न जोबन थिर रहे सदा न जीवै कोय
सदा ना राजियाँ हाकिमीं सदा ना राजियाँ देस
सदा न होवे घर अपना ओ साथी जब बसें पिया परदेस

दर्शन की यह कविता दुनियाँ भर में मशहूर है। इसे अंग्रेजी में इस तरह कहा जा सकता है।[24]

[24] It is not always that Tori (a vegetable) flowers all the time, Rain doesn't always fall
Nor stays the youth and nor anybody lives
Kings do not always reign, Nor they have land always
People do not always live in their own homes, when the husband (dear people) is not near

1-4 राजा रसालू ने राक्षसों को कैसे मारा[25]

सो राजकुमार रसालू के दोस्त उसको छोड़ कर शहर चले गये। कुछ समय बाद राजकुमार रसालू नीला शहर में आया। जैसे ही वह शहर में घुसा तो उसको एक बुढ़िया मिली जो रोटियाँ बना रही थी।

जब वह उन्हें बना रही थी तो वह साथ में कभी रोती जाती थी तो कभी हँसती जाती थी। यह देख कर राजकुमार रसालू को यह जानने की उत्सुकता हुई कि वह ऐसा क्यों कर रही थी सो उसने उससे पूछा — "माँ जी आप क्यों तो हँसती हैं और फिर क्यों रोती हैं?"

बुढ़िया रोटी बेलने के लिये अपने आटे की गोली बनाते हुए बोली — "तुम क्यों पूछते हो बेटा? तुमको उससे क्या फायदा होगा?"

राजकुमार रसालू अपनी मीठी आवाज में बोला — "नहीं माँ जी। अगर आप मुझे सच सच बता देंगी तो शायद हम दोनों में से किसी एक का फायदा हो जाये।"

और जब बुढ़िया ने राजकुमार रसालू के चेहरे की तरफ देखा तो वह उसे किसी दयालु आदमी का चेहरा दिखायी दिया। वह आँखों में आँसू भर कर बोली — "ओ अजनबी। मेरे सात सुन्दर

[25] How Raja Rasalu Killed the Giants (Tale No 35 of the Book)

बेटे थे। अब मेरे पास केवल एक बेटा ही रह गया है। बाकी के छह बेटे एक बहुत ही भयानक राक्षस ने खा लिये हैं। यह राक्षस रोज इस शहर में अपना टैक्स वसूल करने के लिये आता है – एक जवान आदमी, एक भैंस और एक टोकरी रोटी।

मेरे छह बेटे तो मारे जा चुके हैं और आज फिर यह टैक्स देने की मेरी बारी आयी है। सो आज मेरे सबसे छोटे सबसे प्यारे बेटे को भी वही भुगतना पड़ेगा जो उसके छह भाई भुगत चुके हैं। मैं इसी लिये रोती हूँ।"

यह सुन कर राजकुमार रसालू को उस पर बहुत दया आयी। वह बोला —

ना रो माता भोली ना अँसुवन ढलकाये, तेरे बेटे की इवाज में सिर देसान चला जाये
नीले घोड़िये वालिया राजा मुँछधारी सिर पग, वह जो देखते औंदे जिन खाइयाँ सारा जग

इस पर भी बुढ़िया ने अविश्वास के साथ अपना सिर ना में हिलाया और बोली — "ओ मीठा बोल बोलने वाले। पर एक के लिये दूसरा अपनी ज़िन्दगी खतरे में क्यों डालेगा।"

यह सुन कर राजकुमार रसालू उसकी तरफ देख कर मुस्कुराया अपने शानदार घोड़े भौंर ईराकी से नीचे उतरा और सुस्ताने के लिये लापरवाही से वहीं बैठ गया जैसे वह उसी घर का बेटा हो।

वह बोला — "मॉ जी आप डरिये नहीं। मैं आपसे वायदा करता हूॅ कि आपके बेटे को बचाने के लिये मैं अपनी ज़िन्दगी भी खतरे में डालूॅगा।"

उसी समय सरकार के ऊॅचे औफीसर जिनका काम उस राक्षस का खाना इकट्ठा करना था वहॉ आ गये। बुढ़िया उनको देख कर यह कहते हुए एक बार फिर रो पड़ी —

ओ नीले घोड़े और ऊॅची पगड़ी बॉधने वाले राजकुमार
अपने सुन्दर दाढ़ी वाले चेहरे से कहे गये शब्द याद रखना
मुझे दुख देना वाला पास ही है

राजकुमार रसालू अपना चमकीला जिरहबख्तर पहन कर उठा और हुक्म देने के लहज़े में उनको एक तरफ हट जाने के लिये कहा।

औफीसरों के सरदार ने कहा — "ओ मीठा बोलने वाले। अगर यह स्त्री आज उसका खाना अभी नहीं देती है तो राक्षस लोग यहॉ आ कर सारा शहर में हड़बड़ी मचा देंगे। हमको उसके बेटे को ले कर ही जाना है।"

राजकुमार बोला — "उसके बदले में मैं चलता हूॅ। तुम मेरे रास्ते से हटो मुझे जाने के लिये रास्ता दो।"

औफीसरों के मना करने के बावजूद वह अपने घोड़े पर चढ़ गया और एक भैंस और बनी हुई रोटियॉ साथ ले कर उस राक्षस से

लड़ने के लिये चल दिया। उसने भैंस से सबसे छोटी सड़क से चलने के लिये कहा।

जब वह राक्षस के घर के पास पहुँचा तो उसने देखा कि उनमें से एक राक्षस एक बहुत बड़ी खाल में भर कर पानी ले कर जा रहा था।

जैसे ही पानी ले जाने वाले ने राजकुमार रसालू को उसके भौंर ईराकी घोड़े पर एक भैंस के साथ आता देखा तो वह मन में बहुत खुश हुआ — "आहा। आज तो एक घोड़ा और भी है साथ में। इससे पहले कि मेरे भाई लोग इसको देखें इसे पहले मैं खा लेता हूँ।"

सो उसने खाने के लिये उसकी तरफ अपना हाथ बढ़ाया कि राजकुमार रसालू ने अपनी तेज़ तलवार से उसका हाथ काट दिया। बस वह तो डर के मारे वहाँ से भाग लिया।

जब वह भाग रहा था तो उसको उसकी एक बहिन मिल गयी तो वह बोली — "भैया तुम इतनी जल्दी जल्दी कहाँ जा रहे हो?"

भागते भागते ही वह बोला — "लगता है कि राजकुमार रसालू आ गये। यह देख अपनी तलवार के एक ही झटके से उन्होंने मेरा हाथ काट दिया।"

यह देख कर राक्षसी को भी डर लगने लगा और वह भी अपने भाई के साथ ही भाग ली। और जब वे दोनों भाग रहे थे तो वे ज़ोर ज़ोर से गाते जा रहे थे —

भागो भाइयों भागो सबसे छोटे रास्ते से भाग लो
आग बहुत ज़ोर की लगी है वह हमारे सब प्यारों को जला देगी
हमने ज़िन्दगी की खुशियाँ देखी हैं अब हमको चारों तरफ भागना है
जो हो चुका वह हो चुका अब जल्दी से कोई उपाय सोचो

यह सुन कर सारे राक्षस पलटे और अपने ज्योतिषी भाई के पास पहुँचे और उससे उसकी किताब देख कर उन्हें बताने के लिये कहा कि क्या राजकुमार रसालू वाकई में दुनियाँ में पैदा हो चुके हैं।

और जब उन्होंने यह सुना कि "हाँ वह पैदा हो चुके हैं।" तो सबने इधर उधर भागना शुरू कर दिया। यहाँ तक कि जब वे पलट कर भागे जा रहे थे तो राजकुमार रसालू ने उनसे अपने आप से लड़ने के लिये कहा — "आगे आओ। मैं राजकुमार रसालू हूँ राजा सालबाहन का बेटा और राक्षसों को मारने के लिये ही पैदा हुआ हूँ।"

तब उनमें से एक राक्षस ने आग में जैसे घी डालते हुए कहा — "तेरे जैसे न जाने कितने रसालू मैंने खा लिये हैं। जब कोई असली रसालू आयेगा तो उसके घोड़े की एड़ी की रस्सी हमें बाँध लेगी और उसकी तलवार हमें अपने आप ही काट देगी।"

यह सुन कर राजकुमार ने अपने घोड़े की एड़ी की रस्सियाँ खोल दीं और अपनी तलवार जमीन पर फेंक दी। लो उन रस्सियों ने उन राक्षसों को बाँध लिया और तलवार ने उन सबको अपने आप ही काटना शुरू कर दिया।

फिर भी सात राक्षस जो बाकी बचे थे उन्होंने भी यह कहने की कोशिश की “तेरे जैसे न जाने कितने रसालू मैंने खा लिये हैं। जब कोई असली आदमी आयेगा तो उसके घोड़े की एड़ी की रस्सी हमें बॉध लेगी और उसकी तलवार हमें अपने आप ही काट देगी।”

उन्होंने रोटी पकाने वाले सात तवे लिये और उनसे ढाल का काम लेने लगे। तो लो राजकुमार रसालू ने अपने तेज़ तीर फेंक कर इन तवों को भेद दिया और साथ में मर गये वे राक्षस भी जो उनके पीछे खड़े थे। पर राक्षसी बच कर निकल गयी और गंडगरी पहाड़ की एक गुफा में जा कर छिप गयी।

तब राजकुमार रसालू ने अपनी एक मूर्ति बनवायी उसको चमकीला जिरहबख्तर पहनाया उसके हाथ में तलवार और ढाल और भाला दिया और उसको उस गुफा के दरवाजे पर रखवा दिया ताकि वह राक्षसी वहाँ से बाहर न निकल सके और भूखी ही अन्दर मर जाये।

इस तरह से उसने राक्षसों को मारा।

1–5 राजा रसालू जोगी कैसे बना[26]

राक्षसों को मारने के कुछ समय बाद राजा रसालू होदी नगरी चला गया। वहाँ जा कर जब वह अपनी सुन्दरता के लिये मशहूर रानी सुन्दराँ[27] के घर गया तो वहाँ जा कर उसने देखा कि महल के दरवाजे पर एक जोगी बैठा हुआ है और उसके पास ही होम[28] की आग जल रही है।

राजा रसालू ने उससे पूछा — "हे पिता आप यहाँ कब से बैठे हुए हैं?"

जोगी बोला — "मेरे बेटे मैं यहाँ 22 साल से रानी सुन्दराँ को देखने का इन्तजार कर रहा हूँ फिर भी मैं अभी तक उसे देख नहीं पाया हूँ।"

राजा रसालू बोले — "आप मुझे अपना शिष्य बना लीजिये। आपके साथ मैं भी उसको देखने का इन्तजार करूँगा।"

जोगी बोला — "मेरे बच्चे। तुम तो पहले से ही चमत्कार करते चले आ रहे हो तो फिर तुम हममें से एक क्यों बनना चाहते हो?"

राजा रसालू उसके लिये ना सुनने के लिये तैयार नहीं था सो जोगी ने उसके कान बिंधवा दिये और उनमें पवित्र कुंडल पहना दिये।

---

[26] How Raja Rasalu Became a Jogi (Tale No 36 of the Book)

[27] Queen Sundaran was the daughter Raja Hari Chand

[28] Hom means Yagya

नये शिष्य ने अपना चमकता जिरहबख्तर एक तरफ उठा कर रख दिया और जोगी की तरह से एक लंगोटी पहन कर ही उसके पास बैठ गया और रानी सुन्दराँ को देखने का इन्तजार करने लगा।

रात को बूढ़ा जोगी भीख माँगने के लिये गया तो उसने चार घर से भीख माँगी। उसमें से आधी भीख उसने राजा रसालू को दे दी और बाकी आधी उसने खुद खा ली।

अब राजा रसालू तो एक बहुत ही संत आदमी था एक हीरो था। इसके अलावा उसको खाने की भी ज़्यादा चिन्ता नहीं थी सो वह तो अपने हिस्से से सन्तुष्ट था पर जोगी अपने हिस्से से बिल्कुल सन्तुष्ट नहीं था।

अगले दिन भी वैसा ही हुआ और राजा रसालू तभी भी रानी सुन्दराँ को देखने के इन्तजार में आग के पास बैठा रहा। अब जोगी का धीरज छूटने लगा।

वह बोला — "ओ मेरे शिष्य। मैंने तुम्हें अपना शिष्य इसलिये बनाया था ताकि तुम भी कुछ भीख माँग सको और मुझे खिला सको। और अब देखो यह मैं हूँ जो तुम्हें खाना खिलाने के लिये भूखा रह रहा हूँ।"

राजा रसालू हँसते हुए बोला — "इसका तो आपने मुझे कोई हुक्म नहीं दिया था। अब कोई शिष्य बिना अपने गुरू की इजाज़त के कैसे जायेगा।"

यह सुन कर जोगी बोला — "तो फिर मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ कि तुम भीख माँगने जाओ और इतनी भीख माँग कर लाओ जो मेरे और तुम्हारे दोनों के लिये काफी हो।"

राजा रसालू उठा और अपनी जोगी की पोशाक में रानी सुन्दराँ के महल के दरवाजे पर जा कर खड़ा हो गया और गाया —

अलख मैं तेरी देहरी पर खड़ा हूँ तेरी सुन्दरता के चर्चे सुन कर बहुत दूर से आया हूँ
ओ बहुतायत से देने वाली सुन्दरी सुन्दराँ इस कुंडल पहने जोगी को भीख दे

जब सुन्दरी सुन्दराँ ने महल के अन्दर से राजा रसालू की आवाज सुनी तो उसकी मिठास उसके दिल को छू गयी। उसने तुरन्त ही अपनी एक दासी को बुला कर उससे उसे भीख देने के लिये कहा।

पर जब दासी दरवाजे पर आयी और बाहर खड़े हुए राजा रसालू की सुन्दरता देखी – उसका गोरा चेहरा और सुडौल शरीर, तो वह तो बेहोश ही हो गयी। वह जो कुछ उसे देने आयी थी वह सब जमीन पर गिर पड़ा।

राजा रसालू ने एक बार फिर गाया तो एक बार फिर उसकी मीठी आवाज रानी सुन्दराँ के कानों में पड़ी तो उसने अपनी दूसरी दासी को बुला कर उससे उसको कुछ भीख देने के लिये कहा। पर वह भी राजा रसालू की सुन्दरता देख कर बेहोश हो कर गिर पड़ी।

तब रानी सुन्दराँ उठी और खुद बाहर गयी – सुन्दर और शाही ढंग से। उसने दासियों को होश में लाया, बिखरा हुआ खाना उठाया और उसको एक तरफ रख दिया। फिर उसने थाली में जवाहरात भरे और उन्हें खुद ही राजा रसालू के हाथ में गर्व से यह कहते हुए दे दिये —

तुमने ये कुंडल कब पहने और तुम कब से फ़कीर बन गये
तुमने प्यार के धनुष का ऐसा कौन सा तीर खाया और तुम क्या ढूँढते फिरते हो
क्या तुम सारी स्त्रियों से भीख माँगते हो या फिर केवल मुझसे ही माँगते हो

राजा रसालू ने अपनी जोगी के स्वभाव के अनुसार उसके सामने सिर झुकाया और बड़ी नम्रता से कहा —

अपने ये कुंडल मैंने कल ही पहने हैं और कल ही मैं फ़कीर बना हूँ
और कल ही मैंने प्रेम का तीर खाया है मुझे यहाँ से कुछ नहीं चाहिये
मैं जिस किसी को देखता हूँ उन सबसे भीख नहीं माँगता
पर ओ सुन्दर रानी सुन्दराँ मैं केवल तुझसे ही भीख माँगता हूँ।

जब रसालू थाली भर कर जवाहरात ले कर अपने गुरू के पास लौट कर आया तो उस बूढ़े जोगी को तो बहुत आश्चर्य हुआ। उसने उससे कहा कि वह उन्हें वापस ले जाये और उनकी बजाय केवल खाना ले कर आये।

सो राजा रसालू फिर से महल के दरवाजे पर वापस गया और गाया —

अलख मैं तेरी देहरी पर खड़ा हूँ तेरी सुन्दरता के चर्चे सुन कर बहुत दूर से आया हूँ
ओ बहुतायत से देने वाली सुन्दरी सुन्दराँ इस कुंडल पहने जोगी को भीख दे

रानी सुन्दराँ फिर उठी – गर्व से भरी हुई और सुन्दर। वह दरवाजे के पास आयी और बाली —

तू कोई भिखारी नहीं है
तेरे मुँह का तरकस मोतियों के तीरों से भरा है
तेरा धनुष लाल है जैसे लाल[29] होता है
राख ने तेरी जवानी को ढक रखा है पर
तेरी आँखें तेरा रंग चमक रहा है तू मुझे धोखा मत दे

राजा रसालू मुस्कुरा कर बोला —
ओ सुन्दर रानी इससे क्या हुआ
अगर मेरे मुँह का तरकस चमकते हुए मोतियों से और लाल से भरा है
मैं जवाहरातों का व्यापार नहीं करता चाहे वह पूर्व पश्चिम हो उत्तर हो या दक्षिण हो
आप अपने जवाहरात वापस ले लें और इनकी बजाय मुझे खाना दे दें
ये भेंटें कीमती है दुर्लभ हैं पर यह मँहगा जादू है ये जोगी की भीख के काबिल नहीं है

तब रानी सुन्दराँ ने वे जवाहरात वापस ले लिये और सुन्दर जोगी को एक घंटा इन्तजार करने के लिये कहा जब तक रसोई में खाना बनता है।

फिर भी वह उसके बारे में और कुछ जानकारी मालूम नहीं कर सकी क्योंकि वह दरवाजे पर बैठा रहा और एक शब्द भी नहीं

[29] This Laal means Ruby. Ruby is also red – see its picture above.

बोला। हॉ जब रानी सुन्दरॉ ने उसको एक थाल भर कर मिठाई दी और उसकी तरफ दुखी नजरों से देख कर कहा —

तुम किस राजा के बेटे हो और तुम यहॉ कब आये
तुम्हारा नाम क्या है और तुम्हारा घर कहॉ है

राजा रसालू ने उससे भीख ली और बोला —

मैं सुन्दरी लोना का बेटा हूॅ मेरे पिता का नाम सालबाहन है
मैं रसालू हूॅ और तुम्हारी सुन्दरता के चर्चे सुन कर मैंने राख वाला यह जोगी का रूप रखा
मैं भीख मॉगता हूॅ यह देखने के लिये
कि क्या तुम इतनी ही सुन्दर हो जितना लोग कहते हैं
अब मैंने देख लिया अब मैं अपने रास्ते जाता हूॅ

उसके बाद राजा रसालू मिठाई ले कर अपने गुरू के पास चला आया। उसके बाद वह वहॉ से भी चला गया। क्योंकि उसको डर था कि उसके बारे में जानने के बाद रानी सुन्दरॉ कहीं उसको बन्दी न बना ले।

सुन्दरी सुन्दरॉ जोगी की पुकार का इन्तजार करती रही और फिर जब कोई नहीं आया तो वह बाहर उस बूढ़े जोगी से गर्व से और शाही तरीके से यह पूछने आयी कि उसका शिष्य कहॉ चला गया।

बूढ़े जोगी को यह देख कर अपना आपा बहुत छोटा लगा कि वह महलों की रानी एक अजनबी के बारे में पूछने के लिये उसके

पास आयी जबकि वह खुद **22** साल से वह वहाँ बैठा बिना कुछ बोले और इशारा किये उसके दर्शनों का इन्तजार कर रहा था।

वह बोला — "मेरा शिष्य? मैं भूखा था मैंने उसे खा लिया क्योंकि वह मेरे लिये भीख में काफी खाना नहीं लाया।"

रानी सुन्दराँ चिल्लायी — "अरे ओ राक्षस। क्या मैंने तेरे लिये जवाहरात और खाना नहीं भेजा? क्या इस सबसे भी तुझे सन्तोष नहीं मिला जो तूने इतने सुन्दर राजकुमार को खा लिया।"

जोगी बोला — "मुझे नहीं मालूम। मैं तो केवल इतना जानता हूँ कि मैंने उस नौजवान को एक सलाँख में घुसाया और उसे भून दिया और खा लिया। वह खाने में बहुत स्वादिष्ट था।"

रानी सुन्दराँ से रहा नहीं गया वह बोली — "तब तू मुझे भी भून ले और खा ले।" और यह कहने के साथ ही उसने अपने आपको उसके सामने जलती हुई पवित्र आग में फेंक दिया। वह उस सुन्दर जोगी के प्रेम में उसके साथ ही सती हो गयी थी।

और जब वह वहाँ से गया तो उसने उसके बारे में नहीं सोचा बल्कि उसका मन हुआ कि काश वह भी एक राजा होता सो उसने राजा हरि चन्द की राज गद्दी ले ली और फिर वहाँ राज किया।

1–6 राजा रसालू की राजा सरकप के शहर की यात्रा[30]

कुछ साल होदी नगरी[31] में राज कर के राजा रसालू ने अपना राज्य

छोड़ दिया और राजा सरकप[32] के साथ चौपड़[33] खेलने के लिये चल दिया।

पर जब वह वहाँ आया तो गरज और बिजली का एक ऐसा भारी तूफान आया कि उसको शरण लेने की जरूरत पड़ गयी। पर उसको कहीं शरण नहीं मिली सिवाय एक पुराने कब्रिस्तान के जहाँ एक सिरकटी लाश पड़ी हुई थी।

वह लाश इतनी अकेली थी कि लगता था कि उसको भी किसी के साथ की जरूरत थी। राजा रसालू उसके पास बैठ गया और बोला —

यहाँ कोई नहीं है न तो पास में न दूर, सिवाय इस बिना साँस वाली लाश के
क्या भगवान इसको ज़िन्दा कर देगा इससे बात कर के अकेलापन कुछ कम हो जायेगा

---

[30] Raja Rasalu Journeyed to the City of the King Sarkap (Tale No 37 of the Book)

[31] Hodi Nagari

[32] King Sarkap (King Beheader) is a universal hero of fable who has left many places behind him connected with his memory, but who he was is not yet been ascertained.

[33] Chaupad – a kind of dice game. Long before this indoor game was very popular among kings. King Nal played it with his brother Pushkar and lost it. Paandav played it with their cousins Kaurav and lost it. See the picture of dice above.

और लो वह बिना सिर की लाश तो उठ गयी और राजा रसालू के पास ही बैठ गयी। राजा रसालू ने बिना किसी आश्चर्य के कहा —

तूफान बहुत भयानक और तेज़ है, बड़ा घना बादल पश्चिम में उठ रहा है
तुम्हारी कब्र को और तुम्हारे कफ़न को क्या तकलीफ है ओ लाश
जो तुम आराम नहीं कर सकते

बिना सिर वाली लाश बोली —
जब मैं धरती पर था तो मैं भी तुम जैसा ही था
मेरी पगड़ी एक राजा के जैसी थी मेरा सिर सबसे ऊँचा था
मैं इधर से उधर आनन्द करता घूमता था

मैं एक बहादुर की तरह अपने दुश्मनों से लड़ता था अपनी ज़िन्दगी मौज से जीता था
पर अब मैं मर गया हूँ मेरे पाप मेरे लिये लैड[34] की तरह से भारी हो गये हैं
वे मुझे कब्र में भी चैन से नहीं रहने देते

इसी तरीके से रात गुजर गयी ॲधेरी और भयानक। राजा रसालू उस बिना सिर वाली लाश से बातें करता रहा। जब सुबह हुई और राजा रसालू बोला कि अब उसे अपनी यात्रा पर जाना है तो लाश ने उससे पूछा कि वह कहाँ जा रहा है।

राजा रसालू बोला कि वह राजा सरकप के साथ चौसर खेलने जा रहा है। तो लाश ने उससे विनती की कि वह अपने इस विचार को छोड़ दे।

[34] Lead is a metal heavier than it looks.

उसने कहा — "मैं राजा सरकप का भाई हूँ और मुझे उसके तौर तरीके मालूम हैं। रोज नाश्ते से पहले वह अपने आनन्द के लिये दो तीन आदमियों के सिर काटता है। एक दिन उसको और कोई नहीं मिला तो उसने मेरा ही सिर काट दिया और किसी न किसी बहाने मुझे पूरा यकीन है कि वह तुम्हारा भी सिर काट देगा।

फिर भी अगर तुमने वहाँ जाने का और उसके साथ चौपड़ खेलने का इरादा बना ही रखा है तो यहाँ इस कब्रिस्तान से थोड़ी सी हड्डियाँ अपने साथ ले जाओ और उनसे अपने पाँसे बना लो। इससे वे जादू वाले पाँसे जिनसे मेरा भाई खेलता है उनकी ताकत बेकार हो जायेगी नहीं तो वह हमेशा ही जीत जाता है।"

सो राजा रसालू ने वहाँ पड़ी हुई कुछ हड्डियाँ उठा लीं और उनके पाँसे बनवा लिये। उनको उसने अपनी जेब में रख लिया। फिर लाश को विदा कह कर वह राजा सरकप के साथ चौपड़ खेलने चल दिया।

1–7 राजा रसालू ने राजा की सत्तर बेटियों को कैसे झुलाया[35]

दयालु और ताकतवर राजा रसालू ने अपनी यात्रा शुरू की। चलते चलते वह एक जलते हुए जंगल के पास आ गया कि उसने आग में से आती हुई एक आवाज सुनी — "ओ यात्री। भगवान के लिये मुझे इस आग से बचाओ।"

राजा रसालू आग की तरफ मुड़ा तो लो यह तो एक छोटा सा क्रिकेट था जो उससे यह बोल रहा था। अव राजा क्योंकि बहुत दयालु और ताकतवर था सो उसने हाथ आग में डाल कर उसे निकाल लिया और उसे बाहर छोड़ दिया।

तब उस छोटे से प्राणी ने अपनी कृतज्ञता दिखाने के लिये अपने आगे के दो बालों में से एक बाल तोड़ा और अपनी रक्षा करने वाले को दिया और कहा — "तुम मेरा यह बाल लो और जब भी तुम किसी मुसीबत में पड़ जाओ तो तुम इसे आग में डाल देना मैं तुम्हारी सहायता के लिये आ जाऊँगा।"

राजा रसालू मुस्कुराया और बोला — "तुम इतने छोटे से जानवर मेरी क्या सहायता करोगे?"

[35] How Raja Rasalu Swung the Seventy Fair Maidens, Daughters of the King. (Tale No 38 of the Book)

फिर भी उसने वह बाल रख लिया और अपने रास्ते चला गया। जब वह राजा सरकप के शहर पहुँचा तो राजा की **70** बेटियॉ उससे मिलने के लिये बाहर आयीं – **70** सुन्दर लड़कियॉ, खुश और लापरवाह, हॅसती मुस्कुराती।

लेकिन उनमें से एक सबसे छोटी वाली बेटी ने भौंर ईराकी पर चढ़ने वाले शानदार राजा को देखा तो वह तुरन्त उसके पास चली गयी और बोली —

ओ नीले घोड़े वाले राजा यहॉ से वापस चले जाओ यहॉ से वापस चले जाओ
या फिर अपना भाला नीचे कर के आओ आज तुम्हारा सिर काट दिया जायेगा
क्या तुम अपनी ज़िन्दगी से प्यार करते हो तब ओ अजनबी मैं तुमसे विनती करती हूँ
तुम वापस लौट जाओ तुम वापस लौट जाओ

पर राजा रसालू ने मुस्कुराते हुए धीमे से जवाब दिया —

ओ सुन्दरी मैं बहुत दूर से आया हूँ प्रेम और युद्ध में जीतने की कसम खा कर
राजा सरकप मेरे आने पर पछतायेगा मैं उसके सिर के चार हिस्से कर दूँगा
और फिर मैं उसके यहॉ दुलहे के रूप में आऊँगा
और तुम्हें अपनी दुलहिन बना कर ले जाऊँगा

जब राजा रसालू ने इतनी वीरता से जवाब दिया तो उस लड़की ने उसके चेहरे को ध्यान से देखा। वह कितना सुन्दर था कितना बहादुर और कितना ताकतवर था। वह तो तुरन्त ही उससे प्यार करने लगी। अब वह उसके साथ दुनियॉ में कहीं भी जाने को तैयार थी। पर दूसरी **69** लड़कियॉ उससे जलने लगीं।

उसकी हँसी उड़ाते हुए उन्होंने राजा रसालू से कहा — "इतनी जल्दी नहीं ओ बहादुर योद्धा। अगर तुमको हमारी बहिन से शादी करनी है तो पहले तुम्हें वह करना होगा जो हम तुमसे करने के लिये कहेंगे क्योंकि तब तुम हमारे छोटे भाई होगे।"

राजा रसालू ने कहा — "ओ सुन्दर लड़कियों। मुझे मेरा काम बताओ मैं उसे जरूर करूँगा।"

सो उन 69 लड़कियों ने 100 मन[36] बाजरा 100 मन रेत में मिला कर राजा रसालू को दे दिया और उसमें से उससे बाजरे के दाने बीनने के लिये कहा।

तब उसे क्रिकेट की याद आयी। उसने उसका दिया हुआ बाल अपनी जेब से निकाला और आग में फेंक दिया। तुरन्त ही वहाँ हवा में एक ज़ज़ज़ज़ की आवाज हुई और बहुत सारे क्रिकेट वहाँ आ कर जमा हो गये। उनके साथ वह क्रिकेट भी था जिसकी उसने जान बचायी थी।

राजा रसालू बोला — "ये बाजरे के दाने इस रेत में से अलग कर दो।"

क्रिकेट बोला — "बस यही काम है अगर मुझे यही पता होता कि तुम मुझसे इतना छोटा काम लोगे तो मैं अपने इतने सारे भाइयों को ले कर नहीं आता।"

---

[36] One Man or Mound is 40 Seer or 39+ Kilograms.

कह कर वे अपने काम में लग गये। एक रात में ही उन्होंने बाजरे के सारे दाने रेत से अलग कर दिये।

पर जब राजा सरकप की **69** बेटियों ने देखा कि राजा रसालू ने उनका कहा काम कर दिया है तो उन्होंने एक और काम करने के लिये कहा कि वह एक एक कर के उन्हें तब तक झूला झुलाये जब तक वे थक न जायें।

इस पर वह हॅसते हुए बोला — "उस लड़की को भी गिनते हुए भी जो कि बाद में मेरी पत्नी बनने वाली है तुम लोग **70** हो। और मैं अपनी ज़िन्दगी लड़कियों को झुलाने में बर्बाद करना नहीं चाहता।

उस समय तक जब तक मैंने तुममें से हर एक को एक एक बार झूला भी झुलाया तो पहले वाली को फिर से झूला झूलने की इच्छा हो जायेगी। इसलिये अगर तुम सबको झूला झूलना है तो तुम सब एक झूले में बैठ जाओ तब मैं देखता हूँ कि मैं क्या कर सकता हूँ।"

सो सारी **70** लड़कियॉ, खुश और लापरवाह, मुस्कुराती हुई और हॅसती हुई एक झूले में चढ़ गयीं और राजा रसालू ने जो अपने चमकते हुए जिरहबख्तर में खड़ा था रस्सी का एक सिरा अपने तीर में बॉधा और उसको अपनी ताकत से पूरा खींच कर छोड़ दिया – झूला चल दिया, एक तीर के समान, हवा में भागता हुआ, **70** लड़कियों के बोझ को सॅभाले हुए जो खुश थीं लापरवाह थीं और मुस्कुराहटों और हॅसी से भरी थीं।

पर जब वह झूला वापस आने लगा तो राजा रसालू ने जो अपना चमकता हुआ जिरहबख्तर पहने खड़ा था अपनी तलवार निकाली और उससे उसकी रस्सियाँ काट दीं। सारी **70** लड़कियाँ एक के ऊपर एक जमीन पर गिर पड़ीं। कुछ घायल हो गयीं कुछ की हड्डियाँ टूट गयीं।

पर उनमें से केवल एक लड़की बिल्कुल ठीक निकल आयी जिसको कोई चोट नहीं आयी थी और वह लड़की वह थी जिसको राजा रसालू प्यार करता था। वह सबसे बाद में गिरी तो वह बाकी सब लड़कियों के ऊपर थी इसलिये उसको कोई चोट भी नहीं आयी।

इसके बाद राजा रसालू **15** कदम आगे बढ़ा और उन **70** ढोलों के पास आ गया जिनको उन्हें हर एक को बजाना था जो भी राजा के साथ चौसर खेलने के लिये आते थे। उसने उन सबको इतनी ज़ोर से बजाया कि उसने वे सारे ढोल तोड़ डाले।

उसके बाद वह **70** लोहे की प्लेटों के पास आया जिनको राजा के पास जाने से पहले हथौड़े से मारना पड़ता था। उसने उनमें भी इतने ज़ोर से हथौड़ा मारा कि उसने उन सबको भी तोड़ दिया।

यह देख कर सबसे छोटी राजकुमारी, क्योंकि केवल वही भाग सकती थी डर के मारे राजा के पास भागी गयी और बोली —

सरकप, एक ताकतवर राजकुमार तोड़ फोड़ करता घोड़े पर सवार आया है
उसने हमें झुलाया, **70** सुन्दर लड़कियों को और सबको सिर के बल फेंक दिया

उसने अपने घमंड में वे ढोल भी तोड़ दिये जो आपने रखे थे वे प्लेटें भी तोड़ दीं
यकीनन वह आपको भी मार देगा ओ मेरे पिता, और मुझे अपनी दुलहिन बना लेगा

राजा सरकप उसको डॉटते हुए बोला —
बेवकूफ लड़की तेरे शब्द मुझे मेरी किस्मत बता रहे हैं जो कि बहुत छोटी से चीज़ है
अपनी शान को बचाने के लिये मैं उससे लड़ूँगा मैं उसका जिरहबख्तर तोड़ दूँगा
जैसे ही मैंने अपना खाना खा लिया मैं बाहर आ कर उसका सिर काटता हूँ

हालॉकि उसने ये शब्द बहादुरी और निडरता से बोले तो पर अन्दर ही अन्दर वह बहुत डर रहा था। उसने राजा रसालू की बहादुरी के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था।

और यह जान कर कि वह एक बुढ़िया के दरवाजे पर रुका था और तब से जब तक चौपड़ खेलने का समय आया राजा सरकप ने अपने नौकरों के हाथ कई थाल भर कर फल मिठाई भेजे जैसे किसी इज़्ज़तदार मेहमान को दिये जाते हैं। पर वह सब खाना जहर से भरा हुआ था।

राजा सरकप के नौकर जब यह खाना ले कर राजा रसालू के पास गये तो वह बड़े गुस्से में भर कर उनसे बोला — "जाओ और अपने मालिक को बोलना कि हमारा और उसका कोई दोस्ती का रिश्ता नहीं है। मैं तो उसका पक्का दुश्मन हूँ। मैं तो उसका नमक भी खाना नहीं चाहता।"

ऐसा कहते हुए उसने उनकी लायी हुई मिठाई राजा सरकप के कुत्ते को फेंक दी जो राजा के नौकरों के साथ आया था और लो वह तो उसे खाते ही मर गया।

इस पर राजा रसालू को बहुत गुस्सा आया। उसने बड़ी कड़वाहट के साथ कहा — "जाओ ओ नौकरों सरकप के पास वापस चले जाओ और उससे कहना कि राजा रसालू इस बात में कोई बहादुरी नहीं समझता कि वह अपने दुश्मन को भी छल से मारे।"

1–8 राजा रसालू ने राजा सरकप के साथ चौपड़ कैसे खेली[37]

जब शाम हुई तो राजा रसालू राजा सरकप के साथ चौपड़ खेलने के लिये चला। जब वह जा रहा था तो उसे रास्ते में कुम्हार के कई भट्टे दिखायी दिये तो उसने देखा कि एक बिल्ली बड़ी बेचैनी से इधर उधर घूम रही थी।

सो उसने उससे पूछ ही लिया कि उसको क्या तकलीफ है जो वह ठीक से खड़ी नहीं हो पा रही। इतनी बेचैनी से इधर उधर चक्कर काट रही है।

वह बोली — “मेरे बच्चे एक कच्चे बर्तन में हैं जो यहीं पास वाले भट्टे में रखा है। कुम्हार ने उसमें अभी अभी आग लगायी है। मेरे बच्चे तो बेचारे उस आग में ज़िन्दा ही भुन जायेंगे। मुझे यही बेचैनी है।”

उसके शब्दों ने राजा रसालू का दिल पिघला दिया। वह तुरन्त ही कुम्हार के पास गया और उससे वह भट्टा जैसा था वैसा ही उसे बेचने के लिये कहा।

पर कुम्हार ने जवाब दिया कि वह उसकी ठीक कीमत नहीं बता सकता जब तक कि उसके बर्तन उसमें पक न जायें। क्योंकि वह

---

[37] How Raja Rasalu Played Chaupur With King Sarkap (Tale No 39 of the Book)

यह नहीं बता सकता था कि उसमें से कितने साबुत निकलेंगे और कितने टूटे हुए।

किसी तरह कुछ सौदेबाजी करने पर कुम्हार उस भट्ट को बेचने के लिये राजी हो गया। राजा रसालू ने तुरन्त ही सारे बर्तन देखे और उसमें से बिल्ली के बच्चे निकाल कर उसकी माँ को सौंप दिये।

बिल्ली ने भी उसकी दया के बदले में अपना एक बच्चा उसको दिया और कहा कि "इसको तुम अपनी जेब में रख लो तुम्हारी मुसीबत में तुम्हारी सहायता करेगा।"

सो राजा रसालू ने उस बिल्ली के बच्चे को अपनी जेब में रख लिया और राजा के साथ चौपड़ खेलने चला गया।

खेलने के लिये बैठने से पहले राजा सरकप ने अपने दाँव बताये – पहले खेल में अपना राज्य, दूसरे खेल में दुनियाँ की सारी सम्पत्ति और तीसरे खेल में अपना सिर।

इसी तरह से राजा रसालू ने पहले खेल में अपने हथियार दूसरे खेल में अपना घोड़ा और तीसरे खेल में अपना सिर दाँव पर लगाया।

इसके बाद दोनों ने खेलना शुरू किया तो राजा रसालू की पहली चाल आयी। इस समय वह उस लाश की चेतावनी को भूल गया कि उसको कब्रिस्तान से लायी गयी हड्डियों से बने पाँसों से खेलना चाहिये नहीं तो वह सरकप के जादुई पाँसों से हार जायेगा। और वह उन्हीं पाँसों से खेला जो राजा सरकप ने उसे दिये।

इसके अलावा राजा सरकप ने अपना धौल[38] राजा नाम का चूहा भी छोड़ दिया था। वह बोर्ड के चारों तरफ भाग रहा था और चौपड़ की गोटियाँ इधर उधर कर रहा था। सो राजा रसालू पहला खेल हार गया। उसको अपना चमकता हुआ जिरहबख्तर राजा सरकप को दे देना पड़ा।

अब दूसरा खेल शुरू हुआ और एक बार फिर धौल राजा चौपड़ के बोर्ड के चारों तरफ भाग भाग कर चौपड़ की गोटियाँ इधर उधर कर रहा था। सो राजा रसालू यह दूसरा खेल भी हार गया और उसे अपना भौंर ईराकी घोड़ा हारना पड़ गया।

तभी भौंर ईराकी को जो वहीं खड़ा था आवाज मिल गयी और वह चिल्लाया —

मालिक मैं समुद्र और सोने से पैदा हुआ हूँ
प्यारे राजकुमार बूढ़ा होने की वजह से मेरे ऊपर विश्वास रखो
मैं आपको इन सब बुराइयों से दूर ले चलूँगा
मेरी उड़ान बहुत ही सधी हुई होगी और चिड़िया जैसी तेज़ होगी हजारों हजारों मील तक
और आपको जरूरत हो तो आप यहाँ ठहरें
क्योंकि आपको अभी अगला खेल भी तो खेलना है
मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप अपनी जेब में हाथ डालें

यह सुन कर राजा सरकप बहुत गुस्सा हो गया उसने अपने नौकरों से कहा कि वे भौंर ईराकी को वहाँ से हटा ले जायें क्योंकि उसने अपने मालिक को खेल में सलाह दे रहा था।

---

[38] Dhol or Dhaul or Dhawal (in Sanskrit) meaning white

जब नौकर घोड़े को वहाँ से हटाने के लिये आया तो राजा रसालू की आँखों में यह याद कर के आँसू आ गये कि कितने सालों से वह उसके साथ था और अब... । पर घोड़ा फिर चिल्लाया —

प्यारे राजकुमार तुम रोओ नहीं मैं अजनबियों के हाथ से खाना नहीं खाऊँगा
और न ही अजनबी के घर में रहूँगा
तुम अपना दाँया हाथ लो और उसको वहीं रखो जहाँ मैंने कहा है

उसके इन शब्दों ने राजा रसालू को कुछ याद दिलाया और इसी समय जब बिल्ली के बच्चे ने कुलमुलाना शुरू किया तो उसको लाश की चेतावनी याद आयी कि उसको कब्रिस्तान से इकट्ठी की गयी हड्डियों के बने पाँसे से खेल खेलना है वरना राजा सरकप ही जीतता रहेगा।

उसका दिल फिर एक बार उछला और उसने राजा सरकप से बड़ी बहादुरी से कहा — "मेरे हथियार और घोड़े दोनों को तुम अभी छोड़ दो। इनको ले जाने के लिये अभी बहुत समय है यह तभी होगा जब तुम मेरा सिर जीत लोगे।"

राजा रसालू का विश्वास देख कर राजा सरकप डर गया। उसने महल की अपनी सारी स्त्रियों को अपने सबसे अच्छे कपड़े और गहनों में सज कर आने और राजा रसालू के सामने खड़े होने का हुक्म दिया। ताकि वे राजा रसालू का खेल से ध्यान हटा सकें।

वे आयीं पर उसने तो उनकी तरफ देखा भी नहीं। उसने तुरन्त ही अपनी जेब से पाँसे निकाले और राजा सरकप से कहा — "अब

तक मैं तुम्हारे पॉसों से खेलता रहा अबकी बार मैं अपने पॉसों से खेलूँगा।”

इसके बाद बिल्ली का बच्चा उस खिड़की पर जा कर बैठ गया जहॉ से राजा सरकप का चूहा आता था। और खेल शुरू हुआ।

कुछ देर बाद राजा सरकप ने देखा कि राजा रसालू तो बराबर जीतता जा रहा है तो उसने अपने चूहे को पुकारा पर जब धौल राजा ने बिल्ली के बच्चे को देखा तो वह तो बहुत डर गया। वह तो आगे ही न बढ़े।

इस तरह से राजा रसालू दूसरा दॉव जीत गया और उसने अपने हथियार और घोड़ा वापस ले लिये। राजा सरकप ने यह कहते हुए अपनी सारी होशियारी लगा ली —

ए मेरे बनायी हुए गोटियों आज मेरी लाज रखना
इस आदमी को शान्त रखने के लिये जिसके साथ मैं आज खेल रहा हूँ
आज मेरी ज़िन्दगी और मौत का सवाल है
जैसे सरकप करता है वैसे ही इस बार सरकप के लिये

पर रसालू ने वापस जवाब दिया —

ए मेरे बनायी हुए गोटियों आज मेरी लाज रखना
इस आदमी को शान्त रखने के लिये जिसके साथ मैं आज खेल रहा हूँ
आज मेरी ज़िन्दगी और मौत का सवाल है
जैसे भगवान करता है वैसे ही करना, भगवान के लिये

दोनों ने खेलना शुरू किया। सरकप के महल की स्त्रियाँ गोला बनाये खड़ी थीं। बिल्ली का बच्चा धौल राजा की पहरेदारी कर रहा था।

राजा सरकप हार गया – पहले अपना राज्य, फिर अपनी सम्पत्ति और आखीर में अपना सिर।

उसी समय एक नौकर आया जिसने राजा सरकप को उसके एक बेटी के जन्म की खबर दी। बुरे समय ने उसके ऊपर अपना जाल फेंका और उसने तुरन्त ही उसको हुक्म दिया कि उसको मार दिया जाये क्योंकि वह एक बुरे समय में पैदा हुई है और अपने पिता के लिये बदकिस्मती ले कर आयी है।

उसी समय दयालु और ताकतवर राजा रसालू अपना चमकता जिरहबख्तर पहने उठा और बोला — "ओ राजा ऐसा नहीं करो। वह बिल्कुल बुरी नहीं है। इस बच्ची को मेरी पत्नी बना कर मुझे दे दो।

और अगर तुम अपने सब पुन्यों की कसम खा कर वायदा करो कि तुम दूसरे का सिर काटने के लिये फिर कभी चौपड़ नहीं खेलोगे तो मैं अभी तुम्हारा सिर बख्श देता हूँ।"

राजा सरकप ने गम्भीरता से कसम खायी कि वह फिर कभी दूसरे के सिर के लिये चौपड़ नहीं खेलेगा। उसके बाद उसने आम के पेड़ की एक ताजा शाख उठायी और नयी जन्मी बच्ची को लिया दोनों को एक सोने की थाली में रख कर राजा रसालू को दे दिया।

जब राजा रसालू महल से आम के पेड़ की ताजा शाख और उस बच्ची को ले कर गया तो रास्ते में उसको कुछ कैदी मिले। उन्होंने उससे कहा —

ओ राजा क्या तुम एक शाही बाज़ हो मेहरबानी कर के हमारी विनती सुनो
हमारी ये जंजीरें खोल दो और हमेशा सुखी रहो

राजा रसालू ने उनकी बात सुनी और राजा सरकप से कह कर उनको आजाद करा दिया। उसके बाद वह वहाँ से मूर्ति पहाड़ी[39] पर गया कोकिलाँ[40] को वहाँ एक तहखाने में रखा और वह आम की शाख उसके दरवाजे पर गाड़ दी और कहा — "बारह साल बाद कोकिला बड़ी हो जायेगी तब मैं यहाँ आ कर उससे शादी कर लूँगा।" बारह साल के बाद आम के पेड़ पर फूल आने लगे।

बारह साल राजा रसालू वहाँ आया और उसने कोकिला से शादी कर ली जिसको उसने सरकप से उसके साथ चौपड़ खेल कर जीता था।

[39] Near Rawal Pindi to the south-east

[40] Kokilan means "a Darling". She was unfaithful and most dreadfully punished by being made to eat her lover's heart.

राजा रसालू – 2

इस विभाग में दी हुई राजा रसालू की कहानियाँ एक और पुस्तक से ली गयी हैं जिसे चार्ल्स स्विनरटन ने 1903 में प्रकाशित किया था – “पंजाब की प्रेम कहानियाँ”[41]। इसमें कुल मिला कर उसकी 12 कहानियाँ दी गयी हैं। सभी 12 कहानियाँ यहाँ दी गयी हैं।

[41] “Romantic Tales From the Panjab”. By Charles Swynnerton. Westminster, Archibald Constable. 1903. 422 p. 7 Tales. Hindi translation of the book is available from hindifolktales@gmail.com

2 पूरन भगत की कहानी या रसालू का जन्म[42]

पंजाब के सियालकोट में उन दिनों राजा शालिवाहन राज्य किया करते थे। उनके उनकी इचरान नाम की रानी से एक बेटा हुआ जिसका नाम रखा गया पूरन।

जब वह पैदा हुआ तो कई ज्योतिषी बुलाये गये उसकी किस्मत जानने के लिये। क्योंकि किस्मत माथे पर लिखी रहती है इसलिये वे उसकी किस्मत पढ़ सके। उन्होंने बताया कि राजा अपने बेटे को **12** साल तक नहीं देख सकेंगे।

इसलिये बेचारे पूरन को पैदा होते ही एक मीनार में बन्द कर दिया गया। बारह साल तक उसे कभी इस कमरे में कभी उस कमरे में बन्द कर के रखा गया। उसे हर जगह दास दासियाँ दिये गये पूरी सुख सुविधा दी गयी। उसे पढ़ाने के लिये टीचर रखे गये। राज दरबार के लोग उसे राज्य और नगर के बारे में शिक्षा देते थे।

जब वह छह साल का हो गया तो पंडित लोग उसे धार्मिक शिक्षा देने के लिये रखे गये। जब तक वह **12** साल का हुआ तब तक वह शिक्षा के हर क्षेत्र में होशियार हो चुका था।

और तब राजा का हुक्म आया कि अब पूरन अपने पिता से मिलने उनके दरबार आ सकता था। पूरन ने जब यह सुना तो वह बहुत खुश हुआ। वह बहुत सारी भेंटें ले कर अपने पिता से मिलने

---

[42] "The Story of Puran Bhagat". (Tale No 6 of the Book) Told by Gharal at Murree in 1881.

चल दिया। उसका पिता भी अपने बेटे को देखने के लिये बहुत व्याकुल था। जब उसने अपने बेटे को देखा तो वह भी बहुत खुश हुआ।

राजा ने बहुत सारा दान दिया – भिखारियों को पंडितों को ब्राह्मणों को, गाय भैंसें घोड़े हाथी। पूरन को उसने अपने दाँये हाथ की तरफ राजगद्दी पर जगह दी जिस पर वह दरबार में बैठ कर अपने फैसले सुनाता था।

राजा ने देखा कि उसका बेटा अब बहुत होशियार हो गया है अपने दरबारियों और दूसरे लोगों से कहा कि वह उसके बेटे की शादी के लिये कोई लड़की खोजें। उसने कहा "भगवान ने जब मुझे यह जवाहरात दिया है तो मुझे देखना चाहिये कि इसकी शादी अच्छी तरह से हो जाये।"

पर पूरन ने उसे विनम्रता से मना कर दिया। उसने कहा — "मैं शादी करना नहीं चाहता। न शादी की मेरे लिये कोई कीमत है। मैं तो भगवान के चरणों की सेवा करना चाहता हूँ। आपकी शान बनी रहे मुझ पर यह बोझ मत डालिये। न अपने हाथों से मुझे जंजीरों में जकड़िये। मुझे पुन्य के रास्ते से मत हटाइये।"

पूरन के अपने मुँह से ये शब्द सुन कर राजा बहुत दुखी हुआ। वह बोला — "तुम मेरे बेटे हो तुम्हें मुझे मना करने का कोई अधिकार नहीं है।"

पर राजा के वज़ीर ने राजा का गुस्सा भॉप लिया। वह शान्ति से बोला — “राजकुमार अभी छोटे हैं उन पर गुस्सा मत कीजिये। अभी वह शादी के बारे में जानते ही क्या हैं। जब वह शादी की उम्र के हो जायेंगे तब आपको उनसे शादी के बारे में कहने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी वह खुद ही लड़कियों के पीछे भागने लगेंगे।

उस समय आपको उनकी शादी की चिन्ता करने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। इसलिये आप थोड़ा इन्तजार कीजिये।”

इस बात से राजा का गुस्सा थोड़ा ठंडा पड़ गया और फिर उसने राजकुमार से कुछ नहीं कहा।

राजा ने कुछ समय पहले ही एक और शादी की थी। उनकी इस पत्नी का नाम था लूना। यह एक चमड़ा तैयार करने वाले की बेटी थी। वह बहुत सुन्दर थी जैसे चॉद।

एक दिन राजा ने पूरन से कहा — “पूरन जाओ और अपनी मॉ और नयी रानी से मिल कर आओ क्योंकि वे भी तुमसे मिलने के लिये बहुत व्याकुल हैं। ध्यान रखना इसको मानने से मत भूलना। उन दोनों से जरूर मिल कर आना।”

सो पूरन उठा और अपने बहुत सारे दास दासियों को ले कर राजा के महल पहुॅचा। उसके दास दासियों के हाथों में बहुत सारी भेंटें थीं। वह खुद भी बहुत सारे गहने और रत्न पहने हुए था जिससे उसकी शोभा दो गुनी तीन गुनी हो रही थी।

उसके कान के बुन्दे आसमान में तारों की तरह चमक रहे थे। उसके हार में लगे हीरे बहुत ज़ोर से चमक रहे थे। उसके हाथों की अँगूठियाँ बहुत ही कुलीन लग रही थीं। इन सब गहनों से उसकी शोभा कितनी बढ़ रही थी यह बताना मुश्किल है।

जब वह रानियों के महल की जगह पहुँचा तो उसने दास दासियों से पता किया कि उसकी माँ का महल कौन सा था और उसकी सौतेली माँ का महल कौन सा था।

दास दासियों ने उसे बता दिया कि उसकी माँ के और उसकी सौतेली माँ के महल कौन कौन से थे। उसने सोचा कि "पहले मुझे अपनी सौतेली माँ से मिलने जाना चाहिये क्येंकि मेरी असली माँ तो जानती ही है कि यह मेरा बेटा है और उसके लिये तो मेरे दिल में हमेशा ही इज़्ज़त बनी रहेगी।"

अपने नौकरों से यह कह कर वह रानी लूना के महल में चला गया। उसे विश्वास था कि वहाँ उसका अच्छा स्वागत होगा पर जैसे ही वह नयी रानी के महल में घुसा तो नयी रानी उसकी सुन्दरता को देख कर ठगी सी उसे देखती ही रह गयी।

वह तो उसे देखते ही प्यार करने लगी थी। वह यह भूल गयी कि वह उसकी सौतेली माँ हे और उसे प्यार की नजरों से घूरती ही रही। पूरन को कोई डर नहीं था सो वह आगे बढ़ता रहा। वह वहाँ तक पहुँच गया जहाँ रानी बैठी हुई थी। वहाँ पहुँच कर पहले उसने उसे हाथ जोड़ कर नमस्कार किया। फिर लेट कर उसे प्रणाम

किया। पर एक मॉ का आशीर्वाद देने की बजाय उसने भी उसे बदले में एक आदर भरा विनम्र नमस्कार किया।

जब पूरन ने यह देखा तो वह तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गया। उसने सोचा कि यह तो मेरी किस्मत थी जो मुझे यहॉ भेजा गया।

दूसरी तरफ रानी लूना यह सोच रही थी कि राजकुमार पूरन के साथ रहना तो ऐसे होगा जैस गंगा के पानी में नहाना। और उसका प्यार पाना तो ऐसा होगा जैसे स्वर्ग में रहना।

थोड़े में कहो तो रानी लूना उसे देख कर इतनी बेचैन हुई कि वह अपने आपको रोक न सकी और बोल ही पड़ी — "तुम मुझे मॉ मॉ क्यों कहते हो। मैं तो तुम्हारी मॉ नहीं हूॅ। मैंने तो तुम्हें जन्म नहीं दिया फिर तुम मुझे मॉ कह कर क्यों बुलाते हो। मैं तो तुम्हारी ही उम्र की हूॅ।

हम दोनों एक दूसरे के लायक हैं। तुम्हारे प्रेम के वाण मेरे दिल को छेदे जा रहे हैं। मैं तुम्हें शब्दों में नहीं बता सकती कि मुझे तुम्हारे प्यार की कितनी जरूरत है।"

पूरन यह सुन कर शर्मा गया बोला — "आपको मुझसे ऐसा नहीं कहना चाहिये। क्या कभी आपने मॉ और बेटे के बीच में ऐसा सम्बन्ध सुना है। अगर हम ऐसा करेंगे तो दुनियॉ हमारे बारे में क्या कहेगी। मैं आपका बेटा हूॅ। आपको मुझे एक मॉ की तरह सोच कर गले लगाना चाहिये।"

पर रानी लूना ने शर्म छोड़ कर उसका कोट पकड़ कर उसे अपनी तरफ खींच लिया और उसे अपने पास बिठाते हुए बोली — "आओ यहाँ बैठो मेरे पास इस शाही सोफे पर। मेरी तरफ देखो एक माँ की तरह नहीं एक सुन्दरी की तरह जो तुम्हें अपना सब कुछ देने को तैयार है और तुमसे उसे स्वीकार करने की विनती कर रही है।

और तुम एक आदमी हो या नहीं यह तो मैं नहीं जानती पर तुम आदमी जैसा कोई व्यवहार दिखा नहीं रहे हो। आओ प्रिय आओ और मुझे खुश करने के लिये यहाँ मेरे पास बैठो।"

यह सुन कर पूरन ने उसे बुरा भला कहते हुए बुरी भाषा में कहा — "माँ आप पागल हैं। आपके पति मेरे पिता हैं। मेरे बारे में तो आपको इस तरह से सोचना चाहिये जैसे कि आप ही ने मुझे जन्म दिया है। अगर हमने यह बेवकूफी की तो जमीन आसमान सब गायब हो जायेंगे। माँ होश में आइये। भगवान के लिये पागल मत बनिये।"

रानी लूना चिल्लायी — "मैं तुम्हें मार दूँगी। अगर तुमने मेरी बात फिर से नहीं मानी तो मैं तुम्हारे पिता के हाथों से ही तुम्हें मरवा दूँगी। मैं यहाँ तुम्हारे सामने एक भिखारी की तरह खड़ी हूँ और तुम एक जिद्दी और पत्थर दिल होने की वजह से मेरी विनती की बिल्कुल भी परवाह नहीं कर रहे।

क्या मैंने तुम्हें जन्म दिया है? क्या मैंने तुम्हें अपना दूध पिलाया है? किस कानून से और किस वजह से तुम मुझे अपनी माँ कहते हो? तुम क्यों अपने आपको मार रहे हो? तुम क्यों अपनी ज़िन्दगी बर्बाद कर रहे हो?"

पूरन बोला — "इस बात को ध्यान में रखना और याद रखना कि मैं आपका सोफा बिल्कुल नहीं छुऊँगा और न उस पर बैठूँगा। इसी पल से मैं आपकी तरफ देखूँगा भी नहीं। मुझे अब अपनी ज़िन्दगी की भी चिन्ता भी नहीं है।"

ऐसा कह कर उसने अपने कपड़े रानी लूना के हाथ से छुड़ा लिये और वहाँ से यह कहता हुआ भाग लिया — "कम से कम मैं यह अस्वाभाविक और भयानक पाप अपने सिर ले कर मरना नहीं चाहता।"

पर रानी लूना ने जब उसे भागते हुए देखा तो बोली — "ठीक है। अब तुम देखना। आज ही मैं तुम्हारा खून पी कर रहूँगी।"

उस शाम को राजा शालिवाहन के लौटने से पहले रानी लूना ने अपने सारे गहने उतार दिये। कुछ को उसने तोड़ दिया कुछ को उसने मोड़ दिया और उनहें एक तरफ रख दिया। उसने अपने महल में रोशनी भी नहीं की।

वह एक सूने कमरे में चली गयी और वहाँ फटे पुराने कपड़े पहन कर दुखी हो कर बैठ गयी। जब राजा उसके कमरे में घुसा तो

चीख चीख कर रोने लगी। राजा उसके पास बैठ गया और उससे इस तरह ज़ोर ज़ोर से रोने की वजह पूछी।

वह बोली — "मुझसे मत पूछो अपने बेटे से पूछो जिसे घुड़साल में बहुत बढ़िया घोड़े की तरह खिलाया पिलाया गया हो। उसने मेरा दिल जलाया है। अच्छा है तुम उसे अपने पास ही रखो। मुझे छुट्टी दो।" राजा यह सुन कर बहुत गुस्सा हुआ और उससे साफ साफ बताने के लिये कहा कि उसके बेटे ने उसके साथ क्या किया।

उसने कहा — "अगर उसने तुम्हारे साथ बदतमीज़ी से बात की है। अगर उसने तुमसे कठोर भाषा में बात की है तो मुझे सब बताओ मैं उसे अभी फॉसी पर चढ़ा देता हूँ क्योंकि ऐसे बेटे का क्या फायदा। अगर उसने आज तुम्हारे साथ कुछ बुरा किया है तो जब वह बड़ा हो जायेगा तो क्या वह मेरे साथ कुछ कम बुरा व्यवहार करेगा।"

"ज़रा मेरे शरीर की तरफ देखो मेरे गहनों मेरे कपड़ों और मेरे सोफ़े की तरफ देखो तो तुम्हें झगड़े के निशान नजर आयेंगे। मैं तो उससे अपने बेटे की तरह बात कर रही थी पर उसने मुझसे मॉ की तरह व्यवहार नहीं किया।"

फिर वह अपने गहने निकाल लायी और राजा को दिखाते हुए बोली — "यह देखो यह मेरे हाथ की चूड़ी टूट गयी जब उसने मेरा हाथ मरोड़ा। और जब मैंने उसे डॉटा तो वह महल छोड़ कर भाग गया।"

यह सुन कर राजा का गुस्सा तो बहुत ऊपर चढ़ गया। वह अपने ही बेटे की इस बदतमीज़ी पर काँप रहा था। सारी रात वह सो नहीं सका। उसने वह रात तारे गिन कर और अपने बेटे के बारे में सोच सोच कर ही निकाल दी।

अगले दिन सुबह वह उठा नहाया धोया और अपने पहरेदारों से अपने वज़ीर को और पूरन को बुलाने के लिये कहा। उसने उनसे यह भी कहा कि अगर वे यह पूछें कि क्या काम है तो वे उनसे कहें कि राजा को उनसे ही कुछ काम है।

नौकर लोग यह सुन कर चले गये और जा कर वज़ीर से कहा कि राजा साहब ने उन्हें बुलाया है। फिर वे पूरन को देखने के लिये निकले। पूरन से उन्होंने हाथ जोड़ कर कहा कि राजा साहब ने आपको याद किया है।

वज़ीर की समझ में तो नहीं आया कि राजा ने उसे क्यों बुलाया है पर पूरन की समझ में आ गया कि उसके पिता ने उसे क्यों बुलाया है। उसने सोचा "मुझे सब समझ में आ रहा है कि पिताजी ने मुझे क्यों बुलाया है। पर मैं चिन्ता नहीं करता जो होगा सो देखा जायेगा।"

जब पूरन राजा के सामने आया तो राजा ने उससे कहा — "तुमने तो मुझे मुश्किल में डाल दिया है। अच्छा होता अगर तुम जन्मते ही मर जाते। देखो न तुमने घर में क्या किया है। तुम मेरी

नजरों से दूर हो जाओ। कहीं ऐसा न हो कि मैं तुम्हारे टुकड़े टुकड़े कर दूँ।

जब मैंने तुमसे शादी करने के लिये कहा तो तुमने मना कर दिया और अब तुम अपनी माँ को अपनी पत्नी बनाना चाहते हो।" यह सुन कर पूरन ज़ोर ज़ोर से रो पड़ा।

वह बोला — "पिता जी यह बात मैं आपको नहीं बता सकता। और यह तो असम्भव ही है कि जो कुछ मेरे साथ हुआ है उस पर आप मेरा विश्वास कर लेंगे। आप परेशान मत होइये। मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप इस अपराध के लिये मुझे दोष न दें।

अगर आप मेरे साथ न्याय करेंगे और यह पता करने की कोशिश करेंगे कि मैं अपराधी हूँ या बेकुसूर तो आप एक तेल से भरा हुआ बर्तन लें और उसे खूब गर्म कर लें। जब वह खूब गर्म हो जाये तो मेरा हाथ उसमें डालें।

अगर मेरा हाथ जल जाये तो आप मुझे जो चाहें सजा दें और अगर नहीं जले तभी भी आप जैसा आपका मन करे आप करने के लिये आजाद हैं।"

यह सुन कर तो राजा का गुस्सा और बढ़ गया। वह बोला — "बजाय माफी माँगने के और बजाय अपनी गलती स्वीकार करने के तुम मेरे साथ जबान लड़ा रहे हो। मैंने वहाँ उसका हर निशान और हर सबूत देखा है जो कुछ तुमने वहाँ किया है।"

यह कह कर राजा ने अपने सजा देने वालों को बुलाया और उनसे पूरन को मार डालने के लिये कहा। महल वालों ने जब राजा का यह हुक्म सुना तो सब बहुत परेशान हुए। सारे शहर वाले यह हुक्म सुन कर हक्का बक्का रह गये। सारे शहर का काम अस्त व्यस्त हो गया।

राजा साहब ने वज़ीर से कहा — "यह सब तुम्हारी गलती है।"

जब यह बात पूरन की माँ इचरान ने सुनी तो वह दौड़ी हुई राजा साहब के पास आयी और गहने उतारते हुए और सिर पर धूल डालते हुए बोली — "मेरे बेटे पूरन ने ऐसी क्या गलती कर दी है जो आप उससे इतने गुस्सा हैं। रानी लूना ने आपके ऊपर जादू कर रखा है इसी लिये आप मेरे भोले भाले बच्चे पूरन को मारना चाहते हैं।"

राजा साहब बोले — "उसके साथ साथ तुम भी मेरी आँखों के सामने से दूर हो जाओ नहीं तो उसके साथ साथ मैं तुम्हें भी मरवा दूँगा। तुम्हारा बेटा बहुत बदकिस्मत है जो एक बहुत ही बुरे दिन पैदा हुआ था। जिसने दुनियाँ में आ कर मुझे इस अपमान का दिन दिखाया।"

रानी इचरान बोली — "यह सच नहीं है। आप ज़रा अच्छी तरह सोच कर देखिये। होश में आइये। यह आप कैसे कह सकते हैं कि रानी लूना सच बोल रही है। क्या केवल उसी की वजह से आप अपने बेटे पर विश्वास नहीं कर रहे?"

राजा साहब को तो कुछ सुनना नहीं था। उन्होंने तो सजा देने वालों को अपने हुक्म को मानने के लिये कह दिया — "पूरन को जंगल ले जाओ और इसके हाथ और पैर काट दो।"

सजा सुन कर पूरन ने राजा साहब से आदरपूर्वक विदा ली और अपने सजा देने वालों के साथ चल दिया। पूरन बोला — "मैं आज बिना ताकत के हूँ और अपने हालात आपसे नहीं कह सकता जिनकी वजह से मुझे यह सजा सहनी पड़ रही है। मेरा कोई दोस्त भी नहीं है जो मुझे यह बता सके कि मेरी क्या गलती है जिसके लिये मुझे इतना दुख मिल रहा है।

मैं तो बस यही सोच सकता हूँ कि यह मेरी किस्मत में लिखा था कि मुझे अपनी सौतेली माँ रानी लूना की वजह से उनकी बेइज़्ज़ती करने वाला कहलाया जाऊँ।"

हालाँकि रानी इचरान ने अपने बेटे के लिये राजा साहब से बहुत विनती की कि उसे मारा न जाये वरना उसे "पिता" कौन कहेगा। पर राजा ने अपने कान बन्द कर लिये। उसने ज़ोर से चिल्ला कर कहा — "ले जाओ इसे और इसके हाथ पैर काट दो और फिर इसे बकरे की तरह काट दो। जल्दी जाओ और मेरे हुक्म का पालन करो।"

सजा देने वाले पूरन को पकड़ कर ले चले। जब वे शहर के बाहर जा रहे थे तो रानी लूना ने छिपा कर पूरन को एक चिट्ठी भेजी — "अगर तुम मेरी बात मानोगे तो मैं तुम्हारी रक्षा करूँगी और यह

दोष किसी दूसरे नौकर पर मढ़ दूँगी। इस बारे में सोचो। अभी भी समय है। बिना किसी बात के ज़िन्दगी क्यों खोते हो।"

पर पूरन ने उस चिट्ठी पर थूक दिया और कहा — "मैं अपनी ज़िन्दगी बचाना नहीं चाहता जो किसी ऐसे अपराध के बोझ से दबी हो। अगर इस तरह से मुझे **1000** साल भी जीना मिले तो बिना अपराध के में एक बार मरना ज़्यादा पसन्द करूँगा। एक बार तो मरना ही है।"

एक गहरी साँस ले कर वह फिर बोला — "भगवान आपके साथ भी ऐसा ही हो जैसा आपने मेरे साथ किया क्योंकि जिस अपराध में आपने मुझे बाँधा है वह बहुत ही अस्वाभाविक है। अब जो भी मेरे सिर पर पड़ी है मैं तो उसे सह लूँगा पर दुख की बात यह है कि मेरे दुख की वजह से मेरी माँ मर जायेगी।"

पूरन ने सजा देने वालों से विनती की कि वह कुछ पल उसे उसकी माँ के महल में ले चलें। उन्होंने उसकी विनती सुन ली। पूरन और उसकी माँ इचरान एक बार फिर मिले। उन्हें एक दूसरे से मिलने की फिर कोई उम्मीद नहीं थी सो उन्होंने एक दूसरे को अन्तिम विदा कहा।

पर इचरान फिर लौटी और छाती पीटते हुए बोली — "छोटे से अपराध के लिये मेरे सीधे सादे बेटे पूरन भगत को मौत की सजा दी जा रही है। यह कैसा न्याय है।"

सजा देने वाले उसे फिर जंगल ले गये और उसके हाथ पैर काट दिये और उसे एक सूखे कुँए में फेंक दिया। फिर उसका एक प्याला खून ला कर उन्होंने रानी लूना को ला कर दे दिया जो उसे देख कर बहुत खुश हुई।

इस बात को **12** साल गुजर गये। एक दिन गुरू गोरखनाथ अपने कुछ शिष्यों के साथ दौरे पर निकले।

घूमते घूमते वे सियालकोट आ पहुँचे। वहाँ आ कर उन्होंने उसी सूखे कुँए के पास अपने तम्बू लगा दिये जिसमें पूरन पड़ा हुआ था। उसके बाद गुरू जी ने अपने शिष्यों को पानी लाने के लिये भेजा।

पर जब शिष्य ने पानी खींचने के लिये अपना लोटा कुँए में नीचे गिराया तो उसने देखा कि कुँए में तो एक आदमी पड़ा था। शिष्य तो यह देख कर डर गया कि कहीं वह कोई आत्मा या भूत या कोई राक्षस न हो।

वह दौड़ा दौड़ा गुरू जी के पास गया और उनको जा कर जो कुछ उसने देखा था वह सब बताया — "गुरू जी। जैसे ही मैं कुँए के पास पहुँचा और पानी खींचने को ही था कि मेरे तो आश्चर्य का ठिकाना ही न रहा जब मैंने उसमें एक आदमी को बैठे देखा।

अगर आप खुद चल कर देखें तो आपको विश्वास हो जायेगा कि ऐसा ही है। मैं नहीं बता सकता कि वह कोई आदमी है या बुरी आत्मा है या फिर कोई राक्षस।"

यह सुन कर गुरू जी उस कुँए के पास गये। उनके सारे शिष्य भी उनके पीछे पीछे गये। जब वे सब कुँए के पास पहुँच गये तो बाकी सब तो चुप रहे केवल गुरू जी बोले — "तुम कौन हो। तुम्हारा नाम क्या है। और तुम यहाँ इस कुँए के अन्दर कैसे पहुँचे।"

पूरन बहुत ज़ोर ज़ोर से रोते हुए बोला — "आज **12** साल के बाद मैंने किसी आदमी का चेहरा देखा है। आप मुझे देख सकते हैं कि मैं भी एक आदमी ही हूँ। अगर आप मुझ पर दया करना चाहते हैं तो मेहरबानी कर के मुझे इस कुँए से बाहर निकाल लीजिये तब मैं आपको अपनी पूरी कहानी बताऊँगा।"

तब गुरू जी ने अपने शिष्यों को पूरन को कुँए में से बाहर निकालने की आज्ञा दी। शिष्यों ने तुरन्त ही पूरन को कुँए से बाहर निकाल दिया।

जब पूरन बाहर आ गया तो गुरू जी उसे देख कर बहुत खुश हुए और बोले — "भगवान इस पर अपनी दया रखना।" कह कर वह अपने शिष्यों के साथ पूरन को ले कर अपने तम्बू में चले गये और वहाँ ले जा कर उसे बिठाया।

तब उन्होंने पूरन से पूछा — "तुम्हारा घर कहाँ है।"

पूरन बोला — "मैं मूल रूप से राजा विक्रमाजीत के उज्जैन देश से आता हूँ पर हमारे पूर्वज इधर सियालकोट में आ कर बस गये थे। मेरा नाम पूरन है। मेरे पिता का नाम राजा शालिवाहन है।

बारह साल पहले उन्होंने मेरे हाथ पैर कटवा कर यहाँ इस कुँए में डलवा दिया था।

मैं आपको अभी बस इतना ही बता सकता हूँ इससे ज़्यादा नहीं जब तक आप मुझे और बताने के लिये मजबूर न करें। अगर आप मुझे मजबूर करेंगे तो मैं आपको वह भी बता दूँगा।"

यह सुन कर गुरू जी के शिष्य बोले — "तुमको खुश होना चाहिये कि तुमको गुरू गोरखनाथ जी मिल गये। वह भगवान को बहुत प्यारे हैं। उन्होंने उनकी पूजा भी स्वीकार कर ली है। तुम उनसे कुछ भी माँग सकते हो जो तुम्हारी खुशी हो।"

तब पूरन ने उन्हें अपनी दुखभरी कहानी सुनायी। वह उन्हें अपने पिता की दया बताना नहीं भूला। गुरू जी उसकी कहानी बड़े ध्यान से सुनते रहे।

पूरन बोला — "जब वह पैदा हुआ था तो सब लोग उसे बहुत प्यार करते थे। बारह साल के बाद मैं अपनी मीनार से बाहर निकला। जब मेरे पिता ने मुझे देखा तो उन्होंने अपने मन्त्री से मेरी शादी कराने की इच्छा प्रगट की पर मैंने शादी कराने से मना कर दिया।

कुछ समय बाद उन्होंने मुझे हुक्म दिया कि मैं अपनी माँ और सौतेली माँ से मिल कर आऊँ। पर जब मैं अपनी सौतेली माँ रानी लूना के महल में पहुँचा आप सोच सकते हैं कि वह मेरे साथ क्या करना चाहती थीं।

वह सारी शर्म छोड़ कर मुझसे प्यार करना चाहती थीं पर मैं उनके हाथों से अपने कपड़े छुड़ा कर महल से भाग गया। तब रात में किसी समय मेरी सौतेली माँ ने मेरे पिता को यह विश्वास दिला दिया कि मैंने उनके साथ बुरा बर्ताव किया। राजा ने उनकी बात सुन ली और बिना कुछ सोचे विचारे मेरे हाथ पैर कटवा कर कुँए में फिंकवा दिया।"

गुरू गोरखनाथ जी पूरन की कहानी सुन कर बहुत खुश हुए। इन्होंने एक बर्तन से थोड़ा सा पानी ले कर पूरन के ऊपर छिड़क दिया और भगवान की प्रार्थना की कि वह पूरन के चारों हाथ पैर ठीक कर दे। भगवान ने गुरू जी की सुनी और पूरन बिल्कुल ठीक हो गया।

जब पूरन ने देखा कि वह तो बिल्कुल ठीक हो गया तो उसने गुरू जी को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और उनसे विनती की कि वह उसे अपना शिष्य बना लें। गुरू जी ने उससे कहा कि अब उसे अपने घर जाना जाना चाहिये और अपने पिता से मिलना चाहिये।

पूरन बोला — "मैं ज़्यादा तो नहीं कह सकता पर क्या आप मेरी विनती स्वीकार कर के मुझे "जोग" की शिक्षा देंगे। मेरे कान छिदाने के बाद आप मुझे पत्थर के कान के बुन्दे अपने हाथों से पहनायेंगे।"

गुरू जी बोले — "तुम्हें तो जोग के बारे में अभी सोचना भी नहीं चाहिये। जोगी के नियमों का पालन करना अभी तुम्हारे बस के

बाहर की बात है। तुम्हें उसके लिये भूख प्यास सहनी पड़ेगी धीरज के साथ खतरों से खेलना पड़ेगा और कदम कदम पर मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। दुनियॉ छोड़नी पड़ेगी। तुम्हें अपनी सब इन्द्रियों के सुख छोड़ने पड़ेंगे और एक ऐसी नयी दुनियॉ में जिन्दगी जीनी होगी जिसको जीना बहुत मुश्किल होगा।"

पर पूरन अपनी ज़िद पर अड़ा रहा। वह हाथ जोड़ कर बोला — "मैं आपका कहा सब कुछ मानूँगा। आप जिस रास्ते पर कहेंगे उसी पर चलूँगा। मेरे ऊपर दया कर के मुझे अपना शिष्य बना लीजिये। मैं आपकी भरसक सेवा करूँगा और आप जो भी कहेंगे वही करूँगा।"

आखिर गुरू जी को पूरन की बात माननी ही पड़ी। उसके सिर के थोड़े से बाल मुड़ाने के बाद उन्होंने उसके कान खुद छेदे और खुद ही उनमें पत्थर के बुन्दे पहनाये। इस तरह पूरन एक जोगी या फ़कीर बन गया।

उसके फ़कीर बनने के दो दिन बाद गुरू जी ने उससे रानी सुन्दरा के महल जाने के लिये और वहॉ से अपने आश्रम के लिये खाना लाने के लिये कहा।

जब वह रानी सुन्दरा के महल जा रहा था तो शिष्य आपस में बात करने लगे — "देखते हैं कि जब यह वहॉ से लौट कर आयेगा तब कैसा होगा।"

पर पूरन ने इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। उसने गुरू जी से आशीर्वाद देने की प्रार्थना की और भगवान का नाम ले कर रानी सुन्दरा के महल की तरफ चल दिया।

जाते समय गुरू जी ने भी उससे कहा — "देखो तुम आदमी हो या स्त्री सबको एक नजर से देखना। यही दुनियाँ को जीतने एक अकेला रास्ता है।"

पूरन बोला — "अगर मुझे दुनियाँ के भोग ही भोगने होते तो मैंने रानी लूना की ही सुन ली होती। नहीं तो अपने पिता की शादी की सलाह ही मान ली होती। और या फिर जब आपने मुझे घर वापस जाने के लिये कहा था मैं तभी चला जाता। आप मेरा विश्वास करें कि मेरे अन्दर कोई भी सांसारिक इच्छा नहीं है।"

यह कह कर वह सुन्दरा के महल चला गया। वहाँ पहुँच कर उसने ज़ोर से भिक्षा माँगी तो एक दासी भिक्षा ले कर बाहर आयी। पूरन बोला — "आज मेरा काम दासी से नहीं है और न ही मेरा काम उससे भिक्षा लेना है। रानी सुन्दरा से कहो कि वह खुद भिक्षा ला कर मुझे दे।"

दासी तो उसे देखते ही उससे प्यार करने लगी। उसने जोगी को तो कोई जवाब नहीं दिया वह सीधे अन्दर गयी और जो कुछ भी जोगी ने कहा था उसमें कुछ मिला जुला कर उससे कह दिया।

उसने रानी से कहा — "आप हमेशा अपनी ही सुन्दरता की तारीफ करती रहती हैं ज़रा इस फ़कीर को देखिये जो आपके घर के

सामने बैठा है। वह तो आपसे हजार गुना सुन्दर है। आप खुद ही चल कर देख लीजिये।"

रानी तुरन्त ही अपने महल की एक खिड़की पर गयी और बाहर झाँक कर देखा ते उस सुन्दर नौजवान जोगी को देख कर खुद भी उससे प्यार करने लगी। उसने दासी से कहा "जाओ उस फ़कीर को अन्दर बुला लाओ।"

दासी फिर से पूरन के पास आयी और उसे रानी का सन्देश दिया कि "अन्दर आओ रानी जी आपसे मिलना चाहती हैं।"

पूरन बोला — "यह हम फ़कीरों की रीति नहीं है कि हम घर के अन्दर जायें। जाओ और रानी जी से कह दो कि वह खुद ही बाहर आयें और जो भी भिक्षा उन्हें मुझे देनी हो दें।"

जब रानी ने यह सुना तो उसने अपनी आलमारी खोली उसमें से एक थाली भर कर जवाहरात निकाले और खुद ही फ़कीर को देने के लिये बाहर चली गयी और बोली — "मेहरबानी कर के इन्हें स्वीकार करें तो मैं अपने आपको कृतार्थ समझूँगी। मैं अपने आपको बहुत सौभाग्यशाली समझूँगी अगर आप मुझे और मेरे घर को भी स्वीकार कर लें तो।"

पूरन ने रानी सुन्दरा से जवाहरात तो ले लिये पर उसकी दूसरी बात को स्वीकार नहीं किया और अपने गुरू जी के पास वापस लौट आया। गुरू जी को उसने अपनी सारी कहानी सुना दी।

गुरू जी ने अबकी बार आश्चर्य से उसे देखा और पूछा कि उसे इतने सारे जवाहरात किसने दिये। पूरन ने बताया कि ये सब उसे रानी सुन्दरा ने ही दिये हैं।

गुरू जी बोले — "पर ये पत्थर तो फ़कीरों के किसी काम के नहीं। तुमको तो उन्हें सड़क पर पड़े पत्थरों की तरह समझना चाहिये। अच्छा हो अगर तुम वापस जा कर इन्हें रानी को वापस कर आओ।"

सो अगले दिन पूरन फिर से रानी सुन्दरा के महल चल दिया। रानी सुन्दरा तो उसका बड़ी उत्सुकता से इन्तजार कर रही थी। जब वह वहाँ पहुँचा तो उसने उसका बड़े अच्छे से स्वागत किया।

पूरन ने उसे जवाहरातों के लिये उसे फिर से धन्यवाद दिया और उन्हें वापस लेने के लिये कहा। उसने कहा — "आप अपने जवाहरात वापस ले लें। मेरे गुरू जी इन्हें देख कर खुश नहीं हुए। अगर आपके घर में खाने पीने की कोई चीज़ हो तो वह मुझे दे दें।"

तब रानी अन्दर गयी और अपने नौकरों के हाथ उसने कई थाल भर कर खाने की चीज़ें गुरू गोरखनाथ जी के पास ले जाने के लिये तैयार करवा दीं।

फिर वह पूरन से बोली — "चलिये मैं भी आपके साथ आपके गुरू गोरखनाथ के पास चलती हूँ।" सो वह पूरन और उनके पीछे नौकर लोग गुरू जी के आश्रम चल दिये।

आश्रम आ कर रानी सुन्दरा ने वह सारा सामान गुरू जी के चरणों में अर्पण कर दिया और नमस्कार कर के खुद भी उन्हीं के पास बैठ गयी। उनके चारों तरफ गुरू जी के शिष्य खड़े थे जो उस दृश्य को देखने के लिये चले आये थे।

रानी सुन्दरा ने वहॉ खड़े सब लोगों की तरफ देखा पर उसे गुरू जी और पूरन के अलावा और कोई नजर नहीं आया जिसे उसकी देखने की इच्छा हो। रानी सुन्दरा का आना गुरू जी को बहुत अच्छा लगा तो उन्होंने उससे पूछा "तुम्हें क्या चाहिये।"

रानी सुन्दरा बोली — "आपकी कृपा और आशीर्वाद से मेरे घर में सब कुछ है – नौकर चाकर घोड़े हाथी दास दासियॉ। बस आपकी शुभकामनाऐं और भगवान की कृपा चाहिये।"

गुरू जी दोबारा उससे पूछा "तुम्हें क्या चाहिये निडर हो कर मॉगो।"

तब रानी सुन्दरा ने बीच में खड़े हो कर चारों तरफ अपनी निगाह डाली और उसने पूरन को ही इस लायक समझा कि वह उसे मॉग ले। गुरू जी ने उसे इजाज़त दे दी और पूरन को उसके साथ जाने का हुक्म दिया।

पूरन चुप रहा वह गुरू जी के हुक्म को टालना नहीं चाहता था पर वह उठ कर रानी सुन्दरा के पास गया और वहॉ से वह उसके साथ उसके महल चला गया।

जब वह रानी सुन्दरा के महल पहुँचा तो रानी सुन्दरा बोली — “मैं तो दुनियाँ की सबसे भाग्यवान स्त्री हूँ और मेरा घर भी बहुत शुभ है। आज गुरू गोरखनाथ जी की कृपा से मेरी इच्छा पूरी हो गयी। आज गुरू जी की कृपा से मेरा यह इतना अच्छा सौदा हो गया जैसा कभी किसी का नहीं होगा।”

पर पूरन इस बात से बिल्कुल भी खुश नहीं था क्योंकि जैसे जैसे वे महल के पास आते जा रहे थे वह अपने दिमाग में वहाँ से दूर भागता जा रहा था।

जब वे घर के दरवाजे के पास पहुँचे तो पूरन ने रानी सुन्दरा से विनती की कि वह उसे जंगल जाने दे। रानी सुन्दरा ने उसे जाने की इजाज़त दे दी और दो दासियों को उसके साथ उसका काम करने के लिये भेज दिया।

कुछ देर तक तो पूरन उनके साथ चला पर फिर वह वहाँ से उनसे यह कह कर भाग गया — “जाओ अपनी रानी से कह देना कि मैं तो चला गया।”

दासियाँ बेचारी घर वापस आयीं और आ कर रानी सुन्दरा से यह सब कहा। रानी सुन्दरा ने जैसे ही यह सुन वह तो बहुत ज़ोर से रो पड़ी और बोली — “अगर मैं यह जानती कि तुम मेरे साथ यह चाल खेलोगे तो मैं तुम्हें जंगल जाने की इजाज़त कभी नहीं देती। बड़ी मुश्किल से तो मैंने तुम्हारे चेहरे की तरफ देख कर आनन्द का

अनुभव किया था कि एक दुश्मन की तरह तुम मुझे यह दुख दे कर छोड़ कर चले गये।

ओह प्रिय। तुम्हारे ऊपर तो मेरा कोई वश नहीं है पर केवल तुम्हारे लिये आज मैं अपनी जान दे रही हूँ।"

कह कर वह अपने महल की छत पर गयी और वहाँ से बहुत देर तक जंगल की तरफ देखती रही। वहाँ से उसे कुछ दिखायी नहीं दिया और पूरन के वापस आने की भी उसे उम्मीद नहीं रही सो वह वहाँ से कूद पड़ी और मर गयी। सारे देश में उसके मरने का दुख मनाया गया।

उधर पूरन वहाँ से भाग कर तिल्ला आया जहाँ उसके गुरू जी रहते थे। गुरू जी ने जैसे ही पूरन को आते देखा तो वह समझ गये कि लगता है यह रानी सुन्दरा को छोड़ कर चला आया है।

वह उससे गुस्से से बोले — "तुमने मेरी इच्छा के अनुसार काम नहीं किया।"

पूरन उनके सामने रो पड़ा और बोला — "गुरू जी मैंने आपसे पहले ही कहा था कि इन सांसारिक इच्छाओं में मेरी कोई रुचि नहीं है फिर भी आपने मुझे शादी करने के लिये कहा।"

सब कुछ समझ कर गुरू जी उससे बहुत खुश हुए और उसे अपनी सेवा में रख लिया। अगले दिन गुरू जी ने पूरन से कहा कि वह सियालकोट जाये और अपने पिता से मिले सो वह तुरन्त ही सियालकोट चला गया।

सियालकोट पहुँच कर वह अपने एक पुराने बागीचे में गया जो पानी की कमी की वजह से कई साल से सूख गया था। जैसे ही वह उस बागीचे के दरवाजे में घुसा कि वह बागीचा हरा हो गया। उसके पेड़ों पर पत्तियाँ आने लगीं उस पर फूल खिलने लगे।

यह देख कर लोग कहने लगे कि यहाँ कौन आया है जिसकी वजह से यह बागीचा फिर से हराभरा हो गया और फूल गया। बहुत सारे लोग उसे देखने के लिये आये। फिर तो उससे जिसने जो चाहा पाया। लोगों की इच्छाओं के पूरे होने की यह खबर राजा शालिवाहन और छोटी रानी लूना ने भी सुनी।

तो वे भी इस अजीब फ़कीर को देखने पहुँचे। लोगों ने उन्हें रास्ता देते हुए पूरन से कहा "देखिये राजा और रानी आपसे मिलने आये हैं।"

जब पूरन ने यह सुना तो वह उनके सम्मान में उठा और उनका आदर सत्कार किया। राजा शालिवाहन बोले — "मैं तो आपसे मिलने के लिये आया हूँ पर आपने तो इतनी रस्मों के साथ मेरी आवभगत कर के मेरे सिर पर बोझ चढ़ा दिया।"

पूरन बोला — "बताइये आपका यहाँ कैसे आना हुआ। आपको क्या चाहिये।"

राजा शालिवाहन बोले — "आप तो एक बहुत ही बड़े साधु और भगवान के दूत लगते हैं। मुझे बस एक बेटा चाहिये। अगर आपकी मेहरबानी हो जाये तो मुझे बस यही एक वरदान दीजिये।"

पूरन बोला — “मुझे लगता है कि आपके पहले ही एक बेटा था पर आपने उसे किसी के साथ जंगल भेज कर उसे बकरे की तरह से कटवा कर मरवा दिया।”

यह सुन कर राजा ज़ोर ज़ोर से रो पड़ा और बोला — “जी हॉ। एक बार मेरे घर में भी मेरा एक बेटा था जिसे मेरी रानी इचरान ने जन्म दिया था। जब वह छोटा था तभी मैंने उसे उसकी मॉओं से मिलने के लिये भेजा। पर जब उसने मेरी छोटी रानी यानी अपनी सौतेली मॉ को देखा तो अपनी लाज शर्म को ताक पर रख कर उससे हिंसा का बर्ताव किया।”

पूरन बीच में ही बोला — “ज़रा ख्याल रखिये कि आप क्या बोल रहे हैं। आपका बेटा बेकुसूर था पर उसकी मॉ इतनी साफ दिल की नहीं थी।”

फिर वह रानी लूना की तरफ देख कर बोला — “रानी लूना जी। क्या आप मुझे बतायेंगी कि आपके साथ यह सब क्या हुआ था। भगवान आपको एक बेटा जरूर देगा पर इससे पहले आपको अपनी गलती स्वीकार करनी पड़ेगी।”

रानी लूना बोली — “मेरे अकेले की गलती थी पूरन की नहीं। उसका इलजाम मुझे ही दिया जाना चाहिये पूरन को नहीं। जब वह मेरे महल में आया तो जैसे ही मैंने उसके सुन्दर चेहरे की तरफ देखा तो मैंने उससे विनती की कि वह मेरा दोस्त हो जाये।

लेकिन पूरन नहीं माना तो मैंने कहा "अगर तुम मेरे नहीं बनोगे तो तुम्हारे साथ बहुत बुरा होगा।" इसके बाद मैंने राजा के कान भरे और उन्हीं के द्वारा उसे मरवा दिया।"

राजा शालिवाहन ने जब रानी लूना की बात सुनी तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ वह चिल्लाया — "ओ नीच स्त्री। तो यह तेरा कारनामा था जिसकी वजह से मैंने अपना बेटा खोया। यह तू थी जिसने यह सब गड़बड़ी की थी जिसकी वजह से मुझे अपना बेटे से हाथ धोना पड़ा।"

पूरन ने जब देखा कि उसके माता पिता दोनों रो रहे थे तो वह भी रो पड़ा। फिर उसने रानी लूना से कहा — "बीती बातों को भूल जाइये। जो भी किस्मत में लिखा होता है वह सामने आता ही है।"

उसके बाद उसने राजा शालिवाहन को चावल का एक दाना दिया और उसे अपनी रानी को देने के लिये कहा और कहा कि इसको खाने के बाद उसे एक बेटा हो जायेगा। पर उसके साथ एक परेशानी यह होगी कि रानी लूना उसके साथ भी वही करेंगी जो उन्होंने पूरन के साथ किया था। और इस परेशानी की वजह से वह मर जायेगा।"

इस बीच में पूरन की असली माँ इचरान ने भी पूरन के चमत्कारों के बारे में सुना तो उसने सोचा कि वह भी अपनी आँखों का इलाज करा कर आयेगी सो वह उसकी जगह चल दी।

असल में रोते रोते उसकी ऑखों से कम दिखायी देने लगा था। वह बड़ी मुश्किल से देख पा रही थी कि वह किधर जा रही थी। वह ठोकर खाती चली जा रही थी कि पूरन ने देखा कि उसकी मॉ चली आ रही थी और वह बड़ी मुश्किल से चल पा रही थी। वह तुरन्त उठा और उसे पकड़ कर ला कर बिठाया।

उसने उससे पूछा — "मॉ आपकी ऑखों को क्या हुआ है।"

मॉ बोली — "जबसे मेरा बेटा पूरन गया है बस तभी से मैं अन्धी सी हो गयी हूॅ।"

पूरन बोला — "आपको पूरन का अफसोस नहीं करना चाहिये और न उसके लिये रोना चाहिये क्योंकि जो एक बार मर गया अब वह वापस नहीं आ सकता। आप भगवान की प्रार्थना करें आपकी ऑखों की रोशनी जरूर वापस आ जायेगी।"

मॉ ने बेटे की आवाज पहचान ली। उसने पूछा — "बेटा तुम किधर से आये हो। तुम्हारा जन्म कहॉ हुआ था। तुम्हारे पिता कौन हैं। वह कौन सी सौभाग्यशाली मॉ है जिसने तुम्हें जन्म दिया है। अगर मैं देख पाती तो मैं बता देती कि तुम कौन हो पर तुम्हारी आवाज से मुझे लगता है कि तुम पूरन हो। क्या मैं ठीक कह करही हूॅ?"

पूरन बोला — "मैं गुरू गोरखनाथ का शिष्य हूॅ और मैं एक जोगी हूॅ। मेरे पूर्वज उज्जैन के जाने माने लोगों में थे। मैं राजा

शालिवाहन का बेटा हूँ मेरा नाम पूरन है और जाति से मैं पॅवार यानी राजपूत हूँ।"

यह सुन कर पूरन की मॉ बहुत खुश हुई। उसकी ऑखों की रोशनी वापस आ गयी और उसने अपने बेटे को गले लगा लिया। अब उसका सारा दुख दूर हो गया।

जब राजा शालिवाहन ने यह सब सुना और देखा तो वह बहुत शर्मिन्दा हुआ। वह अपनी बेवकूफी पर पछताने लगा।

पूरन बोला — "जनाब जाने दीजिये। जैसा किस्मत में लिखा था वह हुआ। इसी तरह से मेरी किस्मत में भी जो लिखा था वह हुआ।"

जब रानी लूना जो कुछ उसने उससे कहा था फिर भी उसने उसके साथ अच्छा व्यवहार किया था पर सोच विचार कर रही थी और दुखी हो रही थी कि पूरन ने उससे फिर कहा — "आप बीती बातों पर चिन्ता मत कीजिये। मुझे अपना बेटा जान कर मुझे माफ कर दीजिये। इसमें आपकी इतनी गलती नहीं है जितनी कि मेरे पिता की गलती है क्योंकि उन्होंने इस मामले की कोई जॉच पड़ताल नहीं की।"

यह सुन कर राजा शालिवाहन हाथ जोड़ कर रो पड़ा "हे भगवान अपने बेटे पर मुसीबतों का पहाड़ तोड़ने के लिये मैं अकेला ही जिम्मेदार हूँ। मैं आपको क्या जवाब दूँगा।"

तब पूरन ने कहा — "जो हो गया सो हो गया। अब आप अपने घर जाइये और खुशी से रहिये। मैं भी जहाँ से आया हूँ वहाँ वापस लौटता हूँ।"

राजा शालिवाहन बोला — "जनाब अब आप अपने घर मत जाइये। मेरे साथ मेरे घर चलिये। मेरे सब महलों और खजानों की चाभियाँ ले लीजिये और मेरी बजाय आप राजा बन जाइये। अगर आप मुझे अब छोड़ कर गये तो मैं तो निश्चित रूप से मर जाऊँगा। मुझे छोड़ कर मत जाइये।"

पर पूरन ने अपने पिता की विनती अस्वीकार कर दी। उसके बाद उसकी माँ इचरान ने भी उससे विनती की पर वह उसकी बात भी नहीं माना।

वह बोला — "जब मैं बच्चा था तब मुझे यहाँ से बाहर निकाल दिया गया अब मैं लोगों को क्या मुँह दिखाऊँगा। पर मैं आप लोगों को अपने गुरू की जमानत देता हूँ कि मैं आप लोगों से फिर आ कर मिलूँगा। अभी आप मुझे कुछ भी कह कर मत रोकिये। अभी मुझे जाने दीजिये मैं फिर आऊँगा और आपसे फिर मिलूँगा।"

इतना कह कर पूरन वहाँ से जाने के लिये उठ गया। फिर वह अपनी माँ और पिता से बोला — "पिता जी। रानी लूना को आप अपनी रानी ही समझिये और मेरी माँ की भी देखभाल कीजिये।"

यह कह कर वह वहाँ से अपने गुरू जी के पास तिल्ला आ गया। वहाँ आ कर उसने अपने गुरू को नमस्कार किया और उन्हें

अपने और अपने माता पिता के बीच में हुई सब बातें बतायीं। गुरू जी उसकी बातें सुन कर बहुत खुश हुए और उसे हमेशा खुश रहने का आशीर्वाद दिया।

2–1 रसालू की शुरू की ज़िन्दगी[43]

सियालकोट के राजा शालिवाहन[44] इतिहास के एक बहुत बड़े राजा विक्रमाजीत की सन्तान थे। राजा विक्रमाजीत उज्जैन के राजा थे। राजा शालिवाहन की दो पत्नियाँ थीं बड़ी इचरान और छोटी लूना जो एक चमड़ा रंगने वाले की बेटी थी।

बड़ी रानी इचरान से जिससे शालिवाहन ने पहले शादी की थी एक बेटा था पूरन जिसे ज्योतिषियों की सलाह पर जन्म से **12** साल की उम्र होने तक पिता से अलग कर दिया गया था। इसलिये वह एक अलग महल में रहता था।

यह समय खत्म हो जाने पर उसे दरबार में लाया गया। एक दिन राजा ने पूरन को अपनी नयी पत्नी लूना से मिलने के लिये भेजा जो उम्र में करीब करीब राजकुमार पूरन के बराबर की ही थी और बहुत सुन्दर थी।

---

[43] The Beginning of Rasalu's Life. (Tale No 3-1 of the Book). This introductory chapter has been compiled from scattered fragmaents and traditiona.

[44] King Shalivahan has been sung by bards by the names "Sulwaan", or "Siriwaan", or "Sariban". He is said to have overthrown the empire of Vikramaditya, but if that was so, the Shalivahan of the era beginning 77 AD must also be merely nominal, and that exploit will have occurred (56 +77) one hundred and thirty-three years after the true era of Vikramaditya, that is 677 AD. It must be remembered that though Greek rule in the Kabul Valley and on the Indus ended about 120 BC, the most flourishing period of Indo-Scythian rule ranged from circa 40 BC to 100 AD, if not later: and that Indo-Scythians ruled east of the Indus as well as west is certain, as it has been shown that Manikyaal, the great Buddhist stupa and monastery, which stood between Jhelam and Rawal Pindi, was founded, or at least restored, by Huvishk of the Tochari tribe of the Indo-Scythians, who is believed to have reigned some time between 57 BC and 27 AD.

पूरन भी बहुत सुन्दर था। जैसे ही लूना ने पूरन को देखा तो वह उससे प्रेम करने लगी। पर पूरन ने उसकी बात बिल्कुल ही नहीं सुनी और उसने उसका अपमान भी कर दिया।

इससे लूना ने उसके पिता के कान भर कर उसे देश निकाला और मौत की सजा दिलवा दी। उसे मारने वाले जिनको उसे सौंपा गया था उन्होंने उसे उसके हाथ पैर काट कर एक सूखे कुँए में डाल दिया जहाँ वह पड़ा रहता और मर जाता।

उस कुँए में वह कई साल तक पड़ा भी रहा कि एक दिन गुरू गोरखनाथ उधर आ निकले और उन्होंने उसे बचा लिया। उन्होंने उसके हाथ पैर ठीक किये और उसके ऊपर दया कर के उसे अपनी शरण में ले लिया।

राजकुमार पूरन ने अब फ़कीर बनने का निश्चय किया और अपनी पहचान छिपाते हुए अपने गुरू की सलाह से सियालकोट में अपने पिता के महल के पास ही एक सूखे हुए बागीचे में ठहर गया। उसकी पवित्रता की प्रसिद्धि वहाँ से दूर दूर तक फैलने लगी।

उसकी प्रसिद्धि उसके पिता राजा शालिवाहन के कानों तक भी पहुँची। उनके नौकरों ने बताया कि उनके महल के पास एक सूखा उजड़ा सा जो बागीचा था वह पूरन के आने बाद हरा भरा हो गया है।

सो राजा और उसकी छोटी रानी उसके पास उससे अपनी इच्छा पूरी करवाने के लिये पहुँचे। उनको आते देख कर पूरन बोला —

"वह देखो मेरे पिता आ रहे हैं। और केवल मेरे पिता ही नहीं बल्कि मेरी सौतेली माँ भी आ रही हैं। अगर किसी वजह से मेरी सौतेली माँ मुझे पहचान लें तो वह फिर से मुझे कोई बुरा काम करने के लिये कहेंगी।"

पर क्योंकि वह खुद एक भला आदमी था सो उसने सोचा "मुझे इतनी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। मुझे भगवान पर भरोसा रखना चाहिये। अब जो भी वह करेंगी वह उसकी खुद ही जिम्मेदार होंगी। इसलिये चाहे उन्हें मेरी याद हो या न हो पर मुझे तो उनके आदर में खड़े हो कर उनका आदर करना ही चाहिये।"

जब राजा और छोटी रानी उसके पास आये तो उसने बड़ी विनम्रता से खड़े हो कर उन्हें नीची आँखें कर के सिर झुकाया तो राजा बोले — "तुम्हें सिर झुकाने कै कोई आवश्यकता नहीं थी। तुम तो फ़कीर हो सिर तो मुझे झुकाना चाहिये था।"

पूरन बोला — "मेरे भी एक मालिक थे। अब वह मर गये हैं। पर मुझे उनका चेहरा अभी भी याद है वह आपके चेहरे से बहुत मिलता जुलता था। इसीलिये मैंने आपको अपना मालिक समझ कर आदर से सिर झुकाया।"

तब रानी ने उससे कहा — "मैं आपसे मिलने इसलिये आयी हूँ क्योंकि मेरे कोई बच्चा नहीं है।"

फ़कीर के रूप में पूरन बोला — "आपके बेटा जरूर होगा। पर आपके बेटे की माँ हमेशा रोती ही रहेगी जैसे कि आपके सौतेले बेटे की माँ हमेशा रोती ही रही है।

और जिस तरह से आपके धोखा देने की वजह से रानी इचरान के बेटे के बुरे दिन आ गये उसी की तरह से एक बहुत ही ताकतवर आदमी के वचन की वजह से आपका बेटा अपने दुश्मनों को जीतेगा। फिर भी वह एक स्त्री के धोखा देने से मरेगा।

यह कहते हुए पूरन ने चावल का एक दाना अपने पिता को दिया कि वह उसे अपनी रानी लूना को दे दें जिससे उनके एक बेटा हो जाये।

समय आने पर राजा के एक बेटा हुआ जिसका नाम उन्होंने रखा "रसालू"। पर उसके जन्म के साथ ही दुख छा गया क्योंकि उसके जन्म के समय के सितारों की दशा ऐसी थी जिससे उसकी ज़िन्दगी में तूफान आने वाला था।

ज्योतिषियों का कहना था कि उसके जन्म की वजह से राजा के ऊपर कोई मुसीबत आ सकती है। इसलिये उसे जन्म के तुरन्त बाद ही एक ऐसी अकेली जगह भिजवा दिया गया जहाँ उससे उसके माता पिता न मिल सकें। जैसे कि उसके सौतेले भाई पूरन को भिजवा दिया गया था उसे भी वहाँ **12** साल तक रहना था।

जैसे जैसे वह बड़ा होने लगा उसको पुराने राजाओं की कहानियाँ सुना सुना कर उसके भूत काल की शान का ज्ञान का पता

चलता गया। बाद में तो उसके कानों में तलवार की आवाज के घुँघरू बजने लगे।

उसके जैसे ओहदे वाले आदमी के लिये तो यह ठीक ही था साथ में यह उसकी अपनी किस्मत भी थी सो उसने उसे मन लगा कर सीखा और उसका अभ्यास किया।

वह जादूगरी में बाण चलाने में तलवार और भाला चलाने में सभी में बहुत होशियार हो गया था। मन बहलाने के लिये वह शतरंज खेलता हिरन मारता। इस तरह राजकुमार रसालू के बचपन के दिन गुजर गये। अब वह **12** साल का हो गया था तो अब वह अपने पिता के दरबार में जा सकता था। अपनी माँ से मिल सकता था।

अपनी उम्र के हिसाब से वह बहुत ताकतवर और बहादुर था। वह अब लड़का कम और आदमी ज़्यादा लगता था। वह लड़ाई के अब हर हुनर में होशियार हो गया था।

लेकिन अभी उसका एक शौक और बाकी था जिसमें वह बहुत होशियार था और वह था गुलेल से पत्थर मारना। वह नदी से पानी भर कर लाती शहर की स्त्रियों को देखा करता। उनके सिर पर भरे पानी के घड़े या बर्तन रखे रहते।

वह महल की छत पर खड़ा हो जाता और निशाना बाँध कर उन घड़ों के पत्थर के टुकड़ों से मारता। उसके अचूक और ज़ोरदार

निशाने से उनके घड़े फूट जाते और सारा पानी बिखर जाता। जब वह पानी उनके कन्धों से गिर कर नीचे की तरफ बहता तो उसको वह देखने में बहुत अच्छा लगता और वह खूब हॅसता।

आखिरकार एक दिन स्त्रियों ने मिल कर वज़ीर से इस बात की शिकायत की तो वज़ीर ने वह शिकायत राजा तक पहुॅचायी। राजा ने राजकुमार रसालू को कई बात चेतावनियॉ दी गयीं पर जब रसालू नहीं माना तो वज़ीर ने उसे राज्य से निकाल देने की सलाह दी।

पर राजा बोला — "मैंने अपने एक बेटे को तो पहले ही देश निकाला दे कर मरवा दिया जिसका मुझे हमेशा ही दुख रहेगा। देखो यह मेरा खजाना है। इस काम के लिये तुम्हें जितना पैसा चाहिये ले लो और उन स्त्रियों के बर्तन बदलवा कर उन्हें पीतल के बर्तन दिलवा दो।"

इसके बाद भी राजा ने अपने बेटे को उन स्त्रियों को तंग न करने का आदेश दिया।

पर अगर स्त्रियों ने यह सोच लिया होता कि उनके पीतल के घड़े राजकुमार के पत्थरों से नहीं फूटेंगे तो वे गलत थीं। क्योंकि राजकुमार ने तुरन्त ही लोहे की एक गुलेल बनवायी और उससे लोहे के टुकड़े मारने शुरू कर दिये।

एक तो उन लोहे के टुकड़ों की मजबूती दूसरे उसका अचूक निशाना दोनों मिल कर स्त्रियों के पानी से भरे पीतल के घड़ों में भी छेद कर देते। दुखी हो कर लोग फिर से महल की ओर चले।

उनकी शिकायतों के जवाब में वज़ीर ने राजा को फिर से राजकुमार को देश निकाले की सलाह दी।

राजा बोला — "नहीं। यह मेरा एकलौता बेटा है मैं इसे देश निकाला नहीं दे सकता। मैं हुक्म देता हूँ कि शहर के हर मुहल्ले में एक एक कुँआ खुदवा दिया जाये ताकि हर स्त्री अपनी सुविधा के अनुसार जब चाहे जब बिना किसी परेशानी के पानी ला सके।"

सो राजा के हुक्म के अनुसार शहर भर में बहुत सारे कुँए खुदवा दिये गये। इससे शहर के सारे लोगों को बिना किसी परेशानी के पानी मिलने लगा।

पर इसके बाद में भी वे कुछ निराश ही रहे क्योंकि अब वह गैरजिम्मेदार राजकुमार महल की छत पर चढ़ जाता जहाँ से वह शहर के हर घर को देख सकता था। वहाँ से अब वह अपने धनुष बाण से से बाण मार कर उनके घड़े फोड़ देता।

अबकी बार राजा के पास यह आखिरी बार शिकायत पहुँची कि राजा को अपने इस बेटे को या तो देश निकाला दे देना चाहिये या फिर मौत की सजा सुना देनी चाहिये।

राजा का धीरज भी अब खत्म हो चुका था। वह बोला — "काश। रसालू कभी पैदा ही न हुआ होता या फिर उसे अभी मुझसे ले लिया जाता। जहाँ उसकी खुशी हो वह वहाँ जाये बस मेरा देश छोड़ जाये। अब मैं उसका चेहरा नहीं देखूँगा।"

उसने अपनी पत्नी लूना से कहा — "अपने बेटे को कह दो कि मेरा देश छोड़ कर चला जाये और मुझे फिर कभी परेशान न करे।"

दुखी हो कर उसने रसालू को बुलाया और उससे कहा — "आज के बाद ओ मेरे बेटे हम एक दूसरे के लिये अजनबी हो जायेंगे क्योंकि तुम्हारे पिता ने तुम्हें देश निकाला दे दिया है। अब तुम्हें अपनी माँ अपना घर अपना देश सब छोड़ना पड़ेगा।"

राजकुमार ने पूछा — "पर माँ मुझे तुम्हें क्यों छोड़ना पड़ेगा। और मुझे देश भी क्यों छोड़ना पड़ेगा। मैंने ऐसी क्या गलती की है। पिता जी से पूछो न कि मैंने ऐसी क्या गलती की है जिसकी वजह से वह मुझे देश निकाला दे रहे हैं।"

उस रात रानी ने बहुत रो कर और बहुत बार राजा से पूछा और उससे अपने बेटे को देश से न निकालने की विनती की। पर जब राजा से यह बहुत बार कहा गया तो राजा ने उसकी विनती सुनने से उसे साफ मना कर दिया।

उसने कहा "रसालू की गलती माफ करने लायक नहीं है। उसने जनता को पानी के बारे में बहुत परेशान किया हुआ है। केवल देश निकाला ही उसका इलाज है।"

जब राजकुमार ने यह सुना तो उसको लगा कि अब राजा के इस हुक्म को टाला नहीं जा सकता तो उसने अपने पिता जी से मिलने की सोची।

वह उनके पास गया और बोला — "पिता जी। मैं आपकी सब बातें मानूँगा अगर आप मेरी दो बातें मान लें तो। पहली तो यह कि आप मुझे मुसलमान बन जाने दें और दूसरी यह कि आप खुद भी मुसलमान बन जायें।"

यह सुन कर राजा का पारा तो सातवें आसमान पर चढ़ गया। उसने उसे तुरन्त ही महल छोड़ कर वहाँ से चले जाने के लिये कहा।

उसी समय उसने अपने नौकरों से भी कहा कि वे उसके बेटे के पीछे उसका एक कागज का पुतला लगा दें जिसका चेहरा काला रंगा हुआ हो जिससे लोगों को पता चले कि यह एक सजा पाने वाला आदमी है।

एक दिन जब रसालू शिकार से वापस लौट रहा था तो उसने एक शक्ल अपनी माँ के महल के पास खड़ी देखी तो उसने अपने साथियों से कहा — "यह शक्ल यह बताती है कि मुझे यह राज्य छोड़ना ही होगा। लो मेरे पिता जी की अच्छाई तो देखो।

हम लोग उस राजा विक्रमाजीत के वंशज है जिन्होंने अपने आपको **300** बार दान देने के लिये बेच दिया। और एक मेरे पिता हैं जिन्होंने एक बहुत ही छोटी सी चीज़ के लिये मुझे देश निकाला दे दिया। कोई बात नहीं मैं फिर भी उनका हुक्म मानूँगा।"

सो उसने सियालकोट के कुछ अपने नौजवान बहादुर लोग चुने और उन सबको तलवार भाले और धनुष बाणों से लैस किया। उसने खुद ने भी अपने लिये कुछ घोड़े और बहुत सारा पैसा लिया।

जब सब कुछ तैयार हो गया तब उसने अपनी फौलादी नाम की घोड़ी[45] को लिया जो उसी दिन पैदा हुई थी जिस दिन वह खुद पैदा हुआ था। इस सबके साथ वह अपनी माँ के महल की खिड़की के नीचे से हो कर अपने लोगों के साथ वहाँ से बाहर चला गया।

पर रानी लूना ने अपने बाल बिखेर दिये और बहुत ज़ोर से रो पड़ी। वह अपने कमरे की जाली से खड़ी खड़ी तब तक उसको जाते देखती रही जब तक कि धूल के बादल से उसके जाने का रास्ता पता चलता रहा।

वह रोती रही और चिल्लाती रही — "ओ मेरे छोटे से बेटे। क्या मैं तुझे फिर से देख सकूँगी। धूल की वजह से मैं तेरे सिर का ताज नहीं देख सकती ओ मेरे रसालू। मेरे दिल में फौलाद के हजारों छुरे चुभे जा रहे हैं। सुन रसालू, वे चुभ चुभ कर मेरे दिल को जला रहे हैं।

जिसके बेटे को देश निकाला हो गया हो जो तूफानों में घिरा हो उसकी माँ को चैन कैसे आ सकता है। उसकी तो ज़िन्दगी ही बेकार है।"

[45] Fauladi means made of steel (Persian), Sometime. Rasalu's horse, like Rustem's horse is named Bauraki, the Grey Mare.

2–2 राजा रसालू गुजरात में[46]

अपनी मातृभूमि से मुँह मोड़ कर राजा रसालू गुजरात प्रदेश की तरफ चल दिया। अपने रास्ते में जहाँ जहाँ भी वह रुका उसी उसी जगह सब लोगों को यह बता दिया गया कि वह एक उद्देश्य से निकला हुआ है। वह उन सारे अच्छे लोगों को अपने साथ ले लेगा जो उसके मापदंड पर खरे उतरेंगे।

जब तक वह गुजरात की राजधानी पहुँचा तब तक उसके पास बहुत सारे वीरों का झुंड इकट्ठा हो चुका था। वे सब अपने बहादुर नेता के लिये लड़ने के लिये तैयार थे।

उस समय गुजरात का राजा एक गूजर था जो राजपूत जाति का एक सरदार था और सियालकोट के घराने से सम्बन्धित था और राजा शालिवाहन का दोस्त था।

यह सुन कर कि कोई विदेशी सेना उसके देश की सीमा के अन्दर घुस आयी है तो वह उससे बात करने के लिये खुद गया। उसने रसालू से बड़ी नम्रता से पूछा — "तुम कौन हो। किस राजा के बेटे हो। मुझे बताओ कि तुम्हारा नाम क्या है। तुम्हारे पिता का देश कौन सा है और उस देश में से तुम किस शहर से आते हो।"

रसालू बोला — "मैं राजा शालिवाहन का बेटा हूँ। मेरा नाम रसालू है। सियालकोट मेरा देश है और मेरा शहर भी वही है।"

---

[46] Raja Rasalu in Gujrat. (Tale No 3-2 of the Book)

गुजरात के राजा ने रसालू का बड़े आदर के साथ स्वागत किया और गुजरात में आने की खुशी में आनन्द मनाया गया। गूजर राजा ने पूछा — "तुम तो एक राजा के बेटे हो, राज्य के वारिस हो फिर मैं तुम्हें क्यों अपने राज्य से दूर एक सेना का सरदार बना देख रहा हूँ।"

रसालू बोला — "झेलम के पास एक जगह है जहाँ बहुत सारे राक्षस रहते हैं। उन्हें पत्थरों में बदल दिया गया है और उन्हें कुछ हड़पने वालों ने हड़प रखा है। उस देश का एक चौथाई हिस्सा मेरे पिता का हिस्सा है पर उन्हें उनका अधिकार नहीं दिया जा रहा है। मैं चाहता हूँ कि मेरे पिता को उनका अधिकार मिल जाये और वह हमारे हिस्से में आ जाये।"

यह सुन कर गूजर राजा ने उसे सहायता करने का वचन दिया। उसने रसालू से कहा — "तुम मेर पास से कुछ सेना की टुकड़ी ले जाओ। जैसे बहादुर आदमी और जैसे तुम्हें हथियार चाहिये तुम ले लो और जा कर दुश्मन को हराओ।"

अपने आदमियों से उसने कहा — "तुम जा कर राजा रसालू के साथ लड़ो और तब तक वापस नहीं आना जब तक राजा रसालू खुद तुम्हें वापस नहीं भेजें।"

राजा रसालू गूजर राजा की सेना को अपने साथ ले कर उस जगह की तरफ चल पड़ा जहाँ राक्षस मूर्ति बने खड़े थे। वहाँ पहुँच

कर उसने तुरन्त ही लड़ाई छेड़ दी। उसने किलों को अपने अधिकार में कर लिया मिट्टी के बर्तन तोड़ डाले। उनकी रसद बन्द कर दी।

रसालू की ताकत भी किसी राक्षस की ताकत से कम नहीं थी। वह अपने लोहे के धनुष को केवल खुद ही उठा सकता था कोई दूसरा नहीं। उस धनुष के लिये उसके पास तीन बाण थे और तीनों ही बाण **100–100** पौंड के थे। उनका निशाना अचूक था और वह उन्हें वापस भी पा लेता था।

कुछ देर में ही राक्षसों का सबसे मजबूत किला उनसे ले लिया गया। उनकी बहुत सारी धन सम्पत्ति भी उनसे ले ली गयी – सोना चाँदी जवाहरात बढ़िया कपड़े और बहुत सारी सुन्दर लड़कियाँ जिन्हें उसके कप्तान और सिपाहियों ने आपस में बाँट लिया।

उनमें से कुछ छोटे छोटे राजकुमार भाग भी गये। कुछ ने हार मान ली और रसालू को अपना राजा मान लिया। राज्य को फिर से संगठित किया गया और शान्ति और नियम स्थापित किये गये। गवर्नर नियुक्त किये गये और उन सबकी देखभाल में वह राज्य एक बार फिर से खुशहाल हो गया।

जब रसालू झेलम पर ठहरा हुआ था तो उसने एक फ़कीर के बारे में सुना जो तिल्ला गाँव में ठहरा हुआ था। इस फ़कीर के करिश्मों की साख इतनी थी कि हर आदमी की ज़बान पर इसके चर्चे थे। यहाँ तक कि राजा रसालू के वहाँ आने का लोगों को पहले से

ही पता था। सो एक दिन उसने इस फ़कीर के पास जाने का विचार किया।

उसने अपने शिष्यों से कह रखा था कि राजा रसालू यहाँ मेरे ज्ञान का इम्तिहान लेने के लिये आयेगा। पर क्योंकि वह एक हिन्दू है तो उसे अपने कर्तव्यों का पता ठीक से होना चाहिये। फिर भी मैं उसे पहले जाँचूँगा और तब हम देखेंगे कि क्या वह उतना ही होशियार है जितना कि हमने उसके बारे में सुना है।

उसके शिष्यों ने कहा — "यह तो ठीक है। लोगों का कहना है कि उसका बाण इतना मजबूत है और इतना तेज़ जाता है कि वह पत्थर को भी छेद देता है। इसलिये आप उसके लिये कुछ खास सोच कर रखिये।" फ़कीर ने तब एक बहुत ही भूखे चीते का रूप रख लिया और जंगल में घूमने लगा।

राजा रसालू के लोगों ने जब उसे देखा तो वे उसे देख कर डर गये और आपस में कहने लगे कि "देखो तो। इस फ़कीर की ताकत इतनी ज़्यादा है कि यहाँ तक कि चीते भी उसका कहा मानते हैं। चलो वापस लौट चलते हैं।"

लेकिन राजा रसालू बोला — "वही एक अक्लमन्द आदमी है जो अपना काम पूरा कर के ही वापस लौटता है। जो अपना काम अधूरा छोड़ कर भाग जाते हैं वे बेवकूफ होते हैं।"

तब राजा रसालू ने चीते से कहा — "तुम जरूर ही एक पूरे बड़े चीते हो पर मैं एक राजपूत हूँ। आओ पहले हम आपस में लड़ लें।"

इसके जवाब में चीता बहुत ज़ोर से चिंघाड़ा जैसे कोई भूचाल आ गया हो। फिर वह राजा रसालू पर कूदने के लिये थोड़ा सा झुका कि इतनी देर में राजा रसालू ने अपने लोहे के धनुष पर दो बाण साध लिये।राजा रसालू को बाण साधे देख कर चीता डर कर वहाँ से तुरन्त ही गायब हो गया।

राजा रसालू आगे बढ़ा और जिस फ़कीर से वह मिलने आया था उसकी तरफ चला। उसने देखा कि फ़कीर बड़े शान्त चित्त से अपने शिष्यों के बीच बैठा हुआ है। फ़कीर उसे देख कर तुरन्त अपनी जगह से उठा और आदर सहित उसे प्रणाम किया जो उससे ज़्यादा ताकतवर था।

राजा बोला — "यह फ़कीर तो बहुत अच्छा है जो मेरे लिये या किसी और के आदर के लिये अपनी जगह से उठता है।"

फ़कीर यह सुन कर कुछ गुस्सा सा हो गया और कुछ शर्मा गया। वह बोला — "यह जगह संतों के रहने की जगह है। यह कोई घंडगढ़ नहीं है जहाँ राक्षस रहते हैं और जिन्हें अगर तुमने मार दिया तो तुम्हारा नाम हो जायेगा। गरीब फ़कीरों के ऊपर विजय प्राप्त करने से शान नहीं बढ़ती।"

राजा रसालू बोला — "जनाब। आप मेरा मजाक बना रहे हैं। मैं एक बहुत बड़े राजा विक्रमाजीत की सन्तान हूँ। मैं अपने घर में शान्ति से बैठ ही नहीं सकता था जब तक मैं घंडगढ़ के राक्षसों पर विजय प्राप्त नहीं कर लेता।"

बूढ़े धर्मदूत[47] ने कहा — "जहाँ तक मेरा सवाल है मैं तो तुम्हारी सफलता के लिये केवल प्रार्थना ही कर सकता हूँ। फिर भी मुझे यह बात अच्छी तरह मालूम है कि तुम हमेशा समृद्ध रहोगे और हर एक को जीत लोगे – अगर तुम मेरा कहा याद रखो और मानो तो।

पहली बात कि किसी भी निर्दोष व्यक्ति पर तलवार मत चलाना और दूसरे किसी गरीब फ़कीर को मारने के लिये उस पर हाथ मत उठाना।" राजा रसालू ने अपनी सेना को वापस भेज दिया और अकेले ही आगे बढ़ चला।

[47] Translated for the word "Prophet"

2–3 राजा रसालू का विद्रोह[48]

झेलम नदी पर अपना काम खत्म कर के राजा रसालू जिसके देश निकाले का समय अब खत्म होने पर आ रहा था अब दूसरी जगह चल दिया। जहॉ भी वह जाता वह अपने साथ अपना शादी तोता और फ़ौलादी घोड़ी ज़रूर साथ ले जाता।

इस तरह से वह चलता चला जा रहा था कि उसकी मॉ ने उसके आने की खबर सुनी तो उसने अपने बेटे के पास अपना एक सन्देश ले जाना वाला भेजा पर उसने लौट कर जवाब दिया कि राजकुमार कहते हैं कि वह वापस नहीं आयेंगे।

राजा ने भी सुना तो उसने भी अपना एक सन्देश ले जाने वाला उसके पास भेजा पर वह भी उसी जवाब के साथ वापस आ गया। जब उसकी पालने वाली मॉ उसके आने की खबर सुनी तो उसने भी अपना एक सन्देश ले जाने वाला उसके पास भेजा। राजा रसालू ने उसकी बात सुनी और वह वापस सियालकोट चला गया।

जब उसकी पालने वाली मॉ ने उसे घर के कम्पाउन्ड में देखा तो वह बहुत खुश हो गयी और भागती भागती उसके पास आ कर बोली — “बहुत दूर से मेरा बेटा आया है। लड़ाई से घाव सह कर मेरा बेटा वापस आया है। उसने एक मर्द वाला काम किया है। मैं

[48] Rasalu’s Revolt. (Tale No 3-3 of the Book)

ही तो उसकी माँ हूँ और भला कौन उसकी माँ है। तू मेरा बेटा है जिसके साथ मैं हमेशा रही हूँ। मेरे बेटे।"

पर राजा रसालू ने उसकी किसी बात का कोई जवाब नहीं दिया। बस जब वह उसके सामने से गुजर रहा था तब उसने उससे कहा "मेरे हाथ में फ़कीर का एक डंडा है। और मेरा सिर गर्व से ऊँचा है। तुम्हारा बेटा तो स्वस्थ भी हो सकता है और बीमार भी पर मैं तो बस एक भिखारी ही हूँ।"

इस तरह से राजा रसालू सियालकोट वापस आया तो उसके माता और पिता दोनों ही उसे देख कर बहुत खुश हुए।

राजा रसालू को घर लौटे हुए बहुत दिन नहीं हुए थे कि राजा रसालू अपनी शादी की तरफ ज़्यादा ध्यान देने लगा। सो उसने अपने सईस को अपनी माँ के पास यह सन्देश ले कर भेजा कि "अगर मैंने आपसे यह बात पहले नहीं कही तो वह केवल इसलिये कि मैं केवल शर्मा रहा था। पर अब आप मेरे लिये एक लड़की ढूँढें और अब इस बारे में मुझे आपकी सलाह चाहिये।"

माँ तो बहुत दिनों से इस बात के लिये पीछे पड़ी थी अपने बेटे के मुँह से ये बातें सुन कर बहुत खुश हुई। उसने यह बात राजा शालिवाहन को बतायी तो राजा शालिवाहन भी बहुत खुश हुआ।

उसने तुरन्त ही सईस को इस सन्देश के साथ अपने बेटे के पास वापस भेजा कि वह बड़े बड़े विद्वानों को बुलायेगा ब्राह्मणों को बुलायेगा और उनसे उनकी पुस्तकें देखने के लिये कहेगा। वज़ीर

मोतीराम को भी बुलाया जायेगा और शादी की तैयारियाँ तुरन्त ही शुरू कर दी जायेंगी।

राजा शालिवाहन ने अपनी कमेटी बुलवायी जिसमें उसका वज़ीर मोतीराम भी शामिल था। वह अपने बेटे की शादी अपने वज़ीर मोतीराम की बेटी से करना चाहता था। सो उसने बेटे की शादी अस्सा महीने के पाँचवें दिन[49] की तय कर दी।

तीसरे दिन सुबह के समय जब लोग कुँए पर पानी खींचने जाते हैं राजा रसालू नदी पर नहाने गया। जब वह वहाँ से वापस आ रहा था तो उस सड़क से गुजरा जिस पर मोतीराम का घर था।

वहाँ उसने मोतीराम के घर के पास वाले कुँए पर कुछ लड़कियाँ इधर उधर घूमती हुई देखीं। जैसे और स्त्रियाँ हँसती और बात करती है उसी तरह से वे भी हँस रही थीं और बात कर रही थीं। इनमें सबसे आगे वह लड़की थी जिससे राजा रसालू की शादी तय हुई थी और जिससे उसकी शादी जल्दी ही होने वाली थी।

वह लड़की थोड़ी आजाद किस्म की थी सो वह हर समय हँसी मजाक करती रहती थी। उसने वहीं सबके सामने अपने होने वाले पति से कहा — "ओ भूरी घोड़ी चढ़ने वाले सवार। क्या तुम अपने बाल बाँधना भूल गये। जैसे कि छोटी बच्चियाँ करती हैं कि उनके बाल खुले ही रहते हैं और इधर उधर उड़ते रहते हैं।

[49] Fifth Day of the month "Assa"

ओ राजा। मैं तुमसे विनती करती हूँ कि ख्याल रखना कि कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी लड़की के दरवाजे से गुजरो तो उसका दरबान तुम्हारा मजाक बनाये।"

रसालू यह सुन कर बहुत लज्जित हुआ और बोला — "ओ मेरी पत्नी जो तुम अभी तो नहीं हो पर जल्दी ही हो जाओगी सुनो। जो कुछ भी तुमने मुझे लज्जित करने के लिये अभी मुझसे कहा है उसके लिये मैं कसम खाता हूँ कि क्योंकि मैं रानी लूना का बेटा हूँ तुम्हारे किये गये हर अपमान का बदला मैं तुमसे लूँगा।"

यह सुन कर लड़की को गुस्सा आ गया वह बोली — "ओ रानी लूना के बेटे। तुम इतना भी घमंड मत करो। इतने सारे लोगों के सामने अपना गुस्सा मत दिखाओ क्योंकि तुम जैसे भले आदमी लोगों ने एक ने ही नहीं बल्कि कई लोगों ने मेरे पिता के बछड़े चराये हैं।"

यह सुन कर राजा रसालू बोला — "ओ शादी पक्की की गयी दुलहिन। ओ मेरी होने वाली होने वाली पत्नी। अब तुम वह ध्यान दे कर सुनो जो मैं तुमसे कहता हूँ। अपनी जन्म देने वाली माँ की कसम उन कष्टों की कसम जो उसने मुझे जन्म देने में सहे हैं तुम मेरी पत्नी बनोगी।

पर मैं तुम्हारी कसम खाता हूँ कि मैं तुमसे शादी तो करूँगा पर तुम्हें बहुत बेशर्म और बेइज़्ज़त कर के छोड़ दूँगा।" यह कह कर वह अपने रास्ते चला गया।

जब शादी की तैयारियाँ काफी आगे बढ़ गयीं और शादी का समय पास आ गया राजा रसालू के माता पिता वज़ीर और बहुत सारे लोग मोतीराम के घर गये।

वहाँ सब शादी की दावत में बैठे पर मोतीराम दूसरे लोगों के साथ दावत में नहीं बैठा बल्कि वह अपनी धोती ऊँची बाँध कर मेहमानों के बीच इधर उधर उनका स्वागत करता रहा। "आप लोग इस शादी में आये हैं आपका स्वागत है। मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप मुझसे नाराज न हों क्योंकि मैं तो आपके एक दास की तरह ही हूँ।"

जब खाना खत्म हो गया और लोग तम्बाकू पीने और आराम करने के लिये बैठ गये तो वहाँ कुछ लड़कियाँ खेल खेलने के लिये आयीं। फिर उन्होंने नाचा और गाया। राजा और राजकुमार के साथ ठिठोली की। कई लोगों ने उनसे खुश हो कर उन्हें पचास पचास रुपये दिये कइयों ने उन्हें सोने के सिक्के भी दिये।

उसके बाद वे राजा रसालू को उस कमरे में ले गयीं जहाँ उसकी शादी होने वाली थी। आनन्द मनाया जाने वाला था। वह अपने पिता और कई दोस्तों के साथ वहाँ गया।

पर जब वह आँगन से गुजर रहा था तो उसने अपने सईस को इशारे से अपनी फ़ौलादी घोड़ी को जीन सजा कर लगाम लगा कर तैयार रखने के लिये कहा।

तब वहाँ ब्राह्मण पुजारी लोग आये। उन्होंने माता पिता को भी बुलाया और वे सब कमरे के बीच में बैठे। ब्राह्मणों ने मन्त्र बोलने शुरू किये तो राजा रसालू ने मुख्य पुजारी से कहा — "ओ सुन्दरदास। मैं राजा तुमसे कहता हूँ कि तुम मेरी शादी नहीं करवाना।"

सुन्दरदास बोला — "ओ राजा रसालू। आप एक कुलीन घराने से आते हैं। मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप ऐसा कोई काम कर के जो आपके घराने के खिलाफ हो अपने घराने को बदनाम न करें।"

राजा रसालू ने उसकी यह बात मान ली और वह शादी की रस्म पूरी होने तक चुपचाप बैठा रहा – यानी जब तक उन दोनों का गँठबन्धन हुआ और आग के चारों तरफ फेरे फिरे।

जैसे ही उन्होंने अपना सातवाँ फेरा पूरा किया तो राजा रसालू ने आँख उठा कर ऊपर देखा तो देखा कि उसकी फ़ौलादी घोड़ी आँगन में तैयार खड़ी थी। तुरन्त ही राजा रसालू ने अपनी तलवार निकाली गाँठ काटी और कूद कर अपनी घोड़ी पर बैठ गया।

उसकी पत्नी पीछे से बोली — "राजा रसालू। तुमने यह मेरे साथ अच्छा नहीं किया जो हमारी शादी की गाँठ काट दी। भगवान के पास जा कर तुम्हें इसका जवाब देना पड़ेगा। तुमने अपनी ब्याहता पत्नी से कितनी बुरी चाल खेली अब तुम अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये भगवान के सामने जा कर उन्हें क्या जवाब दोगे।"

पर राजा रसालू ने उसको ताना मारा — "तुम्हें अपना कहा याद है जो उस दिन तुमने कुँए के पास कहा था। तुमने तो मुझे जंगली जानवर कहा था न सो अब तुम जाओ और किसी और से जा कर शादी कर लो।"

दोनों के माता पिताओं ने बहुत कोशिश की कि राजा रसालू वापस आ जाये पर उन सबकी सब कोशिशें बेकार गयीं। दोनों के माता पिताओं के सिर अपमान से नीचे झुके जा रहे थे। उनकी पगड़ियाँ उतरी हुई थीं मुँह लटके हुए थे और वे राजा रसालू से लौटने के लिये विनती किये जा रहे थे।

राजा रसालू के पिता राजा अपने बेटे से कह रहे थे — "मैंने तुम्हें बचपन से क्या यही दुख देखने के लिये पाला। और अब तुम इतने सारे लोगों के सामने मेरा अपमान कर रहे हो।"

राजा रसालू ने अपने पिता राजा की बात बिल्कुल भी नहीं सुनी और वहाँ से चल दिया। पर जाते समय वह सोच रहा था कि उसे उनकी बात का जवाब देना चाहिये था सो वह वहीं से लौट आया। उसका सारा शरीर काँप रहा था।

वह बोला — "पिता जी मेरी बात सुनिये। क्या मैंने आपके साथ कभी कटुता का व्यवहार किया है? पर अभी मैं मक्का जाऊँगा और फिर जब मैं वहाँ से वापस लौट कर आऊँगा तब मेरे साथ मुसलमानों की एक सेना होगी और मैं सियालकोट को मटियामेट कर दूँगा।"

उसके बाद वह वहाँ से दिन रात चलता रहा और एक भले से शहर में आ गया। उस शहर के चारों तरफ परकोटा खिंचा था और मीनारें खड़ी थीं। शहर के फाटक पर पहुँच कर उसने पहरेदारों से पूछा कि उस शहर का राजा कौन है। एक पहरेदार ने बताया कि वह मक्का शहर है और मक्का के राजा हजरत इमाम अली लाक हैं।

सो वह शहर में घुसा और हजरत इमाम अली लाक के पास उनसे मिलने जा पहुँचा और बोला — "मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप मुझे अन्दर आने की इजाज़त दें।"

इमाम ने देखा कि वह एक हिन्दू है तो उससे पूछा — "तुम कहाँ से आये हो? तुम किस राजा के बेटे हो? तुम्हारा नाम क्या है? तुम्हारा जन्म किस देश में हुआ था और तुम्हारे शहर का नाम क्या है?"

राजा रसालू बोला — "मैं एक राजपूत हूँ। मैं राजा शालिवाहन का बेटा हूँ। रसालू मेरा नाम है। मैं सियालकोट का रहने वाला हूँ और मेरा जन्म भी वहीं हुआ था।"

यह सुन कर इमाम अली ने दो धर्मदूतों[50] – पीर पंजाबी और सूरकू सोबा को हुक्म दिया कि वे उसे गले लगायें। उन दोनों ने उसे गले लगाया तो रसालू के दिल को बहुत शान्ति मिली जैसे उसके सारे बन्धन टूट गये हों। तीनों उसे साथ ले कर चले। उन्होंने

[50] Translated for the word "Prophets"

उसको प्रार्थना करना सिखाया। इस तरह रसालू अब हिन्दू नहीं रहा बल्कि एक मुसलमान बन गया।

एक दिन उसने मुख्य मौलवी से कहा — "मेरे पिता एक बहुत बड़े धर्म की निन्दा करने वाले हैं और वह बुरे बुरे रीति रिवाजों को मानते हैं। आप मुझे सहायता दें ताकि मैं उनके पास वापस जा सकूँ और उन्हें जीत सकूँ।"

मौलवी साहब ने पूछा — "तुम कौन से रीति रिवाजों की बात कर रहे हो?"

राजा रसालू बोला — "पहली बात तो यह है कि वह हर रात एक नये मेहमान को बुलाते हैं। अगली सुबह वह उसे मार देते हैं और फिर नष्ट हो जाने के लिये जंगल में छुड़वा देते हैं।

दूसरी बात यह कि जो कपड़े वह दिन में पहनते हैं उन्हें वह रात में जला देते हैं और रात में जो कपड़े पहनते हैं उन्हें वह सुबह होने पर जला देते हैं।

और आखिरी बात यह कि वह एक कुँए से दो दिन लगातार पानी नहीं पीते। हर सुबह उनके लिये एक नया कुँआ खोदा जाता है और इस तरह से कई ज़िन्दगियों का नुकसान होता है।"

जब वहाँ के मौलवियों ने यह बात सुनी तो उन्हें पक्का विश्वास हो गया कि राजा शालिवाहन सचमुच में एक बहुत ही बड़ा अधार्मिक राजा है।

पर उन्होंने राजा रसालू से कहा — "यह तुम्हारे लिये ठीक नहीं होगा कि तुम एक बेटा होने के नाते अपने पिता पर आक्रमण करो। तुम्हारा अपने पिता के खिलाफ ऐसा व्यवहार तुम्हें बुरा बना देगा क्योंकि एक बेटे को अपने पिता की इज़्ज़त करनी ही चाहिये।"

फिर भी राजा रसालू ने अपने पिता के खिलाफ जिद करना नहीं छोड़ा तो इमाम ने दूसरे मौलवियों से उसे पूरी तरीके से मना करने के लिये मना कर दिया और उनसे उससे भविष्य में उसकी इच्छा पूरी करने के लिये वायदे करने के लिये कह दिया। जब उन मौलवियों ने राजा रसालू से ऐसे वायदे किये तो उसको अपनी इच्छा पूरी करने की इच्छा और ज़्यादा बढ़ गयी।

इधर राजा शालिवाहन ने सियालकोट की दीवारें और मजबूत करवानी शुरू कर दीं क्योंकि मुहम्मद साहब की सेना चारों तरफ दुनियाँ को जीत रही थी। पर उस दीवार की एक मीनार पूरा करते समय बार बार गिरे जा रही थी। मीनार बनाने वालों ने तीन बार पत्थरों के ऊपर पत्थर रखे और तीनों बार उनका काम मिट्टी में मिल गया।

यह देख कर राजा ने अपने ज्योतिषियों को बुलाया और इस मीनार के पूरे न होने की वजह पूछी तो उन्होंने कहा — "यह मीनार कभी खड़ी नहीं होगी जब तक कि किसी नौजवान मुसलमान जो अपने माता पिता का अकेला बेटा हो का सिर इसकी नींव में न दबाया जाये।"

सो राजा ने अपने आदमियों को एक ऐसा मुसलमान नौजवान लाने के लिये भेजा जो अपने माता पिता का अकेला बेटा हो तो वे एक बुढ़िया ज़बीरो के घर आये और उसके बेटे को पकड़ कर बोले "क्या तुम मुसलमान नहीं हो।"

लड़के ने जो सच बोलने का प्रेमी था कहा — "हाँ मैं मना नहीं करता। मैं मुसलमान हूँ। क्योंकि हर हाल में मुझे मर कर अल्लाह के पास ही जाना है।" वे आदमी जिन्होंने उसे पकड़ा हुआ था उसे ले कर राजा के पास गये।

जब वह राजा के सामने पहुँचा तो उसने शादी का कंगना हाथ में पहना हुआ था और फूलों की एक माला गले में पहनी हुई थी। जब राजा ने उसे इस हालत में देखा तो पूछा — "बच्चे। तुम इतना सज कर किसकी दावत में जा रहे थे।"

लड़का बोला — "मैं इस तरह सज कर अपनी ही दावत में जा रहा था क्योंकि आज मेरी शादी है।"

राजा बोला — "कोई बात नहीं इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता। तुम लोग जाओ और इसका सिर काट दो और उसे नींव में दबा दो।"

सो उसकी विधवा माँ के सामने ही उसका सिर काट दिया गया। उसकी माँ यह देखते ही रो पड़ी। उसने तुरन्त ही एक सिपाही के हाथ से एक कटार छीन ली और बोली — "मैं भी मरने

के लिये तैयार हूँ। ओ नीच राजा अल्लाह करे कि तेरे ऊपर बिजली गिरे।"

जैसे ही उसने यह कहा और अपनी मौत के बारे में सोचा वैसे ही उसके मरे हुए बेटे के सिर और धड़ दोनों माँ की तरफ खिसकने लगे।

माँ ने जब यह देखा तो उसने अपने हाथ से कटार तो नीचे फेंक दी और बेटे की लाश के दोनों हिस्सों को उठा कर अपनी छाती से लगा लिया।

फिर उसने राजा से कहा — "अब मैं मक्का जाऊँगी और उन लोगों को अपने साथ ले कर आऊँगी जो मेरे इस दुख का बदला तुमसे लेंगे।"

यह कह कर वह वहाँ से तुरन्त ही मक्का की तरफ चल दी। पर क्योंकि वह बहुत बूढ़ी थी और कमजोर थी वह एक दिन में आधा मील से ज़्यादा नहीं चल पाती थी। उसका जोड़ जोड़ दर्द कर रहा था और पैर सूज गये थे।

दुखी हो कर उसने अल्लाह से प्रार्थना की कि "मैं बूढ़ी हूँ और चल नहीं सकती मेहरबानी कर के मेरी सहायता के लिये पीर पंजाबी को भेज दो।" ऐसा कह कर वह वहीं जमीन पर ही लेट गयी।

उसी रात जब वह वहाँ सो रही थी तो उसने एक सपना देखा। उसके सपने में सफेद दाढ़ी वाला एक आदमी आया और उससे कहा

"अपनी ऑखें बन्द करो।" उसने तुरन्त ही अपनी ऑखें बन्द की और दूसरे ही पल वह मक्का में थी।

यह तो केवल उसका सपना था। पर जब वह सुबह उठी और अपने चारों तरफ देखा तो वह तो सचमुच मक्का में थी। वह वहॉ की मस्जिद की सीढ़ियों पर खड़ी हुई थी। उसने उस मस्जिद के मौलवी को भी वहॉ देखा। वह उससे बोली "मैं एक बहुत ही बेसहारा स्त्री हूँ जिसका कोई रक्षक नहीं है।

एक हिन्दू राजा जो हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा अधर्मी राजा है उसने अपनी दीवार बनाने के लिये मेरे इकलौते बेटे को बड़ी बेदर्दी से मार दिया है। अगर तुम लोग सचमुच में धर्मदूत को मानने वाले हो तो जाओ और उससे मेरा बदला लो।"

वे बोले — "मॉ आप रोइये नहीं। आपके बेटे की मौत का जवाब हमारे सरदार लोग देंगे।"

मॉ बोली — "मैं तो रोना नहीं चाहती थी पर क्या करूँ मेरा दिल रोता है और मैं अपने आपको रोक नहीं पाती। मैं तब तक रोती रहूँगी जब तक कि आप लोग आ कर उस शहर को उजाड़ नहीं देंगे।"

वे बोले — "तीन दिन बाद हमारे मुख्य मौलवी के बेटे की शादी है उसके बाद हम लोग सियालकोट के लिये रवाना होंगे।"

मॉ बोली — “मौलवी साहब आप ठीक कह रहे हैं। आपके तो बेटे की शादी हो रही है और घर में मेरी बेटी रो रही है जिसका पति उससे छीन लिया गया है। मुझसे अब इन्तजार नहीं होता।”

यह सुन कर उन्होंने सियालकोट राज्य के लिये चलना शुरू किया तो बुढ़िया ने देखा कि वे तो केवल पॉच घुड़सवार थे तो उसने राजा रसालू से कहा — “सियालकोट में तो बहुत सारे लोग हैं और तुम तो केवल पॉच लोग ही हो। तुम पॉच लोग वहॉ जा कर क्या कर पाओगे।”

तब हज़रत ने जवाब दिया “मॉ हम पर विश्वास रखिये।”

“ठीक है। मुझे तुम पर विश्वास है पर मुझे यह भी दिखायी दे रहा है कि तुम लोग केवल पॉच ही हो।”

मौलवी साहब ने कहा — “अच्छा अपनी ऑखें बन्द करो।”

बुढ़िया ने एक पल के लिये अपनी ऑखें बन्द कीं और फिर एक पल बाद जब उसने ऑखें खोलीं तो वह तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गयी कि वहॉ तो बहुत बड़ी सेना थी। उनकी संख्या इतनी ज़्यादा थी कि एक घुड़सवार दूसरे घुड़सवार से टकरा रहा था।

यह देख कर वह सन्तुष्ट हो गयी और उसने उनसे इसी तरह अदृश्य रह कर सियालकोट चलने की विनती की। आखिरकार वे सियालकोट आ पहुॅचे। उन सबने सियालकोट की दीवार के चारों तरफ अपने डेरे लगा दिये।

सुबह सवेरे जब लोग शहर से बाहर निकले तो यह देख कर तो वह आश्चर्य में पड़ गये कि उनका पूरा शहर दुश्मनों से घिरा हुआ था। वे अन्दर गये और उन्होंने जा कर यह सब राजा शालिवाहन से कहा।

राजा शालिवाहन ने जब बाहर झॉक कर देखा तो बोला — “अरे यह तो मेरा बेटा रसालू है और कोई नहीं जो मेरे साथ यह बुरी हरकत करने आया है। वह मक्का चला गया था और अब मुसलमानों की सेना ले कर मुझे बर्बाद करने आया है।”

बस फिर क्या था रसालू और शालिवाहन में लड़ाई छिड़ गयी।

काफी दिनों की लड़ाई के बाद आखिरकार सियालकोट पर कब्जा कर लिया गया। जब दुश्मन सियालकोट के फाटक से अन्दर बड़ी संख्या में घुसे तो सियालकोट में इतना खून बहा कि दुश्मन के घोड़ों के घुटने खून में डूबे हुए थे।

पर इससे पहले कि यह सब होता शहर के लोगों ने एक आदमी को बहादुरी से लड़ते देखा जिसका सिर ही नहीं था। उसने अपना सिर शहर के फाटक की तरफ उछाल दिया था। वह आदमी हज़रत खुद थे। लोग तो यह दृश्य देख कर आश्चर्य में पड़ गये और एक दूसरे से अपना आश्चर्य प्रगट करने लगे।

तब उस शरीर ने अपने बारे में बातें सुन कर लड़ना बन्द कर दिया और घोड़े से नीचे गिर गया। उसके शरीर को शहर के फाटक के पास दफ़ना दिया गया।

इस बीच ब्राह्मण पंडित सुन्दरदास शान्ति के लिये बराबर प्रार्थना करता रहा लेकिन उसका प्रार्थना करना बिल्कुल बेकार गया क्योंकि मुसलमान तब तक लड़ते रहे जब तक उन्होंने शहर और राजा के किले पर कब्जा नहीं कर लिया।

और जब वे अन्दर घुसे तो उन्होंने राजा शालिवाहन को उसकी राजगद्दी पर बैठे और हुक्का पीते हुए देखा। मौलवियों ने राजा रसालू से कहा कि वह राजा शालिवाहन के पास जाये और उससे मुसलमान बनने के लिये कहे।

सो राजा रसालू अपने पिता के पास गया और उससे कहा कि या तो वह मुसलमान बन जाये या फिर मरने के लिये तैयार हो जाये।

राजा शालिवाहन बोला — "बच्चे। मैंने तुम्हें इतना बड़ा किया तुम अपने पिता की ज़िन्दगी बख्श दो।" पर राजा रसालू ने उसके लम्बे बाल पकड़ कर उन्हें ऐंठ कर उसे नीचे गिरा दिया।

फिर उसने अपने पिता की छाती पर पैर रखा और उसका सिर काटने ही वाला था कि उसके पिता ने कहा — "न तो तुम्हारी माँ और न मैं एक दूसरे के लिये कभी बेवफा रहे इसलिये बिना किसी शक के तुम हमारे ही बेटे हो। स्वर्ग के दरवाजे पर मैं तुम्हारा पिता तुम्हारे सिर पर हाथ रखूँगा।"

पर राजा रसालू ने यह सुन कर भी नहीं सुना और उसका गला काटने के लिये अपन हाथ उठाया ही था कि मौलवी साहब ने उसे

ऐसा काम करने से रोक लिया। वह बाहर आ गया और मुसलमान जो उस लड़ाई में मारे गये थे उनको दफ़नाने का इन्तजाम किया।

कुछ समय बाद पिता और बेटे में सुलह हो गयी। मोतीराम ने अपनी पहली बेटी की जगह अपनी दूसरी बेटी की शादी राजा रसालू के साथ कर दी। मौलवी लोग तभी मक्का लौट गये। राजा रसालू ने कुछ दिनों के बाद सियालकोट छोड़ दिया और अपनी फ़ौलादी घोड़ी पर सवार हो कर दुनियॉ घूमने चल दिया।

2–4 शिकारी राजा – राजा रसालू और मीरशिकारी[51]

जब राजा रसालू ने सियालकोट में अपनी नयी सरकार स्थापित कर ली तब वह अकेला ही दक्षिण की तरफ चल दिया क्योंकि वह मीरशिकारी से मिलना चाहता था जो एक बहुत ही मशहूर शिकारी था।

जब वह जा रहा था तो अचानक उसकी घोड़ी ने जंगल की गहराइयों से आती हुई संगीत की मीठी आवाज सुनी। उसने अपने मालिक से कहा — "मालिक। यह मीठी आवाज कैसी है और यह कहाँ से आ रही है।"

राजा रसालू बोला — "मैंने सुना है कि यहीं पास में जंगल में जंगल का एक राजा रहता है जिसका नाम मीरशिकारी है वह यहाँ बैठ कर अपनी बीन बजाता है जो उसे पानी के अमर राजा ख्वाजा खिज़ार[52] ने दी थी।

---

[51] The Hunter King – Rasalu and Mirshikari. (Tale No 3-4 of the Book)

[52] Hazrat (Arabic) is a title of honour among holy men. Ahmad also a term of honour refers to Khwaja Khizar, the green-robed deity, who among Muhammadans is the protector of travellers. The. villagers of the Indus, Muhammadan as well as Hindu, believe that he is the river-god, able to preserve their fields and villages from the eroding action of the waters.

जब भी मीरशिकारी अपनी बीन बजाता है तो जंगल के सारे जानवर उसके चारों तरफ उस मीठे संगीत को सुनने के लिये इकट्ठे हो जाते हैं। और फिर जब भी उसे मौका मिलता है वह उनमें से किसी भी जानवर को, जो भी उसे अच्छा लगता है, अपने बाण से मार लेता है।"

इतना कह कर राजा रसालू अपनी "फ़ौलादी" घोड़ी और "शादी" तोते को ले कर उसी दिशा की तरफ चल दिया जिधर से संगीत की आवाज आ रही थी।

उधर मीरशिकारी को किसी ज्योतिषी ने बता रखा था कि किसी समय तुम्हारे पास राजा रसालू आयेगा और वह तुम्हें जादू, लड़ना और लकड़ी का काम सिखायेगा। उस दिन से मीरशिकारी राजा रसालू का इन्तजार कर रहा था।

आज जब उसने एक अजनबी को एक घोड़े पर सवार आते देखा तो उससे पूछा — "आप कौन हैं। आप किस राजा के बेटे हैं। आप मुझे बतायें कि आपका नाम क्या है। आपका जन्म कहाँ हुआ था। आपके शहर का नाम क्या है।"

राजा रसालू बोला — "मैं राजा शालिवाहन का बेटा हूँ और रसालू मेरा नाम है। मेरा जन्म सियालकोट में हुआ था और मेरा शहर भी वही है।"

मीरशिकारी ने पूछा — "क्या आप वही रसालू हैं जिसको मेरे पास आना था।"

"हॉ।"

"अभी तक तो मैंने आपके बारे में केवल सुना था आज आपको देख भी लिया।"

राजा रसालू ने पूछा — "तुमने मेरे बारे क्या सुना है।"

मीरशिकारी बोला — "यही कि असली रसालू के पास 100-100 पौंड भारी बाण हैं जो उसके पास ही रहते हैं। इसी पहचान से मैं आपको पहचान सका कि आप ही असली रसालू हैं। अल्लाह की कृपा से आज मुझे इस जंगल में आपके दर्शन भी हो गये जहॉ मुझे आपके दर्शन की बिल्कुल भी आशा नहीं थी।"

राजा रसालू ने पूछा — "यहॉ तुम क्या कर रहे हो। तुम अपनी बीन क्यों बजा रहे हो।"

मीरशिकारी बोला — "यह तो मैं रोज ही करता हॅू। रोज मैं जानवरों का शिकार करने के लिये अपनी बीन बजाता हॅू। क्योंकि जब भी मैं अपनी बीन बजाता हॅू तो बहुत सारे जानवर उसे सुनने के लिये मेरे पास आ कर इकट्ठा हो जाते हैं।

और फिर जब मुझे मौका मिलता है तो मैं अपना शिकार चुन कर उस पर निशाना लगा कर उसे मार देता हॅू। यह मॉस तो मुझे रोज ही अपने खाने में चाहिये क्योंकि मैं इसके बिना नहीं रह सकता। पर मेरे मालिक अब जब आप मेरे इस जंगल में आ गये हैं तो आप मुझे अपना शिष्य बना लीजिये।"

रसालू बोला — "ठीक है। पर पहले तुम जैसा मैं तुमसे कहूँगा तुम वैसा ही करोगे। मेरा शिष्य बनने के लिये तुम्हें तीन बातों का मानना जरूरी है।"

मीरशिकारी बोला — "जो कुछ भी मुझसे कहा जायेगा मैं वह अपनी पूरी ईमानदारी से करूँगा।"

रसालू बोला — "पहली बात तो यह है कि मैं यहाँ आया हुआ हूँ यह बात किसी को पता नहीं चलनी चाहिये। तुम्हें यह बात भी किसी को नहीं बतानी चाहिये कि तुमने मुझे देखा है।

दूसरी बात यह है कि तुम जंगल में केवल तीन तरफ जा कर जानवरों को मार सकते हो – उत्तर, पूर्व और पश्चिम। पर चौथी तरफ तुम शिकार नहीं करोगे। तीसरी शर्त यह है कि दक्षिण की तरफ दो हिरन रहते हैं – एक हिरन और एक हिरनी। उन्हें तुम्हें किसी भी हालत में नहीं मारना है।"

मीरशिकारी ने पूछा — "पर मुझे पता कैसे चलेगा कि वे कौन से हिरन और हिरनी हैं जिन्हें मै नहीं मार सकता। मैं उन्हें पहचानूँगा कैसे कि वे हिरन जिन्हें मुझे नहीं मारना है वे कौन से हैं।"

राजा रसालू बोला — "वे हिरन जंगल के दक्षिण की तरफ रहते हैं और वहीं उनका घर है। तुम उन्हें कभी नहीं देख सकते और न कभी वे तुम्हें दिखायी देंगे जब तक कि तुम उधर जाओगे नहीं।

पर अगर तुम कभी उधर जाते हो और किन्हीं दो हिरन और हिरनी को देखते हो तो वे वही हिरन और हिरनी होंगे जिन्हें तुम्हें नहीं मारना है। अब अगर तुम उनको मारते हो तो याद रखना कि तुम अपनी ज़िन्दगी खो दोगे।”

मीरशिकारी ने उसकी तीनों शर्तें मंजूर कर लीं। रसालू ने उसे हथियारों का अपना इस्तेमाल करने का और शिकार करने का तरीका सिखाया। फिर वह वहाँ से जंगल के किसी दूसरे हिस्से में चला गया। उधर मीरशिकारी भी कुछ देर तक अपनी बीन बजाने और शिकार करने के बाद शहर वापस आ गया।

घर आ कर उसने खाना खाया और आराम करने के लिये लेट गया। वहाँ वह अपनी पत्नी से मीठे शब्दों में बात करने लगा। बात करते समय उसने सबसे पहले अपनी पहली शर्त तोड़ दी।

उसने अपनी पत्नी से कहा — “आज जंगल में मैंने राजा रसालू को देखा।”

उसकी पत्नी उसकी तरफ घूमी और बोली — “तुम मजाक कर रहे हो। क्या राजा रसालू कोई पागल आदमी है जो वह इस तरह जंगलों में घूमता फिरेगा। लगता है कि तुम तो बहुत ही अक्लमन्द हो गये हो।”

अपनी पत्नी की बात सुन कर उसे बहुत शर्म आयी और उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया। फिर भी उसने अल्लाह की कसम खा

कर अपनी पत्नी से कहा — "आज सचमुच मैंने राजा रसालू को अपनी आँखों से जंगल में देखा।"

पर उसकी पत्नी को उसकी बात पर विश्वास ही नहीं हुआ। वह बोली — "अपनी जबान पर काबू रखो और मुझे ज़्यादा बनाने की कोशिश मत करो। देखो तुम मुझे छल नहीं सकते।"

कुछ देर बाद ही मीरशिकारी ने अपनी पत्नी से रात भर में अपना नाश्ता बनाने के लिये कहा क्योंकि अगले दिन सुबह सवेरा होने से पहले ही उसे जंगल में पहुँचना था।

उसकी पत्नी ने सोचा कि अब इस समय पति से कोई बहस करना बेकार है और इतनी रात गये नाश्ता बनाना भी बेकार है नाश्ता तो सुबह उसके जाने से पहले ही बन सकता है।

सो सुबह को वह अपने रोज के समय पर ही उठी और मीरशिकारी के लिये नाश्ता बनाने के लिये रसोई में पहुँची तो वह यह देख कर आश्चर्य में पड़ गयी कि वहाँ तो किसी भी तरह का कोई माँस नहीं था।

उसने सोचा कि मीरशिकारी तो माँस के अलावा और कुछ खाता ही नहीं सो मुझे अभी बाजार जा कर कसाई से दो पौंड बकरे का माँस ले कर आना चाहिये। सो वह कसाई की दूकान पर गयी और उससे दो पौंड बकरे का माँस माँगा कि "तुम मुझे अभी दो पौंड बकरे का माँस दे दो उसके बदले में मैं कल तुम्हें चार पौंड हिरन का माँस दे दूँगी।"

कसाई बोला — “रात के इस समय में अपना दरवाजा नहीं खोल सकता। मैं तुम्हारी आवाज तो सुन सकता हूँ पर तुम हो कौन यह तो अल्लाह ही जानता है। हो सकता है कि तुम कोई जादूगरनी हो या फिर राक्षसी हो या फिर कोई बुरी आत्मा ही हो।”

स्त्री बोली — “मैं राजा मीरशिकारी की पत्नी हूँ।”

कसाई बोला — “अगर तुम राजा मीरशिकारी की पत्नी हो तो मुझे पैसे चाहिये। मैं तुम्हें दो पौंड माँस दे दूँगा।”

इस बीच जब मीरशिकारी की पत्नी से बहस कर रही थी मीरशिकारी जाग गया और उसने अपनी पत्नी को पुकारा पर उसे तो वह अपने सारे महल में नहीं मिली। कुछ देर तो उसने उसका इन्तजार किया पर वह भी बेकार रहा क्योंकि वह तो वहाँ थी ही नहीं।

उसे देर हो रही थी वह इन्तजार करते करते भी थक गया था सो उसने अपनी बीन ली धनुष बाण लिया और बिना नाश्ता किये ही शिकार पर चला गया।

जब वह शिकार के मैदान में आया तो उसने राजा रसालू की दूसरी शर्त भी तोड़ दी। वह जंगल में उसी दिशा की तरफ चला गया जिस तरफ उसके गुरू राजा रसालू ने उसे शिकार के लिये जाने से मना किया था।

एक ठीक सी जगह देख कर वह बैठ गया और अपनी बीन बजाने लगा। बीन का मीठा संगीत सुबह की हवा में दूर दूर तक तैर गया।

इत्तफाक से राजा रसालू वहीं आसपास में ही घूम रहा था। उसकी घोड़ी ने फिर से वह संगीत सुना तो राजा रसालू से बोली — "क्या यह उसी बीन की आवाज है जो हमने कल सुनी थी।"

राजा रसालू बोला — "हॉ यह उसी बीन की आवाज है जो हमने कल सुनी थी। मेरे शिष्य ने मेरी शर्त को पूरा भी नहीं किया और न मेरा कहा सुना। अब हम उसकी बदलती हुई किस्मत देखेंगे।"

इस बीच जब मीरशिकारी अपनी बीन बजा रहा था तो उन दोनों हिरनों का जोड़ा भी उसकी आवाज सुन कर उधर आ निकला और संगीत सुनने लगा। जैसे ही दोनों हिरनों को यह लगा कि वे संगीत की तरफ आकर्षित हो रहे हैं तो हिरन ने हिरनी से कहा —

"हम अभी यहीं इन्तजार करते हैं और देखते हैं कि यह बीन कौन बजा रहा है। यह भी हो सकता है कि राजा मीरशिकारी अपनी बीन बजा रहा हो और जैसे ही वह हमें देखेगा वह हमें मार देगा। क्योंकि अपनी इस खतरनाक बीन से उसने पहले से ही यह जंगल खाली कर दिया है।"

हिरन के ये शब्द मीरशिकारी के कानों में भी पड़े तो उसने अपनी बीन बजानी बन्द कर दी और चारों तरफ देखा तो उसे एक

चचरा का पेड़ दिखायी दिया जो हरी हरी पत्तियों से लदा हुआ था। वह धीरे धीरे उसके पास तक गया और धीरे से उसकी कुछ पत्तियाँ तोड़ लीं।

उन पत्तियों को उसने अपने सारे शरीर पर बाँध लिया ऐसा कर के वह ऐसा लगने लगा जैसे चचरा का कोई पेड़ हो। उसने फिर से अपनी बीन बजानी शुरू कर दी और हिरन के उस जोड़े की तरफ बढ़ने लगा।

जब हिरन के जोड़े ने उसे अपनी तरफ आते देखा तो हिरन ने हिरनी से कहा — "देखा वह किसी बात के लिये हमारी तरफ बढ़ रहा है। चलो हम भी चल कर उससे मिलते हैं।"

पर हिरनी बोली — "नहीं एक कदम भी आगे नहीं बढ़ना।"

तो हिरन बोला — "मैं तो जंगल में ही पला बढ़ा हूँ। जंगल में ही मैंने खाया पिया है। जंगल ही मेरा घर है। यह देखो वहाँ एक छोटा सा पत्तों वाला पेड़ मुझे और तुम्हें ढूँढ रहा है।"

हिरनी अपने सीधे सादे पति से बोली — "मैं भी तो जंगल में ही पली बढ़ी हूँ। मैंने भी जंगल में ही खाया पिया है। मेरा घर भी जंगल ही है। पर ऐसा कभी नहीं हो सकता कि एक पत्तों वाला छोटा पेड़ अपने दो पैरों पर चलता हो।"

पर हिरन ने आगे बढ़ने का विचार किया। वह बोला — "मैं तो जंगल में ही पला बढ़ा हूँ। जंगल में ही मैंने खाया पिया है और

जंगल ही में मैं रहता हूँ। अगर वह भूखा है या फिर किस्मत से ही सही वह यहाँ आया है तो हम उसकी तरफ चलते हैं।"

हिरनी ज़ोर से चिल्लायी — "अच्छी सलाह से काम करो। मैं भी तो जंगल में ही पली बढ़ी हूँ। मैंने भी जंगल में ही खाया पिया है। जंगल ही मेरा घर भी है। पर उसकी ढंग चाल से मुझे लगता है कि वह हमें पकड़ लेगा और हमारा माँस बाँट लेगा। मेरे प्यारे पति। तुम उसके और पास मत जाओ।"

इतना कह कर वह रुक गयी पर हिरन उसका संगीत सुनते हुए उसके और पास और और पास तक चलता चला गया। जब मीरशिकारी ने उसे अपने इतने पास देखा कि वह उसे अपने बाण का निशाना बना सकता था उसने अपनी बीन अपने दाँतों में दबायी धनुष बाण निकाला और बाण चला दिया। बेचारा हिरन वह नुकीला बाण खा कर नीचे गिर पड़ा।

यह देख कर मीरशिकारी आगे बढ़ा उसने अपना चाकू निकाला और अपने रिवाज के अनुसार उसका गला काटने ही वाला था कि राजा रसालू जो अब तक वहाँ जो कुछ हो रहा था सब देख रहा था अपनी घोड़ी से बोला — "इस आदमी ने मेरा कहा नहीं माना अब तुम देखना कि कुछ ही देर में इसके ऊपर क्या मुसीबत आयेगी।"

मीरशिकारी ने उस हिरन को मारने के लिये अपना हाथ उठाया तो हिरन ने उससे कहा — "ओ मुझे नुकीला बाण मारने वाले। तू अपना यह खुट्टल चाकू यहीं अपने पास रख ले और अपनी ल्यूट

उठा और मेरे मरने से पहले उसे कुछ पल के लिये बजा जिसने मेरा दिल छेदा है। ओ निर्दयी। तू अपने इन काँपते हुए सुरों को फिर से छेड़ ताकि मैं एक बार फिर से उन्हें सुन कर खुश हो जाऊँ।"

मीरशिकारी ने सोचा "यह बेचारा मेरी बीन से मरा है इसलिये इसके मरने से पहले मुझे इसकी आखिरी इच्छा जरूर पूरी कर देनी चाहिये। फिर भी में मैं इससे डरा हुआ तो हूँ ही क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि मैं अपनी बीन बजाना शुरू करूँ और यह मेरी तरफ अपना सिर घुमा कर मुझे अपने सींग मार दे।"

सो वह उसके ऊपर बैठ गया ताकि वह उसके शरीर के बोझ से दबा रहे और इस तरह उसके ऊपर बैठ कर उसने अपनी बीन बजानी शुरू कर दी। मरता हुआ हिरन उसकी बीन की आवाज सुनता रहा।

जब मीरशिकारी अपनी बीन बजा चुका तो उसने उसे एक तरफ रख दिया और सोचा कि "अगर मेरा चाकू साफ नहीं किया गया तो मेरा शिकार तो बेकार हो जायेगा।" यह सोच कर उसने अपना चाकू उठाया और उसे हिरन की गर्दन पर फिर से फिरा दिया जिससे उसकी गर्दन से और खून बह गया।

इसके बाद उसने सोचा कि "अगर मेरा चाकू धोया नहीं गया तो भी मेरा यह शिकार खाने लायक नहीं रहेगा।" ऐसा सोच कर उसने अपने चारों तरफ निगाह डाली कि उसे कहीं पानी दिखायी दे जाये

ताकि वह अपना चाकू उसमें धो सके पर उसे पानी तो कहीं दिखायी नहीं दिया।

हॉ वहॉ पास में ही भारी ओस जरूर पड़ी हुई थी। सो उसने अपना चाकू उसी घास पर उलटा पुलटा कर के ओस से साफ कर लिया।

जब उसने चाकू साफ कर लिया तो उसने उसे अपने दॉतों के बीच में पकड़ लिया ताकि वह अपने हाथों का खून भी साफ कर सके। पर हुआ क्या कि जैसे ही उसने चाकू अपने मुॅह में पकड़ कर अपने हाथ ओस से साफ किये तो एक सॉप ने उसे काट लिया।

उसके मुॅह से एक ज़ोर की चीख निकल गयी और चाकू नीचे गिर गया। चाकू सॉप के ऊपर गिरा और सॉप के दो टुकड़े हो गये और वह वहीं मर गया। उधर जैसे ही सॉप का जहर मीरशिकारी के शरीर में घुसा तो मीरशिकारी भी मर गया।

यह देख कर राजा रसालू जो दूर से यह सब देख रहा था अपनी घोड़ी से बोला — "अब देखना आगे क्या होने वाला है।"

कुछ देर बाद हिरनी अपने पति को ढूॅढने के लिये अपनी जगह से बाहर निकली तो अपने पति को मरा हुआ पाया। उसने मीरशिकारी को भी वहीं पास में ही मरा पड़ा देखा।

उसने सोचा "लगता है कि मीरशिकारी जंगल में शिकार खोजता खोजता थक गया है सो वह आराम कर रहा है।" लेकिन जब वह उसके पास पहुॅची तो उसने देखा कि वहॉ तो एक सॉप भी मरा पड़ा

है। उसके दो टुकड़े हो गये हैं और एक चाकू भी उसी के पास पड़ा है।

इससे उसकी समझ में आ गया कि मीरशिकारी ने उसके पति को मारा, साँप ने मीरशिकारी को मारा और चाकू ने साँप को मारा। यह सब देख कर उसने सोचा "अब मेरा इस दुनियाँ में रहना बेकार है क्योंकि अब यह तो अल्लाह ही जानता है कि अब मुझे कौन नहीं मार देगा या मेरी किस्मत में और क्या क्या दुख लिखे हैं।"

सो अब वह यह सोचने लगी कि वह मरे कैसे। कुछ सोच विचार के बाद वह अपने पति के शरीर के पास गयी और बोली— "ओ मेरे पति के सींगों। तुम्हारे सींग तो भाले की तरह तेज़ हैं। मैं तुम्हारा सिर सीधा करती हूँ और उसके ऊपर कूद जाती हूँ। उनकी नोकें मेरा शरीर छेद देंगी और मैं मर जाऊँगी।"

यह कह कर उसने अपने पति का सिर सीधा किया फिर थोड़ी दूर गयी और भागती हुई आ कर उसके सींगों पर गिर पड़ी। इससे उसका पेट फट गया और उसने दो बच्चों को जन्म दिया – एक नर और एक मादा। पर कुछ पल साँसें लेने के बाद ही वे दोनों भी मर गये।

राजा रसालू सारा समय यह सब देखता रहा। हर घटना को देखने के बाद वह अपनी घोड़ी से बोला — "चलो देखते हैं अब आगे क्या होता है।"

कुछ मिनटों बाद एक गीदड़ जंगल से बाहर निकला तो इतनी सारी लाशें जमीन पर पड़ी देख कर खुशी के मारे नाचने कूदने लगा।

“आहा आज तो मुझे अल्लाह ने बहुत सारा खाना दिया है। आज मैं पेट भर कर खाऊँगा। फिर सो जाऊँगा और उठ कर फिर खा लूँगा। पर मीरशिकारी एक ताकतवर आदमी है और मशहूर शिकारी है।

इसका धनुष बाण तो इसी के पास ही पड़ा है। अगर वह उठ गया तो वह जरूर ही मुझे मार देगा। सो सबसे पहले मुझे उसका धनुष बाण यहाँ से उठा कर कहीं दूर फेंक देना चाहिये। जब उसके पास उसका धनुष बाण ही नहीं होगा तो वह मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचा पायेगा।”

यह सोच कर गीदड़ चुपचाप मीरशिकारी के पास आया उसका धनुष बाण उठाया और उसे ले कर जंगल की तरफ भाग गया। वहाँ उसने उसे तोड़ने की कोशिश की पर उसकी डोरी ऐंठे हुए लोहे के तार की बनी थी जो उसके दाँतों के लिये बहुत मजबूत थी।

फिर उसने उसे अपने पिछली टाँगों पर रख लिया और उसका दूसरा सिरा अपनी ठोड़ी पर रख लिया। इस तरह रख कर वह उसका तार खिसकाने में सफल हो गया।

पर उससे वह धनुष इतनी ज़ोर से हिला कि उसके हिलने ने उसके शरीर के दो टुकड़े कर दिये जिससे उसका ऊपर वाला आधा हिस्सा तो बहुत ऊपर तक उछल गया।

जब राजा रसालू ने गीदड़ की यह हालत देखी तो वह हॅस पड़ा और बोला — "चलो अब वहॉ चल कर देखते हैं।"

जब वह उस जगह पर पहुॅचा तो उसने अपनी घोड़ी से कहा — "अब हम क्या करें। हम मीरशिकारी की लाश को यहॉ से कैसे ले जायें।"

घोड़ी बोली — "इसे इसी की घोड़ी पर डाल लो वह इसे अपने आप ही इसके घर ले जायेगी।"

सो राजा रसालू ने उसकी लाश को उठा कर उसकी घोड़ी पर रखने ही वाला था कि उसकी घोड़ी ने उसे अपने ऊपर रखने से मना कर दिया। उसने कहा — "क्योंकि उसने आपकी बात नहीं मानी इसलिये मैं उसे अब और नहीं ले जा सकती।"

राजा रसालू ने कहा — "पर तुम मुझे उसका महल तो बता ही सकती हो।" सो उसने मीरशिकारी की पगड़ी उठायी धनुष बाण उठाया उसकी बीन उठायी और मीरशिकारी की घोड़ी के पीछे पीछे चल दिया।

वह घोड़ी उसे घास के मैदान से होती हुई मीरशिकारी के महल की तरफ ले चली।

जब वे शहर में घुसे तो राजा रसालू ने एक स्त्री देखी जो एक कसाई की दूकान पर खड़ी हुई थी और मॉस तुलवा रही थी। उसने उसे यह कहते हुए सुना कि "अब और ज़्यादा देर मत करो मीरशिकारी मेरा इन्तजार कर रहा होगा।"

राजा रसालू वहीं रुक गया और उससे पूछा — "तुम यहॉ क्या कर रही हो। तुम तराजू में मॉस तौल रही हो पर यह तो बताओ कि तुम किसके लिये यह मॉस तौल रही हो। जिसके लिये तुम यह मॉस तौल रही हो उसे यह मॉस कभी नहीं मिलेगा। उसके देखने का आज यह आखिरी दिन था।"

यह सुन कर स्त्री तुरन्त ही पलटी और बोली — "तुम कौन हो जो मेरे पति को गाली दे रहे हो।"

"मैं राजा रसालू हूँ"

पर स्त्री को उसकी बात पर विश्वास ही नहीं हुआ। वह बोली — "तुम तो एक अक्लमन्द राजा हा। तुम्हें किसी निर्दोष आदमी को गाली नहीं देनी चाहिये। तुम्हें ऐसा कहना शोभा नहीं देता।"

राजा रसालू ने पूछा — "अगर तुम्हें मीरशिकारी की चीज़ें दिखायी जायें तो क्या तुम उन्हें पहचान लोगी।"

"हॉ हॉ। क्यों नहीं।"

तब राजा रसालू ने उसके सामने मीरशिकारी की पगड़ी रखी उसकी बीन और उसके हथियार रखे और कहा — "इन्हें देख कर बताओ कि क्या यह सब तुम्हारे पति के हैं।"

जैसे ही उस स्त्री ने वह सब सामान देखा तो वह तो बेहोश हो कर जमीन पर गिर पड़ी। जब वह कुछ होश में आयी तो वह उठी और रोती हुई उस देश के राजा के महल की तरफ दौड़ी जहॉ का वह राजा था। राजा रसालू उसके पीछे पीछे चल दिया।

वहॉ पहुॅच कर वह चिल्लायी "देखो इस आदमी ने मेरे पति को मार दिया।"

जब उस देश के राजा ने उसकी यह दुखभरी आवाज सुनी तो उसने अपने सौ लोग राजा रसालू को सुनवायी के लिये समय पर अपने दरबार में लाने के लिये भेजे।

पर राजा रसालू ने उन सबको एक जगह पर इकट्ठा किया उन्हें अपनी बड़ी ढाल से सुरक्षित किया और फिर राजा के पास एक सन्देश भेजा "आओ और अपने लोगों को मेरी सुरक्षा में से ले जा सकते हो तो ले जाओ।"

जब राजा ने यह जाना कि राजा रसालू को कितना अच्छा जादू आता था और वह इतना ताकतवर था कि वह उसके **100** आदमियों को सुरक्षा दे रखी थी तो उसने उसके पास अपने कुछ दूत और भेजे जिनसे उसने यह कहा कि "उससे जबरदस्ती नहीं करना बल्कि उससे नर्मी से और विनती कर के उसे मेरे पास लाना।"

राज रसालू ने जवाब दिया कि "मैं आता हूॅ।" और अपना भाला हाथ में ले कर राजा के दूत के आगे आगे राजा के पास चल

दिया। जब वह राजा के सामने पहुँचा तो उसने उससे पूछा कि उसने उसे क्यों बुलाया है।

राजा ने पूछा — "तुमने मीरशिकारी को क्यों मारा।"

राजा रसालू बोला — "अच्छा मैं तुमसे एक पहेली पूछता हूँ। अगर तुम उसका जवाब दे दोगे तो तुम खुद मीरशिकारी की मौत के बारे में जान जाओगे। एक को मारा गया दो मर गये। दो को मारा और चार मर गये। चार मारे गये छह मर गये। उनमें चार नर थे और दो मादा थे।"

राजा की समझ में यह पहेली नहीं आयी और वह इसका कोई जवाब नहीं दे सका। सो उसने मन्त्रियों को राजा रसालू के साथ भेजा और कहा — "तुम लोग इसके साथ जाओ और देख कर आओ कि यह सच कह रहा है या नहीं। और देखो हमें इससे बच कर रहना चाहिये कहीं ऐसा न हो कि यह असली राजा रसालू हो।"

वे मन्त्री राजा रसालू के साथ जंगल गये। वहाँ उन्हें छहों लाशें पड़ी हुई मिल गयीं। उन्होंने मीरशिकारी की लाश को उठाया और उसे राजा के पास ले गये। तब राजा रसालू ने उसे सारी कहानी बतायी तो राजा बोला — "यह आदमी तो बिल्कुल सच बोल रहा है।"

उसके बाद राजा रसालू ने अपने शिष्य की लाश उठायी और जंगल वापस ले गया। उसे वहाँ रख कर अपने हाथ से उसके लिये

एक लम्बी चौड़ी कब्र खोदी और उसे वहीं पेड़ों के साये में गाड़ दिया। उसके ऊपर उसने उसका एक सुन्दर सा मकबरा बना दिया।

फिर उसने सारे शहर में यह मुनादी पिटवा दी कि जो कोई भी जंगल में शिकार करने जाये वह वहॉ सबसे पहले मीरशिकारी की कब्र पर जाये।

2–5 राजा रसालू और हंस[53]

घूमते घूमते राजा रसालू एक बार एक देश में आया जिसके फाटक पर एक बोर्ड लगा था जिस पर लिखा था कि "राजा शालिवाहन का बेटा सियालकोट का राजा रसालू एक दिन यहाँ आयेगा और वह लोहे का एक बाण हवा में 100 फीट ऊँचा चलायेगा जिसके लिये उसे 100 गज लम्बी पगड़ी इनाम में मिलेगी।"

सो राजा रसालू वहाँ रुक गया और एक दिन उसने जब वहाँ बहुत सारे लोग अपनी अपनी ताकतों को दिखा रहे थे तो उसने भी उनके सामने अपना एक बाण ऊपर हवा में फेंक दिया।

सारे लोग जो वहाँ खड़े हुए थे आसमान की तरफ देखने लगे और इन्तजार करने लगे कि वह बाण ऊपर से कब वापस आता है। पर क्योंकि वह वापस ही नहीं आया तो उन्होंने सोचा कि यही असली रसालू है। तब उन्होंने उसके लिये एक 100 फीट लम्बी पगड़ी बनवायी और शहर भर में उसे असली रसालू घोषित कर दिया गया। उसकी ताकत के लिये उसे सम्मान भी दिया गया।

अगले दिन वह वहाँ से अपनी यात्रा पर और आगे चल दिया। चलते चलते वह एक नदी के किनारे आ गया वहाँ उसने एक कौआ और कौवी को प्यार से पास पास बैठे देखा। वहीं उसने कौवी को

[53] Rasalu and the Swans. (Tale No 3-5 of the Book)

यह कहते हुए भी सुना कि वह कौए से कह रही थी कि मुझे आसमान में ले चलो।

कौआ बोला — "आसमान में कोई नहीं जा सकता।"

पर उसने उससे जिद की कि "ठीक है तब मुझे तुम जितनी ऊपर ले जा सकते हो ले चलो।" ऐसा कह कर वह ऊपर उड़ गयी और कौआ उसके पीछे पीछे चला।

दोनों आसमान में जितना ऊँचे जा सकते थे चल दिये। अब तो वे धरती से दिखायी भी नहीं दे रहे थे। उधर राजा रसालू सोच रहा था कि उनके इस साहसिक यात्रा का नतीजा क्या होगा सो वह वहीं आसपास में ही घूमता रहा।

दोनों कौआ और कौवी उड़ते उड़ते इतनी दूर चले गये कि वे एक ऐसे देश में आ गये जहाँ बारिश तूफान और बर्फ बहुत पड़ती थी। अभी भी वहाँ बर्फ पड़ रही थी।

तो कौवी तो उसे देख कर बहुत डर गयी। वह बर्फ में सारी भीग चुकी थी। वह बोली — "ओ खुदा मेरी जान बचाओ। मुझे कोई शरण की जगह दिखाओ।"

कौआ बोला — "अब हम क्या करें। यह सब तुम्हारी गलती है। मैंने तुम्हें अच्छी सलाह दी थी तो तुमने उसे क्यों नहीं सुना।"

ऐसा कह कर वे नीचे उतरने लगे। पर क्योंकि वे बहुत थक गये थे तो वे समुद्र के बीच में एक टापू पर जा कर गिर पड़े। कौवी बोली — "चलो अब कहीं शरण की जगह खोजते हैं।"

जब वे कोई ठहरने के जगह खोज रहे थे तो उन्हें एक हंस मिला जो अपनी हंसिनी के साथ एक पेड़ के ऊपर अपने घोंसले में बैठा हुआ था।

कौए ने जा कर उसे सलाम किया तो हंस ने अपने बिन बुलाये मेहमान से पूछा — "तुम्हें क्या चाहिये कौए।"

कौआ बोला — "खुदा के लिये हमें यहाँ अपने किसी कोने में शरण के लिये थोड़ी सी जगह दो दो।"

हंस बोला — "हालाँकि मेरे और तुम्हारे बीच कोई रिश्ता नहीं है फिर भी तुम आ गये हो तो आ जाओ और यहाँ आराम करो।"

यह सुन कर हंसिनी हंस के ऊपर बहुत ज़ोर से चिल्लायी — "मैं इस पक्षी को अपने घर के अन्दर नहीं आने दे सकती। यह बहुत ही नीच है। हमारी बिरादरी के लोग सब लोगों में हमारी बदनामी कर देंगे और कोई हमें अच्छा नहीं समझेगा।"

हंस बोला — "वह बेचारा हमसे खुदा के नाम पर शरण माँग रहा है तो मुझे तो उसे घर में अन्दर आने की इजाज़त तो देनी ही चाहिये न।"

इतनी देर में कौआ और कौवी दोनों हंस के घोंसले में अन्दर आ गये। हंस ने उन्हें मोती खाने को दिये और जो कुछ और उसके घोंसले में था वह उन्हें खाने के लिये दिया।[54]

---

[54] There are many tales of crow and swan. Both birds are just opposite to each other – one is black another is white, one is ugly another is majestic. one eats pearls other eats rotten meat etc etc.

अगली सुबह जब बारिश खत्म हो गयी। कौए हंस के घोंसले से बाहर निकले और कौए ने हंस से कहा — "दोस्त। नीच लोगों से बच कर रहना।"

इसके जवाब में हंस बोला — "जो किसी के साथ बुरा करेगा उसका खुद का बुरा होगा।"

कौआ बोला — "कोई आदमी किसी के साथ बुरा करता है या नहीं पर फिर भी बुरे आदमी से एक निश्चित दूरी पर ही रहना चाहिये।"

हंस ने पूछा — "यह कहने का तुम्हारा क्या मतलब है।"

कौआ बोला — "क्या तुम्हें नहीं पता कि एक रात में ही तुमने मेरी हंसिनी पत्नी छीन ली है जिसे मैंने **12** साल से रखा हुआ था। लाओ मेरी हंसिनी पत्नी वापस करो।

हंस ने पूछा — "क्या यही मेरी मेहरबानी का बदला है।"

चालाक कौए ने कहा — "मेहरबानी का मतलब तो मैं जानता नहीं। बस तुम मेरी पत्नी वापस कर दो। नहीं तो तुम्हें मुझसे लड़ाई लड़नी होगी या फिर फैसले के लिये राजा के दरबार में चलना होगा।"

हंस ने डरते हुए कौए से कहा — "मेरी तुमसे लड़ने की बिल्कुल इच्छा नहीं है। चलो राजा के दरबार में चलते हैं।"

चारों चिड़ियें इकट्ठी हो कर राजा भोज के महल पहुँचीं। राजा भोज ने अपने दरबान से पूछा — “ये चारों चिड़ियें आज मेरे दरबार में क्यों आयीं हैं। उन्हें मेरे सामने ले कर आओ।”

सो दरबान उन्हें राजा के दरबार में राजा के सामने ले कर आये तो उन्होंने कहा कि हम आपके पास आज एक फैसले के लिये आये हैं। आप ध्यान से सुनें।”

राजा भोज बोले — “बोलो क्या बात है।”

हंस बोला — “यह कौआ आपको बतायेगा।”

कौआ बोला — “नहीं। जो कुछ भी है मैं उसके बारे में कुछ नहीं कहना चाहता आप हंस से पूछें।”

तब हंस बोला — “कल बहुत तूफान बारिश और बर्फ थी तो उसकी वजह से यह चालाक कौआ मेरे पास आया और इसने मुझसे शरण माँगी। उसने खुदा के नाम पर शरण माँगी थी तो हमने इसे वह सब दिया जो कुछ हमारे पास था। हमने इसे रहने के लिये जगह दी खाने के लिये खाना दिया।

पर लो जब सुबह हुई तो हमारी की गयी यह अच्छाई बुराई में बदल गयी। यह बैठ कर हमारी हँसी उड़ाता रहा और बल्कि अभी भी उड़ा रहा है।”

तब कौआ आगे बढ़ा और उसने अपन पक्ष इस तरह रखा — “एक दिन मैं एक नदी के किनारे घूम रहा था कि मुझे वहाँ एक रेतीले गड्ढे में किसी चिड़िया का एक अंडा दिखायी दिया। वह

अंडा मैं अपने घर ले आया और बड़ी सावधानी के साथ इसकी देखभाल करने लगा।

अपनी छाती के नीचे रख कर मैंने उसे सेया जब तक कि मेरी छाती बिल्कुल नंगी नहीं हो गयी। आखिर बच्चे ने अंडे का खोल तोड़ा। वह कोई बेकार का मुर्गा नहीं था वरना वह भाग जाता और जंगल में आजाद घूमता फिरता।

वह तो एक मादा थी सो मैंने सोचा कि मैं उसकी जान की रक्षा करूँगा। जब वह **12** साल की हो जायेगी तब वह मेरी पत्नी बनने के लायक हो जायेगी।

तब बारिश बर्फ और तूफान का मारा यह हंस मेरे पास आया और इसने खुदा के नाम पर मुझसे दया की विनती की। मैंने बिना एक शब्द बोले इसे अन्दर बुला लिया। पर लो जब सुबह हुई तो जाति के बहाने यह मेरी पत्नी को लिये जा रहा है और मेरा नाम भी बदनाम कर रहा है।"

राजा भोज ने दोनों की कहानी ध्यान से सुनी और हंस से बोला — "मुझे कौए की बात ठीक लगती है सो तुम कौए की पत्नी उसे वापस कर दो।"

बेचारा हंस कोई जवाब ही नहीं दे सका पर उसने तुरन्त ही अपनी पत्नी कौए को दे दी। फिर वह वहाँ से रोता सुबकता कहीं दूर चला गया जहाँ वह अकेले एक बागीचे में रहने लगा।

कौआ जीत गया था। उसने अपनी जीत का इनाम ले कर सोचा कि "क्योंकि मेरी यह नयी पत्नी बहुत सुन्दर है तो अगर मैं इसे ले कर अपने घर जाऊँगा तो मेरे भाई बन्धु मेरी पत्नी को मुझसे छीन लेंगे। इससे अच्छा तो यही है कि में इसे यहाँ से कहीं दूर ले जाऊँ।"

अब इत्तफाक कुछ ऐसा हुआ कि कौआ भी उसी बागीचे में जा पहुँचा जिसमें हंस अकेला रह रहा था। सो अब चारों फिर से एक जगह मिल गये थे।

कुछ दिनों बाद राजा रसालू घूमते घूमते उस बागीचे से गुजरा। सवारी करते समय वह अपनी घोड़ी से कहता जा रहा था "समय काटने के लिये हम यहाँ अपने किसी दोस्त को ढूँढते हैं जिससे कुछ देर बातें की जा सकें।"

कि उसी समय उन्हें एक गीदड़ दिखायी दे गया तो वह उसके पीछे भागे और उसे पकड़ लिया।

गीदड़ ने उनसे पूछा — "जनाब आपने मुझे क्यों पकड़ा।"

"बस यूँ ही। समय गुजारने के लिये बातें करने के लिये।"

तब गीदड़ राजा रसालू की जीन पर बैठ गया और उन्हें बहुत सारी झूठी कहानियाँ सुनायीं जिन्हें सुन कर वे दोनों बहुत देर तक उनका आनन्द लेते रहे। इस तरह कहानी सुनते सुनते जब वे राजा भोज के शहर तक पहुँच गये तो राजा रसालू ने गीदड़ को अपने पास से भगा दिया।

गीदड़ बोला — “यह आपकी मेरे साथ बड़ी बेरहमी है कि आप मुझे यहाँ अकेले छोड़ कर जा रहे हैं क्योंकि जब शहर के सारे कुत्ते मुझे अकेला पायेंगे तो वे सब मेरे पास आ जायेंगे और मुझे खा जायेंगे। अच्छा हो कि आप मुझे अपने साथ ही ले चलें।”

राजा रसालू राजी हो गया और शहर में घुसा। शहर में घुसने पर लोगों ने उन्हें देखा तो सलाम किया और पूछा कि “आप कौन हैं।”

राजा रसालू बोले — “मेरा नाम राजा रसालू है और मैं राजा शालिवाहन का बेटा हूँ।”

रसालू का नाम सुनते ही शहर के बहुत सारे लोग उसके पास आ कर इकट्ठा हो गये और बोले “आज अल्लाह ने हमारी इच्छा पूरी कर दी।”

वहाँ से राजा रसालू राजा भोज के दरबार में गया जिनसे उसकी बहुत पुरानी दोस्ती थी। वह अपने घोड़े से उतरा और राजा भोज के पास जा कर बैठ गया। राजा भोज ने उसके लिये शतरंज[55] मँगवायी और उससे खेलने के लिये कहा।

अब तक राजा रसालू को अपने छोटे से दोस्त गीदड़ से बहुत प्यार हो गया था सो उसने गीदड़ को शतरंज खेलते समय अपने पास ही बिठा लिया।

---

[55] Translated for the word “Chess”. Its picture is given above.

खेल शुरू हुआ। राजा भोज ने पहले 1000 रुपये का दॉव लगाया और चाल चली। पर उसकी चाल गीदड़ ने बिगाड़ दी क्योंकि वह उसके हाथ पर गिर गया और उसने उसका हाथ हिला दिया।[56]

इससे राजा भोज गीदड़ से नाराज हो गया पर गीदड़ बोला — "मुझे अफसोस है। मुझे माफ कीजियेगा। कल मैं सारी रात जागता रहा इसी लिये मुझे थोड़ी झपकी लग गयी और मैं आपके हाथ पर गिर पड़ा।"

राजा भोज ने फिर से खेल बिछाया और फिर से खेलने के लिये अपना पॉसा फेंका पर इस बार भी गीदड़ राजा भोज की तरफ गिर पड़ा सो फिर से उसका खेल बिगड़ गया। अबकी बार राजा भोज चिल्ला पड़ा "अरे कोई है। ले जाओ इस गीदड़ को और इसके टुकड़े टुकड़े कर दो।"

गीदड़ ने राजा भोज से फिर वही बात कह कर माफी मॉगी कि वह कल रात भर का जगा था इसलिये गिर गया। उसे माफ कर दिया जाये। उसने यह गलती जान बूझ कर नहीं की थी।

राजा रसालू ने पूछा — "यह तुम क्या कह रहे हो कि तुम रात भर जागे हो। तुम्हारा यह बात कहने का क्या मतलब है।"

[56] Here the dice word has been used to begin the game, but in chess normally there is no dice is thrown. So it seems that either the author or the storyteller has been confused in identifying the game. If there is dice used, then surely it must be Chaupad, it cannot be Chess..

गीदड़ बोला — “यह भेद मैं केवल राजा भोज को ही बताऊँगा।”

राजा भोज बोले — “बोलो गीदड़ क्या बात है। तुम सारी रात क्या करते रहे।”

गीदड़ बोला — “राजा साहब। कल रात मैं बहुत भूखा था सो मैं अपने लिये कुछ खाना ढूँढने के लिये मैं नदी के किनारे की तरफ चला गया। पर वहाँ भी मुझे खाना नहीं मिला तो मैं बहुत ही निराश हो गया। मैंने एक पत्थर उठा कर फेंका तो वह एक दूसरे पत्थर पर जा लगा और उससे आग लग गयी।”

इतना कह कर गीदड़ कुछ पल के लिये रुक गया तो राजा भोज ने पूछा — “फिर तुमने क्या किया।”

गीदड़ बोला — “फिर मैंने कुछ सूखे पत्ते और लकड़ियाँ ला कर आग उनमें इकट्ठी कर ली। इत्तफाक से उनमें से एक चिनगारी उड़ कर नदी में जा पड़ी और सारी नदी में आग लग गयी। मैं आपसे डर गया कि आप मुझे मार देंगे सो मैंने उसके ऊपर उसे बुझाने के लिये बहुत सारी सूखी घास डाली।

पर मैंने लाख कोशिश की पर मैं सारी आग न बुझा सका दो तिहाई नदी तो फिर भी जल ही गयी अब केवल एक तिहाई नदी ही बची है।”

यह सुन कर वहाँ बैठा हर आदमी हँसने लगा और बोला — “यह क्या मजाक है। क्या कहीं पानी में भी आग लगती है। और

अगर किसी भी वजह से लग भी जाये तो क्या वह सूखी घास से बुझायी जा सकती है।"

गीदड़ बोला — "आदरणीय महाराज। जब पानी में आग नहीं लग सकती तो एक कौए की एक हंसिनी पत्नी कैसे हो सकती है।"

यह भेद भरा जवाब सुन कर राजा रसालू ने कहा — "गीदड़। यह तुम किस बारे में बात कर रहे हो।"

गीदड़ बोला — "महाराज। कल राजा भोज ने एक कौए और एक हंस के बीच में फैसला किया। उन्होंने यह सोचा ही नहीं कि बिना सोचे समझे कौआ हंस की हंसिनी पत्नी को छीनना चाहता है। उन्होंने उसे कौए को दे दिया।

उनका यह फैसला मैंने अपने कानों से सुना था। अब वह बेचारा अभागा हंस इस जंगल में रोता फिर रहा है जबकि कौआ अपनी जीत पर निडर हो कर खुशियाँ मनाता घूम रहा है।"

राजा रसालू ने पूछा — "क्या यह बात सच है।"

राजा भोज बोले — "हाँ यह बात सच है। यह सच बोल रहा है। उसमें कोई शक नहीं कि मैं गलत था।"

तब राजा रसालू ने उन चारों चिड़ियों को बुलवाया और उन्हें एक पेड़ की एक शाख पर एक लाइन में बैठने और अपनी अपनी आँखें बन्द करने के लिये कहा। चिड़ियों ने ऐसा ही किया।

राजा रसालू ने अपना धनुष बाण उठाया और एक बाण कौए को मारा जिससे वह मर गया। मरते मरते वह कह गया "बदमाशी और धोखे का यही ठीक फल है।"

उसी समय उसने हंसिनी को हंस को सौंप दिया। हंस अपनी पत्नी वापस पा कर बहुत खुश हुआ और उसकी अक्लमन्दी की बहुत तारीफ की —

"बाकी सारे राजा तो बतखें हैं केवल आप ही उनमें से से बाज़[57] हैं। आपने यह फैसला बहुत ही सच्चा और न्यायपूर्ण किया है। अल्लाह आपकी उम्र लम्बी करे।"

[57] Translated for the word "Falcon" or "Hawk"

2–6 राजा रसालू और राजा भोज[58]

जब राजा रसालू राजा भोज के घर कुछ दिन ठहर लिया तो उसने राजा भोज से वहॉ से जाने की इजाज़त मॉगी। पर राजा भोज उसको वहॉ से जाने ही नहीं देना चाहते थे।

उन्होंने कहा — "जैसे आपने यहॉ आ कर मेरे महल को पवित्र किया उसी तरह से आप मुझ पर एक और कृपा करें। अगर आप मेरे पास कुछ समय और ठहरें और मुझे अपना शिष्य बना लें।"

सो राजा रसालू वहॉ कुछ समय और ठहर गया। और उस समय में उसने राजा भोज को युद्ध और कुश्ती की कला सिखायी।

इसके बाद राजा रसालू फिर से अपनी यात्रा पर चल दिया। वहॉ के बहुत सारे निवासी उसे प्रेम और आदर की वजह से शहर की सीमा तक छोड़ने आये पर राजा भोज और उनके वज़ीर उसके साथ साथ कई दिनों तक यात्रा पर चलते रहे।

यात्रा के बीच एक दिन राजा भोज ने राजा रसालू से कहा — "आप कृपा कर के मुझे यह बतायें कि दुनियॉ में सबसे ज़्यादा शापित पॉच चीज़ें कौन सी हैं।"

राजा रसालू बोला — "पहली फ़िजूलखर्च पत्नी जो मकान और घर दोनों को नष्ट कर देती है। दूसरी गंजी बेटी। तीसरी नकचढ़ी

[58] Raja Rasalu and Raja Bhoj. (Tale No 3-6 of the Book)
This story has been used in the course of "Mythology and Folklore" taught at the University of Olkahoma, Tulsa. See http://mythfolklore.blogspot.com/

बहू। चौथी बागीचे के कुॅए की टेढ़ी घिर्री। पॉचवॉ एक खेत जो गॉव के रास्ते में पड़ता हो।

कोई आदमी दुनियॉ में किसी भी जगह चला जाये पर उसे इनसे ज़्यादा शापित कोई और चीज़ नहीं मिल सकती।"

यह सुन कर राजा भोज बहुत खुश हुए और राजा रसालू की अक्लमन्दी की बहुत तारीफ की। इस तरह से दोनों राजा बातें करते हुए रास्ते पर बढ़े जा रहे थे।

आखिरकार एक सुबह वे लोग एक बड़े सुन्दर बागीचे में आ पहॅुचे। वह बागीचा रानी शोभा का था।

जब वे वहॉ पहॅुचे तो अपने अपने घोड़ों से उतरे अपने अपने हथियार एक तरफ रखे और ठंडे पानी के एक फव्वारे की दीवार के सहारे बैठ गये। जैसे ही वे बैठे तो उन्होंने एक तरफ से **100** सुन्दर लड़कियॉ आती हुई देखीं। सबके पास खिंची हुई नंगी तलवारें थीं।

राजा रसालू ने मुस्कुरा कर राजा भोज से कहा — "ये लड़कियॉ तो बहुत सुन्दर हैं इनसे कुछ आनन्द लिया जाये।"

राजा भोज से यह कह कर उसने लड़कियों की तरफ देखा और उनसे पूछा — "आप सब इस तरह से नंगी खिंची हुई तलवारें ले कर हमारी तरफ क्यों आ रही हैं।"

वे बोलीं — "जो कोई भी बिना इजाज़त के इस बागीचे में से गुजरता है या फिर इधर इस फव्वारे से पानी लेने आता है तो उसके

कान और हाथ काट लिये जाते हैं और उसे बहुत बेइज़्ज़ती के साथ बाहर निकाल दिया जाता है।"

राजा रसालू बोला — "उफ़ हम यहाँ आ कर किस मुसीबत में पड़ गये।"

आश्चर्य के भाव चेहरे पर ला कर लड़कियों ने पूछा — "क्या तुममें से किसी ने फव्वारे का पानी छुआ है। अगर तुमने ऐसा किया है तो उसे मान लो क्योंकि फिर हमें तुम्हारे कान और हाथ काटने पड़ेंगे। हमारी रानी साहिबा का यही हुक्म है कि जिसने भी फव्वारे का पानी पिया हो उसके कान और हाथ काट लिये जायें।"

राजा रसालू बोला — "ओ सुन्दरियों। हमने अभी तक तो इस फव्वारे का पानी नहीं पिया है पर हम लोग तो बेचारे राहगीर हैं तुम हमें मत रोको। हमें प्यासा मत रहने दो। पानी पी कर हम शान्ति से चले जायेंगे।"

लड़कियों ने पूछा — "तुम लोग कौन हो।"

राजा रसालू ने कहा — "लोग मुझे रसालू कहते हैं।"

यह नाम सुन कर सब लड़किया आपस में इकट्ठी हो गयीं और आपस में खुसर पुसर करने लगीं "अगर यह असली रसालू है तब तो यह हमें पकड़ लेगा और मार डालेगा इसलिये इसे तो हम छोड़ देते हैं दूसरों को पकड़ लेते हैं।"

पर राजा रसालू को पता चल गया कि वे सब क्या योजना बना रही थीं सो राजा रसालू बोला — "सुन्दरियों। यह देखते हुए कि

हम लोग सब राहगीर हैं अगर आप लोग मुझे जाने देंगी तो क्या आप मेरे साथियों को नहीं जाने देंगी। हम सब राहगीर साथ साथ हैं।"

उनमें से एक लड़की बोली — "जैसा कि कहा जाता है, राहगीर संख्या में केवल तीन हैं – नदी, सूरज और चाँद। इनमें से से तुम बताओ कि तुम कौन हो और तुम्हारे माता पिता कौन हैं।"

राजा रसालू बोला — "यह सच है कि हम राहगीर हैं पर हम इतने बड़े राहगीर भी नहीं हैं जो दुनियाँ में घूमते फिरें।"

वह लड़की फिर बोली — "तुम ठीक कह रहे हैं। पर छोटे यात्री भी तीन ही होते हैं – भेड़, स्त्री और बैल। मुझे शब्दों के जाल में मत फाँसो और मुझे तुरन्त बताओ कि तुम इनमें से कौन हो और तुम्हारा नाम क्या है।"

राजा रसालू बोला — "यह तो साफ है कि चाहे हम राहगीर हों या दुनियाँ घूमने वाले, हम आपकी इस जमीन पर आने के लिये दंड के पात्र हैं।"

लड़कियों ने कहा — "हमारे पास इतनी ताकत है कि हम तुम्हें यहाँ से जाने दें पर यह बताओ कि हम अपनी मालकिन को क्या जवाब दें।"

तब राजा रसालू ने उन्से उनकी मालकिन से जा कर यह कहने के लिये कहा — "आपके फव्वारे के पास तीन लोग आराम कर रहे थे। वे आपके पिता के परिवार के पुजारी थे। उन्होंने हमारी

तलवारें देखीं तो वे डर गये। वे तुरन्त ही उठ गये और वहाँ से चले गये। अल्लाह ही जानता है कि वे किस रास्ते गये शायद वे काबुल गये हों या फिर काश्मीर गये हों।"

यह सुन कर वे सीधी सादी लड़कियाँ राजा रसालू और राजा भोज दोनों को वहीं अकेला बैठा छोड़ कर वहाँ से चली गयीं। वे महल गयीं और जो राजा रसालू ने उनसे कहा था वही जा कर रानी शोभा से कहा।

रानी शोभा दुखी होते हुए बोली — "अफसोस। बारह साल हो गये जब हमारे परिवार के पुजारी जी यहाँ आखिरी बार आये थे। और अब जब वह इतनी लम्बी यात्रा कर के मुझसे मिलने यहाँ आये और मेरी बेवकूफी की वजह से वे यहाँ से चले गये। अब मैं नहीं जानती कि वे मुझसे फिर कभी मिलने आयेंगे या नहीं।"

यह कह कर रानी रो पड़ी और अपनी उन दासियों के साथ अपने बागीचे की तरफ चल पड़ी। इस बीच राजा रसालू ने भी अपने दोस्त के साथ काफी आराम कर लिया था सो वे भी अपने रास्ते चले गये।

शाम को वे एक बहुत ही सुहानी जगह पहुँचे जो एक जंगल में थी और जहाँ आम के पेड़ बड़े सुन्दर तरीके से लगे हुए थे और एक छोटी सी साफ नदी भी बह रही थी। यहाँ उन्होंने रात को ठहरने की सोची। सो वे वहाँ अपने अपने घोड़ों से उतर गये और पेड़ों की ठंडी छाया में बैठ गये।

तभी कुछ दूरी पर उन्हें एक हिरन दिखायी दिया तो राजा रसालू ने अपना धनुष बाण उठाया और एक ही बाण से उसे नीचे गिरा दिया। फिर उन्होंने आग जलायी और शिकार को उस पर भूना और सबने मिल कर पेट भर कर उसे खाया।

अब कुछ ऐसा हुआ कि उसी समय देहली का राजा राजा होम किसी बड़े राजा से लड़ कर उधर से भाग रहा था। उस लड़ाई में बहुत खून खराबा हुआ था और राजा होम अपनी राजधानी छोड़ कर अपने कुछ साथियों के साथ वहॉ से भाग रहा था।

जब वह आम के उन पेड़ों के पास आया जहॉ राजा रसालू और राजा भोज सो रहे थे तो वहीं उन्होंने भी अपने डेरे लगा दिये। थोड़ा थोड़ा खाना खाने के बाद वे वहीं सो गये।

रात बहुत अच्छी थी राजा होम की रानी अपने डेरे में सो रही थी जो राजा होम के डेरे के बराबर में ही था। राजा उसके पास ही बैठा हुआ था। राजा को नींद बिल्कुल नहीं आ रही थे तो वह बिना किसी मतलब के दुखी मन से अपनी सोती हुई रानी की तरफ देखने लगा। बीच बीच में वह चॉद की तरफ भी देख लेता था।

ऐसे ही कुछ समय गुजर गया तो उसने अपने वज़ीर को बुलाया और उससे कहा कि उसने अभी अभी कविता की कुछ लाइनें लिखी हैं। वज़ीर बोला — "आप मुझे उन्हें सुनायें।"

राजा बोला — "अपनी प्यारी गंगा के जल से अच्छा कोई जल नहीं है। शान्त और साफ चॉद की रोशनी से अच्छी कोई रोशनी

नहीं है। उस नींद से अच्छी कोई नींद नहीं है जो एक स्त्री की पलकों पर बेखबर पड़ी हो। हर फल जो पेड़ से लटक रहा हो उनमें रसीला आम का फल ही मेरे लिये है।"

कविता की ये लाइनें सुनते ही वज़ीर चिल्लाया — "वाह क्या कहने। बहुत सुन्दर राजा साहब बहुत सुन्दर। आपने बहुत सुन्दर तरीके से इसे लिखा है।"

अचानक उस शान्ति में राजा रसालू की आवाज गूँज गयी जो अपने दोस्त राजा भोज के साथ अभी तक पूरी तरह से नहीं सोया था।

उसने कविता की ये लाइनें साफ साफ सुनीं और बोल पड़ा — "इस अकेले जंगल में मैं एक बेचारा बैरागी घूमता हूँ ओ राजा। ओ राजा आपकी बात बहुत अक्लमन्दी की हैं आपका दोस्त बहुत अक्लमन्द है।"

यह सुन कर राजा होम को अचानक गुस्सा आ गया। वह चिल्लाया — "कौन है यह। हमारे अकेलेपन में यह कौन दखलन्दाजी कर रहा है। इस आदमी को पकड़ो और मेरे सामने लाओ।"

एक नौकर राजा रसालू के पास गया और नर्मी से बोला — "उठिये जनाब। आपने राजा की बातों में दखल देने की हिम्मत कैसे की।"

राजा रसालू बोला — "अगर तुम अपनी जान की ख़ैर चाहते हो तो तुरन्त ही अपने मालिक के पास लौट जाओ।"

नौकर बोला — "क्यों? आप कौन हैं और कहाँ से आये हैं?"

राजा रसालू बोला — "मैं राजा रसालू हूँ, राजा शालिवाहन का बेटा। मेरा घर है पवित्र सियालकोट। अगर तुम्हें राजाओं के साथ व्यवहार करने के तौर तरीके आते हैं और अगर तुम मेरा परिचय राजा से मिलवाने के लिये कराओ तो मैं उनसे मिलना चाहूँगा – पर जोर जबरदस्ती से नहीं।"

यह सुन कर नौकर तो आश्चर्यचकित रह गया। वह तुरन्त ही वापस गया और राज होम से अपनी और राजा रसालू की बातों के बारे में बताया।

राजा होम ने कहा — "तुम फिर उनके पास जाओ और नम्रतापूर्वक उन्हें मेरे पास ले आओ। मैं उनसे बात करना चाहता हूँ।"

राजा रसालू उठा और देहली के राजा होम के डेरे की तरफ बढ़ते हुए उसने राजा होम को बहुत नम्रता से सलाम किया। राजा होम ने पूछा — "क्या आप वास्तव में राजा रसालू हैं। आपको मेरी कविता की लाइनें क्यों अच्छी नहीं लगीं।"

राजा रसालू बोला — "वैसे तो वे बहुत अच्छी तरह से कही गयी हैं पर उनमें कही गयी भावना सच नहीं है। इसी लिये मैंने आपके बीच में बोलने की हिम्मत की।"

राजा होम बोले — "हो सकता है कि मैं गलत हूँ और अगर ऐसा है तो आप मुझे सही कर दीजिये।"

राजा रसालू बोला — "शौक से। मेरे तरीके से यह विचार कुछ ऐसे होना चाहिये — "नदी के साफ पानी जैसा कोई पानी नहीं जिसमें लहरें उठ रही हों। कोई रोशनी इतनी शानदार नहीं जो किसी की चमकीली आँखों की किरन से आती हो। जितनी तरह की नींदें कोई आदमी जानता है उनमें तन्दुरुस्ती की नींद जैसी कोई नींद नहीं। और अल्लाह ने जितने भी फल दिये हैं बेटा उनमें सबसे अच्छा है।"

राजा होम बोले — "मुझे बताइये यह कैसे ठीक है।"

राजा रसालू बोला — "जब आप दुनियाँ में पैदा हुए थे तो उस समय गंगा का पानी आपको किसने पिलाया था। और जब आप जैसा प्यासा भगोड़ा अपने दुश्मन के सामने से भाग गया हो तो उस समय आप गंगा के पानी का क्या करेंगे।

अगर आपके आँखें नहीं होती तो आप चाँदनी ही नहीं देख पाते। अगर आप तन्दुरुस्त नहीं होते तो आपको नींद भी नहीं आती। और अगर आप बिना फल के मर जाते तो आप एक बाँझ जानवर की तरह मरते जिसके कोई बेटा न होता जो आपके वंश को आगे बढ़ाता।"

राजा रसालू का यह जवाब सुन कर राजा होम बहुत ही खुश हुए और उसकी अक्लमन्दी की बहुत तारीफ की। वह बोले — "जनाब आप बिल्कुल सही कह रहे हैं। मैं ही गलत था।"

अगली सुबह राजा रसालू ने अपने दोस्त राजा भोज को गले लगाया और उनको विदा किया। उसके बाद उसने फिर से अपनी यात्रा नये नये अनुभवों के लिये अकेले ही शुरू कर दी।

2–7 राजा रसालू और गंडगढ़ के राक्षस[59]

एक बार राजा रसालू जंगल में शिकार कर रहा था कि वह बहुत थक गया सो वह एक पेड़ की छाँह में लेट गया और सो गया। नींद में उसने देखा कि पंच पीर[60] उसकी तरफ आ रहे हैं और उससे कह रहे हैं कि "राजा रसालू उठो और राक्षसों की जाति का विनाश कर दो।" घबरा कर राजा रसालू उठ गया और अपने नये उद्देश्य को पूरा करने के लिये चल दिया।

वह ताकतवर राजा कई कोस तक अपनी फौलादी घोड़ी पर चलता रहा – कभी पहाड़ियों के ऊपर तो कभी जंगलों में। चलते चलते वह एक घने सुनसान जंगल में आ गया।

वहाँ एक बड़ा सा शहर था पर उसमें भी कोई नहीं था। वहाँ एक कब्रगाह की तरह से शान्ति छायी हुई थी। वह सड़कों पर घूमा पर वहाँ कोई नहीं था। उसने खुली हुई दूकानों की तरफ देखा तो उनमें भी कोई नहीं था।

इस अकेलेपन को देख कर वह आश्चर्य में पड़ गया। वह एक खुली जगह में आ कर खड़ा हो गया और चारों तरफ देखने लगा

---

[59] Rasalu and the Giants. (Tale No 3-7 of the Book)

[60] The five Pirs were the five chosen disciples of Muhammed who (like the 12 Apostles of Jesus Christ) followed him everywhere. Their names were Abbas, AlaI, Abaubakr Saidk, Usmaan and Umaar.

Of the two great divisions in Muslims, Sunni and Shiyaa, Shiya acknowledge Ali only. Ali had .two sons – Hassan and Hussain. Both were killed in a fight by Yazeed, a great enemy of Muhammed, and every year at Muharram Shiya celebrate it by processions wailing and weeping.

कि तभी उसने एक तरफ कहीं से धुआँ निकलता देखा तो वह उधर की तरफ चल पड़ा।

वहाँ पहुँच कर उसने देखा कि एक गरीब बुढ़िया अकेली बैठी बैठी बहुत सारी रोटियाँ बनाने के लिये बहुत सारा आटा मल रही है। रोटियाँ बना रही है और बहुत सारी मिठाई भी बना रही है। पर इस सारे समय या तो वह रो रही थी या फिर हँस रही थी। यह असाधारण दृश्य देख कर तो वह हैरान रह गया।

वह वहाँ रुक गया और उसने बुढ़िया से पूछा — "माँ जी। इस सुनसान जगह में इतना सारा खाना कौन खायेगा। और आप खाना बनाते समय रो भी रही हैं और हँस भी रही हैं ऐसा क्यों।"

बुढ़िया बोली — "मेरे बच्चे। तुम कहाँ से आ रहे हो। आसमान से या धरती फाड़ कर। क्या तुमको यह नहीं मालूम कि यहाँ राक्षस जो आदमियों को खा जाते हैं रहते हैं। यह उनका देश है। तुम एक अजनबी हो और तुम्हारे लिये यही अच्छा होगा कि तुम यहाँ से तुरन्त ही भाग जाओ और मुझसे कोई सवाल मत पूछो।"

राजा रसालू बोला — "नहीं। मैं आपको इस मुश्किल में पड़ा नहीं देख सकता। जिसने भी आपको इस मुश्किल में डाला है मैं उसे इसकी सजा जरूर दूँगा।"

बुढ़िया बोली — "इस देश के राजा का नाम काश देव[61] है और उसका हुक्म है कि एक आदमी, एक भैंस और 400 पौंड रोटी एक खास जगह पर राक्षसों के लिये रोज पहुँच जानी चाहिये।

कभी मेरे सात बेटे हुआ करते थे। उनमें से छह बेटे तो मेरे मर चुके आज मेरे सातवें बेटे की बारी है। कल को मेरी अपनी बारी है। बस यही मेरी मुश्किल है और इसी लिये मैं रोती हूँ। और मैं हँसती इसलिये हूँ क्योंकि आज ही मेरे बेटे की शादी है। उसकी पत्नी उसके बिना क्या करेगी।"

यह कहते कहते वह स्त्री फिर से हँस पड़ी और फिर रो पड़ी।

राजा रसालू बोला — "माँ जी आप रोइये नहीं। आप अब कभी आँसू नहीं बहायेंगी अगर अल्लाह की कृपा हुई तो वह आपको और आपके बच्चे को जरूर ही बचा लेगा क्योंकि मैं कसम खाता हूँ कि उसके सिर की बजाय मैं अपना सिर उन राक्षसों को दे दूँगा।"

पर बुढ़िया ने अपनी ज़िन्दगी से यह पाठ नहीं पढ़ा था। वह रोते हुए बोली — "अफसोस। ऐसा कौन सा आदमी है जिसने अब तक किसी दूसरे के सिर के बदले में अपना सिर दिया हो।" और यह कह कर वह फिर से अपने काम में लग गयी।

राजा रसालू बोला — "मैं तो यहाँ केवल इसी लिये ही आया हूँ ताकि मैं इन राक्षसों का राज्य खत्म कर सकूँ।"

[61] Kash Deo is a Hindu deity held in high honour in Kashmir.

बुढ़िया बोली — "तुम कौन हो। तुम्हारे पिता का नाम क्या है और तुम कहाँ पैदा हुए हो।"

राजा रसालू बोला — "मैं पवित्र सियालकोट में पैदा हुआ था। मेरे पिता का नाम राजा शालिवाहन है और मैं राजा रसालू हूँ।"

तब बुढ़िया ने सोचा कि "यह असली रसालू है या नहीं मैं नहीं जानती फिर भी यह असली रसालू भी हो सकता है क्योंकि यह लिखा हुआ है कि एक रसालू पैदा होगा जो राक्षसों के राज्य को नष्ट कर देगा।"

राजा रसालू ने इधर उधर देखा और बुढ़िया से पूछा — "इस शहर में कोई क्यों नहीं है। यह सुनसान क्यों पड़ा है। यहाँ मन्दिरों के गुम्बद और महलों की मीनारें बाजार और छोटी छोटी दूकानें तो बहुत हैं पर सब शान्त पड़ी हैं। ये सब मुँह उठाये खड़े हैं। यहाँ कोई हलचल नहीं है। यह शहर कितना अभागा है कि सारे घर और बाजार सब खाली पड़े हैं।"

बुढ़िया बोली — "तुम्हें यह सब देख कर आश्चर्य नहीं करना चाहिये क्योंकि यहाँ के सारे लोगों को राक्षसों ने खा लिया है।"

राजा रसालू अपनी घोड़ी पर से उतरा घोड़ी को एक शैड में बाँधा और वहीं पड़ी एक नीची चारपायी पर पैर फैला कर लेट गया। तुरन्त ही उसे नींद आ गयी। इस बीच बुढ़िया का बेटा एक भैंस ले कर आ गया जिस पर रोटियाँ और मिठाई लादी गयीं।

जब सब कुछ तैयार हो गया तो वह उस भैंस को सुनसान रास्तों से हो कर राक्षसों के पास ले कर चला। अब वह जंगल में आ गया था।

कुछ समय बाद बुढ़िया सोते हुए राजा रसालू के पास आयी और बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगी जिससे उसकी आँख खुल गयी। उसने बुढ़िया से रोने की वजह पूछी तो बुढ़िया बोली —

"ओ गहरी भूरी घोड़ी के सवार। ओ दाढ़ी वाले पगड़ी पहने अजनबी। ओ खतरे को जीतने वाले। मैं इसलिये रोती हूँ कि वे अत्याचारी अभी आयेंगे और मेरे बचे हुए बेटे को ले जायेंगे।"

सो राजा रसालू उठा। माँ को तसल्ली दी और उसके बेटे को बचाने के लिये चल दिया। उसने उसे रास्ते में ही पकड़ लिया।

उसने लड़के से पूछा — "हमें यह कैसे पता चलेगा कि राक्षस लोग कब आ रहे हैं।"

लड़के ने जवाब दिया — "पहले तो बारिश के साथ तेज़ हवाऐं आयेंगीं। उसके बाद राक्षस आयेंगे।"

वे चलते रहे और चलते चलते एक नदी के किनारे पर आ पहुँचे जहाँ आ कर लड़का तो रुक गया पर राजा रसालू इधर उधर शिकार देखने लगा।

जब राजा रसालू वहाँ नहीं था तो थिर्या नाम का एक राक्षस वहाँ पानी भरने आया। वह इतना ताकतवर था उसका इतना बड़ा शरीर था और उसके हाथ पैर इतने मजबूत थे कि उसका पानी ले

जाने वाला थैला **27** भैंसों की खालों का बना हुआ था। उसके पास सात भैंसों की खालों की बनी हुई एक बालटी भी थी।

जब उसने अपना थैला पानी से भर लिया तो वह बहुत ज़ोर से चिल्लाया इससे राजा रसालू का ध्यान उसकी तरफ आकर्षित हो गया।

थिर्या ने एक लड़का एक भैंस के साथ खड़ा देखा जिस पर रोटियॉ लदी हुई थीं। वह लालची निगाहों से उसकी तरफ देख कर बोला "ओह कितना स्वादिष्ट खाना है।"

उसने उनमें से कुछ रोटियॉ निकाली और उन्हें ले कर एक झाड़ी में चला गया और उन्हें खाने लगा। राजा रसालू कुछ ही देर में लौट आया।

लड़का राजा रसालू से बोला — "एक राक्षस तो पहले ही आ चुका है और उसने अपने खाने का टैक्स पहले ही ले लिया है। दूसरे राक्षस भी खाने के लिये आने वाले होंगे। जब वे आयेंगे तो वे मुझे और भैंस को खा जायेंगे। अब आपके और आगे जाने से कोई फायदा नहीं।"

राजा रसालू ने पूछा — "वह कौन है जो यहॉ से रोटियॉ ले गया है।"

लड़का बोला — "वह पानी भरने वाला है। उसका नाम थिर्या है। सामान्यतया वही पहले आता है और वही रोटियॉ टैक्स की तरह सबसे पहले ले जाता है।"

"कहाँ है वह।"

"वह रहा उस झाड़ी में। वह रोटियाँ वहीं खा रहा है।"

राजा रसालू अपने हाथ में तलवार लिये हुए उस झाड़ी की तरफ बढ़ा जिसमें थिर्या बैठा हुआ रोटी खा रहा था। वहाँ पहुँच कर उसने उसे अपने लोहे के कोड़े से मारा और उसका दाँया हाथ काट दिया और उससे रोटियाँ छीन लीं।

राजा रसालू ने उससे पूछा "तुम कौन से राक्षस हो।"

उस राक्षस ने जैसे ही राजा रसालू का धनुष बाण देखा तो वह चीख उठा और इतने ज़ोर से चीखा कि जो राक्षस सो हे थे उनकी आँख खुल गयी। जो काम कर रहे थे उनके काम रुक गये और जो गुफाओं में अन्दर थे वे गुफाओं में से बाहर निकल आये।

राक्षस ने पूछा — "तुम कौन हो।"

राजा रसालू बोला — "मैं राजा रसालू हूँ।"

जब थिर्या ने राजा रसालू का नाम सुना तो वह हाथ कटा राक्षस रोता चीखता अपने घर की तरफ भाग गया। दो तीन कदम में ही वह अपने साथियों के पास पहुँच गया। उसके भाई लोग उसे देख कर आश्चर्य में पड़ गये — "अरे तुम्हें क्या हो गया। तुम तो बहुत परेशान लग रहे हो। वह पानी का खाल का थैला और बालटी कहाँ है।"

थिर्या बोला — "वह खाल की बालटी तो मैं भैंस के पास छोड़ आया और खाल का थैला घोड़े पर लटका छोड़ आया। भागो

भाइयो भागो। अब यहाँ रसालू आ गया है जो सबसे ज़्यादा बहादुर है। हमको जल्दी से जल्दी पहाड़ों की गुफाओं में छिप जाना चाहिये। या तो वह अल्लाह का भेजा धर्मदूत है या फिर बील्ज़ीबब। उसके कन्धों पर एक बहुत बड़ा डंडा भी है।"

यह कहते हुए थिर्या बहुत ज़ोर से चिल्लाया और डर के मारे भाग गया। पर उस झुंड का जो सबसे बड़ा राक्षस था जिसका नाम कबीर था बोला कि वह वहाँ जा कर देखेगा कि क्या मामला है। वह कौन आदमी था जिसने थिर्या का हाथ काट डाला था। कबीर खुद भी बहुत बहादुर था।

कबीर बड़े विश्वास के साथ उस तरफ चल दिया जिधर से राजा रसालू आ रहा था।

मुश्किल से वह अभी थोड़ी ही दूर गया होगा कि उसने एक भैंस को, एक लड़के को और एक घुड़सवार को अपनी तरफ आते देखा। वह तुरन्त ही सारा मामला समझ गया।

उसने कहा "मैं यहीं ठहरता हूँ क्योंकि लड़का भैंस और रोटियों का तो बॅटवारा करना है पर यह घोड़ा और उस पर सवार तो उन सबसे अच्छा है। इन्हें मैं खाऊँगा। मैं इन्हें पहले खा लेता हूँ और फिर मैं अपने भाइयों से कह दूँगा कि मैंने अपने भाई की काटी गयी बाँह के बदले में उन्हें मार दिया। इस तरह वे मुझसे गुस्सा नहीं हांगे।"

जब वह इस सबकी योजना बना रहा था राजा रसालू ने उसे देख लिया। लेकिन वह इतना लम्बा था और इतना भद्दा दिखायी दे रहा था कि राजा रसालू को समझ में आ गया कि वह कोई आदमी नहीं था।

पर क्योंकि उसका सिर हिल डुल रहा था तो राजा रसालू ने लड़के से पूछा — "ओ लड़के मुझे यह तो बता कि मेरे सामने यह पहाड़ जैसा कौन है जिसकी चोटी हिल रही है। क्या तुम्हारे यहाँ पहाड़ियाँ भी चलती फिरती हैं।"

लड़का बोला — "नहीं जनाब। यह कोई पहाड़ी नहीं है। यह तो राक्षस है। इसमें कोई शक नहीं कि यह तो हम सबको खा जायेगा।"

राजा रसालू बोला — "तब ठीक है चलो आगे बढ़ते हैं।

इस बीच राजा रसालू ने अपन धनुष बाण उठाया उस पर अपना बाण साधा धनुष की डोरी खींची और उसे इतनी ज़ोर से मारा कि वह कबीर की खोपड़ी के ऊपर वाले हिस्से में बहुत ज़ोर से लगा।

कबीर भी बहुत ज़ोर से चिल्लाया और अपने भाइयों की तरफ भागा। अपने सरदार को इस तरह से भाग कर आते देख कर उसके भाई तो और बहुत ज़्यादा डर गये। उन्होंने पूछा — "आपको क्या हो गया। आप ऐसे पागल से क्यों भाग रहे हैं। लगता है कि आपने कुछ खा लिया है।"

वह उनकी बातों का जवाब देने ही वाला था कि उसका दिमाग उसके सिर के घाव से बाहर निकलने लगा। वह एक लट्ठे की तरह अपने भाइयों के सामने जमीन पर गिर पड़ा।

हिम्मत कर के वह बोला — "भाइयो हालॉकि हम बहुत दिनों तक ज़िन्दा रह सकते हैं फिर भी हमको मरना तो है ही। पर उस घुड़सवार से बच कर रहना जो इस पहाड़ी पर चढ़ता चला आ रहा है।"

यह सुन कर उनको बहुत गुस्सा आया और साथ में इस बात पर भी कि उनके दो बहुत ताकतवर भाई लोग मर चुके थे। इस गुस्से में भर कर सारे राक्षस अपनी अपनी डींगें हॉकने लगे कि मैं उस आदमी को यह कर दूँगा मैं उस आदमी का वह कर दूँगा और उसे गालियॉ देनी शुरू कर दीं।

"वह कौन सा आदमी है जिसने हमारे दो भाइयों के साथ ऐसा व्यवहार किया है।"

टूँडिया और मूँडिया बोले कि वे अभी उस आदमी के पास जा कर उसे मार कर आते हैं। पर अकालदेव ने उन्हें शान्त किया कि वे थोड़ा धीरज रखें इतनी जल्दी न करें।

वह बोला — "उसे यहॉ आने तो दो तब हम देखेंगे कि हमें उससे अपने नुकसान का बदला कैसे लेना है।" सो सब लोग राजा रसालू के आने की तैयारी करने लगे।

इस बीच राजा रसालू लड़का और भैंसा उनके पास तक आ गये और वे उन्हें देख सके। राजा रसालू बोला — "हलो राक्षसों कैसे हो।"

अकालदेव ने जवाब दिया — "तुम कैसे हो। तुम्हारे माता पिता कैसे हैं। पर तुम जहाँ खड़े हो वहीं खड़े रहो और पहले मुझे अपना नाम बताओ। क्या तुम राजा रसालू हो।

क्योंकि हमारे पिताओं ने हमसे कहा था कि एक राजा रसालू तुम्हें मारेगा पर इस बात से हमें कोई अन्तर नहीं पड़ता कि तुम वही राजा रसालू हो या नहीं। हम लोग तुमसे लड़ने के लिये तैयार हैं। फिर भी तुम्हारा नाम क्या है।"

पहले तो राजा रसालू अपना नाम बताने से हिचकिचाया पर जब राक्षसों ने बहुत जिद की और उसने देखा कि राक्षस उसके नाम न बताने पर गुस्सा हो रहे हैं तो वह बोला — "सियालकोट मेरा देश है और सियालकोट मेरा शहर है। मेरे पिता का नाम राजा शालिवाहन है और मेरी माँ का नाम रानी लूना है।"

उसने अपनी माँ का नाम उन्हें इसलिये बताया क्योंकि उसकी माँ परियों की जाति की लड़की थी। जब राक्षस भाइयों ने उसकी माँ का नाम सुना तो वे तो एक दम से भाग खड़े होते पर टूँडिया और मूँडिया बोले — "जिस किसी को भागना हो तो वह भाग जाये पर हम अकालदेव के साथ ही खड़े रहेंगे।"

अकालदेव ने उन्हें सलाह दी — "भाइयो। यहाँ से भागो नहीं। मेरे माता पिता ने मुझे एक जादू दिया है। मैं उसका इस्तेमाल करूँगा और फिर देखते हैं कि यह आदमी यहाँ रुका रहता है या यहाँ से भाग जाता है। अगर यह यहीं टिका रहता है तो यह सचमुच में राजा रसालू है।"

फिर राजा रसालू की तरफ घूमते हुए वह बोला — "मेरे एक ही वार में तुम यहाँ से भागते हुए नजर आओगे।"

यह कह कर तुरन्त ही अकालदेव ने अपनी एक उँगली से अपनी नाक का दाँया नथुना बन्द किया और बाँये नथुने से बहुत ज़ोर से हवा निकाली। तुरन्त ही उनके सामने घना अँधेरा छा गया। वातावरण में धूल छा गयी और जादू की वजह से दूर से बादल आ गये और हवा चलने लगी।

उसके बाद वहाँ चालीस दिन तक लगातार भारी बारिश होती रही ओले गिरते रहे बिजली चमकती रही धरती काँप गयी।

राजा रसालू चिल्लाया — "ओ मेरी घोड़ी डटी रहो मैदान में।"

और लड़के से कहा — "तुम मेरे पैर रखने वाले कुंडे को ठीक से पकड़ लेना और डरना बिल्कुल भी नहीं।"

जब ज़ोर की हवा चल रही थी तो तूफान का सा दृश्य दिखायी देन लगा। पेड़ जड़ से उखड़ गये पर राजा रसालू अपनी घोड़ी पर निडर हो कर बैठा रहा। ज़रा भी नहीं हिला डुला। उसकी सीट इतनी मजबूत थी कि उसकी घोड़ी भी नीचे मिट्टी में नहीं बैठी।

जब सब तूफान खत्म हो गया और अँधेरा और धूल सब चले गये तो अकालदेव डींग मारते हुए चिल्लाया — "अब देखो कि राजा रसालू यहाँ है कि नहीं।"

जैसे ही सब कुछ साफ नजर आने लगा तो राक्षसों ने देखा कि राजा रसालू तो अभी भी वहीं मौजूद था। यह देख कर अकालदेव को बहुत गुस्सा आया। अबकी बार उसने अपने दोनों नथुनों से हवा बाहर फेंकी।

अबकी बार की फेंकी हवा पहले से दोगुना विनाश ले आयी। बारिश तूफान ओले 80 दिनों तक पड़ते रहे। इससे उस जगह के 100 मील के घेरे में कोई पेड़ खड़ा नहीं रह सका। जब यह सब खत्म हो गया तो अकालदेव एक बार फिर चिल्लाया — "अब देखो कि राजा रसालू अपनी जगह है या नहीं।"

राक्षसों ने देखा तो राजा रसालू अभी भी अपनी जगह पर उसी मुद्रा में मृत्युदूत की तरह शान्त और अडिग खड़ा हुआ था। यह देख कर तो वे सब राक्षस वहाँ से भागने के लिये तैयार हो गये कि तभी एक राक्षस ने कहा — "अगर तुम सचमुच ही राजा रसालू हो तो तुम अपने एक ही बाण से सात लोहे की चादरों को छेद भेद सकते हो। क्योंकि यही हमारे धर्म की पुस्तकों में लिखा हुआ है।"

राजा रसालू बोला — "ठीक है। उन्हें ले कर आओ।"

सो एक राक्षस लोहे की सात चादर के टुकड़े ले आया और उन्हें एक के पीछे एक सजा कर रख दिया। हर एक चादर का

टुकड़ा **35** टन लोहे का था। फिर उन्होंने राजा रसालू को उनको एक बाण से छेदने की चुनौती दी।

राजा रसालू ने अपना धनुष बाण निकाला बाण धनुष पर चढ़ाया जो **100** पौंड भारी था और चला दिया। वह बाण उन सबको छेदता चला गया और उनके उस पार जा कर जमीन में सख्ती से गड़ गया।

सारे राक्षस एक साथ बोले — "अरे तुम्हारा निशाना तो चूक गया।"

राजा रसालू बोला — "मैंने ज़िन्दगी में अपना कोई निशाना नहीं चूका। जाओ और जा कर देखो तुम्हारी सातों चादरों छिदी हुई पड़ी हैं।"

वे उन चादरों के पास गये तो उन्होंने देखा कि वे तो वास्तव में छिदी पड़ी हैं और उसका बाण उनके उस पार जमीन में गड़ा पड़ा है। राजा रसालू बोला — "मेरा बाण निकाल कर लाओ।"

उन सबने उसका बाण जमीन में से खींचने की बहुत कोशिश की पर कोई उसको हिला भी न सका। तब राजा रसालू खुद वहाँ गया और खुद ही अपने बाण को निकाल कर लाया।

एक राक्षस बोला — "यह तो सचमुच ही बहुत बड़ा राक्षस है। अब हमें इसके ऊपर लोहे के चनों का प्रयोग करना चाहिये। अगर यह उन्हें चबा लेगा तो हम समझ जायेंगे कि यह राक्षसों की जाति से ही आता है।"

कुछ राक्षस जा कर **10** पौंड लोहे के चने ले आये और ला कर उसके हाथ में दे दिये। पर रसालू ने उन्हें तुरन्त ही अपने उस थैले से बदल दिये जो उसकी घोड़ी की नाक में लटका हुआ था और जिसमें अनाज वाले चने रखे हुए थे। उसने उन्हीं को खाना शुरू कर दिया।

जब वह वे चने खा चुका तब वह चिल्लाया — "अब तुम लोग अपने आपको देखो।"

यह देख सुन कर तो वे बहुत घबराये। उन्होंने सोचा कि लगता है कि यह तो वास्तव में ही राजा रसालू है। अब तो हमारा विनाश निश्चित है।

पर उसी समय अकालदेव ने एक जादू पढ़ा जिससे वह एक पत्थर की मूर्ति में बदल गया। दूसरे दो राक्षस थिर्या और वज़ीर वहाँ से भाग गये। पर टूँडिया और मूँडिया डर गये और वे वहीं के वहीं खड़े रह गये।

राजा रसालू ने अपनी फ़ौलादी घोड़ी से पूछा — "अब हम क्या करें।"

घोड़ी बोली — "अकालदेव ने तो अपने जादू के ज़ोर से अपने आपको मूर्ति में बदल लिया है इसलिये तुम उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। अब तुम्हारे लिये यही ठीक होगा कि जो दो राक्षस वहाँ रह गये हैं तुम उन्हीं से लड़ लो।"

सो राजा रसालू आगे बढ़ा और उन दोनों से उस पर पहले वार करने के लिये कहा। वे बोले "हमारे अन्दर तो लड़ने की ताकत ही नहीं बची। ओ निर्दयी। तुमने हमारे दो भाइयों को तो मार ही दिया है। तुमने हमें ऐसा कौन सा जहर दिया है। अल्लाह के नाम पर अब हमारी भी जान ले लो।"

तब राजा रसालू ने अपना धनुष बाण सँभाला और पहला बाण टूँडिया पर चलाया जिससे वह मकसूद बाग जा कर पड़ा। दूसरा बाण उसने मूँडिया पर चलाया जो उसे अलीखान के पास ले गया। वे एक पहाड़ की तरह गिरे और उनके शरीर से जो खून निकला वह एक नदी की तरह से बह निकला।

इसके बाद राजा रसालू अकालदेव की तरफ बढ़ा और उसे तो तीन बाण मारे पर यह देख कर कि उनका उसके ऊपर कोई असर नहीं पड़ा उसने अपने तोते और घोड़ी से इस बारे में सलाह माँगी।

तोता बोला — "राजा। आपका इस पत्थर की मूर्ति पर अपनी बाँह तोड़ना बिल्कुल बेकार है। इन लोगों में से तीन आदमी तो मारे गये और दो को जिन्हें आपने मारा उनमें से एक की बाँह टूट गयी। आप इस पत्थर की मूर्ति को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकते।

चलिये अब उस जगह चलते हैं जहाँ धुआँ उठ रहा है। हो सकता है कि उनकी कुछ स्त्रियाँ वहाँ मौजूद हों। उनसे पूछिये कि इस पत्थर की मूर्ति का क्या किया जा सकता है और फिर उनको भी मार दीजिये।"

सो राजा रसालू फिर उस जगह पहुँचा जहाँ धुआँ उठ रहा था। वहाँ पहुँच कर उन्होंने देखा कि वहाँ पर एक बहुत बड़ा किला था जिसके चारों तरफ एक जंगली जंगल उगा हुआ था।

तभी उसने एक स्त्री को उस किले में से बाहर निकलते हुए देखा जिसकी शक्ल बहुत ही भद्दी थी और जिसका सारा शरीर ऊपर से ले कर टखने तक बालों से भरा हुआ था। उसके दाँत खेत जोतने वाले हल की तरह से थे।

ऐसा लग रहा था जैसे वह अपने पति से मिलने जा रही हो। उसके हाथ में एक लोहे का डंडा था जिसके एक सिरे पर पूरा एक भुना हुआ ऊँट लटका हुआ था। उसे देख कर तो एक बार राजा रसालू भी डर गया। क्योंकि उसने इतनी डरावनी कोई चीज़ अपनी ज़िन्दगी में नहीं देखी थी।

वह अपने तोते से बोला — "ओ शादी। अब तुम भी दुखी हो, मैं भी दुखी होऊँ और हम सब दुखी हों। उन राक्षसों से तो हमारी जान बच गयी पर अब तुम अपने मालिक को एक ऐसी जगह ले आये हो जहाँ हम सबको खा लिया जायेगा।"

तोता बोला — "सावधानी पूर्वक राजा। अपने होश मत खोइये। यह केवल एक स्त्री है और यह उतनी मजबूत नहीं हो सकती है जितना कि कोई आदमी। आप बस इसे ज़रा धमकाइये और फिर देखिये यह खुद ही पीछे हट जायेगी।"

तब राजा रसालू ने अपनी तलवार खींची और बोला — "ओ बगलबट्ट। देख गुस्से में भर कर मैंने अपनी तलवार निकाल ली है तू मुझे अपना भेद बता और साथ में यह बता कि तेरे पति के पास क्या जादू है।"

उसी पल उसने अपनी तलवार उसके सामने चमकायी जैसे वह उसको मारने जा रहा हो। यह देख कर वह स्त्री भौंचक्की खड़ी रह गयी। वह हाथ जोड़ कर बोली "मैं आपकी सब बात मानूँगी।"

राजा रसालू ने कहा "तो जल्दी से मुझे सारा भेद बता। तेरे पति ने अपने आपको एक पत्थर की मूर्ति में बदल लिया क्या तू उसे ज़िन्दा कर सकती है।"

वह जल्दी से बोली — "हॉ मैं कर सकती हूँ। चलिये मुझे उस जगह ले चलिये।"

उसने ऐसा ही किया पर जैसे ही वह अपने पति की मूर्ति के पास पहुँची कि वह वापस भाग ली। अगर राजा रसालू ने उसे बीच में ही न पकड़ लिया होता तो वह तो बच कर भाग ही जाती।

वह स्त्री बोली — "मैं तब तक अपने पति को ज़िन्दा नहीं करूँगी जब तक आप मुझसे यह वायदा नहीं करते कि उसे मारने के बाद आप मुझसे शादी कर लेंगे। मैं विधवा होना नहीं चाहती।

अगर आप मुझे मार देते हैं तो कोई बात नहीं क्योंकि उस हालत में मेरे पति अपने आपको ज़िन्दा कर लेंगे और ज़िन्दा रहेंगे। पर आप मुझसे वायदा करें कि उनके ज़िन्दा होने के बाद आप उन्हें

मार देना और मुझसे शादी कर लेना। और मैं उन्हें ज़िन्दा कर दूँगी।"

यह सुन कर राजा रसालू बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा पर शादी तोता बोला — "अरे राजा साहब। आप हिचकिचाते क्यों हैं। आप इनसे वायदा कर लीजिये। आपको ऐसा मौका फिर कभी नहीं मिलेगा। पर इसे कपड़े पहनाने के लिये आपको देश का सारा सूती कपड़ा खरीदना पड़ेगा। पर फिर देखियेगा कि यह कितनी सुन्दर है। योर हाइनैस। वास्तव में यह बहुत ही प्यारी और आपके लायक लड़की है।"

यह सुन कर राजा रसालू तो चक्कर में पड़ गया कि यह तोता क्या कह रहा है। न तो वह उससे कोई झूठा वायदा करना चाहता था और न ही वह उससे शादी करना चाहता था।

आखिरकार उसने उस राक्षसी से वायदा कर ही दिया। जैसे ही राजा रसालू ने वायदा किया राक्षसी बोली — "चलिये जल्दी चलिये। अब हमें देर नहीं करनी चाहिये। राक्षस का सारा शरीर तो पत्थर की तरह सख्त हो चुका है पर उसका दिल अभी भी बाकी है। उठिये और और उसके दिल में मार कर उसे मार दीजिये।"

यह सुन कर राजा रसालू तुरन्त एक ही छलॉग में राक्षस की मूर्ति के पास पहुँच गया। उसकी घोड़ी एक छलॉग में सौ गज जाती थी। उस मूर्ति के चारों तरफ चक्कर काटते हुए उसने महसूस किया कि उसका दिल तो वाकई में धड़क रहा था।

बस उसने उसकी छाती में अपनी तलवार घुसेड़ दी और उसकी तलवार उसकी छाती चीर कर उसके शरीर के दूसरी तरफ निकल आयी। जैसे ही ऐसा हुआ कि वह काना राक्षस एक पहाड़ की तरह कॉपने लगा और कुछ ही पलों में ठंडा पड़ गया।

राजा रसालू की घोड़ी तब राजा रसालू से बोली — "राजा साहिब। इस स्त्री से शादी करने का बस यही समय है यानी बस आप इसे अभी इसी समय मार दें ताकि यह कोई और चाल न खेल सके।"

राजा रसालू बोला — "नहीं घोड़ी नहीं। यह मुझे कोई नुकसान नहीं पहुॅचा सकती। इसके अलावा फिर यह है तो एक स्त्री ही न। सो जब तक हम वापस आते हैं इसे ज़िन्दा रहने दो। सबसे पहले तो हमें उन राक्षसों के बारे में सोचना चाहिये जो यहॉ सो भाग गये हैं और जो इस स्त्री से भी ज़्यादा खतरनाक हैं।

उनमें से एक के तो एक बॉह ही नहीं है सो उसकी तो मैं अधिक चिन्ता नहीं करता पर दूसरा ठीक है और मजबूत है। उसका निपटारा तो हमें जल्दी से जल्दी करना ही पड़ेगा।"

यह सोच कर राजा रसालू थिर्या और वज़ीर की खोज में चल दिया। ये दोनों भी कुछ दूर तक तो साथ साथ भागे पर बाद में थिर्या ने जो घायल था और जिसकी बॉह से खून बह रहा था वज़ीर से कहा —

"भाई। मेरा खून तो लगातार बह रहा है। मुझे लगता है कि यह मुझे किसी मुसीबत में फॅसा देगा क्योंकि राजा रसालू इन खून की बूॅदों के सहारे हमारा पीछा करेगा। पर तुम क्योंकि बिल्कुल ठीक हो इसलिये तुम किसी सुरक्षित जगह चले जाओ और मुझे अकेला छोड़ दो।"

वज़ीर ने सोचा थिर्या मुझे वापस अकालदेव के पास जाने के लिये कह रहा है सो वह वहॉ से चला गया। उसने सोचा कि वह सरबान पर्वत चला जायेगा।

पर जब वह लौट रहा था तो उसने राजा रसालू को अपनी घोड़ी पर आते देखा। वह परेशान हो गया कि अब वह क्या करे। फिर उसने कुछ झाड़ियॉ तोड़ीं कुछ पेड़ तोड़े उनका एक ढेर बनाया और अपने आपको उस ढेर में छिपा लिया।

थिर्या ने अचानक पीछे मुड़ कर देखा तो देखा कि वज़ीर तो कहीं नज़र ही नहीं आ रहा था। उसको इस तरह से अचानक गायब होता देख कर थिर्या बहुत आश्चर्य में पड़ गया।

वह बोला — "अरे अभी अभी तो वह मुझे छोड़ कर गया है। वह कहॉ गायब हो गया। उसे क्या हो गया। वह कहॉ गायब हो गया।"

उसके गायब होने से उसे बहुत दुख हुआ वह बोला — "मेरे दिल में बहुत दर्द हो रहा है। यह हमारे परिवार पर क्या मुसीबत आ पड़ी है। ओ भाई बच कर चले जाओ अगर तुम बच सकते हो

तो। अगर तुम ज़िन्दा हो तो कहीं भी भाग जाओ। इधर या उधर कहीं भी।"

तभी राजा रसालू ने अपनी घोड़ी और तोते से फिर से सलाह माँगी कि अब उसे क्या करना चाहिये। उसे पहले थिर्या का पीछा करना चाहिये या फिर पेड़ों के नीचे छिपे राक्षस को मारना चाहिये। दोनों ने उसे सलाह दी कि पहले उसे वज़ीर को मारना चाहिये।

सो राजा रसालू पहले पेड़ों के ढेर के पास आया तो उसने देखा कि वहाँ तो पत्थर का एक बहुत बड़ा टुकड़ा पड़ा हुआ है जो ऊपर नीचे हिल रहा था जैसे जैसे वह राक्षस साँस ले रहा था।

राजा रसालू ने अपनी माँ लूना से थोड़ा सा जादू सीखा था सो उसने कुछ जादू के शब्द बोले जिन्होंने उस पत्थर को एक तरफ लुढ़का दिया जिससे राक्षस दिखायी देने लगा।

तब राजा रसालू ने वहाँ से पेड़ हटाने लगा तो उसकी घोड़ी और तोते दोनों ने ऐसा करने से मना किया। उन्होंने कहा — "आप यह क्या बेवकूफी कर रहे हैं। अगर आप इसी तरह से एक एक कर के पेड़ हटायेंगे तो आपको बहुत समय लग जायेगा।

इसके अलावा यह राक्षस आपके ऊपर एकदम से कूद कर आपको अपनी बाँहों में पकड़ भी सकता है और तब आप इसे नहीं मार सकेंगे बल्कि वह खुद ही आपको मार देगा। आपने चार को तो मार दिया है पर अब हमें लगता है कि यह पाँचवाँ आपको मार

देगा। अच्छा तो यही होगा कि आप अपनी तलवार से पेड़ों के साथ साथ इसे भी काट दें।"

राजा रसालू यह सुन कर बहुत खुश हुआ और उसने ऐसा ही किया। उसने अपनी चमकती हुई तलवार निकाली और अल्लाह का नाम ले कर बिजली की सी तेज़ी से उसे राक्षस के शरीर में घुसा दिया।

वह तलवार इतनी तेज़ थी कि उसने पेड़ों झाड़ियों को काटते हुए राक्षस के शरीर को दो टुकड़े कर दिये। फिर उसने उसको आग लगा कर रात भर आनन्द मनाया।

जब यह सब हो गया तो थिर्या ने एक बार फिर पीछे मुड़ कर देखा तो उसने देखा कि वज़ीर मर चुका था। उसने यह भी देखा कि अब राजा रसालू अपनी पूरी ताकत के साथ उसके पीछे आने की तैयारी कर रहा है।

उसके मुँह से निकला — "तुमने तो पहले से ही मेरी बॉह काट दी है। मेरे भाइयों को भी मार दिया है फिर तुम अब भी मेरा पीछा क्यों कर रहे हो। मेरे दिल में तीर सा चुभा जाता है।"

और वह अल्लाह की प्रार्थना करते हुए कि "बस अब तू ही मुझे बचा सकता है। वह तो मुझे छोड़ने वाला है नहीं।" जल्दी जल्दी पहाड़ पर चढ़ने लगा।

जैसे ही वह पहाड़ की चोटी पर पहुॅचा कि उसके सामने की पहाड़ की चोटी की जमीन फटने लगी। उसने भी मौके का फायदा

उठाया और वह छलॉग मार कर उस फटी हुई चोटी में कूद गया। इस तरह से वह राजा रसालू की नजरों से बच गया।

राजा रसालू ने अपनी घोड़ी और तोते से कहा — "मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा है। तुम देख रहे हो न कि क्या हो रहा है। जैसे ही मैं उसे पकड़ने को था कि वह तो गायब ही हो गया। अब क्या किया जाये।"

शादी तोता बोला — "आपने यह नहीं देखा कि मैंने क्या किया। मैं आपसे अधिक ऊँचाई पर था। मुझे लगता है कि राक्षस के सामने चट्टान फट गयी और वह उसके अन्दर चला गया। मैं जाता हूँ और देखता हूँ कि वह कहाँ गया।"

सो तोता पहाड़ के ऊपर उड़ गया और वहाँ उसने राक्षस को गंडघर की गुफा में छिपा हुआ देखा। यह देख कर वह अपने मालिक के पास वापस उड़ आया और उसे बताया कि वह राक्षस गंडघर की गुफा में छिपा हुआ है। यह सुन कर राजा रसालू वहाँ गया और थिर्या को गुफा में सिकुड़े हुए बैठे देखा तो पूछा — "क्या तुम यहाँ हो थिर्या?"

थिर्या बोला — "हाँ मैं यहीं हूँ।"

राजा रसालू ने पूछा — "पर तुम यहाँ क्यों हो?"

थिर्या ने जवाब दिया — "क्योंकि आपने मेरा एक हाथ काट डाला तो मैं आपसे डर गया था सो मैं आपसे छिपने के लिये यहाँ आ गया।"

तभी उसने फ़ौलादी घोड़ी की टापों की आवाज सुनी तो वह उस गुफा में और अन्दर की तरफ चला गया और बड़ी दुखभरी आवाज में चिल्लाया —

"तेरा खेल भी बस बहुत अजीब है ओ भयानक अल्लाह। गरीब और जरूरतमन्द लोग तुझसे रोटी माँगते हैं। तू ज़िन्दगी देता है जहाँ पहले ज़िन्दगी नहीं थी और वहाँ से ज़िन्दगी ले लेता है जहाँ पहले ज़िन्दगी थी।"

यह सुनते ही राजा रसालू बहुत खुश हुआ। उसने अपनी घोड़ी एक पत्थर से बाँधी और अपनी ढाल और तलवार ले कर उस गुफा में गया जिसमें थिर्या छिपा हुआ था।

तोते ने पूछा — "राजा साहब। आप यह क्या कर रहे हैं। हमारी सलाह है कि आप उस गुफा में अकेले मत जाइये। कहीं ऐसा न हो कि वह राक्षस आपको अँधेरे में अपनी बाँहों में पकड़ ले और खा जाये।" पर राजा रसालू नहीं माना और वह अकेला ही उस गुफा के अन्दर चला गया।

पर उस गुफा की तो उसे लम्बाई ही पता नहीं चल पा रही थी। थिर्या भी आगे बढ़ता चला जा रहा था तो गुफा का अँधेरा भी बढ़ता जा रहा था।

यह देख कर वह चिल्लाया — "थिर्या इस तरीके से ऐसी जगह भाग कर जाना किसी आदमी के लिये ठीक नहीं है। अगर तुम

बहादुर हो तो वहाँ से निकल कर बाहर आओ। तुम ही पहले मुझ पर वार करना।”

राक्षस चिंघाड़ा — “नहीं नहीं। मैं बाहर नहीं आऊँगा। मैं तो फैसले के दिन तक भी बाहर नहीं आऊँगा।” यह कहता हुआ वह वहाँ से आगे की तरफ भागता रहा और उसकी आवाज भी उस बड़ी सी गुफा में गूँजती रही और राजा रसालू को ऐसा लगता रहा जैसे वह कहीं बहुत दूर से आ रही हो।

अँधेरा भी इतना ज़्यादा और घना हो गया था कि राजा रसालू उसे खोज ही नहीं पा रहा था। आखिर उसने अपनी खोज छोड़ दी और उस गुफा में से बाहर निकल आया। पर अपने चहरे जैसा एक चेहरा एक चट्टान पर बना कर वह उस चट्टान को गुफा के मुँह पर रख आया।

वहीं उसने अपना धनुष बाण भी रख दिया। बाण धनुष की डोरी पर पूरी तरह खिंचा हुआ था और बाण से राजा रसालू के कुछ बालों का एक गुच्छा बँधा हुआ था। गुफा का दरवाजा बन्द कर के वह राक्षस से ज़ोर से बोला — “थिर्या। याद रखना अगर तुम पीछे की तरफ मुड़े तो तुरन्त ही मारे जाओगे।”

उसके बाद वह उस राक्षस को उस गुफा में बन्द कर के बाहर आ गया। कभी तो उसे बाहर निकलने का मौका मिलेगा यही सोच कर वह आज तक उसी गुफा में बन्द है।

जब भी वह राजा रसालू का चेहरा चट्टान पर खुदा देखता है उसका धनुष बाण देखता है और उसके बाल हिलते हुए देखता है तो वह डर जाता है और उसकी बाहर निकलने की हिम्मत ही नहीं होती। उसकी डकार की भयानक आवाज से आसपास के सारे गाँव गूँज जाते हैं।

बुढ़िया के बेटे ने राजा रसालू से कहा — "राजा साहब। अब हमें घर वापस चलना चाहिये।"

यह सुन कर राजा रसालू ने भी सोचा कि अब घर वापस चलना चाहिये सो वह वापस जाने के लिये मुड़ा। जब वे राक्षसों के किले के पास पहुँचे तो लड़का फिर बोला — "राजा साहब। इस राक्षसी को वहीं रहने दीजिये जहाँ यह थी। आप उसके दरवाजे के पास भी न जायें। बस हम लोग सीधे घर चलते हैं।"

राजा रसालू बोला — "यह योजना काम नहीं करेगी मेरे बच्चे। यह राक्षसी भी राक्षसों की तरह से ही दुनियाँ भर के लिये एक रोग का काम करेगी इसलिये हमें इसे मार ही देना चाहिये।"

सो वे किले की तरफ गये जहाँ राक्षसी उनका इन्तजार कर रही थी। उसने इस आशा में बहुत बढ़िया कपड़े पहन रखे थे कि वह राजा रसालू की पत्नी बनेगी। राजा रसालू को आते देख वह जल्दी से उठी और राजा रसालू के कपड़े पकड़ने लगी पर राजा रसालू ने उसे झिड़क दिया और उसे छूने को भी मना कर दिया।

राक्षसी बोली — “पर राजा साहब मैं तो आपकी होने वाली पत्नी हूँ और आप मुझे अपने आपको न छूने के लिये कह रहे हैं। इसका क्या मतलब है।”

राजा रसालू बोला — “पर अभी तुम मेरी पत्नी नहीं हो। जब तुम मेरी पत्नी बन जाओ तब मुझे छू लेना।”

वह बोली — “राजा साहब। तब आप मुझसे जल्दी से जल्दी शादी कर लें।”

राजा रसालू ने कहा — “हमें सब काम ढंग से करने चाहिये। अब तुम मेरी बात सुनो ओ बगलबट्ट। पहले आग पर एक बहुत बड़ा बर्तन रखो। उसे तेल से भरो। फिर हम दोनों उसके चारों तरफ सात बार चक्कर काटेंगे। इस तरीके से हमारी शादी की रस्म पूरी होगी।”

राक्षसी ने वैसा ही किया जैसा उससे कहा गया था। राक्षसी तुरन्त ही एक बहुत बड़ा बर्तन ले आयी उसे तेल से भरा और आग पर रख दिया। फिर उसने राजा रसालू से पूछा — “क्या आप राजाओं की शादी ऐसे ही होती है।”

राजा रसालू बोला — “हॉ ऐसे ही होती है।”

राजा रसालू ने सोच रखा था कि वह उस बर्तन के सात चक्कर काटने के बाद उसे गर्म तेल में फेंक देगा पर राक्षसी को भी उसके ऊपर शक हो गया सो उसने भी सोच लिया कि जैसे ही उसे मौका मिला तो वह भी उसे उस गर्म तेल में फेंक देगी।

इस बीच उन दोनों ने हिन्दुओं की रीति रिवाज के अनुसार बर्तन के चारों तरफ सात चक्कर काटे। राजा रसालू की निगाह बराबर राक्षसी पर थी कि वह उसे किस तरह से उठायेगा। उसने सोच लिया कि एक हाथ से वह उसकी गर्दन पकड़ेगा और दूसरे हाथ से उसके शरीर का नीचे वाला हिस्सा।

सो इस योजना के अनुसार अचानक ही उसने उस पहले गर्दन से पकड़ और दूसरे हाथ से उसकी टॉगें पकड़ीं और उसे उठा कर बर्तन में डाल दिया जहॉ वह गर्म तेल में डूब कर जल कर मर गयी।

गर्मी की वजह से जब उसकी खोपड़ी फूटी तो उससे इतना ज़ोर से धक्का लगा जिससे भूचाल जैसा आ गया जिससे जमीन तीन घंटे तक कॉपती रही।

राजा रसालू बोला — "उस पत्नी का सत्यानाश हो जो अपने पति की ज़िन्दगी बेचती हो। ओ कूदती हुई आग जल अच्छी तरह से जल। अब मैंने उस मशहूर राक्षसी को मार दिया है। बगलबट्ट तो बहुत झूठ बोलती है।"

उसके बाद राजा रसालू ने लड़के को अपने साथ लिया और उडना गिरि गॉव की तरफ चल दिया जहॉ उस बुढ़िया का घर था। बुढ़िया घर के बाहर खड़ी हुई उनका इन्तजार कर रही थी।

जब वे लोग उसके काफी पास आ गये तो वह खुशी से बोली — "मैंने तुम्हें यहॉ आते हुए देख लिया था क्योंकि मैं तो यहीं

दरवाजे के पास ही खड़ी हुई थी। अब तुम लोग यहॉ बैठो और आराम करो। मैं तुमसे विनती करती हॅू कि मैं अब तुम्हारी ज़िन्दगी भर सेवा करूॅगी।"

इस तरह बुढ़िया ने राजा रसालू से बहुत विनती की कि वह उसके घर रुक जाये पर राजा रसालू नहीं माना। तीन दिन बाद ही वह अपनी घोड़ी और तोते के साथ दूसरी जगह घूमने के लिये निकल गया।

2–8 तिल्यार नाग और सुन्दर काग[62]

कई दिनों के बाद राजा रसालू नूरपुर से होता हुआ वह मेजात गॉव आया था और फिर वहॉ से अवेलिया और वहॉ से हज़ारा में मकसूदाबाद आया।

उन दिनों वहॉ एक बहुत बड़ा सॉप रहता था जो हर ज़िन्दा चीज़ को खा जाता था। इस वजह से सारा शहर खाली हो गया था और वहॉ बहुत कूड़ा कबाड़ा हो गया था।

एक बार वहॉ बहुत ज़ोर की बारिश पड़ी जो सात दिन और सात रात लगातार पड़ती रही। जब बारिश रुक गयी और मौसम साफ हो गया तो राजा रसालू को वहॉ एक साही[63] दिखायी दिया।

साही एक छोटे से नाले को कूद कर पार करना चाह रहा था कि वह नाले में गिर गया और उसमें उगी हुई बेलों में उलझ गया।

उसने राजा रसालू को देख लिया था सो वह उससे बोला —

"ओ गहरे भूरे रंग की घोड़ी पर सवार। दाढ़ी वाले पगड़ी वाले रसालू अजनबी। एक डूबता हुआ साही तुमसे सहायता मॉगता है। अल्लाह के लिये मेहरबानी कर के उसकी जान बचाओ।"

---

[62] Tilyar Nag and Sundar Kag (The Starling Snake and the Beautiful Crow). (Tale No 3-8 of the Book)

[63] Translated for the word "Hedgehog". See its picture above.

राजा रसालू यह सुन कर आश्चर्यचकित हो गया और अपने चारों तरफ देखा। फिर उसने अपने तोते से कहा — "तुम मेरे ऊपर उड़ रहे हो। क्या तुमने कोई आवाज सुनी। यह मुझे कौन पुकार रहा है।"

तुरन्त ही तोते ने चारों तरफ देखा और एक काले साही को देख कर राजा रसालू से बोला — "यह एक काला साही है। वह अल्लाह के नाम पर आपसे सहायता माँग रहा है। इसलिये मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप उसकी सहायता करें।"

राजा रसालू बोला — "तुम तो एक साही हो और मैं एक आदमी हूँ। मुझे नहीं मालूम कि तुम्हारा हमारा आपस में क्या सम्बन्ध है पर क्योंकि तुमने मुझे अल्लाह के नाम पर मुझे चुनौती दी है इसलिये मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूँगा।"

कह कर वह अपनी घोड़ी से उतरा और उसे पानी में से निकालने के लिये अपना हाथ बढ़ाया पर क्योंकि साही खुद भी पानी में से निकलने के लिये कोशिश कर रहा था सो उसके काँटे राजा रसालू के हाथ में चुभ गये।

तेज़ दर्द होने की वजह से राजा रसालू ने उसे फिर से पानी में छोड़ दिया। वह भी फिर से उसी जगह जा पड़ा जहाँ से राजा रसालू ने उसे निकाला था।

राजा रसालू बोला — "तुम्हारा शरीर तो बहुत ही छोटा है पर तुम्हारे पास हथियार बहुत सारे हैं। मैं तो तुम्हें दोबारा छू भी नहीं

सकता। तुम्हारे इन तेज़ नुकीले काँटों ने मेरे हाथ को घायल कर दिया है।" सो राजा ने उसे उसी जगह छोड़ दिया और अपने रास्ते चला गया।

जब साही ने देखा कि राजा रसालू तो जा रहा है तो उसने हाथ जोड़ कर उससे विनती की कि वह उसे न तो हाथ से छुए न ही वह उसे अपनी गोद में उठाये। बस उसे उठा कर वह घोड़े की घास के थैले में रख दे।

पर राजा रसालू को अभी भी शक था तो उसने अपने तोते से कहा — "शादी। यह साही मुझे घोड़े के खाने के थैले में रखने के लिये कह रहा है। तुम्हारी क्या राय है?"

तोते और राजा रसालू की घोड़ी दोनों ने ही राजा रसालू से साही की सहायता करने के लिये कहा। सो राजा रसालू ने अपने धनुष की नोक पानी में डाली और साही को पानी में से बाहर निकाल कर जमीन पर रख दिया ताकि वह वहाँ सूख सके। जब वह सूख गया तो उसने उसे फ़ौलादी के खाने के थैले में रख दिया।

उस समय दोपहर हो रही थी सो राजा रसालू ने मकसूदाबाद जाने की सोचा और वहाँ गर्मी से बचने के लिये थोड़ा आराम करने का सोचा। और वह मकसूदाबाद चल दिया।

जब वे सब जा रहे थे तो साही ने अपने मन में सोचा "मैं सात दिन और सात रात तक बाहर खुले में बारिश में रहा और अब तो

बाहर बहुत अच्छी धूप निकल रह है। देखता हूँ कि मैं यहाँ बाहर से बुरी हालत में तो नहीं हूँ।"

सो उसने अपने शरीर को थोड़ा फुलाया जिससे उसके काँटे घोड़े की तरफ से घोड़े को चुभ गये जिससे घोड़ी को बहुत दर्द हुआ जिससे वह बहुत ज़ोर से काँप उठी।

राजा रसालू को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसकी घोड़ी को क्या हो गया सो उसने अपनी घोड़ी से कहा — "ओ मेरी फ़ौलादी। तू तो मेरे साथ कई लड़ाइयों में रह चुकी है। तू कई राक्षसों और जंगलियों से लड़ चुकी है पर इस तरह से तो तू कभी नहीं काँपी जैसी आज काँप रही है। या तो आज तेरा आखिरी दिन है या फिर मेरा। मैं पता करता हूँ कि तेरे इस तरह काँपने की क्या वजह है।"

घोड़ी बोली — "मेरे इस तरह काँपने की वजह वह नीच जानवर है जिसे आपने पानी में से बाहर निकाला था।"

राजा रसालू अपने घोड़े से नीचे उतरा और अपने घोड़े को देखा तो पाया कि उसका शरीर तो साही के काँटों से घायल हो रखा था। सो उसने साही से कहा — "मैंने तुम्हें मुसीबत से बचाया और तुम्हें अपने साथ ले चल रहा हूँ। तो तुमने मेरी फ़ौलादी घोड़ी को अपने काँटों से क्यों घायल किया।"

साही बोला — "यह तो केवल एक मजाक था – मेरा पहला मजाक। यह मैंने किसी बुरी भावना से नहीं किया न ही मेरा दिल

खराब था। असल में तो मुझे आपकी घोड़ी के साथ और मजाक करने चाहिये।"

यह सुन कर सब हॅस पड़े और फिर से चलने लगे। धीरे धीरे वे मकसूदबाग के पास पहॅुच गये। वहॉ पहॅुच कर राजा रसालू की नजर एक बहुत बड़े किले पर पड़ी जो बहुत सुन्दर बना हुआ था और जिसके चारों तरफ बागीचा लगा हुआ था। पर वह बिल्कुल सुनसान और उजड़ा हुआ पड़ा था।

राजा रसालू अपने घोड़ी से उतरा और एक बहेड़े के पेड़ के नीचे बैठ गया। पास में ही साफ पानी का एक सुन्दर फव्वारा लगा हुआ था।

उसी समय राजा रसालू के तोते ने कुछ कहना चाहा कि तभी थैले में बन्द साही बोल पड़ा "मुझे बाहर निकालो। मुझे बाहर निकालो।"

राजा रसालू ने उसे बाहर निकाल दिया फिर अपने तोते से पूछा — "हॉ शादी। अब तुम बताओ कि तुम क्या कह रहे थे।"

तोता बोला — "राजा साहब। मुझे कुछ ऐसा लगता है कि यह किला जादुई किला है। यह राक्षसों का किला लगता है क्योंकि इसकी दीवार के सहारे मुझे आदमियों के हड्डियों के ढॉचे पड़े हुए नजर आ रहे हैं। अच्छा तो यह होगा कि हम यह जगह छोड़ कर अपनी रात कहीं और गुजारें।"

राजा रसालू बोला — “मेरा ऐसा करने का कोई इरादा नहीं है और अगर मैं थोड़े में कहूँ तो मैं अपनी रात यहीं गुजारना चाहता हूँ। मगर मुझे तुम यह तो बताओ कि वह राक्षस कौन सा है जिसने इतने सारे आदमियों को मारा है।”

तोता बोला — “राजा साहब। मैं क्या जानूँ। आप साही से पूछें क्योंकि वही है जिसने इस हिस्से को अच्छी तरह देख रखा है।”

तब राजा रसालू साही की तरफ मुड़ा और उससे पूछा — “दोस्त यहाँ कौन सा राक्षस रहता है जिसने इतने सारे जानवरों और आदमियों को खाया है।”

साही बेचारा हाथ जोड़ कर बोला — “राजा साहब। यहाँ एक तिल्यार रहता है जो एक बहुत बड़ा उड़ने वाला साँप है और उसका सुन्दर नाम का एक दोस्त कौआ यानी समुद्री रैवन[64] रहता है।

वे आपस में एक दूसरे के दुश्मन हैं और यहाँ आ कर वे सब

अभागे यात्रियों को या फिर जो कोई भी इधर से गुजरता है परेशान करते हैं चाहे वह कोई शिकारी हो या फिर राजकुमार या फिर राजा। वे किसी को भी यहाँ से ज़िन्दा नहीं जाने देते।”

राजा रसालू ने पूछा — “वे उनके साथ क्या करते हैं।”

[64] Raven is a crow-like bird surviving on rotten meat. See its picture above.

साही ने बड़ी विनम्रता से राजा रसालू के सामने बैठ कर जैसे वह उसकी प्रार्थना कर रहा हो कहा — "राजा साहब। जो कोई भी यहाँ इस फव्वारे पर आता है थकान की वजह से यहीं लेट जाता है और आराम करता है।

तब यह तिल्यार आधी रात को चोरी छिपे यहाँ आ जाता है और जब वे सो रहे होते हैं तो उनकी साँसें खींच लेता है। फिर वह यहाँ से चला जाता है और जा कर रैवन को बताता है। फिर रैवन यहाँ आता है और उनकी आँखें निकाल लेता है।"

राजा रसालू ने पूछा — "क्या तुम सच बोल रहे हो।"

साही बोला — "हाँ महाराज। यह सच है।"

राजा रसालू बोला — "मैं अब अपनी घोड़ी पर नहीं चढ़ सकता क्योंकि मैंने यह पहले ही कह दिया है कि मैं यहीं रहूँगा यहाँ से कहीं नहीं जाऊँगा। पर तुम लोग वैसा ही करोगे जैसा मैं तुमसे करने के लिये कहूँगा।"

साही बोला — "बताइये हमारे लिये क्या हुक्म है।"

राजा रसालू बोला — "अल्लाह सबका मालिक है। वह किसी को भी मार सकता है और किसी को भी बचा सकता है। पर एक बात तुम लोगों को कभी नहीं भूलनी चाहिये। कुल मिला कर हम लोग चार लोग हैं। तो हम चारों को बारी बारी से पहरा देना चाहिये। इस तरह हम सब रात के चारों प्रहरों में सुरक्षित रहेंगे।"

यह कह कर राजा रसालू फिर बोला — "रात के पहले प्रहर में मैं जागूँगा। दूसरे प्रहर में मेरी घोड़ी फ़ौलादी जागेगी। तीसरे प्रहर में मेरा तोता शादी जागेगा और चौथे प्रहर में साही जागेगा।"

पर अफसोस राजा रसालू की यह योजना किसी काम नहीं आयी क्योंकि रात होने से पहले ही वह साँप आ गया।

अगले दिन सुबह को राजा रसालू ने अपनी घोड़ी को हुक्म दिया कि वह बाहर जा कर घास के मैदान में चर कर आये। तोते को उसने कहा कि वह जा कर पेड़ों से तोड़ कर फल खा कर आये। साही को उसने कहा कि वह भी कुछ खा पी कर आये। इस तरह से वे सब अलग अलग हो गये।

तिल्यार ने **12** साल पहले यह कसम खायी थी कि वह राजा रसालू की साँस खींच लेगा। और तिल्यार का दोस्त रैवन जिसका नाम सुन्दर काग था इस बात को जानता था।

अब ऐसा हुआ कि राजा रसालू थकान की वजह से वहीं लेट कर सो गया। सुन्दर काग वहाँ इधर उधर घूम रहा था कि उसने राजा रसालू को वहाँ सोते हुए देखा। वह तुरन्त ही तिल्यार नाग के बिल के पास पहुँचा और बहुत ज़ोर से काँव काँव कर के उसे उठाया।

असमय उठने की वजह से तिल्यार नाग गुस्सा हो गया और बोला — "तुम्हें मुझे इस समय सोते से जगाने का क्या मतलब है।"

सुन्दर काग बोला — "उठो उठो। बारह साल पहले तुमने जिस आदमी को मारने की कसम खायी थी वह इसी बागीचे में सोया हुआ है और मैं तुम्हें यही बात बताने आया हूँ।"

साँप तुरन्त ही अपने बिल से बाहर आ गया और चुपचाप उस तरफ रेंग गया जहाँ राजा रसालू सो रहा था। राजा रसालू के सोने का फायदा उठा कर वह उसके सीने पर चढ़ गया और अपना मुँह राजा रसालू के मुँह में रख कर उसकी सारी साँस खींच ली जिससे राजा रसालू मर गया।

तुरन्त बाद ही शादी तोता जंगल से फल खा कर लौटा तो राजा रसालू को सोते पाया सो वह एक पेड़ पर जा कर बैठ गया और राजा रसालू से बात करने की इच्छा से इन्तजार करने लगा।

इस बीच नाग वापस गया और अपने दोस्त सुन्दर काग को जा कर बताया कि वह क्या कर के आया था और उससे कहा कि वह भी राजा के शरीर की दावत खा कर आये।

पर सुन्दर काग की एक पत्नी भी थी जिसका नाम था शारक। उसने अपने पति से कहा — "प्रिय। मुझे राजा की आँखें और जीभ ला कर दो बाकी का सब तुम खा लेना।"

सो काग वहाँ से उड़ गया और सबसे पहले वह राजा रसालू के पैर पर जा कर बैठ गया और वहाँ वह उसके पैर में चोंच मार मार कर यह निश्चित करने लगा कि वह मर भी गया है या नहीं। जब

उसने यह देख लिया कि वह हिल भी नहीं रहा तो वह उसके एक घुटने पर जा कर बैठ गया।

अब तोते को जो यह सब देख रहा था देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि राजा रसालू तो बिल्कुल हिल डुल ही नहीं रहा था क्योंकि उसे मालूम था कि उसके मालिक का निशाना कभी चूकता नहीं था। इसके बाद काग राजा रसालू की छाती पर कूद कर बैठ गया।

अब तोते की समझ में आ गया कि राजा रसालू तो मर गया। वह तुरन्त ही काग पर कूद पड़ा और उसकी कमर तोड़ दी।

जब काग ने देखा कि उसकी तो कमर ही टूट गयी तो वह वहाँ से उड़ गया। पर उसे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसे अपना घर ही नहीं मिला बल्कि नालों और झाड़ियों के ऊपर होते हुए कहीं और भटक गया।

अब तोता अपने मालिक के लिये रोने लगा। उसे साही की और अपनी दोस्त घोड़ी की याद आयी पर दोनों में से अभी तक कोई भी नहीं लौटा था।

साही बेचारा खुद ही परेशानी में फँस गया था। क्योंकि जब

वह जंगल में घूम रहा था तो वह एक टिड्डे[65] के पीछे दौड़ पड़ा। वह उसे पकड़ने के लिये इतना उत्सुक था कि उसे रास्ते में आया पानी का एक गड्ढा बिल्कुल ही दिखायी नहीं दिया और वह उसमें गिर पड़ा।

[65] Translated for the word “Grasshopper”. See its picture above.

और जब उसे यह पता चला जो कि उसे बहुत जल्दी ही पता चल गया कि वह अब उसमें से बाहर नहीं निकल सकता था तो उसे बहुत दुख हुआ।

पर इससे भी ज़्यादा डर की बात यह थी कि उसने तिल्यार नाग को अपने दोस्त सुन्दर काग से यह कहते हुए सुना "मैंने राजा रसालू की साँस खींच ली है अब तुम जा कर उसे खा लो।"

साही बोला — "अरे यह मैंने क्या कर दिया। यह सब मेरी वजह से हो गया।"

जब वह यह सोच ही रहा था कि तभी एक चूहे को उसकी सुगन्ध आ गयी सो उसने उसके ऊपर कीचड़ फेंकनी शुरू कर दी क्योंकि चूहे और साँप साही के प्राकृतिक दुश्मन होते हैं।

बेचारे साही ने चूहे से बहुत प्रार्थना की कि वह उसे केवल छोड़ ही न दे बल्कि पानी से बाहर निकलने में उसकी सहायता भी कर दे पर चूहे ने यह कहते हुए साफ मना कर दिया कि "क्या मैं अपने दुश्मन को पानी में से निकालूँगा। नहीं कभी नहीं।"

बल्कि उसके साथ और बुरा करने के लिये वह साही की पीठ पर बैठ गया और उसे पानी में नीचे की तरफ दबाने लगा।

साही ने एक बार उससे फिर से प्रार्थना की कि "अल्लाह के नाम पर मुझे बाहर निकाल दो। मैं वायदा करता हूँ कि मैं तुम्हें फिर कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा। ओ चूहे। यह मेरे इम्तिहान

का समय है। अगर तुम इस समय मेरी सहायता कर दोगे तो मैं इसके बदले में मैं तुम्हें कुछ दूँगा।"

आखिर चूहा मान गया पर वह बोला — "पर साही जी। आप ज़रा अपना मुँह छिपा कर रखिये मुझे आपके मुँह से बहुत डर लगता है। और हाँ अपने दाँत भी क्योंकि मुझे आपके दाँतों से भी डर लगता है। पहले आप इस बात पर राजी हो जायें तभी मैं आपकी सहायता कर सकूँगा।"

साही राजी हो गया तो चूहे ने साही का एक काँटा पकड़ा और उसे खींच कर पानी से बाहर निकाल दिया और सुरक्षित रूप से उसे सूखी जमीन पर ले आया। जैसे ही साही पानी से बाहर निकला तो वह राजा रसालू के पास दौड़ा गया और देखा कि राजा रसालू तो वहाँ सो रहा है और तोता ज़ोर ज़ोर से रो रहा है।

साही ने तोते से पूछा — "तोते तुम क्यों रो रहे हो। तुम्हारे इस दुख की क्या वजह है।"

तोते ने सुबकियाँ भरते हुए कहा — "बागीचे के फलों को मैं आराम से खा रहा था। पानी के आसपास मैं खुशी से घूम रहा था. पेट भर कर मैंने पानी पिया। मैं रोया भी नहीं क्योंकि हमारा राजा सो रहा था। हमारा राजा तो मौत की वजह से सोया हुआ है हमेशा के लिये क्योंकि तिल्यार साँप ने उसकी साँस खींच ली है।"

साही भी दुखी हो कर बोला — "शादी। ओ तोते शादी। हालाँकि साँप ने राजा रसालू की साँस खींच ली है पर वह अभी मरा

नहीं है। इक्कीस दिन के अन्दर अन्दर उसे फिर से ज़िन्दा किया जा सकता है। तुम दो रोटी थोड़ी सी खीर और थोड़ा सा दूध ले कर आओ तो मैं राजा रासालू को ज़िन्दा कर दूँगा। जाओ जल्दी करो।"

साही आगे बोला — "मेरा शरीर बहुत कमजोर है। मैं किसी से बात नहीं कर सकता। न मैं किसी से उन्हें मुझे देने के लिये जिद कर सकता हूँ। घोड़ी की भी माँग बहुत है यह कहीं भी जायेगी तो लोग इसे पकड़ लेंगे और बाँध लेंगे।

इसलिये हम दोनों में से कोई भी राजा रसालू की सहायता नहीं कर सकता। केवल तुम्हीं एक ऐसी चिड़िया हो जो कम समय में दूर तक उड़ सकती हो और ये चीज़ें ला सकती हो।"

सो शादी वहाँ से उड़ गया और उड़ते उड़ते कहता गया — "मैं शादी अल्लाह के नाम पर इस जगह को यह कहते हुए छोड़ता हूँ कि मैं आठ दिन के भीतर भीतर यहाँ वापस आ जाऊँगा। ओ साही। ज़रा राजा रसालू की आँखों का ध्यान रखना ताकि काग आ कर इन्हें निकाल कर न ले जाये।"

यह कह कर तोता वहाँ से उड़ कर कब्बल गाँव पहुँचा और वहाँ पहुँच कर एक हिन्दू विधवा की छत पर बैठ गया। वहाँ बैठ कर वह चिल्लाया — "ओ दयालु अल्लाह। ओ सब कुछ देने वाले अल्लाह।"

वह विधवा स्त्री एक छोटा सा बर्तन लिये हुए सिन्धु नदी की तरफ जा रही थी पर चिड़िया की यह आवाज सुन कर वह रुक गयी और बोली — "ओ तोते। तुम्हारा घर कहाँ है। और तुम कहाँ रहते हो। तुम्हें किस राजा ने इस तरह घूमने के लिये छोड़ दिया है। मुझे यह सब सच सच बताओ।"

तोता बोला — "सियालकोट मेरे राजा का घर है। उनकी माँ इन्द्र के घर से आती हैं। राजा असीमित रूप से सुन्दर हैं जिनकी सुन्दरता से चौदहवीं का चाँद भी शर्माता है।

तिल्यार नाग ने उनकी साँसें खींच ली हैं और मेरा राजा मरा हुआ पड़ा है। अल्लाह के लिये ज़रा मेरे आँसू देखिये। मेहरबानी कर के मेरे लिये थोड़ी सी खीर बना दीजिये।"

स्त्री ने सोचा कि क्योंकि वह एक राजा का तोता है सो वह उसे पकड़ लेगी। उसके पकड़े जाने पर राजा उसे छुड़ाने आयेगा और वह उससे अच्छे पैसे ऐंठेगी।

सो उसने चीनी दूध और चावल से खीर बनायी और तोते को उसे खाने के लिये बुलाया पर तोता भी बहुत चालाक था। वह अन्दर आ कर नहीं दिया।

उसने कहा — "मैं एक बहुत बड़े राजा का तोता हूँ। मैं केवल एक खाना नहीं खाता मुझे कम से कम दो खाने चाहिये। मेरे लिये कुछ रोटी और बनाइये।" ऐसा उसने इसलिये कहा था ताकि काम

करने में स्त्री को अपने दोनों हाथ इस्तेमाल करने पड़ें और वह पकड़ा न जा सके।

स्त्री ने कुछ रोटियाँ बनायीं और उन्हें एक हाथ में पकड़ लिया और दूसरे हाथ में खीर पकड़ ली फिर तोते को खाने के लिये बुलाया। तोता सीधा उड़ कर अपना मुँह उसके चेहरे के सामने रख कर उसके सिर पर बैठ गया।

स्त्री तो यह देख कर बहुत खुश हो गयी कि उसके सारे पंख सोने के थे। उसने सोचा "यह जरूर ही किसी बड़े राजा का तोता है।"

उधर तोते ने स्त्री का ध्यान आकर्षित करने के लिये एक एक दाना चुन चुन कर खाने लगा पर बाद में अचानक ही वह स्त्री के हाथ से दो रोटियों में थोड़ी सी खीर बाँध कर उन्हें ले कर वहाँ से भाग लिया।

यह देख कर स्त्री तो आश्चर्यचकित रह गयी। वह बोली — "मेरे घर के पास बुलबुलों ने अपना घोंसला बनाया। मेरे घर की छत पर सुनहरी कलगी वाले मोर मीठे स्वर में गाते हैं। और ओ तोते तूने केवल कुछ देर के लिये ही यहाँ आराम किया और मुझे धोखा दे कर चला गया।

धीरे धीरे तोता उड़ कर साही के पास आया और उसे सलाम किया। उसने देखा कि साही तो राजा रसालू के कान के पास बैठा हुआ है। तोते को देखते ही साही बोला — "इस सारा समय में

राजा रसालू को ही देखता रहा। मैंने तो यह किया तुमने कुछ किया क्या।"

तोते ने साही को एक रोटी दी और कहा कि वह उसे अपने शरीर के चारों तरफ बॉध ले तो साही ने वैसा ही किया। खीर उसने अपने मुॅह के सामने रख ली और वह फिर से राजा रसालू के कान के पास बैठ गया।

पर कौए का क्या हुआ?

जब कौआ अपनी रीढ़ की हड्डी तुड़वा कर बागीचे से उड़ा तो वह कई दिनों बाद अपने घर पहुॅचा। उसने सोचा कि शायद अब तक तो मेरे दोस्त इस घटना को भूल गये होंगे। पर उसकी पत्नी शारक कुछ नहीं भूली थी। वह यह बात कैसे भूल सकती थी कि उसका पति कितने दिनों बाद घर लौटा था।

उसने गुस्से से उसका स्वागत किया और उससे पूछा — "तुमने क्या किया। तुम कहॉ रहे इतने दिनों तक। क्या तुम मेरे लिये राजा की ऑखें और जीभ ले कर आये। अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो तुम किसी काम के नहीं।"

यह सब सुन कर कौआ बहुत दुखी हो गया। वह सोचने लगा "ये पत्नियॉ कभी अपने पतियों को बुरा भला कहने से बाज़ नहीं आतीं।"

उसे सन्तुष्ट करने के लिये वह उससे बोला — "शान्ति रखो। मैं अभी फिर जाऊॅगा और तुम्हारी चीज़ें वहॉ से ले कर आऊॅगा।"

कौवी बोली — “तो फिर जाओ न और ले कर आओ उन्हें।”

सो अगले दिन कौआ सुबह ही राजा रसालू की तरफ उड़ चला। वहॉ पहुॅच कर उसने देखा कि राजा रसालू के कान के पास तो सफेद सफेद खीर रखी हुई है।

पहले तो वह डरा हुआ कुछ दूरी पर उसे ध्यान से देखता रहा कि कहीं तोता उस पर फिर से न कूद पड़े और उसकी रीढ़ की हड्डी फिर से न तोड़ दे पर जल्दी ही वह राजा के पास तक खिसकने लगा और उस खीर के पास तक आ गया।

उसने उसमें अपनी चोंच मारनी शुरू की। अब खीर तो बहुत ही स्वादिष्ट थी और वह बहुत स्वादिष्ट चीज़ों को खाने का आदी नहीं था सो वह उसे खाता गया खाता गया और उसने वह खीर सारी खत्म कर ली।

लालची कौए ने अब साही के शरीर पर लिपटी हुई रोटी पर नजर डाली। उसने उसे खाना शुरू किया इस आशा में कि शायद उसे साही का मॉस भी खाने को मिल जाये पर साही भी चालाक था। जैसे ही उसे मौका मिला उसने कौए का सिर अपने मुॅह में दबा लिया। यह देख कर कौआ डर गया और अपने पंख फैला कर उड़ गया। साथ में वह साही को भी ले गया।

साही भी कोई कम चतुर नहीं था। उसने अपने दॉत कौए की गर्दन में अच्छी तरह गड़ा दिये और ज़ोर से वहॉ काट लिया। कौआ उसके काटे से परेशान हो गया और फड़फड़ा कर उससे छूटने की

कोशिश करता रहा। काफी देर तक लड़ने झगड़ने के बाद बेचारा अधमरा कौआ साही के साथ साथ नीचे गिर पड़ा।

कौए ने सोचा कि "मैं साही से बात कर के देखता हूँ। इससे उसका मुँह खुल जायेगा।"

वह बोला — "यह तो बताओ साही कि तुमने मुझे जान बूझ कर पकड़ा या ऐसे ही अनजाने में ही पकड़ लिया। क्या तुम मुझे ही पकड़ना चाहते थे या फिर किसी और के धोखे में मुझे पकड़ लिया।"

पर चालाक साही एक शब्द भी नहीं बोला। तब कौए ने बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाना शुरू किया। उसका चिल्लाना उसके दोस्त साँप ने भी सुना तो उसने सोचा कि पता नहीं उसके दोस्त को क्या हो गया है।

यह जानने के लिये उसने अपने बिल में से अपना सिर बाहर निकाला और बोला — "कौन है यहाँ। कौए को छोड़ दो उसे जाने दो।"

साही बोला — "यह मैं हूँ साही। पहले तुम मेरे दोस्त को छोड़ो तभी मैं तुम्हारे दोस्त को छोड़ूँगा।"

साँप बोला — "पहले तुम मेरे दोस्त को छोड़ो। मैंने तुम्हारे दोस्त को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया केवल उसकी साँस खींची है। तुम भी वायदा करो कि तुम मेरे दोस्त को कोई नुकसान नहीं

पहुँचाओगे तो मैं अभी तुम्हारे दोस्त की साँसें वापस कर देता हूँ और सारा जहर वापस खींच लूँगा।"

साही ने उससे वायदा किया कि वह कौए को कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगा सो साँप राजा रसालू के पास गया। उसने उसकी साँसें उसे वापस कीं उसका सारा जहर खींच लिया।

पर शादी तोता जो सब कुछ देख रहा था बोला — "ओ चालाक साँप। ज़रा ध्यान रखना मेरा राजा बहुत ताकतवर था – **22** चैम्पियन के बराबर। तुम उसमें से थोड़ी सी भी ताकत अपने पास मत रखना।"

तब साँप राजा रसालू के पास से हट गया। शादी ने तुरन्त पूछा — "मगर मेरा राजा उठ क्यों नहीं रहा है। यह तो अभी भी पहले की तरह बेहोश ही पड़ा हुआ है।"

साँप बोला — "शादी। दो तीन पत्ते शेरे की झाड़ी के ले कर आओ और उन्हें थोड़े से पानी के साथ राजा रसालू के मुँह में रखो तब तुम देखोगे कि राजा रसालू की ताकत वापस आ गयी है और वह उठ गया है।" तोता यह करने के लिये तुरन्त ही चल दिया।

जब साँप इस सब में लगा हुआ था तो साही को मौका मिल गया। उसने मरे हुए कौए को अपने मुँह में उठाया और साँप के बिल के पास ले गया और उसे वहाँ उसके दरवाजे पर छोड़ दिया। उसका मुँह उसने उसके पंखों में छिपा दिया।

जब साँप अपने घर वापस लौटा तो उसे अपने बिल में से साही की खुशबू आयी। वह बोला "ओ साही तुम मेरे घर में क्यों घुसे।"

साही बोला — "मैं तुम्हारे दोस्त को तुम्हारे घर के दरवाजे पर बिठा आया हूँ। मैं केवल इसी लिये तुम्हारे घर में घुसा था।"

साँप बोला — "ठीक है। जल्दी करो मेरे घर से जल्दी बाहर निकलो ताकि मैं अन्दर जा सकूँ। बाहर बहुत गर्मी है और फिर चींटियाँ भी आ कर मेरे शरीर पर चढ़ जायेंगी।"

साही बोला — "देखो मैंने तुम्हारे दोस्त को यहाँ बिठा दिया है। इधर देखो यहाँ है वह तुम्हारी आँखों के सामने। वह बोल नहीं रहा क्योंकि वह तुमसे बहुत गुस्से में है क्योंकि तुम बहुत देर से आये।"

लेकिन साही अपना मौका भी देख रहा था कि कहीं साँप उसे खा न जाये। सो अचानक ही उसने एक कूद लगायी और वह साँप के सिर के ऊपर था। वहाँ बैठ कर उसने अपने काँटे उसके दिमाग में घुसाने शुरू कर दिये। दोनों में बहुत ज़ोर की लड़ाई हुई।

साँप बोला — "ओ कमीने। अपनी कसम मत तोड़ो।"

साही बोला — "मैं साही हूँ। मेरा कसमों से क्या लेना देना। मेरा काम तो केवल दुश्मन को मारना है।"

यह सुन कर साँप ने कहा — "पुराने समय के सन्तों का कहना है कि साँप और साही पहले एक जैसे ही थे इसलिये अब यह लड़ाई छोड़ो और मुझे छोड़ दो। तुम्हें अल्लाह की कृपा मिलेगी।"

साही बोला — "पहले समय के और ज़्यादा अक्लमन्द सन्तों ने लिखा है कि पहले हम लोग एक दूसरे से बहुत लड़ा करते थे। ओ बेवकूफ अब तुम्हारी चालाकी कहाँ गयी। तुमने तो अपने पैर पर ही कुल्हाड़ी मार ली।"

इस बीच राजा रसालू उठ गया तो उसने देखा कि उसके कान के पास उसका तोता बैठा हुआ है। राजा रसालू अपनी इस मीठी नींद से जाग जाने की वजह से बहुत गुस्सा था। वह सोच रहा था कि वह तोते को इस बात की सजा दे कर उससे इस बात का बदला लेगा।

पर इससे पहले ही तोता बोला — "चलिये मालिक। साँप के घर चलते हैं ताकि मैं आपको साही की दया दिखा सकूँ। आपने तो उसकी बहुत छोटी सी सेवा की थी पर उसने आपकी कितनी बड़ी सेवा की है।"

सो राजा तोते के साथ साँप के घर चला जहाँ उसने देखा कि साही ने साँप का सिर अपने मुँह में ले रखा है और साँप उससे छूटने की कोशिश कर रहा है।

राजा रसालू ने तुरन्त ही अपनी तलवार निकाली और साँप के टुकड़े टुकड़े कर दिये जिनके उसने कई ढेर बना दिये। तब उसकी समझ में आया कि उन लोगों ने उसकी कितनी सहायता की है। यह जान कर वह बहुत खुश हुआ।

उसने साही से कहा — "तुमने मेरे साथ जो यह भलाई की है मैं तुम्हें इसका बदला कभी नहीं चुका सकता क्योंकि तुमने तो मेरी जान बचायी है। इसका बदला तो तुम्हें अल्लाह ही दे सकता है।"

उसी समय साही भी राजा रसालू के पैरों के पास तक बढ़ा और राजा से बोला — "एक तश्तरी मोतियों से भरी हुई थी उसमें कुछ और मोती भर दिये गये। मैंने आपके किये का बदला चुका दिया है अब आप मेरे पिता हैं और मैं आपका बेटा हूँ।"

राजा रसालू ने अपनी पगड़ी उतार कर साही के पैरों में रख दी तो साही बोला — "तश्तरी तो पहले से ही मोतियों से भरी हुई थी पर उसके मोतियों पर काली धारियाँ पड़ी हुई थीं। अगर आप इतने दयालु हैं तो मैं तो केवल आपके पैरों की धूल हूँ।"

उसके बाद साही ने राजा के हाथ जोड़े और कहा कि वह उसके पैरों में रखी पगड़ी उठा ले और उसे अपने सिर पर वापस रख ले।

वह फिर बोला — "मैं तो आपके बेटे जैसा हूँ और आप मेरे पिता जैसे हैं। जैसे एक बेटा अपने पिता की सेवा करता है वैसे ही मैं भी आपकी सेवा करूँगा।

राजा रसालू बोला — "मैं भी तुम्हें हमेशा अपने साथ रखूँगा। मैं तुम्हें सोने में जड़वा लूँगा और हमेशा वह लाकेट गले में पहने रहूँगा।"

साही बोला — "नहीं मैं यहीं ठीक हूँ। मुझे यहीं रहने दीजिये। मैं आपके साथ साथ नहीं रहना चाहता क्योंकि मैं आपके लिये एक परेशानी बन जाऊँगा। मैं साँप के बिल में रहना चाहता हूँ ताकि कोई और दूसरा साँप यहाँ आ कर किसी आने जाने वाले को परेशान न कर सके।"

उसके मुँह से यह सुन कर तोते और घोड़ी ने उसकी बहुत प्रशंसा की और कहा — "तुमने हमारे मालिक की ज़िन्दगी बचायी। अल्लाह तुम्हें खुश रखे।"

साही बोला — "ओ घोड़ी और ओ तोते। मैंने तो राजा की केवल उस भलाई का बदला चुकाया है जो उन्होंने मेरे साथ की थी।"

बड़ी अनिच्छा से राजा रसालू उससे अलग होने के लिये राजी हुआ पर आखिर उसे वहीं छोड़ कर राजा रसालू को वहाँ से जाना ही पड़ा। जैसे ही वह अपनी घोड़ी पर सवार हो कर वहाँ से आगे जाने के लिये मुड़ा कि साही ने उसे पीछे से आवाज लगायी "आप कहाँ जा रहे हैं।"

राजा रसालू बोला — "मैं राजा सिरीकप[66] से मिलने जा रहा हूँ।"

---

[66] In Steel's Book this king's name is given as "Sarkap".

साही बोला — "महाराज। ज़रा ध्यान रखियेगा। राजा सिरीकप के पास मत जाइयेगा क्योंकि वह एक जादूगर है। मुझे यकीन है कि वह आपको किसी मुसीबत में जरूर डाल देंगे।"

राजा रसालू बोला — "फिर भी मैं राजा सिरीकप के पास जरूर जाऊँगा।"

साही बोला — "अगर आपने अपने मन में यह ठान ही लिया है कि आपको राजा सिरीकप से मिलना ही है तो मेरी सलाह ध्यान में रखियेगा और वैसा ही करियेगा जैसा मैं कहता हूँ।

राजा सिरीकप की राजधानी को जाते समय आधे रास्ते में आपको राजा सिरीकप के भाई राजा सिरीसुक का शरीर मिलेगा। जा कर उससे बात कीजियेगा और वह क्या कहता है और वह जो कहे उसके ऊपर ध्यान दीजियेगा।"

सो राजा रसालू वहाँ से चल दिया। रास्ते में वह राजा सिरीकप के भाई सिरीसुक के शरीर को देखता जा रहा था जबकि साही वहीं बागीचे में ही रहा।

2–9 राजा रसालू और राजा सिरीकप[67]

उसी दिन राजा रसालू वहाँ से राजा सिरीकप की राजधानी सिरीकोट यानी "खोपड़ियों का किला" चला गया। शाम को वह एक जगह रुक गया। वहाँ उसने अपना तम्बू गाड़ा खाना खाया और राजा सिरीसुक के शरीर को ढूँढने चला गया जिसके नाम का मतलब होता है "सिर काटने वाला"।

जल्दी ही उसे राजा सिरीसुक का शरीर मिल गया। वह बिल्कुल ठंडा और अकड़ा हुआ जमीन पर पड़ा था। राजा रसालू ने तोते की तरफ देखते हुए कहा — "यह आदमी तो मरा हुआ पड़ा है। अब हमें राजा सिरीकप के बारे में कौन सलाह देगा।"

तोता बोला — "मेरे विचार से आप अल्लाह की प्रार्थना कीजिये हो सकता है वही इन्हें उठा दे क्योंकि लगता है कि यह वास्तव में मरे हुए नहीं हैं बल्कि राजा सिरीकप के जादू में इस तरह से पड़े हुए हैं।"

तब राजा रसालू ने उस शरीर के हाथ पैर और चेहरा देखा और उठ कर अल्लाह की प्रार्थना की — "ओ अल्लाह। इस सुनसान जंगल में यह मरा हुआ आदमी पड़ा है और रात हो गयी है। मेहरबानी कर के इसे एक पल के लिये ज़िन्दा कर दो। इसकी

---

[67] Raja Rasalu and Raja Sirikap. (Tale No 3-9 of the Book)

पलकों के नीचे जो आँख की रोशनी है उसे दे दो तो यह लाश जो यहाँ बेजान पड़ी है कुछ शब्द बोलने के लिये अपना सिर उठा दे।"

उसकी प्रार्थना सुन ली गयी। अल्लाह ने सिरीसुक को ज़िन्दगी दे दी। तुरन्त ही लाश ने काँपना शुरू किया और उठ कर बोली — "मुझे किसने परेशान किया।"

राजा रसालू बोला — "तुम यहाँ **12** साल से सोये पड़े हो। यह किस तरह की नींद है।"

सिरीसुक ने पूछा — "मगर तुम कौन हो।"

राजा रसालू बोला — "मैं राजा रसालू हूँ।"

"क्या तुम असली रसालू हो या कोई दूसरे रसालू हो। और तुम कहाँ जा रहे हो।"

राजा रसालू बोला — "मैं तुम्हारे बड़े भाई सिरीकप के शहर जा रहा हूँ। मैं उससे लड़ना चाहता हूँ।"

यह सुन कर सिरीसुक एक मरे हुए आदमी की तरह ज़ोर से हँस पड़ा। उसकी हँसी सुन कर राजा रसालू ने पूछा — "तुम ऐसे क्यों हँस रहे हो।"

सिरीसुक बोला — "मैं उसका अपना भाई था फिर भी उसने मुझे बड़ी बेरहमी से मार डाला। हम लोग अक्सर चौपड़[68] खेला करते थे। मैं उस खेल में हमेशा जीतता था। बस केवल एक बार हारा था।

---

[68] Chaupad is a kind of dice game.

इस तरह मेरा भाई केवल एक बार ही जीता और उस जीतने में उसने मेरा सिर कटवा दिया। उसने यह ज़रा भी नहीं सोचा कि मैं उसका भाई था उसने जो कहा वही किया।

मैंने भी अपना सिर नीचे किया और उसने एक ही वार में उसे काट दिया। फिर उसने मेरे पैर बँधवा कर यहाँ जंगल में फेंक दिया। तो तुम क्या समझते हो कि क्या वह तुम्हें छोड़ देगा।

इसके अलावा तुम्हारे पास तो कोई सेना भी नहीं है जबकि उसके पास तो असंख्य सैनिक हैं। तुम उसके साथ लड़ने का इरादा कैसे रखते हो।"

राजा रसालू बोला — "तुम्हारी बात सुन कर मुझे पूरा विश्वास है कि मैं उससे यकीनन लड़ पाऊँगा और हरा भी पाऊँगा।"

सिरीसुक बोला — "जब तुम उसके शहर के पास पहुँचोगे तो वह एक जादू भरा तूफान ले कर आयेगा और उसकी सहायता से तुम्हें किसी दूसरे देश में पहुँचा देगा। अगर तुम अभी भी बच गये तो वह तुम्हें जादू वाले बर्फ के तूफान में दबा देगा।

अगर तुम इससे भी बच गये तो अगर तुमने किले के सामने वाले फाटक पर जो घड़ियाल लगा है उसमें मारा तो उसकी आवाज जो तुम्हारे कानों में पहुँचेगी उससे तुम अपने होश खो बैठोगे और पागल से हो कर उस जगह से ही भाग जाओगे।

और अगर तुम किसी तरह से तुम उस खतरे से भी बच गये तो जब तुम उसकी बेटी चन्डी के झूले के पास से गुजरोगे जो उसके

महल के बाहर **50** गज ऊँचा है तो तुम्हें बहुत ज़ोर का गुस्सा आ जायेगा और तुम वहॉ के जानवरों का शिकार बन जाओगे। क्योंकि उस झूले का यही असर है कि जो कोई भी उसके नीचे से गुजरता है वह बिल्कुल पागल सा हो जाता है।

और अगर तुम अल्लाह की कृपा से इस खतरे से भी बच गये तो राजा सिरीकप तुम्हारे साथ चौपड़ खेलेगा। उसकी पत्नी और बेटियॉ तुम्हारा चौपड़ पर से ध्यान हटाने के लिये तुम्हारे सामने बैठेंगी। जैसे ही तुम्हारा ध्यान बॅटा इस बीच राजा सिरीकप जीत जायेगा और तुम हार जाओगे। इससे वह तुम्हारा सिर भी कटवा सकता है।

अगर तुम यहॉ से भी बच गये तो फिर वह अपने दो चूहों "हरबंस" और "हरबंसी" को बुलायेगा जिनको केवल इसी उद्देश्य से ही रखा गया है। वे आयेंगे और दिये की बत्ती निकाल कर ले जायेंगे। इस तरह वे खेल में विघ्न पैदा करेंगे।

किसी भी तरह वह तुम्हें हराने की कोशिश करेगा और जैसे ही तुम हारोगे वह तुम्हारा सिर काट लेगा। इसलिये तुम्हारे लिये यही अच्छा होगा कि तुम राजा सिरीकप के पास मत जाओ और यहीं से वापस चले जाओ।"

राजा रसालू बोला — "मैं उसके पास जरूर जाऊॅगा।"

सिरीसुक बोला — "अगर तुमने उसके पास जाने का इरादा कर ही लिया है तो उससे होने वाले खतरों से सवधान रहना जिन्हें मैंने

तुम्हें अभी बताया है। इसके लिये अब तुम मेरी दो पसलियाँ ले जाओ। रास्ते में तुम्हें एक बिल्ली मिलेगी उसे तुम जरूर अपने साथ ले जाना। कुछ कुछ देर बाद तुम उसे मेरी पसलियाँ खिलाते रहना।

इसके अलावा जब तुम राजा सिरीकप के साथ चौपड़ खेलो और राजा "हरबंस" को बुलाये तो तुम अपनी बिल्ली निकाल देना जो उसके चूहे को खा जायेगी और तुम जीत जाओगे।"

यह कह कर सिरीसुक ने अपनी दो पसलियाँ निकाल कर राजा रसालू को दे दीं। राजा रसालू ने अपनी यात्रा में साथ ले जाने के लिये उनको सँभाल कर रख लिया।

अगली सुबह राजा रसालू ताजा हो कर अपने रास्ते चल दिया। रास्ते में वह एक गाँव में आया जहाँ एक बिल्ली एक जुलाहे की उसके काम में सहायता कर रही थी।

वह जुलाहे से बोला — "ओ जुलाहे। क्या तुम्हारे कोई बेटा नहीं है या तुम्हारे पास कोई नौकर नहीं है जो यह अभागिन बिल्ली तुम्हारी सहायता कर रही है।"

जुलाहा बोला — "साहिब। मैं एक गरीब आदमी हूँ। मेरे घर में इस बिल्ली के अलावा और कोई नहीं है।"

राजा रसालू ने उसे **20** रुपये दिये और उस बिल्ली को खरीद लिया। जब उसका मन होता तो वह सिरीसुक की पसलियों को चूसती रहती।

चलते चलते राजा रसालू एक ऐसी जगह आया जहाँ दो लड़के खेल रहे थे। एक लड़के ने एक तालाब सा बनाया हुआ था और उसे रावी का नाम दिया हुआ था। दूसरे लड़के ने भी वैसा ही एक तालाब बनाया हुआ था और उसका नाम चिनाब दिया हुआ था। उसी समय एक तीसरा लड़का आया जो आ कर दोनों तालाबों का पानी पी गया।

राजा रसालू और आगे चला तो उसने देखा कि सिपाही एक नदी के किनारे कपड़े धो रहा था। इस समय वह अपनी सेवाओं से मुक्त था। उसे अपनी अच्छी सेवाओं के बदले में एक बहुत अच्छा घोड़ा और साठ गाँव मिले थे।

उसकी पैन्शन के कागज उसकी पगड़ी में बँधे हुए थे और उसकी पगड़ी उसके पास ही जमीन पर रखी हुई थी।

जैसे ही उसने अपनी पगड़ी की तरफ से अपनी आँखें फेरीं कि एक इधर उधर घूमती हुई बकरी वहाँ आयी और उसकी पगड़ी और कागज दोनों खा गयी। जब उस बेचारे सिपाही को यह पता चला तो वह बहुत दुखी हो गया कि अब वह अपनी पैन्शन कैसे लेगा।

यह सब देखते हुए वह अपने रास्ते पर चला जा रहा था। आखिर वह सिरीकोट के पास आ गया। राजा के किले के करीब एक मील की दूरी पर उसने अपना डेरा डाल दिया और वहीं ठहर गया।

जब वहाँ के राजा सिरीकप को इस चैम्पियन के आने की खबर मिली तो उसने अपने जादू से तूफान उठाया जिससे बहुत सारे पेड़ उखड़ गये और बहुत सारे मकान भी गिर गये।

अगले दिन सुबह उसने अपनी पत्नी इचारडी[69] से पूछा कि वह पता करे कि वह बाहर ठहरने वाला आदमी अभी ज़िन्दा है या नहीं। रानी ने बाहर देखा और कहा कि वह आदमी और उसका घोड़ा अभी भी ज़िन्दा थे।

सो राजा सिरीकप ने अपने शहर में मुनादी पिटवा दी कि आज रात राज्य में भारी बर्फ पड़ेगी इसलिये वे सब अपना ख्याल रखें। शाम आयी तो बर्फ पड़नी शुरू हुई और रात भर पड़ती रही जिससे राज्य भर में कई गज बर्फ पड़ गयी।

अगले दिन सुबह उसने अपनी पत्नी से कहा कि वह पता करे कि वह बाहर ठहरने वाला आदमी अभी ज़िन्दा है या नहीं। रानी ने बाहर देखा और कहा कि वह आदमी और उसका घोड़ा अभी भी ज़िन्दा थे। बर्फ ने तो उसे छुआ भी नहीं है।

जब तूफान खत्म हो गया तब राजा रसालू शहर में घुसा और किले के दरवाजे की तरफ चला। वहाँ पहुँच कर उसने हथौड़ा किले के घंटे में बहुत ज़ोर से मारा कि उससे घंटा और हथौड़ा दोनों ही टूट गये।

---

[69] Ichardei name was the name of the mother of Puran Bhagat also or the name of the step-mother of Raja Rasalu too.

फिर उसने अपने घोड़ी से कहा — “अब अगर मैं राजकुमारी के झूले के नीचे से जाऊँगा तो मैं तो बेहोश हो जाऊँगा।”

घोड़ी बोली — “तुम चिन्ता न करो। तुम मुझे कस कर पकड़ लो। मैं एक ही कूद में उसके पास पहुँच जाऊँगी। फिर जैसे ही मैं उसके पास पहुँचूँ तुम उसका झूला काट देना।”

यह कह कर घोड़ी एक ही कूद में अपने सवार को ले कर वहाँ पहुँच गयी जहाँ चन्डी अपनी दो बहिनों के साथ झूल रही थी। राजा रसालू ने तुरन्त ही उस झूले की रेशमी रस्सी काट दी। तीनों बहिनें उस झूले से नीचे गिर गयीं। वे डर गयी थीं सो वे अपने पिता के पास भाग गयीं।

चन्डी अपने पिता से रो कर बोली — “ओ राजा। आज कोई आया है जो शहर में सबको मार रहा है। उसने मेरे झूले की भी रस्सी काट मेरे झूले को बरबाद कर दिया। हथौड़े के आठ टुकड़े हो गये घंटे के नौ टुकड़े हो गये। पिता जी आप यहाँ से भाग जाइये क्योंकि अब आपका अन्तिम समय दूर नहीं है।”

राजा सिरीकप बोला — “बेटी। तुम इतनी दुखी मत हो और डरो भी नहीं। मैं उसे जल्दी ही मार दूँगा। बहुत जल्दी ही तुम उसका सिर उस खूनी दीवार पर देखोगी जो मैंने उन सिरों से बनवायी है जिन्हें मैंने अब तक मारा है।”

फिर गुस्से में भर कर उसने महल के सभी बरामदों में पहरेदार खड़े कर दिये और उनको सावधान कर दिया कि वे राजा रसालू को

उधर से न गुजरने दें बल्कि उसे उस दरवाजे से ले जायें जिसकी दीवार सिरों की बनी हुई थी।

सो जब राजा रसालू उधर से गुजरा तो उसने देखा कि वहाँ तो बहुत सारे सिर पड़े थे। कुछ दुखी थे कुछ भूतिया थे। उनमें से कुछ उसे देख कर पहले हँस दिये फिर रो दिये।

राजा रसालू उनसे बोला — "ओ सिरों। मेरे लिये मेरी अच्छी किस्मत की प्रार्थना करो। मुझे भी अपनी किस्मत आजमानी है न। अल्लाह से प्रार्थना करो कि मैं जीत जाऊँ। जब मैं चौपड़ का कपड़ा बिछा कर चौपड़ खेलूँ तो बस मैं ही जीतूँ। बदले में मैं तुम हर एक के लिये एक एक गज कपड़ा ले कर आऊँगा और हर एक को चन्दन की लकड़ी की चिता पर जलाऊँगा।"

इसके बाद राजा रसालू महल के अन्दर घुसा। राजा सिरीकप उसको देख कर उठ कर खड़ा हो गया और उसे सलाम कर के उससे पूछा — "ओ छोटे आदमी तुम कहाँ से आये हो। क्या तुम गंगू के शहर में अपने सिर पर कोयला जलाने के लिये आये हो। फिर भी तुम्हारा स्वागत है राजा रसालू। अब तुम मुझे यह बताओ कि दुनियाँ में कितनी "शान"[70] हैं।"

इस समय राजा रसालू को पाँचों पीरों ने सहायता की तो वह तुरन्त ही बोला — "ओ बेवकूफ। क्या तुम दिमाग से बिल्कुल ही खाली हो जो तुम्हें नहीं पता। घर की शान घरवाली से होती है।

[70] Translated for the word "Glories"

शरीर की शान उस पर पहने हुए कपड़ों से होती है। जमीन की शान उस पर पड़ी बारिश से होती है और एक युद्धभूमि की शान एक बहादुर बेटे से होती है।"

इसके बाद राजा सिरीकप ने उसे बैठने के लिये एक कुर्सी दी जिस पर एक हरे रंग का कसीदा किया गया कपड़ा बिछा हुआ था। उस पर कुछ रहस्यमय निशान बने हुए थे जो जादू टोना जानने वाली स्त्रियों ने बनाये हुए थे। ऐसे कपड़े पर राजा सिरीकप ने अपने मेहमान को बैठने और आराम करने के लिये कहा।

पर राजा रसालू ने उसे एक तरफ हटाते हुए कहा कि उसे यह कसीदा किया हुआ कपड़ा नहीं चाहिये। उसे तो सादा सा कालीन चाहिये जो बिल्कुल सफेद हो।

सिरीकप बोला — "ठीक है तुम्हें सफेद कपड़ा ही बैठने के लिये दिया जायेगा पर उससे पहले तुम मुझे एक और सवाल का जवाब दो। इस पहेली को पढ़ो जो मैंने तुम्हारे लिये बनायी है। तुम इसका अगर ठीक ठीक जवाब दे दोगे तो सफेद कपड़े वाला काउच तुम्हारा हो जायेगा।"

राजा रसालू बोला — "बोलो क्या है तुम्हारी पहेली।"

सिरीकप बोला — "वह कौन है जिसकी दाढ़ी चौगुनी लम्बी है। जिसके पैर नीले हैं। जिसकी गर्दन लाल है। जैसा कि तुम देख सकते हो मैंने इसे सरदार से ठीक से कह दिया है अब अक्लमन्द लोग इसे हल करें।"

राजा रसालू ने इसके घृणा से देखते हुए कहा — “छोड़ो इसे। मुझे पहेलियों की कोई चिन्ता नहीं है।”

पर सिरीकप ने जिद की कि वह उस पहेली का जवाब दे।

तो राजा राजा रसालू ने पूछा — “वह क्या है जो तुम्हारे पास पड़ा है।”

सिरीकप बोला — “यह तो मेरा धनुष है।”

“और तुम अपने धनुष से क्या करते हो।”

“मैं इससे अपने बाण चलाता हूँ।”

राजा रसालू बोला — “क्या तुमने यह सब बाण के बारे में नहीं कहा। देखो यह एक बाण मेरे तरकस से लिया गया है। समझो कि यह चार पंखों वाला सिर है। इसका नीला स्टील का पैर है। इसकी लाल डंडा है। अब क्योंकि तुम्हारी पहेली का जवाब दिया चुका है अब तुम मुझे बैठने के लिये सफेद काउच दो।”

पर सिरीकप बहुत नीच किस्म का आदमी था उसने पहेली पूछना जारी रखा। उसने दूसरी पहेली पूछी — “एक जगह एक

पानी है जिसमें पेड़ तो ऊपर चोटी तक डूब जाते हैं और राइनोसिरोस[71] आराम से नहाते है।

पर उसी तालाब में से कोई एक बालटी पानी भी नहीं भर सकता न कोई छोटी सी चिड़िया भी अपनी प्यास बुझा सकती है। बताओ वह क्या है।”

[71] Rhinoceros – a medium sized animal. See its picture above.

राजा रसालू बोला — “ओ चाचा। अब तुम मुझे बहुत देर मत करो। हमको बिना किसी छल के खेल खेलना चाहिये। तुम्हारी पहेली का जवाब है “ओस” जो सूरज उगने से पहले घास पर दिखायी देती है।”

लेकिन सिरीकप इतना नीच था कि वह अभी भी सन्तुष्ट नहीं था। उसने राजा रसालू से एक और पहेली पूछी — “कहीं चार पति हैं सोलह पत्नियाँ है। हर पति की चार पत्नियाँ हैं। सब लोग एक ही छत के नीचे रहते हैं। अब मैं तुमसे पूछता हूँ राजा रसालू कि इसका क्या मतलब है।”

राजा रसालू ने सोचना शुरू किया कि सिरीकप उतना होशियार नहीं है जितना उसने सुना था। वह बोला — “हर एक अँगूठे की चार उँगलियाँ हैं हाथ में भी और पैर में भी। यही तुम्हारी पहेली का जवाब है। इसे तो एक बच्चा भी बता सकता है।

अगर इस पहेली पर कोई दाँव लगा होता तो मैं तुम्हारा सिर काट देता। लेकिन मैं अल्लाह से डरता हूँ। अब तुम मुझे बैठने के लिये काउच दो ताकि हम कुछ काम की बात कर सकें।”

सिरीकप बोला — “मै तुम्हारे जवाबों का कोई तोड़ नहीं देखता फिर भी तुम अभी रुके रहो। अब पहेली पूछने की बारी तुम्हारी है। अगर मैं तुम्हें पहेली का ठीक जवाब न दे सका तो सफेद काउच तुम्हें दे दिया जायेगा।”

राजा रसालू बोला — “ठीक है। तो मुझे तुम इस पहेली का जवाब दो। तुम्हारे शहर की चहारदीवारी में मुझे आश्चर्य है कि मैंने देखा एक बकरी एक घोड़ा और साठ गाँव खा गयी। उसके बाद एक बहुत बड़े पेट वाला गंजा नटखट लड़का वहाँ आया उसने उसे नीचे झुकाया और रावी चिनाब पी गया।”

सिरीकप बोला — “अरे यह कैसे हुआ यह तो असम्भव है। यह तो अधार्मिक भी है। ऐसी बात मत करो। क्या तुम्हें डर नहीं है। चलो इस घर से बाहर चलो कहीं हमारे सिर पर इसकी छत न गिर जाये।”

राजा रसालू बोला — “ऐसा लगता है तुम्हारी पहेलियाँ ठीक थीं और मेरी पहेली गलत है।”

तब राजा रसालू ने उसे पहेली का जवाब बताया जिसने उसे हारने के लिये मजबूर कर दिया। तब राजा रसालू ने कहा — “देखा तुम इस पहेली का जवाब नहीं दे सके अब तुम मुझे सफेद काउच दो।”

सिरीकप ने अबकी बार बिना कोई शब्द बोले उसे सफेद काउच दे दिया। पर रानी जो अब तक सब कुछ देख सुन रही थी डर से काँप रही थी। तब राजा उठ कर उसके पास गया और उससे कहा — “तुम चिन्ता न करो मैं इसका सिर काट लूँगा और तुम्हें दे दूँगा। क्योंकि ऐसे बहुत सारे लोग मेरे पास आये पर आखीर में मेरे हाथ से कोई बच नहीं सका।”

राजा सिरीकप ने राजा रसालू से पूछा — "तुम कहाँ से आये हो।"

राजा रसालू बोला — "हमें यह खबर मिली है कि तुम बहुत अत्याचारी हो और तुम बहुत खून बहाते हो। भोलेभाले लोगों को मारने में तुम्हें बहुत अच्छा लगता है। इसलिये मैं तुम्हारे किले में तुम्हें चुनौती देने और तुमसे लड़ने के लिये आया हूँ।"

सिरीकप बोला — "ऐसा ही होगा। सब कुछ वैसा ही होगा जैसा तुम चाहोगे। क्योंकि जब तुम्हारी और मेरी लड़ाई सबके सामने होगी तो वह तो एक देखने लायक चीज़ होगी। पर उसे अच्छा यह होगा कि पहले तुम मेरे साथ चौपड़ खेल लो। जो जीतेगा वह हारने का सिर काट लेगा।"

इस बात पर राजा रसालू तुरन्त ही राजी हो गया। सो चौपड़ बिछायी गयी। लैम्प जलाया गया और दोनों राजा चौपड़ खेलने बैठे। खेल शुरू करने से पहले राजा सिरीकप ने अपने जीतने के लिये कहा "इस लैम्प के नीचे दो राजा एक दूसरे के विपक्ष में खेल रहे हैं। ओ खेल बदलने वाले तू इस खेल को बदल देना जैसा कि सिरीकप चाहे।"

यह जादू सुन कर राजा रसालू ने कहा — "जो कुछ तुमने अभी जादू पढ़ा यह खेल के नियमों के बिल्कुल खिलाफ है क्योंकि तुमने अपनी कविता में अल्लाह का पवित्र नाम नहीं लिया। तुम्हें इसे इस तरह से कहना चाहिये था —

"इस लैम्प की किरनों के नीचे दो राजा एक दूसरे के खिलाफ खेल रहे हैं। ओ खेल बदलने वाले इस खेल को मेरे लिये बदल देना जैसी अल्लाह की मर्जी हो खेल वैसा ही हो।"

और इस पार्थना के साथ खेल शुरू हुआ।

राजा सिरीकप जब भी अपना पॉसा फेंकता हर बार वह उस पर अपना कोई मन्त्र पढ़ता। इस तरह राजा रसालू सियालकोट हार गया। राजा रसालू को इस बात पर बहुत गुस्सा आ गया। उसने गुस्से में भर कर अपने नौकरों अपनी सब चीज़ों और अपने पूरे राज्य को ही दॉव पर लगा डाला और हार गया।

तीसरी बार उसने अपनी घोड़ी फ़ौलादी और तोता शादी को दॉव पर लगाया तो वह उन्हें भी हार गया। चौथी बार में वह अपने हथियार हार गया और पॉचवीं बार में वह खुद को हार गया। यह देख कर सिरीकप अपनी तलवार निकाल कर उछल कर उठा ताकि वह उसका गला काट सके।

पर राजा रसालू तुरन्त ही बोला — "यह सच है कि मैं खुद को हार गया हूॅ और तुम्हारा यह पूरा अधिकार है कि तुम अब मेरे साथ जो चाहे करो पर मैं एक बार अपने राज्य पर नजर तो डाल लूॅ। थोड़ा सब्र रखो ताकि मैं तुम्हारे महल की छत से अपना राज्य देख लूॅ।"

सिरीकप राजी हो गया और राजा रसालू राजा सिरीकप के महल की छत पर चढ़ गया और अपने सियालकोट की तरफ देखने

लगा। जब वह दुखी हो कर सियालकोट की तरफ देख रहा था तो उसने अपनी जॉघ पर हाथ मारा और एक लम्बी सॉस ली।

बिल्ली वहॉ दो पसलियों के साथ बैठी थी। जैसे ही राजा रसालू ने अपनी जॉघ पर हाथ मारा वह चिल्लायी तो उसे कुछ याद आया और वह बोला "ओ अभागे छोटे जानवर। तूने तो अभी मेरी सेवा की ही नहीं पर अब मुझे अपनी किस्मत एक बार और आजमानी चाहिये।"

वह तुरन्त ही महल की छत से नीचे उतर आया और सिरीकप से पूछा — "तुम्हें किसने बनाया?"

सिरीकप बोला — "जिसने तुम्हें बनाया।"

राजा रसालू बोला — "अगर तुम इसमें विश्वास करते हो तो मुझे उसके नाम पर एक बार खेलने का मौका और दो।"

सिरीकप बोला — "यकीनन। क्यों नहीं।"

और दोनों राजा एक बार फिर से खेलने बैठ गये। राजा रसालू ने अल्लाह का नाम ले कर अपना पॉसा फेंका और सिरीकप से अपना सियालकोट वापस ले लिया। दूसरे दॉव में उसने अपना राज्य वापस ले लिया।

तीसरे दॉव में अपनी घोड़ी और तोता ले लिया। चौथे दॉव नें अपने हथियार और पॉचवीं बार जो पॉसा फेंका तो उसने अपने आपको आजाद कर लिया।

अब दोनों राजा फिर से बराबर हो गये थे सो सिरीकप ने फिर से उससे खेल खेलने के लिये कहा और खेल फिर से आगे बढ़ा। इस बार सिरीकप की किस्मत उसका साथ नहीं दे रही थी सो पहली बार में वह अपनी राजधानी सिरीकोट हार गया।

दूसरी बार में वह अपना सारा राज्य और फर्नीचर और तीसरे में अपनी पत्नी और बच्चे हार गया। चौथे दॉव में वह अपने आपको भी हार गया। वह चिल्लाया "हरबंस हरबंस" और तुरन्त ही एक बहुत बड़ा चूहा आ गया।

अपने मालिक के बुलाने पर वह तुरन्त ही आ गया पर इस बीच राजा रसालू ने अपना बिल्ली निकाल ली थी और उसे लैम्प के साये में बिठा दिया था। जैसे ही चूहा लैम्प के साथ खेलने के लिये आया बिल्ली उसे झपट्टा मार कर पकड़ कर खा गयी।

निराश हो कर राजा सिरीकप फिर चिल्लाया "हरबंसी हरबंसी"। तुरन्त ही एक चुहिया निकल कर आयी। उसने देख लिया था जो उसके साथी के साथ हुआ था सो वह दूर एक सुरक्षित दूरी पर खड़ी रह कर बोली —

"तुम्हारी सेवा को धिक्कार है। तुम्हारे मुट्ठी भर दाने को धिक्कार है। मैं तो पहाड़ियों पर वापस जा रही हूॅ जहॉ मैं फिर से घास फूस खा लूॅगी।"

अगले ही पल चौथा दॉव खत्म होने पर आया और राजा रसालू विजयी हुआ तो वह अपनी तलावर ले कर राजा सिरीकप का सिर

काटने को दौड़ा पर राजा सिरीकप ने उससे विनती की कि जब राजा रसालू हारा था और उसने अपने राज्य की तरफ देखने की इजाज़त माँगी थी तो उसने उसे वह दे दी थी।

अब वह अपने परिवार से मिलना चाहता है। अल्लाह के नाम पर उसे उनसे मिलने की इजाज़त दी जाये। पर अपने परिवार को देखने से पहले वह एक दाँव खेलना चाहता है जैसा कि उसने खुद किया था।

राजा रसालू ने उसे इसकी इजाज़त दे दी और खेल एक बार फिर शुरू हुआ पर सिरीकप फिर से हार गया। तब सिरीकप ने कहा — "अब मैं अपने परिवार से मिलने जा रहा हूँ मैं अभी वापस लौट कर आता हूँ।"

राजा रसालू राजी हो गया। सिरीकप अपनी तीनों बेटियों के पास गया और उनसे कहा कि वे अच्छी तरह से सज सँवर लें अपने सबसे अच्छे आभूषण पहन लें और राजा रसालू के सामने उसको अपनी सुन्दरता से रिझाने के लिये बाहर आयें।

उसकी बेटियों के नाम थे चंडी, भाग्यदी और सूघ्रान मानी अक्लमन्द। उसकी तीनों बेटियाँ बहुत सुन्दर थीं। उन्होंने पिता का हुक्म मान कर जल्दी जल्दी सँवरना शुरू कर दिया। सबने अपने बहुत कीमती कीमती गहने पहने जवाहरात पहने और बढ़िया कपड़े पहन कर बाहर चल दीं।

वहाँ जा कर उन्होंने राजा रसालू के सामने पहुँच कर उसे रिझाना शुरू कर दिया। पर राजा रसालू ने न तो उनकी तरफ ध्यान ही दिया न ही उनकी तरफ देखा बल्कि उनसे पूछा कि सिरीकप कहाँ है।

वे बोलीं — “वह तो अपनी जान बचा कर शहर से भाग गये हैं।”

राजा रसालू बोला — “कोई बात नहीं वह जहाँ भी होगा मैं उसे ढूँढ लूँगा।”

कह कर वह राजा के मन्त्रियों के पास उनसे यह पूछने गया कि वह अक्सर कहाँ बैठा करता था। कुछ ने कहा वह शायद अपने शीशमहल होंगे। दूसरों ने कहा वह शायद अपने तहखाने में होंगे। कुछ और ने कहा — “वह तो राजा हैं वह कहीं भी जा सकते हैं जहाँ उनकी इच्छा होगी।”

इस पर राजा रसालू ने उसे सब जगह ढूँढना शुरू किया महल में बरामदों में कमरों में। कुछ जगहों पर उसे बेचारे कैदी मिले। कुछ दूसरी जगहों पर उसे आदमियों और स्त्रियों की लाशें मिलीं। और कुछ जगहों पर उसे वेशकीमती गहने और जवाहरात मिले। पर सिरीकप कहीं नहीं मिला।

सो वह उस जगह को छोड़ कर उसकी घुड़साल में गया। वह जब वहाँ चारों तरफ देख रहा था तो उसे एक गाड़ी दिखायी दे गयी जिसमें कबाड़ भरा हुआ था पर वह हिल रहा था। उसने सोचा कि

इस घोड़े के कबाड़ के साथ क्या हो रहा है यह क्यों कभी ऊपर उठ रहा है और कभी नीचे गिर रहा है।

सो वह उस कूड़े की गाड़ी के पास गया और उसमें से कूड़ा कबाड़ बाहर निकाला तो राजा सिरीकप को इतनी गन्दी जगह से सिकुड़ा हुआ बैठा हुआ पाया। राजा रसालू बोला — "बेशक तुम बहुत ही नीच हो क्योंकि तुम इतनी गन्दी जगह छिपे बैठे हो।"

राजा रसालू ने उसे गर्दन से पकड़ कर बाहर खींच लिया और उसे उस कमरे तक घसीट लाया जिस कमरे में वे चौसर खेल रहे थे।

उसने राजा सिरीकप से कहा — "ओ नीच। तूने कितने लोगों को मारा है जिनके लिये न तो तू रोया और न ही तुझे कोई दुख हुआ न ही तूने उनके लिये कोई ऑसू बहाया। और जब वही तुम्हारी किस्मत में लिखा आया तो तुम घोड़ों के गोबर के अन्दर जा कर छिप गये।"

इस बीच महल में एक घटना घट गयी जिसका राजा रसालू को पता ही नहीं था। सिरीकप की पत्नी इचारडी ने एक बच्ची को जन्म दे दिया था।

जादूगरों और टोना करने वालों ने राजा सिरीकप को बताया — "हमें इस भेद का पता चल गया है कि आपके महल पर इस तरह की बर्बादी कैसे आ पड़ी। यह सब आपकी इस छोटी बच्ची के आने

से हुआ है। इसकी किस्मत आपकी किस्मत से लड़ गयी है क्योंकि यह लड़की बुरी घड़ी में पैदा हुई है।

हमको इसकी बलि दे देनी चाहिये। इसके सिर को नदी में फेंक देना चाहिये। तो आपका सिर और ताज दोनों सुरक्षित रहेंगे और आपकी खुशी फिर से वापस आ जायेगी।"

राजा सिरीकप बोला — "अगर आप लोग सोचते हैं कि मेरी ज़िन्दगी इस बच्ची पर आधारित है जाइये और तुरन्त ही उसका सिर काट कर नदी में फेंक दीजिये जिससे मेरा सिर सुरक्षित रहे।"

सो एक दासी को उस बच्ची को लाने के लिये भेज दिया गया। जब वह बच्ची अपनी माँ के कमरे में से लायी जा रही थी तो उसकी माँ उसको सहलाते हुए बोली — "ओह मैं अपनी बच्ची को ज़िन्दा देखना चाहती हूँ। कितनी सुन्दर बच्ची है।"

पर दासी ने बच्ची को उठाया और ले कर चल दी। जब उसने दरबार पार कर लिया तो घुड़साल से वापस आता हुआ राजा रसालू वहाँ आ गया। उसने पूछा — "तुम इस बच्ची को कहाँ ले जा रही हो।"

दासी बोली — "यह बच्ची राजा साहब की है और **21** दिन पहले पैदा हुई थी। ब्राह्मणों ने इसके लिये कहा है कि यह अशुभ घड़ी में पैदा हुई है इसलिये इसके पिता को बुरे दिन देखने पड़ रहे हैं। अब इसका सिर काट कर उसे सिन्धु नदी में फेंक दिया जायेगा ताकि यह आगे राजा को परेशानी में न डाल सके।"

जब राजा रसालू ने बच्ची को देखा तो वह उसे प्यारी सी बच्ची लगी। सूरज और चाँद भी उसकी सुन्दरता के आगे फीके पड़ जाते थे। सो उसने दासी से कहा कि वह उसके पीछे पीछे आये।

वह कमरे में आया और उसने राजा सिरीकप को आज़ाद कर दिया तो सिरीकप ने पूछा — "इससे तुम्हारा क्या मतलब है।"

राजा रसालू बोला — "अब मैं तुम्हारा सिर काटने जा रहा हूँ।"

राजा सिरीकप बोला — "अल्लाह के नाम पर मुझे छोड़ दो और इसके बदले में तुम मेरी एक बेटी से शादी कर लो।"

राजा रसालू बोला — "मुझे तुम्हारी किसी बेटी से शादी नहीं करनी। मुझे केवल तुम्हारा सिर चाहिये।"

सिरीकप ने उससे अपनी जान के लिये बहुत विनती की — "राजा साहब। मुझ पर दया कीजिये।"

यहाँ तक कि उसकी पत्नी रानी इचारडी भी अपनी खराब दशा में अपने कमरे से उठ कर वहाँ आ गयी और अपने पति की ज़िन्दगी की भीख माँगने लगी। उसी समय आया भी बच्ची को ले कर वहाँ आ गयी और बच्ची को राजा रसालू के पैरों पर रख दिया। बच्ची चाँद की तरह से चमक रही थी

इचारडी नंगे सिर राजा रसालू के पैरों पर गिर गयी और उससे उस बच्ची को स्वीकार करने की विनती की — "ओ रसालू। मेरी बच्ची को ले लो। मेरी इस बच्ची को अपनी बच्ची की तरह ले

लो। क्यों यह खून खराबा करना चाहते हो। मेहरबानी कर के बच्ची के पिता को छोड़ दो।

अगर तुम्हें मेरी विनती पर दया आ जाये तो इस बच्ची की माँ के आँसुओं पर तरस खाओ। मैं तुम्हें इस बच्ची को **15** साल तक पालने के लिये सोना दूँगी।"

आखिर राजा रसालू अनमने भाव से राजा सिरीकप से बोला — "तुमको मैं कुछ शर्तों पर ही छोड़ सकता हूँ। पहली शर्त तो यह है कि तुम कभी किसी के साथ भी चौपड़ खेलते समय शैतानों वाली चालें नहीं खेलोगे।

दूसरी शर्त यह है कि तुमने जितने लोग भी बन्दी बनाये हैं तुम उन सबको आज़ाद कर दोगे। और तीसरी शर्त यह है कि तुम अपनी नाक पाँच बार गर्म तवे पर रगड़ोगे।"

सिरीकप ने राजा रसालू की सब शर्तें स्वीकार कर लीं। उसने अपनी शर्त के अनुसार चौपड़ के खेल में कोई बुरी चाल न खेलने का वायदा किया। दूसरी शर्त के अनुसार उसने अपने सब बन्दियों को आज़ाद कर दिया।

पर तीसरी शर्त के अनुसार जब उसके सामने नक रगड़ने के लिये गर्म तवा लाया गया तो वह राजा रसालू से माफी माँगने लगा। पर राजा रसालू ने उसे गर्दन से पकड़ा और उसकी नाक पाँच बार उस गर्म तवे पर रगड़ दी। उसके बाद उसने उसे छोड़ दिया और जाने दिया।

अपने आपको इस शर्मनाक हालत में देख कर राजा सिरीकप जंगल में भाग गया पर धीरे धीरे वह घर लौट आया और बहुत सालों तक रहा।

इस बीच राजा रसालू अपनी भूरी घोड़ी पर सवार हुआ और अपने तोते के साथ वहाँ से गर्व से चल दिया। साथ में एक पालकी में अपनी आया के साथ सिरीकप की सबसे छोटी बेटी भी चली।

उस बच्ची का नाम कोकिला था। जब वह शादी के लायक हो गयी तो वह राजा रसालू की सबसे छोटी रानी बन गयी।

2–10 कोकिला का धोखा[72]

सिरीकप को छोड़ने के बाद राजा रसालू ने अपने साथ आये लोगों को भी छोड़ दिया और फिर 12 दिनों तक अकेला ही इधर उधर घूमता रहा और फिर बुरहान[73] के पास खेरी मूर्ति पहाड़ पर आ गया जहाँ उसने एक ऊँचाई पर एक सुन्दर किला देखा जिसके चारों तरफ सुन्दर बागीचा लगा हुआ था। ऐसा लगता था कि वहाँ कोई राजा रहता था।

राजा रसालू ने सोचा कि यह जगह उसके रहने के लिये बहुत अच्छी रहेगी। तो उसकी घोड़ी बोली — "जनाब। मुझे तो यह किसी राक्षस के रहने की जगह लगती है। यहाँ रहने में कोई अक्लमन्दी नहीं है।"

राजा रसालू बोला — "ठीक है पर मुझे एक रात तो यहाँ रहने दो। अगर हमें यहाँ कोई परेशानी हुई तो हम इस जगह को छोड़ देंगे। क्योंकि यह जगह मुझे बहुत अच्छी लग रही है और मैं इसे छोड़ना नहीं चाहता।"

सो वे वहाँ सुरक्षित रूप से सोये और किसी आदमी या राक्षस ने बारह साल तक उनके रहने में वहाँ कोई बाधा नहीं डाली। राजा

---

72 Treason of Kokila. (Tale No 3-10 of the Book)

73 Burhan is a village in the Attock District of Punjab, Pakistan

रसालू ने सोचा कि यहाँ तो उनके रहने में कोई परेशानी नहीं है। और उस बड़े से किले में वे रहते रहे।

वहाँ उसने उस किले की दीवारें मजबूत करा लीं और कुछ सीढ़ियाँ बनवा लीं जो गिनती में छियासी थीं। ये नीचे बागीचे से ऊपर महल तक जाती थीं।

जब बच्ची कोकिला बड़ी हो रही थी तो उसने कह रखा था कि उनके घर के सारे पुराने रीति रिवाज न मनाये जायें। कि वह छोटी राजकुमारी केवल शाकाहारी खाने पर ही न पाली जाये बल्कि उसे हर रोज ताजा माँस खिलाया जाये।

उसकी पढ़ाई लिखाई की सारी जिम्मेदारी एक बूढ़ी आया को दे दी गयी जो उसके साथ सिरीकोट से आयी थी और जो उसको बहुत प्यार करती थी। उसकी सेवा के लिये केवल वही आया थी कोई दूसरी स्त्री उसके पास नहीं जा सकती थी। और केवल वही स्त्री किले के अन्दर भी जा सकती थी।

समय के साथ साथ बड़ी होने पर वह आया एक बार बीमार पड़ गयी। लगा जैसे वह उस बीमारी में मर जायेगी। तो राजा ने उससे कहा — "मैं तुमसे उतना ही प्यार करता हूँ और तुम्हारी उतनी ही इज़्ज़त करता हूँ जितना कि अपनी माँ से। इसलिये तुम चिन्ता न करो तुम जहाँ भी कहोगी मैं तुमको वहीं जलवा दूँगा।"

आया बोली — "नहीं मेरे शरीर को जलवाना नहीं उसे अब्बा सिन्धु[74] में बहा देना।"

और जब उसके मरने का समय आया तो उसकी इच्छा पूरा करने का पूरा पूरा ध्यान रखा गया। उसके शरीर को आदर सहित सिन्धु नदी में बहा दिया गया।

राजा रसालू को शिकार का बहुत शौक था। वह बच्ची को तो तोता और मैना के साथ खेलने के लिये आया की देखभाल में छोड़ देता और खुद धनुष बाण ले कर हिरन की खोज में जंगल की तरफ चला जाता।

वह अपनी ताकत और होशियारी पर बहुत खुश था सो वह या तो अकेला ही चला जाता या फिर कभी कभी अपने तोते शादी को अपने साथ ले जाता। शाम को वह अपने शिकार के साथ किले को लौट आता। और तब दावत होती। उसकी पालतू चिड़ियें उसकी और राजा विक्रमाजीत की प्रशंसा में गीत गातीं।

वह छोटी राजकुमारी के साथ अपने दीवान पर बैठता और उसे प्यार से अपने हाथ से हिरन का मॉस खिलाता तब राजकुमारी को बहुत अच्छा लगता वरना तो राजकुमारी की ज़िन्दगी बस अकेली ही सी थी सिवाय उसकी एक आया के।

पर उसके पास **80** तोते और **86** मैना हमेशा उसके साथ के लिये रहते थे। वे रात दिन उसकी रक्षा करते थे। वे सब आदमी

[74] Father Sindhu River.

की तरह से बोल सकते थे सो वह उन्हीं से बात करती और अपने छोटे बड़े दुख सुख कहती।

इसी तरह से राजा रसालू और राजकुमारी कोकिला की ज़िन्दगी बीत रही थी। जब वह बड़ी हो गयी तो वह राजा रसालू की रानी बन गयी। वे दोनों आपस में बहुत खुश थे क्योंकि राजा हमेशा से ही एक बहुत अच्छा आदमी था। क्योंकि वह एक पत्नी में ही विश्वास करता था। किसी दूसरी स्त्री की तरफ देखता भी नहीं था।

एक दिन वह बहुत खुश था कि एक अजीब सी बात राजा के दिमाग में आयी कि उसकी नौजवान पत्नी भी उसके साथ शिकार पर जाये। कोकिला बोली कि उसने ज़िन्दगी में इतना हिरन का मॉस खाया है कि अगर वह उसके साथ हिरन के शिकार के लिये गयी तो जंगल के सारे हिरन उसके पीछे लग जायेंगे।

पर इस सलाह ने उसे बहुत खुश कर दिया। वह अपनी इस आज़ादी से खुश हो रही थी कि कम से कम उसे किले से बाहर बिना रास्ते वाले जंगल में जाने को तो मिलेगा। चाहे एक दिन के लिये ही सही।

उसने पूछा — "तुम हिरन कैसे मारते हो।"

राजा रसालू बोला — "जब मैं हिरन पर बाण चलाता हूँ और जब हिरन को यह महसूस होता कि वह घायल हो गया है वह पीछे की तरफ दौड़ता है और मेरे घोड़े के पैरों के पास आ कर मर जाता है।"

रानी को यह सुन कर बहुत आश्चर्य हुआ उसने कहा कि वह भी यह सब देखना चाहेगी। राजा बोला — "मेरी रानी। तुम यह सब जरूर देखोगी। क्योंकि कल हम और तुम शिकार के लिये साथ साथ जायेंगे।"

अगले दिन वे दोनों अकेले ही शिकार के लिये चल पड़े। राजा अपनी घोड़ी पर आगे बैठा था रानी उसके पीछे बैठी थी। चलते चलते वे एक पहाड़ी पर आये जिस पर बहुत सारे पेड़ लगे हुए थे और घास के मैदान थे।

जल्दी ही राजा ने अपना एक बाण चलाया जिसने एक हिरनी को घायल कर दिया। पर बजाय उसके पीछे आने के वह जानवर तो आधा मील आगे की तरफ भाग गयी पर उसको जल्दी ही पकड़ लिया गया और उसे मार दिया गया।

रानी यह देख कर बहुत निराश हुई क्योंकि वह तो वहाँ आश्चर्य देखने आयी थी और उसे देखने के लिये मिला कुछ और। कुछ नाराज हो कर वह बोली — "तुमने मुझसे झूठ बोला। वैसा तो नहीं हुआ जैसा तुमने मुझसे कहा था।"

राजा रसालू बोला — "ऐसा क्यों।"

रानी बोली — "अगर तुम्हारे पास यह घोड़ी नहीं होती तो तुम इस हिरन को किसी हालत में नहीं मार सकते थे।"

राजा रसालू बोला — "इसकी वजह यह है कि सारा दिन तुम मेरे पीछे बैठी रहीं। तुम मुझसे बिल्कुल चिपकी हुई बैठी थी सो तुम्हारे शरीर ने मेरे शरीर की एक तिहाई ताकत ले ली थी।"

इस पर रानी हॅस पड़ी और उसका मजाक बनाते हुए बोली — "मुझे नहीं मालूम कि मैं तुम्हारी पत्नी हूॅ या बेटी पर अगर मेरे छूने से तुम्हारी एक तिहाई ताकत चली गयी तो तुम्हारा अपने बेटे बेटियों के साथ क्या होगा।

अगर तुम मुझे करने का मौका दो तो मैं इन्हें हाथ से ज़िन्दा ही पकड़ लूॅगी। ओ राजा। तुमने तो इसे अपने धनुष से बाण चला कर मारा है पर तुम मुझे इजाज़त दो तो मैं तुम्हारे पैरों में हिरन ज़िन्दा ही ला दूॅगी।"

राजा रसालू ने पूछा — "ऐसा तुम कैसे कर सकती हो। यह करना तो बिल्कुल ही असम्भव है। हिरन तुम्हारे पास आयेगा ही नहीं।"

रानी बोली — "नहीं आयेगा? पर मैं ऐसा कर सकती हूॅ। तुम अपने आपको हीरो समझते हो और मैं एक स्त्री हूॅ फिर भी मैं तुमसे ज़्यादा हूॅ।"

यह कह कर रानी घोड़ी से नीचे उतर गयी और नीचे पत्थरों पर बैठ गयी। उसने अपने चेहरे से अपना परदा उठा दिया और अपने

सिर की दाउनी[75] को हिलाया इससे उसकी दाउनी में लगा रत्न जगमगा उठा।

उसकी ऑखों में काजल चमक रहा था। उसके हाथ और पैर मेंहदी से लाल थे। सो जैसे ही हिरनों ने उसका सुन्दर चेहरा देखा जो सोने जैसा चमक रहा था तो वे शर्माते हुए उसके पास आ गये।

तब उसने राजा रसालू से कहा — "आओ राजा आओ और जितने चाहो उतने हिरन पकड़ लो।"

राजा रसालू बोला — "मैं इनमें से एक को भी नहीं पकड़ूँगा। ये पकड़ने के लायक ही नहीं हैं। क्या ये तुम्हारे प्रेमी हैं?"

तभी एक बड़ा सा नीला हिरन उसके पास आया। वह सब हिरनों का राजा था उसका नाम लद्दान था। वह बड़ी बहादुरी से उसके सामने आया क्योंकि वह उसकी सुन्दरता को देख कर अपने होश खो बैठा था और उसके पैरों पर सिर रख कर लेट गया।

यह देख कर राजा रसालू को गुस्सा आ गया। दोनों हाथों से उस हिरन को उठा कर घुमा कर जमीन पर गिरा दिया और अपने चाकू की धार उसकी गर्दन पर रख दी। पर रानी के मन में दया थी उसने राजा रसालू से विनती की कि वह उसको न मारे और जाने दे।

वह बोली — "तुम शाही खानदान के एक राजा हो। तुम्हारी बॉहों में ताकत है तुम्हारे चाकू की धार तेज़ है। तुम्हें कुरान की

[75] Daauni is an ornament hanging from the head on the forehead like a pendant. See picture above

कसम मेरे ऊपर कृपा करो और इस डर से कॉपते हुए हिरन को इसकी ज़िन्दगी दे दो।"

यह सुन कर राजा ने उसे छोड़ दिया पर उसने उसकी पूँछ और कान काट लिये। इस बात से हिरन ने अपने आपको अपमानित समझा सो खून टपकते हुए हिरन ने उसे कुछ कोसा।

वह बोला — "ओ राजा रसालू। तुम आदमियों में राजा हो और मैं तो जंगल का बेचारा एक छोटा सा जानवर हूँ। तुमने अपनी तलवार से मेरे कान और पूँछ काट दिये पर तुम याद रखना कि एक दिन तुम भी इस तरह घायल होगे कि "न्याय के दिन"[76] तक भी ठीक नहीं हो पाओगे।"

इस तरह कह कर हिरन उन दोनों को अकेला छोड़ कर वहाँ से चला गया। यह सुन कर रानी तो बहुत दुखी हो गयी कि उसके पति की जादू टोने की ताकत उससे कम थी। इसके अलावा जो परिस्थितियाँ उसके जीवन में आयी थीं उन पर भी उसे गुस्सा कम नहीं आ रहा था।

एक समय वह अपनी पत्नी को बुरा भला कहता और दूसरे समय नीले हिरन को बुरा भला कहता पर वह यह नहीं देख पा रहा था कि गलती उसी की थी केवल उसकी। इस तरह दोनों खेरी मूर्ति लौट आये।

[76] Judgment Day

इस बीच नीला हिरन राजा से बदला लेने का प्लान बना रहा था। सिन्धु नदी के किनारे जो अटक शहर था उसके राजा का नाम होदी था। उसने एक पहाड़ की चोटी पर एक किला बनवा रखा था जो बिल्कुल ही नदी के किनारे पर था। यह राजा मौज मस्ती और अपने शिकार करने जाने के लिये बहुत मशहूर था।

इस बात को याद कर के नीले हिरन ने सोचा "मैं राजा होदी के किले जाता हूँ और वहाँ उसके बागीचे में उसकी हरी हरी घास चरूँगा। जब इस बात का शोर मचेगा तो वह मेरे पीछे भागेगा तो मैं राजा रसालू के किले की तरफ भाग जाऊँगा।

यह सोच कर वह राजा होदी के बागीचे में घास चरने चल दिया। साथ में उसने अपने बहुत सारे दोस्तों को भी ले लिया। वे सब राजा के बागीचे में घुस गये और उसके बागीचे को पूरी तरह से नष्ट कर दिया।

राजा के बागीचे रखवालों ने जब यह देखा तो जा कर राजा को बताया। राजा ने सुना तो कहा — "जो कोई भी हीरा हिरन को मारेगा जिसका नाम लद्दान है मैं उसे बहुत सारे पैसे दूँगा एक शानदार घोड़ा दूँगा और बहुत सारे गहने दूँगा पहनने के लिये। मैं उसे अपनी सेना का कमान्डर बना दूँगा।"

यह नोटिस सारे देश में छपवा कर बँटवा दिया गया। अब ऐसा हुआ कि यह खबर दो चरवाहों को मिली जिनमें से एक गंजा था

और एक काना था। उन्होंने आपस में कहा "चलो हम लोग उस हीरा हिरन को चल कर पकड़ते हैं।"

दोनों उसे ढूँढने निकले और उसे तब तक ढूँढते रहे जब तक वह उन्हें मिल नहीं गया।

तब गंजा छिपे रूप से राजा होदी के पास गया और उससे कहा — "अगर आप मेरे साथ चलें तो मैं आपको नीला हिरन दिखा सकता हूँ।" यह सुन कर राजा होदी ने उसे बहुत सारी भेंटें दीं और उसके साथ उस जगह चला जहाँ वह नीला हिरन था।

इस बीच क्योंकि काना गंजे से किसी बात पर नाराज था सो उसने नीले हिरन को उस मैदान से कहीं दूसरी जगह भगा दिया था। सो जब राजा होदी वहाँ आया जहाँ नीला हिरन था तो वहाँ उसे कोई नहीं मिला। यह देख कर वह बहुत गुस्सा हुआ। वह चिल्लाया — "वह नीला हिरन कहाँ है।"

काने ने राजा होदी से कहा — "यह लड़का बहुत ही बेवकूफ है। यह कोई भी बात हो उसे समझता ही नहीं है। यह तो आपको धोखा देता रहा है पर अगर आप उससे अपनी भेंटें वापस ले लें और उन्हें मुझे दे दें तो बिना कोई गलती किये मैं आपको लद्दान को दिखा दूँगा।"

सो राजा ने वे भेंटें जो उसने गंजे को दी थीं वे काने को दे दीं। अब काना राजा को उस दूर घास के मैदान में ले चला जहाँ

वह नीला हिरन चर रहा था। वहाँ उसने राजा को नीला हिरन दिखा दिया जिसको वह ढूँढ रहा था।

जैसे ही लद्दान ने राजा होदी को देखा वह जानबूझ कर उसके सामने से भागा और उसे खेरी मूर्ति की तरफ भगाये ले चला। इस सारे समय वह लँगड़े होने का बहाना करता रहा ताकि उसे यह आशा लगी रहे कि वह उसे आखिर पकड़ ही लेगा।

इस बीच राजा होदी का वज़ीर बोला — "सरकार। आप इस हिरन के पीछे मत भागिये क्योंकि मुझे लगता है कि इस हिरन में कुछ जादू है।"

पर राजा होदी ने अपने वज़ीर की बात नहीं सुनी और अपना घोड़ा कुदाता हुआ उसके पीछे पीछे चलता रहा। उसके नौकर चाकर पीछे छूट गये।

काफी देर चलने के बाद नीला हिरन एक नदी पर से कूदा और रानी कोकिला के महल के पास जा पहुँचा। उधर राजा होदी के घोड़े ने भी इस पीछा करने से उत्साहित हो कर नदी के ऊपर से वैसी ही एक छलाँग मारी और वह भी नदी पार हो गया।

इस बीच हिरन एक गुफा में घुस गया और वहाँ जा कर छिप गया। जब तक राजा उस जगह पर आया तब वहाँ उसे कोई दिखायी नहीं दिया।

राजा होदी ने अपने घोड़े की रास खींची तो अपने आपको एक आम के बागीचे में पाया। उसने अपन हाथ बढ़ा कर एक पेड़ से

फल तोड़ने चाहे तो जैसे ही उसने ऐसा किया कि एक मैना बोल पड़ी — "इस पेड़ की शाख मत तोड़ो और आम भी मत खाओ। यह बागीचा एक ऐसे आदमी का है जो इसमें बिना इजाज़त आने वाले को सजा देता है।"

तब राजा होदी ने देखा कि वह बागीचा तो एक किले के नीचे की तरफ था पर उसे वहाँ जाने का कोई रास्ता दिखायी नहीं दे रहा था। उसने ऊपर देखा तो वहाँ बहुत सारे तोते बैठे हुए थे और रानी कोकिला छत पर शाही चाल से घूम रही थी।

राजा होदी ने मैना से कहा — "तोते तो यहाँ अपने आप ही बैठे हुए हैं। वे छज्जे पर बैठे हैं पर ओ शानदार कोमल और सुनहरी पत्तियों जैसी चमकीली मैना यह तो बता कि यहाँ से जो सुन्दर आकृति अभी गुजरी है वह कौन है, कोई आदमी या कोई लड़की।"

मैना बोली — "वह राजा की पत्नी है। राजा इस समय जंगल में हिरन का शिकार करने गया हुआ है।"

तभी एक चिड़िया नीचे की तरफ देखती हुई रानी से बोली — "देखिये रानी जी। एक आदमी बागीचे में घुस आया है और वह फलों को बर्बाद कर रहा है।"

रानी ने पूछा — "क्या वह आदमी है? क्या वह कोई जंगली जानवर है या कुछ और है? कहाँ है वह? मुझे उसे देखना है। मुझे उसे दिखाओ। भगवान जानता है यह तो राजा होदी है।"

रानी ने अपने महल की छत से नीचे देखा तो देखा कि एक बहुत सुन्दर राजा उसके बागीचे में एक घोड़े पर बैठा हुआ है। उसके हाथ में एक धनुष बाण है जो तीन पौंड का है।

वह वहीं से चिल्लायी — "ओ जनाब जो मेरे महल की दीवार के नीचे खड़े हैं। आप कौन हैं और क्या हैं। आप कोई डाकू हैं चोर हैं या फिर कोई चैम्पियन है।"

राजा होदी ने नीचे से ही जवाब दिया — "ओ रानी। चोर तो फटे कपड़े पहनते हैं। साफ सुथरे सफेद कपड़ी पहनने वाले लोग तो भले लोग होते हैं। तुम्हारे प्यार के लिये मैं अपनी नजर अपने शिकार पर रखे था कि वह मुझे मेरे देश और सम्बन्धियों से दूर तुम्हारी मुस्कान जीतने के लिये यहाँ ले आया।"

रानी बोली — "तुम किस राजा के बेटे हो और तुम्हारा नाम क्या है? तुम्हारी जन्मभूमि कहाँ है? तुम किस शहर के रहने वाले हो?"

राजा बोला — "मैं राजा भट्टी का बेटा हूँ। होदी मेरा नाम है। उढे मेरी जन्मभूमि है और मैं अटक में रहता हूँ।"

यह कहने के बाद होदी ने अपने मन में सोचा "इस बियाबान में यह लड़की कौन है। क्या यह कोई जादूगरनी है या फिर कोई देवी है। मुझे मालूम करना चाहिये।"

यह सोच कर उसने उस लड़की से पूछा — "तुम्हारे पिता कौन हैं? तुम्हारे पति कौन हैं और वह बेवकूफ अपनी इतनी सुन्दर पत्नी को इतने बड़े महल में अकेला छोड़ कर कहाँ गये हैं?"

यह सुन कर रानी कोकिला को उससे प्यार हो गया और उसके दिमाग में बहुत सारी बातें घूम गयीं। वह बोली — "मेरे पिता का नाम सिरीकप है। मेरे पति का नाम राजा रसालू है जिनकी ताकत से आसमान भी गूँज जाता है। इस बड़े से महल की इस ऊँची मीनार में मैं अकेली बैठी हूँ पर जो मुझे यहाँ छोड़ कर गया है वह दूर हिरन का पीछा करने गया है।"

जैसे ही होदी ने राजा रसालू का नाम सुना तो वह तो डर के मारे बीमार सा हो गया। वह तो बेहोश ही हो जाता पर फिर वह होश में आया। प्रेम ने डर को जीत लिया था सो वह रानी से बोला — "क्या तुम मुझे जानती हो कि मैं कौन हूँ?"

रानी बोली — "हाँ मैं जानती हूँ कि तुम कौन हो और मैं तुम्हारा बहुत दिनों से इन्तजार कर रही हूँ।"

उसकी इस बात का मतलब समझते हुए राजा होदी ने सोचा "हाँफते हुए भागते हुए और चलते हुए दूर के दृश्यों से अपने आपको बचाते हुए तो मैं यहाँ तक आया और यहाँ आ कर मैं अपना सुनहरा समय बर्बाद कर रहा हूँ। क्योंकि मुझे रास्ता दिखाने वाला कोई नहीं है।"

फिर वह बोला — "ओ रानी मुझे बताओ कि तुम्हारे महल में आने का रास्ता किधर से है। तुम्हारे पास तक पहुँचने के लिये कौन सी सीढ़ियाँ जाती हैं।"

रानी फिर बोली — "जल्दी जल्दी हाँफते हुए भागते हुए चलते हुए सारे दृश्यों को छोड़ते हुए और अब तुम अपना सुनहरा समय इसलिये बर्बाद कर रहे हो क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें कोई रास्ता दिखायी नहीं दे रहा।

तुम अपना घोड़ा आम के पेड़ के नीचे बाँध दो। अपने तरकस को अपने घोड़े की जीन से बाँध दो। मेरे पास तक पहुँचने के लियें आम के पेड़ों के बीच से सीढ़िया आती हैं। वे पूरी **86** सीढ़ियाँ हैं न कम न ज़्यादा। वे ही तुम्हें मेरे कमरे तक ले कर आयेंगी।"

राजा होदी ने सीढ़ियों को ढूँढा और उन पर चढ़ना शुरू किया। जैसे ही वह महल के दरवाजे पर पहुँचने वाला था कि महल पर खड़ी एक मैना ने उसे रोक दिया — "क्या तुमने अपना हिरन कहीं खो दिया है? या तुम्हारे जानवर कहीं खो गये हैं? इस रास्ते पर चलने का किसी को कोई अधिकार नहीं है। तुम अब रसालू के दुश्मन हो।"

तभी एक तोते ने मैना से कहा — "हमको जो हमारे मालिक ने काम दिया है वह है मालकिन की सुरक्षा करना। अगर हमने इसके आने की खबर मालिक को नहीं दी तो इसका मतलब हुआ कि हम उनके नमक का हक नहीं अदा कर पायेंगे।"

इस बीच रानी कोकिला का धीरज खोने लगा। उसने सोचा "वह इतनी धीरे क्यों आ रहा है। उसे सीढ़ियों पर चढ़ने में इतनी देर क्यों लग रही है।"

सो वह यह जानने के लिये अपने कमरे में से निकल कर बाहर आयी तो देखा कि उसकी अपनी मैना ही इस सबकी जड़ थी तो उसने उसे डॉटना शुरू कर दिया।

पर मैना ने बड़ी बहादुरी से जवाब दिया — "आप यह क्या कर रही हैं जो एक अजनबी को इस महल में आने की इजाज़त दे रही हैं। अगर राजा को इस नीचता का पता चल गया तो वह जहॉ आप खड़ी हैं आपको वह वहीं मार देंगे।"

यह सुन कर रानी को बहुत गुस्सा आया पर अपने गुस्से को रोकते हुए वह खुद ही राजा होदी को उस कुँए की तरफ ले चली जिसे राजा ने चट्टान में बनवाया था। पानी खींचने के लिये उसमें घिर्री आदि भी लगी हुई थी।

वे दोनों वहीं बैठ गये। उसने राजा होदी को कुछ खाने पीने के लिये दिया और आपस में मीठी मीठी बातें कीं। उसके बाद रानी कोकिला उसे राजा रसालू के कमरे में ले गयी। पर जैसे ही वह उस कमरे में घुसने लगी कि मैना फिर बोली —

"ओ तोते सुन चल हम लोग यहॉ से उड़ चलते हैं। हम लोग यहॉ से बहुत दूर उड़ जायेंगे। हम इस दुखी घर में एक दिन भी

और रह सकते हैं क्या? पर यह बड़े दुख की बात है कि अंगूर के गुच्छे में एक कौआ चोंच मार रहा है।"

रानी ने तुरन्त ही मैना की तरफ गुस्से से देखा तो तोते ने उसके गुस्से को दूर करते हुए अपने साथी से कहा — "ओ बेवकूफ मैना। इसमें क्या नुकसान है कि अगर कोई आदमी यहाँ आता है केवल खाता पीता है और चला जाता है।

राजा रसालू हमारे लिये क्या हैं? क्या रानी हमारी मालकिन नहीं हैं जो हमें पालती पोसती हैं हमें अपने हाथ से खाना खिलाती हैं? हमें कितना प्यार करती हैं।"

मैना बोली — "यह सच है कि वह यह सब करती है पर फिर भी उसने अपना नाम तो बदनाम किया ही है न। उसने वह किया है जो उसे नहीं करना चाहिये था। और फिर हम तो राजा के नौकर हैं रानी के नहीं।"

मैना की इस बात ने तो रानी को और भी अधिक गुस्सा कर दिया और इतना अधिक गुस्सा कर दिया कि वह मैना के पिंजरे की तरफ दौड़ी उसकी गर्दन मरोड़ी और उसे बाहर फेंक दिया। पर चालाक तोते ने अपनी दोस्त के काँपते हुए शरीर को देख कर कहा — "ओ बेवकूफ बातूनी। तुझे अपना इनाम मिल गया न।"

उसके बाद उसने अपनी मालकिन से कहा — "अगर आप मुझे मेरे इस पिंजरे से बाहर निकाल दें तो मैं भी मैना के मरे हुए शरीर को एक दो बार अपने पैर से मारना चाहूँगा।"

रानी बोली — "धन्यवाद तोते। तुम बहुत सच्चे और वफादार हो।" कह कर उसने पिंजरे का दरवाजा खोल कर उसे पिंजरे से बाहर निकाल दिया। तोता मैना की तरफ उड़ गया और उसे एक दो ठोकर मारीं।

इस बीच रानी ने दरवाजा बन्द कर लिया और होदी को राजा रसालू के कमरे में ले गयी। वहाँ जा कर वे दोनों एक सुन्दर काउच पर बैठ गये।

तब राजा ने उसकी सुन्दरता की प्रशंसा करते हुए कहा — "तुम्हारा छोटा सा मुँह तुम्हारी पतली कमर तुम्हारी बनावट तो ऐसी है जैसी एक हिरन के बच्चे की होती है।

तुम्हारी दोनों आँखें इतनी कोमल जैसे खिलते हुए गुलाब जब वे सुबह की ओस में नहाये हुए हों। ओ रानी तुम कितनी नाजुक हो कितनी पतली दुबली कि कोई तुम्हें ज़रा सा भी छू दे तो तुम यकीनन टूट कर बिखर जाओगी।"

इस पर रानी कोकिला ने कहा — "बाण बनाने वाला खुशी से बाण बनाता है। लोहार भी अपना चाकू खुशी से बनाता है। और जैसे कि जून में डोरी उतरे हुए धनुष और सब कुछ कमरे में आराम से कमरे में टँगे रहते हैं।[77]

पर गर्मियाँ बीत जाने के बाद जब वे फिर सब खींचे जाते हैं तो इतने दिन टँगे रहने के बाद भी उनको खिंचने में कोई परेशानी नहीं

[77] In summer all the weapons are kept aside and in winter they are taken out again for preying.

होती इसी तरह प्यार होता है उसे जितना दिया और लिया जाता है वह उतना ही पनपता है और उतना ही ज़िन्दा रहता है।"

रात को भी दोनों बात करते रहे फिर वहीं सो गये। तोता और मैना यह सब देखते रहे दुखी होते रहे पर कह कुछ नहीं सके।

इस सारा समय तोता उस बन्द कमरे से बच भागने के बारे में सोचता रहा पर उसे कोई रास्ता ही नहीं मिला। आखिर सुबह होने पर उसे एक छेद दिखायी दिया तब कहीं वह उसमें से निकल कर वह बाहर भाग सका।

जैसे ही वह बाहर भागा तो रानी चिल्लायी "उफ़। अब मैं क्या करूँ। यह बात तो अब राजा रसालू तक पहुँच जायेगी।"

होदी बोला — "पर रानी अगर तुम अपने तोते को वापस बुलाओ तो शायद वह वापस आ जाये। वह तुम्हारी बात टालेगा नहीं। तब हमें चिन्ता करने की भी कोई जरूरत नहीं रहेगी और न हमें कोई दुखी होने की ही जरूरत होगी।"

सो रानी ने कमरे के बाहर झॉका और जाली में से बहुत ही नम्र आवाज में चिल्लायी — "मैंने तुम्हें हमेशा नये दूध में उबले चावलों से अपने नाखूनों से साफ किया है और कभी तुम्हारे साथ मजाक भी नहीं किया। ओ मेरे प्यारे तोते तुम वापस आ जाओ। तुम तो मेरे रॉझा हो मैं तुम्हारी हीर हूँ।"

पर तोते ने तो जैसे कुछ सुना ही नहीं। उसने अपने चमकीले पर फैला कर कहा — "तुमने मेरी सुन्दर मैना को मार दिया अब मैं

विधुर हो गया। अगर तोतों ने मुझे पाला पोसा है तो मैं राजा के पास उड़ जाऊँगा।"

इतना कह कर तोता और ऊपर की तरफ उड़ा और जंगल की तरफ भाग गया। वहाँ जा कर वह जंगलों में पहाड़ियों पर रेगिस्तानों में राजा रसालू को ढूँढने लगा पर राजा रसालू उसे कहीं नहीं मिला तो थक हार कर वह एक जगह बैठ गया।

इस बीच राजा होदी बहुत डर गया था क्योंकि जब उसने तोते को उड़ कर वहाँ से जाते हुए देखा तो वह डर के मारे जम सा गया। केवल अपनी सुरक्षा का विचार करते हुए वह महल के दरवाजे से बाहर की तरफ भागा।

पर रानी ने राजा के गले में बाँहें डाल कर उसे रोक लिया और दीनता से रो पड़ी। राजा होदी ने अपने हाथों से उसके आँसू पोंछे और बार बार उसे गले से लगाया पर वह उसका रोना न रोक सका।

पर वह वहाँ और रुका भी नहीं और अपने आपको छुड़ा कर वहाँ से भाग लिया। रानी ने उसकी कायरता को देखा कर उसे डाँटा — "क्या तुम मुझे छोड़ कर जा रहे हो। हाँ हाँ तुम मुझे छोड़ कर जाओ ताकि सारा दोष मेरे ऊपर ही आ कर पड़े सारे व्यंग्य मुझे ही सहने पड़ें। सारी मार मुझे ही पड़े। सारा नुकसान और शर्म भी मुझे ही उठानी पड़े।

मै तो सोचती थी कि शायद किसी हंस ने मेरे दिल ने आग लगा दी है पर तुम तो सारस निकले। अगर मुझे तुम्हारे बारे में ऐसा पता होता तो मैं तुम्हारे होट अपने होटों से कभी न छूने देती।"

रानी के मुॅह से यह सब सुन कर राजा चिल्ला कर बोला — "मेरी थाली स्वादिष्ट खाने से सजायी गयी। मेरा छोड़ा हुआ खाना पड़ा है मेज खाली है। जो कपड़ा इतना कीमती था वह पुराना हो गया है फट गया है। वह तो ऐसा हो गया है कि ठंड में किसी भिखारी के पहनने लायक भी नहीं रह गया।"

इतना कह कर वह वहॉ से बच कर भाग निकला। क्योंकि उसे प्यास लगी थी सो भागते भागते वह नदी के किनारे आया और पानी पीने के लिये नदी में हाथ बढ़ाये तो उसने देखा कि उसके हाथ तो काजल से काले हो रहे हैं।

उसने सोचा "यही तो मेरे प्यार की आखिरी निशानी है जो मेरे पास है मैं इसे नहीं खो सकता। मुझे अपने हाथ नहीं धोने चाहिये।" और तुरन्त ही अपने हाथ खींच लिया। फिर वह घुटनों के बल बैठ गया और बकरी की तरह से पानी पीने लगा।

वहीं पास में एक बूढ़ा धोबी खड़ा हुआ था जो उसकी इस करनी को देख रहा था। यह देख कर उसने अपनी पत्नी से पूछा — "यह कौन आदमी है जो एक जंगली जानवर की तरह से पानी पी रहा है।"

पत्नी बोली — “तुम इसे जानते हो या न जानते हो पर मैं इसे अच्छी तरह जानती हूँ।”

पति ने कहा — “तो फिर मुझे बता न कि यह कौन है।”

पत्नी बोली — “यह राजा होदी है।”

पति बोला — “अरी बेवकूफ क्या तूने कभी किसी राजा को इस तरह पानी पीते देखा है।”

पत्नी बोली — “मुझे तुम्हें इसकी वजह बताते हुए डर लगता है क्योंकि मैंने अगर तुम्हें इसकी वजह बता दी तो तुम मुझे मार डालोगे।”

“ऐसी कौन सी अजीब बात है जो तू मुझे बताते डरती है। कि जो भेद तू मुझे बतायेगी और मैं तुझे मार डालूँगा।”

“तो कसम खाओ।”

“मैं उस भगवान की कसम खाता हूँ जिसने मुझे बनाया है कि अगर तू मुझे यह बता देगी कि राजा ऐसे पानी क्यों पी रहा है तो मैं तुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा।”

तब उसकी पत्नी ने कहा — “कल रात किसी रास्ता चलती पत्नी या बेटी ने इसे गले लगा लिया इसी लिये राजा बैल की तरह से पानी पी रहा है ताकि वह अपने प्यार की निशानी को बचा कर रख सके।

जब वह इससे अलग हुई तो इसने उसके ऑसू पोंछे उससे इसकी उँगलियों पर उसके काजल के धब्बे पड़ गये। उन्हीं धब्बों को बचाने के लिये यह अपने हाथ पानी में नहीं डालना चाहता।"

बूढ़ा धोबी यह उलटी सीधी बात सुन कर बहुत गुस्सा हो गया। वह बोला — "इसमें कोई शक नहीं कि तुम स्त्रियॉ हर बात की तह तक पहुँच जाती हो। तुम लोग हर जगह अपनी नाक घुसाती रहती हो नहीं तो तुम्हें राजा की करनी का पता कैसे चलता।"

कह कर उसने अपना लकड़ी का हथौड़ा लिया और उससे उसके सिर पर मारा जिससे वह बेहोश हो कर गिर पड़ी।

जब उसे होश आया तो वह बोली — "तुम तो बहुत ही अच्छे आदमी हो जी। जो तुमने मुझसे पूछा वह मैंने तुम्हें बताया और तुमने उसका मुझे यह बदला दिया।"

इधर होदी ने उन लोगों की बातें सुन कर पानी पीना बन्द कर दिया था। वह अपने उस काम से शर्मा रहा था। शर्म से वह उठा और बिना अपनी प्यास बुझाये हुए वहॉ से चलने लगा। धोबी ने सोचा कि "यह राजा इतना गुस्सा है कि सुबह में यह मुझे जरूर ही मरवा देगा।"

सो वह अपनी पत्नी से बोला — "नाराज मत हो। जा उस राजा को यहॉ उसे पानी पीने के लिये वापस ले कर आ नहीं तो वह मुझे वह ज़िन्दा नहीं छोड़ेगा।"

यह सुन कर उसकी पत्नी बोली — “यह काम मैं नहीं करूँगी। मैंने एक बार तुम्हारा कहना माना तो यह फल पाया। अब अगर मैं राजा को वापस लाऊँगी तो तुम कहोगे कि मैं राजा की दोस्त हू जैसा कि अभी तुम कह कर चुके हो।”

पति बोला — “जा जा उसे वापस ले कर आ। मैं तुझे छुऊँगा भी नहीं।”

दोबारा कहने पर धोबी की पत्नी राजा होदी की तरफ मुड़ी और उससे कहा — “कभी अपने दाँत आक से साफ मत करो वह ज़हरीला पौधा होता है। न कभी साँप का शापित माँस खाओ। न कभी अनजान सुन्दर लड़के को प्यार से सहलाओ क्योंकि इससे प्रेम तुम्हें गन्दी इच्छाओं से भर देगा।

तुम्हें कितनी भी जरूरत क्यों न हो पर पड़ोसी का दही मत खाओ इससे तो अच्छा है कि पानी पियो क्योंकि वह उससे कहीं मीठा है। न कभी जीतने के लिये दूसरे के काउच का लालच करो क्योंकि वह तुम्हारा कभी नहीं हो सकता। इसलिये हे राजन। अपनी उँगलियों में लगे उन धब्बों को धो डालो और आ कर दोनों हाथों में पानी ले कर अपनी प्यास बुझाओ।”

यह देख कर कि वह स्त्री बहुत ही अक्लमन्द जादूगरनी है राजा होदी ने उसकी सलाह को माना और नदी पर वापस आ गया। आ कर उसने वहाँ अपने हाथ धोये और पेट भर कर पानी पिया।

फिर वह धोबी की तरफ बढ़ा और उससे कहा — "ओ धोबी। यह स्त्री तुम्हारे लायक नहीं है क्योंकि यह बहुत अक्लमन्द है और तुम बहुत ही बेवकूफ हो। तुम एक हजार सोने की मुहरें लो और इसे तुम मुझे दे दो। मैं इसे अपनी बच्ची की तरह से रखूँगा और मेरे इस पैसे से तुम किसी दूसरी स्त्री से शादी कर सकते हो।"

धोबी बोला — "माफ कीजियेगा राजा साहब। यह तो नहीं चलेगा।"

राजा होदी ने उन दोनों को वहीं छोड़ा और अपने महल आ गया। वहाँ आ कर वह एक अकेले कमरे में गया जिसमें एक पुराना काउच पड़ा हुआ था। वह जा कर उस पर लेट गया और वहाँ लेट कर रानी कोकिला को याद कर के रोने लगा।

2–11 रानी कोकिला की किस्मत[78]

जब ये सब अपमान भरी घटनाऐं राजा रसालू के महल में घट रही थीं तब रानी का तोता अपनी थकान मिटा कर फिर से राजा रसालू की खोज में लग गया। आखिर वह हज़ारा में “झूलना कंगन” के पास आ निकला। वहॉ उसने आसमान तक ऊँचा उठता हुआ धुँआ देखा।

सो वह उधर ही उड़ चला तो वहॉ उसने अपने मालिक को एक पेड़ के नीचे बैठे हुए देखा। मालिक का तोता शादी उसकी घोड़ी की जीन पर बैठा था। राजा रसालू उस पेड़ की ठंडी छॉह में सरबॉ गुफा के दरवाजे के पास ही सो रहा था जो सरबाद गॉव के पास थी।

इसने शादी तोते से कहा — “अपने राजा को जगाओ।”

शादी बोला — “मुझे इसका अधिकार नहीं है। अगर तुम्हें उन्हें जगाना है तो तुम खुद ही जगा लो क्योंकि तुम तो रानी जी के दूत हो न।”

तब उस थकी हुई चिड़िया ने पास की नदी में अपने पंख भिगोये और राजा रसालू के चेहरे पर फड़फड़ा दिये। पानी बूँदें राजा रसालू के चहरे हल्की बारिश की बूँदों की तरह पड़ीं। वह

[78] The Fate of Rani Kokila. (Tale No 3-11 of the Book)

जाग गया। अपनी पत्नी के प्रिय तोते को देख कर उसने उससे पूछा कि वह घर अकेला छोड़ कर वहाँ क्यों आया था।

तोता रोते हुए बोला — "रानी जी ने मेरी मैना चिड़िया को मार दिया। वह फर्श पर ठंडी पड़ी है। मैंने उन्हें गालियाँ भी दीं पर सब बेकार। इससे वह और दुखी हो गयीं। उठो उठो ओ राजा। चोरों ने आपके किले का दरवाजा तोड़ दिया है।"

यह दुखभरी बात सुन कर राजा बोला — "मेरे पास **86** मैना हैं। मेरे पास **80** मोर हैं। ये सब मेरे किले की रक्षा करते हैं फिर चोरों ने ऐसी क्या चाल खेली जिससे वे महल का दरवाजा तोड़ने में सफल हो गये।"

तोता बोला — "अफसोस। इतने सारे पहरेदार भी बेचारे क्या कर सकते थे अगर भले आदमी रात के अँधेरे में उठ जाते हैं और अपना ही सामान चुरा लेते हैं। फिर अपने ही मूल्यों का उल्लंघन कर के किसी और का नाम लगा देते हैं। या फिर किसी बुरी घड़ी में लाचारी में जो जौ के खेत को नष्ट कर देते हैं वे पहरेदारी कैसे कर सकते हैं।"

यह सुन कर राजा रसालू उठा और उसने अपनी घोड़ी से कहा — "फ़ौलादी जल्दी करो और मुझे मेरे घर ले चलो।"

घोड़ी बोली — "मैं ऐसा ही करूँगी पर आप मुझे अपनी एड़ी से मत मारियेगा।"

सो अपनी घोड़ी पर सवार हो कर राजा रसालू खेरी मूर्ति यानी अपने घर चल दिया पर क्योंकि वह जल्दी में था तो घोड़ी से किया गया अपना वायदा भूल गया और उसे तेज़ भगाने के लिये अपनी एड़ी उसके एक तरफ मार दी। घोड़ी तुरन्त ही रुक गयी और पत्थर की बन गयी।

राजा रसालू उस पर से उतरा और चिल्लाया — "ओ बेवफा घोड़ी। तू मेरी दोस्ती के लायक नहीं है। यह कोई विश्वासघात करने का समय है।"

घोड़ी बोली — "आप मुझे एक बार और छुइये और मैं फिर कभी आपको ले जाने लायक नहीं रहूँगी। अपना कोड़ा इस्तेमाल मत कीजिये ओ राजा रसालू। मुझे मारिये भी नहीं। अगर मैं किसी घोड़ी से पैदा हुई हूँ तो मैं आपको आपके किले के नीचे दफ़ना दूँगी।"

यह कह कर वह शानदार घोड़ी उठी अपने मालिक को अपने ऊपर बिठाया और दौड़ गयी। पल भर में ही वह राजा रसालू के घर पहुँच गयी।

सबसे पहला काम तो राजा रसालू ने एक आम के पेड़ के नीचे अपनी घोड़ी से उतर कर यह किया कि वह अपनी पत्नी के कमरे में गया। वहाँ जा कर उसने देखा तो उसकी पत्नी तो गहरी नींद सो रही थी।

उसने उसे तो वहीं सोते छोड़ा और नीचे उतर कर बागीचे में गया और अपने शादी तोते से बोला — "बहुत धीरे से जाओ और रानी की उँगली में से चुपचाप उसकी अँगूठी निकाल कर ले आओ।"

तोता तुरन्त रानी के कमरे में गया और उसके हाथ से उसकी अँगूठी निकाल कर ले आया। राजा रसालू ने उसे अपने वफादार तोते के गले में बाँधा और उससे कहा — "अब तुम यहाँ से राजा होदी के घर चले जाओ और उससे जा कर कहना कि राजा रसालू तो जंगल में मारे गये और रानी कोकिला ने अपने प्यार की निशानी आपके पास भेजी है ताकि आप आयें और उन्हें ले जायें।"

तोता बोला — मैं तुरन्त जाता हूँ जनाब।"

कह कर उसने अपने पंख फैलाये और अटक की तरफ उड़ चला। महल पहुँच कर वह एक खिड़की पर जा बैठा। वहाँ उसे कुछ नौकरों ने बैठे देख लिया तो आपस में कहा — "देखो इस तोते को। यह किसी का पालतू तोता लगता है। ऐसा लगता है जैसे कोई शाही तोता हो।"

शादी ने यह सुना तो वह उनसे बोला — "तुम ठीक कह रहे हो। मैं एक राजा का साथी हूँ।"

यह सुन कर राजा होदी के नौकर राजा होदी के पास गये और उससे कहा — "एक तोता है जो महल की एक खिड़की पर बैठा

है और कहता है कि वह रानी कोकिला से आपके लिये एक सन्देश ले कर आया है।"

राजा होदी ने जैसे ही रानी कोकिला का नाम सुना तो तुरन्त ही कूद कर खड़ा हो गया। वह बाहर निकल कर तोते के पास आया और उससे पूछा — "ओ वफादार चिड़िया। तुम रानी कोकिला का क्या सन्देश ले कर मेरे पास आये हो।" यह सुन कर तोते ने उसे जवाब तो कुछ नहीं दिया और रोना शुरू कर दिया।

राजा होदी ने उसे इस तरह से रोते देखा तो फिर पूछा — "तोते तुम इस तरह से क्यों रोते हो।"

तोता बोला — "इसमें कोई शक नहीं कि पहले दोस्ती करने के लिये और फिर उसे छोड़ देने के लिये आप एक इज़्ज़तदार आदमी हैं।"

राजा होदी बोला — "यह कहने का तुम्हारा क्या मतलब है।"

तोता बोला — "आज सुबह जब रानी जी ने आपको नहीं देखा तो वह तो अपने आपको मारने के लिये ही तैयार हो गयीं। मैंने उनके हाथ में छुरा देख लिया तो मैंने उन्हें रोका।

मैंने उनसे कहा — "आप तब तक रुकें जब तक मैं वापस लौट कर आता हूँ।" तब उन्होंने मुझे अपनी अँगूठी दी और अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये मुझसे जल्दी जल्दी यहाँ जाने के लिये कहा। वह मेरे लिये इन्तजार कर रही हैं। पर अगर आप वहाँ जल्दी से जल्दी नहीं पहुँचे तो वह अपने आपको मार लेंगी।"

राजा होदी ने उससे अपने प्यार की निशानी ली और उससे पूछा — “तुम्हारे मालिक राजा रसालू कहाँ हैं।”

तोता बोला — “अल्लाह ही जानता है। मैंने उन्हें सब जगह ढूँढा पर वह मुझे कहीं नहीं मिले। मुझे लगता है कि किसी राक्षस ने उन्हें पकड़ लिया है और खा गया है।”

राजा होदी ने तब अपना घोड़ा बुलवाया उस पर सवार हुआ और रानी कोकिला के पास चल दिया। जब उसे खेरी मूर्ति की मीनारें नजर आयीं तो तोता बोला — “मैं आपसे पहले उड़ कर वहाँ जाता हूँ ताकि आपके आने की खबर रानी जी को पहले ही दे सकूँ।”

राजा होदी बोला — “जाओ और ऐसा ही करो।”

और तोता आम के पेड़ों की तरफ उड़ कर चला गया और जा कर राजा रसालू से कहा — “आपका प्रतिद्वन्द्वी आ रहा है। उससे मिलने के लिये तैयार हो जाइये।”

जब राजा होदी पास आ गया तो राजा रसालू उठा और उसका स्वागत करते हुए बोला — “गुड मौर्निंग। आइये ऊपर चलें।”

राजा होदी तो उसे देख कर बिल्कुल तस्वीर की तरह खड़ा रह गया। वह तो सैंकड़ों बार माफी ही माँगता रह गया — “मैं तो यहाँ गलती से आ गया। मुझे नहीं मालूम था कि यह महल किसका है। मैं तो बस यह पूछने ही आ गया था कि यह महल किसका है। मुझे आशा है कि आप मुझे माफ करेंगे।”

राजा रसालू बोला — "नहीं नहीं। तुम यहाँ गलती से नहीं आये हो। तुम्हें तुम्हारी किस्मत यहाँ खींच लायी है। यह ज़्यादा अच्छा होगा कि तुम अपने हथियार उठा लो और तुम ही मुझ पर पहला वार करो।"

राजा होदी बोला — "राजा साहिब। मैं आपका दुश्मन नहीं हूँ। मुझे तो यह मालूम ही नहीं था कि यह किला किसका है इसी लिये यह पूछने के लिये मैं इधर चला आया। मुझे नहीं लगा कि यह बात पूछने में कोई नुकसान है।"

"तुम यह सब बेकार की बातें छोड़ो और पहले अपने हथियार इस्तेमाल करो। नहीं तो तुम कहोगे कि "राजा रसालू ने मेरे साथ विश्वासघात कर के मुझे मार दिया।"

राजा होदी ने देखा कि अब कोई और चारा नहीं है तो उसने अपने तरकस से एक बाण निकाला और उसे धनुष पर रख कर बोला — "सँभलो मेरा जहरीला बाण आ रहा है।" कह कर उसने अपना बाण राजा रसालू पर छोड़ दिया।

राजा रसालू अपने घोड़े पर ही एक तरफ को झुक कर इस बाण का वार बचा गया। बाण किले की दीवार में जा कर लगा और उस जगह का पत्थर टूट गया।

तब घायल राजा ने कहा — "ज़रा अपने धनुष की डोरी और खींचो पर साथ में धनुष को भी कुछ और मोड़ो। अक्लमन्द आदमी

अच्छे वार के लिये धनुष को थोड़ा और मोड़ता है। जो अपने धनुष को नहीं मोड़ता वह तो सीखतर से भी गया बीता है।"

पर राजा होदी अपने परिणाम से डर गया और बोला — "ओ रसालू मैं आपको बहुत थोड़ा देख पा रहा हूँ। धुँधलका आपकी शक्ल को देखने नहीं दे रहा। सख्त स्टील के चाकुओं से मेरा कलेजा छिदा जा रहा है।ओ रसालू सुनिये। इससे मेरे कलेजे में आग सी लग रही है।"

राजा होदी की बात को अनसुना कर के राजा रसालू ने अपने धनुष पर एक लोहे का बाण रखा और उसे साधने लगा। पहले उसने बाण को चलाने का बहाना किया ताकि वह अपने शत्रु की हिम्मत नाप सके कि तभी उसका दुश्मन एक आम के पेड़ के पीछे छिप गया।

राजा रसालू बोला — "आहा। तुम तो आम के पेड़ के पीछे हो, हो न। अब तुम्हारा अन्तिम समय आ गया है।"

कह कर धनुष की डोरी को उसने पूरा खींचा और अपना बाण राजा होदी की तरफ फेंक दिया। राजा रसालू का बाण पेड़ को चीर कर उस पार निकल गया और उसके दुश्मन के शरीर को भी चीर गया और वहाँ से 400 गज की दूरी पर जा कर पड़ा।

राजा रसालू का बाण इतनी तेज़ी से गया कि राजा होदी को पता भी नहीं चला कि वह उसे कब और कहाँ लग गया। वह बोला "आपका निशाना चूक गया।"

राजा रसालू बोला — “मेरा निशाना कभी नहीं चूकता। अपने आपको थोड़ा हिलाओ और देखो।”

जैसे ही राजा होदी ने अपने शरीर को ज़रा सा हिलाया तो उसका शरीर घोड़े से बेजान हो कर आम के पेड़ के नीचे गिर पड़ा। राजा रसालू हाथ में अपनी तलवार ले कर आगे बढ़ा अपनी घोड़ी से नीचे उतरा और अपने प्रतिद्वन्द्वी का गला काट लिया। जैसे ही सिर धड़ से अलग हो कर एक तरफ को लुढ़का तो राजा होदी के होठ खुले और वह बोला — “राजा रसालू मुझे पानी दीजिये।”

राजा रसालू ने जैसे वह सपना देख रहा हो राजा होदी का खाली तरकस उठाया क्योंकि उसके गिरने से उसके तरकस उसके बाण निकल गये थे इसलिये तरकस खाली था एक साफ नाले से पानी भरा और उसे पिलाने के लिये उसका मुँह खोला।

जब राजा होदी ने पानी पी लिया तो वह बोला — “ओ चिड़ियों जो तुम मेरे ऊपर घूम रही हो मेरी प्यारी रानी के पास जाओ और उससे कहो कि “राजा होदी ने राजा रसालू के हाथ से पानी पिया है।”

इसके बाद राजा होदी की आत्मा को शान्ति मिली वह बोला — “आज मैं अपनी पत्नी के लिये हिरन का मॉस नहीं ले जा पाया। फिर भी उसे हिरन का मॉस से अच्छा मॉस मिलेगा जैसा कि उसने पहले कभी नहीं खाया होगा।”

बिना सिर का शरीर राजा रसालू के पैरों के पास पड़ा था। राजा रसालू ने उसके राजसी कपड़े उतारे उसके शरीर को काटा उसका दिल निकाला और उसे किले का दरवाजा खोल कर और बन्द कर के अन्दर ले गया।

अपनी तैयारी कर के वह उस दिल को रानी कोकिला के कमरे में ले गया। रानी कोकिला अभी तक सो रही थी।

उसने उसे जगाया — "उठो उठो बहुत देर हो गयी है।"

रानी कोकिला अपने आप ही काउच से उठी और राजा रसालू की तरफ आश्चर्य से देखा क्योंकि उसकी आत्मा उसे कचोट रही थी। उसने सोचा "क्या इन्हें सब मालूम पड़ गया है?"

देहरी की तरफ मुड़ कर राजा रसालू ने दरबार की तरफ देखा तो देखा कि घड़ों में अभी अभी पानी भरा गया है। और यह भारी काम उसकी पतली दुबली पत्नी के लिये करना असम्भव था।

वहीं चबूतरे के पास उसका प्रिय हुक्का भी रखा हुआ था जिसमें थूक भरा हुआ था। रानी की तरफ दुखी नजरों से देखते हुए वह बोला — "रानी मेरा हुक्का किसने पिया? वह कौन है जिसने इसमें थूका? और रानी पानी किसने भरा? सारा रास्ता पानी से गीला हुआ पड़ा है।"

रानी कोकिला ने अपने पति को जल्दी से जवाब दिया — "आपका हुक्का मैंने पिया। मैंने ही यहाँ थूका। ओ राजा मैंने ही घड़े उठाये और मुझसे ही पानी बिखर गया।"

पर वह सोचने लगी कि "क्या तोते ने मुझे धोखा दिया है।"

राजा रसालू ने फिर इधर उधर देखा तो देखा कि दोनों पिंजरे खाली पड़े हुए हैं। वह बोला — "मुझे तुम्हारी दोनों चिड़ियों की आवाज नहीं सुनायी पड़ रही। वे अपने मालिक का स्वागत नहीं कर रहीं।"

रानी कोकिला बोली — "तोते की आवाज तो शान्त हो गयी है और मैना अपने मालिक का स्वागत इसलिये नहीं कर रही क्योंकि वे दोनों घूमने गये हुए हैं। मैंने अपने दोस्तों को बाहर उड़ने के लिये भेज दिया है और वे आम के पेड़ों की तरफ उड़ गये हैं।"

पर उसका दिमाग अभी भी उधेड़ बुन में लगा हुआ था। उसने सोचा "अब मेरा सच जरूर ही सामने आ जायेगा।"

तब राजा रसालू दीवारों की तरफ गया और बोला — "मियाँ मिट्ठू मियाँ मिट्ठू।"

तोते ने मालिक की आवाज सुनी तो वह आम के पेड़ पर से बोला — "मैं यहाँ हूँ पर मैं डर के मारे काँप रहा हूँ। मैं महल में घुसने की हिम्मत नहीं कर सकता।"

राजा रसालू ने अपना हाथ बढ़ाया तो तोता उस पर आ कर बैठ गया। राजा रसालू ने कुछ गुस्से से में कहा — "तुम्हें और मैना

को मैंने यहाँ रानी की पहरेदारी और सुरक्षा के लिये रखा था। पर तुमने तो मेरा विश्वास ही तोड़ दिया। यहाँ यह सब कुछ होता रहा और तुमने मुझे कोई खबर ही नहीं दी।"

तोता बोला — "मैं आपको सब कुछ सच सच बता सकता था राजा साहब पर आजकल के दिन सच बताने के नहीं हैं। हममें से एक ने सच बोलने की कोशिश की थी तो देखिये वह यहाँ पड़ी है।"

जब राजा ने मैना चिड़िया के बिना सिर के शरीर को खून में सना पड़ा देखा तो उसने मैना को उठाया और रानी के पास ले गया और उससे पूछा — "मैं तो इस मैना को साबुत और ठीक छोड़ कर गया था फिर यह सब क्या है।"

रानी कोकिला बोली — "यह सब तोते ने किया है। उसी ने इसे मारा है। आप उसी से पूछ लें वह इस बात को मना करने की हिम्मत नहीं कर सकता।" जब रानी कोकिला ने यह कहा तो तोते की तरफ धमकी भरी नजर से देखा।

तोता बोला — "हो सकता है कि ऐसा हो कि मैंने ही मैना को मारा हो पर क्या राजा साहब आपने दुनियाँ में कभी ऐसा होते सुना है।" कहते हुए उसने उसी समय अपना एक पंजा उठा कर यह बताने के लिये कि मैना को उसी ने मारा है रानी कोकिला की तरफ इशारा किया।

यह सुन कर राजा रसालू रानी कोकिला के कमरे में घुसा तो उसने देखा कि किस तरह वहाँ तकिये और गद्दियाँ सब इधर उधर पड़े हुए थे। उसने देखा कि उसकी पत्नी के लाल के हार के लाल टूटे हुए पड़े थे जिनको वह बेकार में धागे मे पिरोने की कोशिश कर रही थी।

यह सब देख कर राजा रसालू बोला — "मेरे फर्श पर कुछ अजनबी पैरों के निशान पड़े हैं। मेरा काउच भी अस्त व्यस्त है। रानी कोकिला ज़रा यह तो बताओ कि मेरे कमरे में कौन घुसा?

वह कौन सा चोर था जिसने मेरे बिस्तर को खराब किया? वे कौन से हाथ थे जिन्होंने तुम्हारे हार को तोड़ा? किसने तुम्हारे गले में पड़ी सोने की जंजीर को तोड़ा?"

रानी कोकिला बोली — "ओ राजा। जैसे ही मैना मरी तोते ने मेरे लाल तोड़ दिये। मैं डर गयी तो मैं चमकदार फर्श पर चल कर एक तरफ को हट गयी। मेहरबानी कर के मुझसे यह न पूछिये ओ राजा कि आपका बिस्तर ऐसा अस्त व्यस्त क्यों है क्योंकि यहाँ तो मेरे सिवा और कोई आया ही नहीं। मैं ही आपके बिस्तर पर लेटी थी।"

वह राजा रसालू से माफी तो माँग रही थी पर उसका दिल डूबा जा रहा था। वह सोच रही थी "अब आगे क्या होगा।"

तब राजा रसालू अपने गुस्से और दुख को नियन्त्रित करते हुए बोला — "बस बहुत हो गया रानी कोकिला। अब तुम जाओ और

रसोई में जा कर देखो कि मेरा हिरन का मॉस किस तरह से पकाया जा रहा है। और मेरी रोटी बनाओ।” यह कह कर वह बाहर चला गया और कुॅए के पास जा कर बैठ गया।

जब रानी कोकिला मछली और रोटियॉ ले कर बाहर आयी तो उसने उन्हें ला कर फर्श पर रख दिया तो राजा रसालू बोला — “आओ एक बार आखिरी बार हम खाना एक साथ खा लेते हैं।”

जैसे स्त्रियॉ अपनी गलतियॉ तुरन्त भूल जाती हैं रानो कोकिला ने भी राजा रसालू की बनावटी कृपा को स्वीकार कर लिया। उसका उसकी तरफ प्यार जाग उठा। पर आदमी तो अलग तरह के होते हैं वे अपने विचारों में पक्के होते हैं और अपने शकों को बनाये रखते हैं।

राजा रसालू ने थोड़ी सी रोटी अपने होठों से लगायी और बोला — “आज मेरी रोटी में कोई स्वाद नहीं है।”

रानी कोकिला बोली — “आह। प्रिय आज मेरे लिये आप कैसा खाना ले कर आये हैं। मुझे तो ऐसा लगता है कि किसी हिरन के मॉस का स्वाद मुझे इतना अच्छा लगा ही नहीं जितना यह है।”

पर राजा ने अपनी रोटी अपने सामने से खिसका दी और वहॉ से उठ गया और बोला — “ यह कैसा स्वदिष्ट और अच्छा खाना है जो तुम्हारे पैरों पर ज़िन्दा तो पड़ा है पर उसमें जान नहीं है। मरा हुआ भी वह तुम्हें खुशी देता है। तुम पेट भर कर उसका मॉस खा

रही हो। पर ओ रानी जिसका दिल झूठ साबित हो चुका हो उसे तो चिता में जल कर नष्ट हो जाना चाहिये।"

यह सुन कर रानी के मुँह में रखा खाने का कौर नीचे गिर गया। उसने सोचा "मेरे साथ धोखा हुआ है। इन्हें तो सब मालूम पड़ गया। अब सब कुछ खत्म हो गया।"

रोते हुए वह अपने पति से बोली — "मैं झुकती हूँ तो मैं सामाजिक नियमों का अपमान करती हूँ। अगर मैं सिर उठाती हूँ तो भी आप मेरी हँसी उड़ायेंगे। तभी से मैं सह रही हूँ न तो मेरी ज़िन्दगी में अब कोई सहायता है और न ही कोई आशा है। जिसके बारे में ओ राजा आप मुझ पर व्यंग्य कस रहे हैं मैं उसी के साथ मर जाऊँगी।" कह कर वह तुरन्त ही नीचे भाग गयी जहाँ राजा होदी की सिर कटी लाश पड़ी हुई थी।

रोते हुए वह उसकी लाश पर गिर पड़ी पर इससे पहले कि उसका शरीर नीचे गिरता उसकी साँस तो उससे पहले ही रुक चुकी थी। इस तरह से रानी कोकिला मर गयी।

2–12 राजा रसालू की मौत[79]

अपनी रानी की यह खूनी और दयनीय हालत देख कर वह आश्चर्य के साथ किले के दरवाजे की तरफ भागा और उसमें से बाहर निकलते हुए पत्थर की सीढ़ियाँ उतरते हुए वहाँ जा पहुँचा जहाँ आम के पेड़ के नीचे राजा होदी की लाश पड़ी हुई थी। चिड़ियें अभी भी उसकी लाश को खा रही थीं।

वहाँ जा कर उसने अभागी कोकिला की लाश के टुकड़े देखे। उसके होठों पर अभी भी वही मुस्कान खेल रही थी जो जब वह ज़िन्दा थी तब खेलती थी। उसकी आँखों में दर्द था।

केवल उसी स्त्री की लाश पर झुकते हुए जिससे कभी उसने सच्चा प्यार किया था राजा ने महसूस किया कि प्यार किया जाना क्या होता है और फिर उसे हमेशा के लिये खोना क्या होता है।

कहानी कहने वालों का कहना है कि उसने रानी कोकिला की लाश को बड़ी कोमलता से उठाया और उसे महल में ले गया। पत्नी की और उसके प्रेमी की दोनों की लाशों को उसने बराबर बराबर रखा और फिर दोनों को एक ही कपड़े से ढक दिया।

पर फिर वह सोचने लगा "अगर मैंने दोनों लाशों को एक साथ जलाया तो इस अपमानजनक काम के बारे में सब जान जायेंगे। मुझे

[79] The Death of Rasalu. (Tale No 3-12 of the Book)

ऐसा नहीं करना चाहिये। आधी रात को जब सब सो जायेंगे तब मैं इनको बाहर ले जाऊँगा और इन्हें नदी में बहा दूँगा।"

तब तोते की तरफ देखते हुए उसने तोते से कहा — "तुम्हारा साथी भी मर गया और चला गया और साथ में मेरा भी। बेचारे तोता और राजा। देखो दुनियाँ कैसे चल रही है।"

इसके बाद राजा रसालू थके होने की वजह से लेट गया और सो गया। वह उन दोनों लाशों के बारे में बिल्कुल भूल गया सो बहुत देर तक नहीं जाग पाया। जब वह लाशों को अपने कन्धे पर ले कर नदी के पास पहुँचा तब लगभग सुबह होने वाली थी।

तभी उसे वहाँ बूढ़ा धोबी नजर आया जो अपनी पत्नी के साथ कपड़ों की एक पोटली ले कर उन्हें धोने के लिये ले जा रहा था। उनकी नजर से बचने के लिये वह एक तरफ को खड़ा हो गया और दोनों लाशों को नदी में डाल दिया।

जब वह उनको सिन्धु नदी में दूर जाते और पानी में डूबता देख रहा था तभी उसने स्त्री को यह कहते सुना कि "अभी तो सुबह भी नहीं हुई है। जब तक सुबह होती है तुम मुझे कोई कहानी सुनाओ न।"

धोबी बोला — "क्या फायदा। हम लोगों को दुनियाँ में रहना है। हमारी काफी ज़िन्दगी तो निकल गयी है बस अब थोड़ी सी ही रह गयी है। हमारे पास इतना समय नहीं है कि हम इन कहानियों पर अपना समय बेकार करें।"

पत्नी बोली — "पर अभी तो दिन भी नहीं निकला सो जब तक अँधेरा है तब तक तुम मुझे एक कहानी ही सुना दो न।"

तब धोबी ने पूछा — "क्या तुम सच्ची कहानी सुनना चाहोगी या फिर ऐसे ही कोई।"

पत्नी बोली — "सच्ची कहानी जो तुमने देखी हो या तुम उसे जानते हो।"

धोबी बोला — "ठीक है। तब तुम ध्यान दे कर सुनो। तुमसे शादी करने से कुछ समय पहले ही की बात है कि मेरी एक दूसरी पत्नी थी। वह अल्लाह की प्रार्थना रोज़ दिन में पाँच बार करती थी। मैं भी उसे बहुत प्यार करता था।

फिर भी हर रात वह कम से कम एक घंटे के लिये घर से गायब रहती। फिर मुझे कुछ शक होने लगा तो मैंने यह जानने का पक्का इरादा कर लिया कि यह जाती कहाँ है।

एक दिन मैंने उसका पीछा किया। क्योंकि मुझे ऐसा लगा कि वह शायद कहीं अपनी प्रार्थना करने जाती होगी पर मैंने सोचा कि मुझे खुद अपनी आँखों से जा कर देखना चाहिये कि वह कहाँ जाती है। उसके पीछे चलते चलते मैं एक कब्रगाह में पहुँच गया जहाँ वह एक फ़कीर की कब्र पर जाती थी। वह वहाँ प्रार्थना करती थी कि मैं अन्धा हो जाऊँ।

जब मैंने यह सुना तो मुझसे यह सोचे बिना न रहा गया कि मेरे सामने तो यह मेरा आदर करती है और मेरी पीठ पीछे यह मेरे अन्धे

होने की प्रार्थना करती है। कल मैं इससे पहले ही यहाँ आ जाऊँगा और इसे इसकी प्रार्थना का जवाब दूँगा।

अगले दिन मैं उस कब्र के पीछे छिप गया और जब मेरी पत्नी वहाँ आयी और उसने अपनी रोज वाली प्रार्थना की तो मैं पीछे से बोला — "ओ स्त्री। तुम बहुत दिनों से मुझसे यह प्रार्थना कर रही हो। आज मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली है। तुम घर जाओ और कल सुबह को अपने पति को मीठी खीर खिलाओ और शाम को भुनी हुई बतख खिलाओ। एक हफ्ते में वह अन्धा हो जायेगा।"

कह कर मैं जितनी जल्दी हो सकता था वहाँ से घर भाग आया। जब मेरी पत्नी घर आयी तो मैंने उससे पूछा — "अभी तुम कहाँ गयी थीं।"

वह बोली — "मैं गाँव में कपड़े देने गयी थी।"

अगली सुबह मेरी पत्नी मुझसे बोली — "देखो आज मेरे पास छाछ[80] भी है और तेल भी है मैं तुम्हारा सिर धो देती हूँ।"

मैंने अपने कपड़े उतारे और अपना सिर धुलवाने के लिये चला तो मेरी पत्नी ने मेरा शरीर देखा तो बोली — "उफ़। तुम कितने पतले दुबले से हो। तुम तो बस खाल और हड्डी ही रह गये हो। मुझे तुम्हें ठीक से खाना खिलाना चाहिये।"

मैंने कहा — "ठीक है।"

---

[80] Translated for the word "Buttermilk". In India many women wash their hair with buttermilk.

सो वह मेरा सिर धो कर मेरे लिये मीठी खीर बनाने के लिये चली गयी। वह मीठी खीर मैंने बड़े आनन्द से खायी। शाम को उसने मुझे भुनी हुई बतख खिलायी जिसे भी मैंने बड़ा आनन्द ले ले कर खाया।

तीन चार दिन बाद मैंने अपनी पत्नी से कहा — "प्रिये। पता नहीं दो तीन दिन से मेरी आँखों को क्या हो रहा है। मुझे कुछ धुँधला धुँधला सा दिखायी दे रहा है।"

हालाँकि उसने मुझे तसल्ली देने की कोशिश की पर मुझे लगा कि वह मन ही मन बहुत खुश थी। सात दिन बाद मैंने उससे चीख कर कहा — "प्रिये। मैं तो बिल्कुल ही अन्धा हो गया। मुझे कुछ दिखायी नहीं दे रहा। क्या हो गया है मुझे।"

यह सुन कर उसने एक नकली चीख मारी और फिर से उस फ़कीर की कब्र पर पहुँच गयी और मेरी आँखों के ठीक हो जाने की प्रार्थना की।

मैंने एक छड़ी ले ली थी और एक अन्धे आदमी की तरह से व्यवहार कर रहा था।

पर एक दिन मेरी पत्नी ने सोचा "यह तो मुझे लगता है कि एक धोखा है। मुझे इनके अन्धेपन का इम्तिहान लेना चाहिये। सो उसने मुझसे कहा — "मैं ज़रा किसी से मिलने जा रही हूँ। अगर मैं थोड़ा सा जौ सुखाने के लिये रख जाऊँ तो क्या तुम उसे देख लोगे।"

मैंने कहा — “मैं उसका ध्यान कैसे रख सकता हूँ। पर फिर भी अगर तुम चाहो तो उसे चटाई पर ऐसे फैला जाओ जिसे मैं समय समय पर छू सकूँ। मैं कोशिश करूँगा।”

उसने ऐसा ही किया। मैं भी अपनी छड़ी ले कर उसके पास बैठ गया। कुछ समय बाद मैंने देखा कि मेरी चतुर पत्नी जौ को हाथ लगा रही थी तो मैंने उसके सिर पर अपनी छड़ी इतनी ज़ोर से मारी कि वह यह कहते हुए बेहोश हो गयी कि “तुमने तो मुझे मार ही दिया।”

मैं तुरन्त बोला — “प्रिये प्रिये। मैं यह कैसे जान सकता था कि वह तुम थीं। तुम्हें तो मालूम है कि मैं अन्धा हूँ देख नहीं सकता। मुझे लगा कि शायद कोई बैल या बकरी आ गयी है।”

इससे मेरी पत्नी को विश्वास हो गया कि मैं पूरी तरह से अन्धा हूँ। उसने मुझे फिर से पहले की तरह से खिलाना पिलाना शुरू कर दिया।

पर सच तो यह था कि वह किसी और आदमी को प्यार करती थी जिसके पास वह जाया करती थी। हालाँकि यह बहुत ही मुश्किल था पर जब भी उसे समय मिलता वह उसके पास जाती।

उसने धीरे धीरे उस आदमी को मेरे घर में लाना शुरू कर दिया। एक दिन जब वह हमारे घर आने वाला था मेरी पत्नी मुझसे लड़ पड़ी और मुझे घर से जाने के लिये कहा।

वह बोली — “तुम कुछ करते क्यों नहीं हो। हमेशा घर में ही बैठे रहते हो। जाओ जंगल से लकड़ी ही इकट्ठी कर के ले आओ।”

मैंने उसे ऐसा कहने पर दिल से बद्दुआ दी और बाहर चला गया। जब मैं वापस लौटा तो मैंने देखा कि वह आदमी तो मेरे कमरे में बैठा है तो मैंने सोचा “अरे मेरा दोस्त तो यहाँ है।”

उधर मेरी पत्नी ने जब मुझे आते देखा तो उस आदमी से कहा कि वह पास में दीवार के सहारे खड़ी हुई मुड़ी हुई चटाई में छिप जाये। उसने ऐसा ही किया।

मैं अपने गाय के बाड़े में गया जहाँ मुझे लगा कि वहाँ कोई रस्सी होगी। मुझे वहाँ रस्सी मिल गयी। मैं उसे ले कर अपनी छड़ी के सहारे वापस लौटा।

मेरी पत्नी ने मेरे हाथ में रस्सी देखी तो मुझसे पूछा — “इस रस्सी का तुम्हें क्या करना है।”

उसे बिना कुछ जवाब दिये मैं उस चटाई की तरफ चलने लगा जिसमें मेरी पत्नी का दोस्त छिपा बैठा था। पहले मैंने उसका एक सिरा बाँधा और फिर दूसरा और फिर उसको उठा कर वहाँ से चलने लगा।

जाते समय मैं उसे जवाब देता गया — “यह बोझ अब मैं और नहीं सह सकता। मैं तीर्थ यात्रा के लिये मक्का जा रहा हूँ। यह

चटाई मैं साथ में लिये जा रहा हूँ यह मेरी पूजा के काम आयेगी।" कह कर मैं चल दिया पर वह मेरे पीछे पीछे आयी।

वह मेरा दिमाग बदलना चाहती थी। वह बोली — "मत जाओ मेहरबानी कर के मत जाओ। अपनी बेचारी पत्नी को इस तरह छोड़ कर मत जाओ।"

पड़ोसियों ने भी कहा — "इस गरीब को जाने दो। अब यह तुम्हारे किस काम का है।"

इस तरह से मैं उससे बच कर निकल आया।

मेरे दो तीन मील चलने के बाद चटाई में छिपा आदमी चटाई के अन्दर कुलमुलाने लगा। मैंने उससे कहा — "तुम कुलमुलाते रहो। अभी तुम्हें अपने कुलमुलाने की वजह भी पता चल जायेगी। तुम क्या समझते हो कि मैं अन्धा हूँ। मैं अन्धा नहीं हूँ।"

चलते चलते मैं एक गाँव में पहुँचा जहाँ सबसे पहले मुझे एक स्त्री दिखायी दी जो बढ़िया आटे की रोटी बना रही थी। जब वह रोटी बना चुकी तो वह उन्हें अनाजघर में ले गयी जहाँ उसका प्रेमी छिपा हुआ था। वहाँ ले जा कर उसने उन्हें उसे दे दिया। उसके बाद वह बाहर आयी और उसने जौ के मोटे आटे की रोटी बनानी शुरू कर दी।

मैंने एक फ़कीर होने का बहाना किया और उसके पास जा कर कहा कि वह मेरे लिये गेहूँ की कुछ रोटी बना दे और थोड़ा सा मक्खन दे दे।

उसने पूछा — "पर मुझे गेहूँ का आटा मिलेगा कहाँ। क्या तुम देख नहीं रहे कि मैं कितनी गरीब हूँ।"

मैंने कहा — "नहीं नहीं। मेहरबानी कर के मेरे लिये कुछ गेहूँ की रोटी बना दो।"

जब हम लोग आपस में इस तरह बहस कर रहे थे कि तभी उसका पति बाहर निकल आया और अपनी पत्नी से बोला — "फ़कीरों से क्या लड़ना। तुम उससे क्यों लड़ रही हो।"

वह बोली — "मैं कहाँ लड़ रही हूँ। यही लड़ रहा है बढ़िया रोटी और मक्खन के लिये। क्या कभी तुमने बढ़िया रोटी और मक्खन खाया है।"

जब पति ने यह सुना तो वह मुझ पर बहुत गुस्सा हुआ और मुझसे कहा — "अगर जौ की रोटी तुम्हें ठीक लगती है तो उसे ले लो और अगर नहीं लगती तो जाओ।"

तब मैंने दरवाजे की तरफ इशारा करते हुए कहा — "जो अनाजघर में बैठे हैं वे तो गेहूँ की रोटी खा सकते हैं पर भिखारी अपनी रोटी नहीं चुन सकते।"

पति चिल्लाया — "यह तुम क्या अनाजघर की बात कर रहे हो। यह तो मुझे देखना चाहिये।"

सो वह अनाजघर में गया और वहाँ उसे अपनी पत्नी का प्रेमी मिल गया। वह अनाज के ढेर के पास बैठा हुआ गेहूँ की रोटी मक्खन से खा रहा था।

उसने मुझसे कहा — "तुम एक ईमानदार आदमी हो ओ फ़कीर।"

पर वह इतने गुस्से में था कि उसने अपना चाकू निकाल लिया और वह जरूर ही उस आदमी का गला काट देता अगर मैंने उसका हाथ पकड़ कर रोक न लिया होता और उसे उस जगह से बाहर न ले आया होता।

मैंने अपनी चटाई खोली और अपने बन्दी को आजाद किया और उस स्त्री के पति से कहा — "देखो। यहाँ मेरे पास एक दूसरा आदमी है। तुम्हारी किस्मत मेरी किस्मत से कुछ अलग नहीं है इसलिये तुम इसे मत मारो।

हम दोनों को इस बात पर एक राय हो जाना चाहिये कि इस बुरे काम का हम सबसे अच्छा फायदा उठायें क्योंकि राजा रसालू का जो बहुत ही बहादुर और ताकतवर है अपने महल में उसका भी यही हाल है। फिर भी वह उसे धैर्यपूर्वक झेल रहा है तो फिर हम कौन होते हैं शिकायत करने वाले।"

राजा रसालू को किसी खराब बात होने की पहले से ही जानकारी हो गयी थी जिसने धोबी की सारी बातें सुन ली थीं सो वह सामने आया और बोला — "मैं राजा रसालू हूँ इस सारे राज्य का राजा। तुम मुझसे कितनी भी जमीन माँगो मैं तुम्हें दूँगा। और अगर तुम्हें पैसा चाहिये तो मैं तुम्हें वह भी दूँगा तुम वह भी ले लो पर तुम

मुझे यह बता दो कि यह नीच बात जो मेरे घर में हो रही है यह तुम्हें कैसे पता।"

धोबी बोला — "क्या आपको नहीं पता कि स्त्रियाँ स्वभाव से ही जादूगरनी और भविष्य की बात जानने वाली होती हैं। या तो वे जान लेती हैं या फिर वे पता कर लेती हैं कि खेरी मूर्ति में कई दिनों से क्या चल रहा है।"

तब राजा रसालू उन दोनों को अपने किले में ले गया। उसने उन्हें बहुत सारे पैसे दिये और धोबी से कहा — "तुम एक सफ़ेद दाढ़ी वाले आदमी हो बूढ़े हो और आदरणीय हो। तुम्हारी उम्र ऐसी है कि तुम्हें आदर मिलना चाहिये। इसलिये तुम मेरे पास अक्सर आ जाया करो। हम लोग आपस में बात करेंगे।" कह कर उसने उन्हें वापस भेज दिया।

इसके बाद वह लापरवाह हो गया। अब वह शिकार पर नहीं जाता था। फ़ौलादी को भी उसने अकेला छोड़ दिया। अपनी मरी हुई पत्नी के बारे में और उसकी बेवफाई के बारे में सोच सोच कर वह अब थक गया था टूट गया था।

कभी कभी उसके दोस्त दरबार में उसको सलाह देने के लिये और कुछ योजनाएं बनाने के लिये उसके पास आ जाते थे। कई बार वे उसे पुराने राजाओं की कहानियाँ सुनाते। धोबी भी अक्सर राजा रसालू के पास आ जाता और बाहर की बातें करता जो राजा रसालू का तोता नहीं ला पाता।

इस सबमें उसके राज्य की देखभाल नहीं हो पा रही थी। उसने दूसरे देशों को जीतना छोड़ दिया था। उसके तोता मैना और मोर जो उसके महल की पहरेदारी करते थे उनमें से बहुत सारे महल छोड़ कर चले गये थे। वह अब महल में अकेला सा ही रह गया था।

राजा होदी के शहर में कुछ अक्लमन्द स्त्रियाँ थीं जिन्हें खेरी मूर्ति के भेद का पता चल गया था। एक दिन राजा होदी के भाई घोड़ों पर सवार हो कर शहर के कुँए के पास से गुजर रहे थे। कुछ स्त्रियाँ अपने अपने घरों के लिये वहाँ पानी भर रही थीं।

वहाँ उन्होंने एक स्त्री को यह कहते सुना — "आदमी लोग अपनी प्रिय बुरी आदतों को अपनी ज़िन्दगी से भी ज़्यादा चाहते हैं।"

यह सुन कर उनमें से एक भाई ने उससे पूछ लिया — "इस बात से तुम्हारा क्या मतलब है।"

उस स्त्री ने जवाब दिया — "आदमी लोग स्त्रियों का प्यार पाने के लिये अपनी जान तक दे देते हैं।"

"पर तुम्हारा इस बात को कहने का मतलब क्या है।"

स्त्री बोली — "अगर राजा होदी के भाइयों के पास ज़रा सी भी अपनी अक्ल हो तो उन्हें यह बात पूछने की जरूरत ही नहीं है।"

यह सुन कर राजा होदी के भाई राजा होदी के महल की तरफ चले गये। वहाँ पहुँच कर महल के आँगन से ही वे चिल्लाये "राजा होदी कहाँ है।"

एक नौकर ने जवाब दिया — “जिस दिन से वह नीले हिरन के पीछे गये हैं उस दिन से हमने उन्हें फिर नहीं देखा। वह कई दिनों से राजा रसालू के महल जाते रहे हैं। कुछ दिन पहले वह उधर गये थे पर फिर लौट कर नहीं आये। हमें नहीं मालूम कि उनका क्या हुआ।”

भाइयों ने जब यह सुना तो उन्होंने अपने देश के कई हिस्सों से कई लोग पकड़े और उनसे कहा — “राजा होदी को राजा रसालू के राज्य में या तो बन्दी बना लिया गया है या फिर मार दिया है। अगर वह बन्दी हैं तो हमें उन्हें बचा कर लाना चाहिये और अगर वह वहाँ मारे गये हैं तो हमें उनकी मौत का बदला लेना चाहिये।

जब हम नदी पार करेंगे तो क्या आप लोग हमारे साथ रहेंगे या आप लोग अपने अपने घरों को वापस चले जायेंगे।”

उन सबने एक आवाज में जवाब दिया — “अगर हम आपके साथ खड़े नहीं हों तो हमारे सिर काट लिये जायें।”

आजकल धोबी राजा रसालू के पास लगभग रोज ही आया जाया करता था। उसकी छोटी छोटी कहानियाँ राजा रसालू को बहुत अच्छी लगती थीं।

जब ये सब बातें चल रही थीं तब धोबी राजा रसालू के पास पहुँचा। राजा ने उसका रोज की तरह से स्वागत किया और उससे पूछा — “आज की क्या खबर है।”

शहर की स्त्रियों में आजकल एक बहुत बड़ी अजीब सी अफवाह फैली हुई है। हो सकता है कि यह सच न भी हो पर अफवाह तो अफवाह ही होती है।"

राजा रसालू बोला — "बताओ वह अफवाह क्या है।"

धोबी बोला — मैंने उन्हें आपस में बात करते सुना है कि जैसे राजा रसालू ने राजा होदी का सिर काट दिया उसी तरह से उसका सिर भी तीन दिन के अन्दर अन्दर काट दिया जायेगा।"

जब राजा रसालू ने यह सुना तो वह तो बहुत दुखी और उदास हो गया। वह उठ खड़ा हुआ और कमरे में चक्कर काटने लगा। कुछ पल बाद वह बोला — "क्या तुमने सचमुच यह सुना है।"

धोबी बोलाा — "जी हुजूर। स्त्रियॉ ऐसी ही कुछ बातें कर रही थीं पर मुझे ठीक से कुछ नहीं मालूम।"

राजा रसालू बोला — "एक दिन था जब मैं अकेला ही अपने दुश्मन की ऐसी धमकियों पर हॅस सकता था और मैं आज भी यह काम कर सकता हॅू बस मुझे अपने सिपाहियों को इकट्ठा करने की जरूरत है।"

कह कर उसने अपने एक आदमी को बुलाया और उसे अपने लोगों को इकट्ठा करने का हुक्म दिया। पर जब लोगों को इकट्ठा किया गया तब किले की दीवार की रक्षा करने के लिये एक दर्जन आदमी भी नहीं थे।

राजा रसालू ने बूढ़े धोबी से कहा — "हार और जीत तो अब केवल अल्लाह के ही हाथों में है। पर इन मुट्ठी भर लोगों के साथ कोई कर भी क्या सकता है।"

फिर भी उस योद्धा ने जल्दी जल्दी अपने किले की घेराबन्दी के लिये तैयारी करनी शुरू कर दी। उसका पुराना उत्साह फिर से लौट आया था।

उसने अपने एक आदमी को शहर भर में यह कहने के लिये कहा कि वे सब लड़ाई के लिये तैयार रहें और खेरी मूर्ति के किले की रक्षा के लिये किले में रसद जमा कर के रखें। उसने खुद भी अपने टूटे हुए अस्त्र शस्त्रों को मरम्मत किया और अपने कपड़े आदि सँभाले।

वह अभी अपना काम खत्म कर के ही चुका था कि उसके दुश्मन उसे आते दिखायी दिये। दुश्मनों की सेना राजा होदी के भाई ले कर आ रहे थे। उनके पास सब तरह के हथियार थे। उन्होंने तैर कर नदी पार की और पहाड़ी को मधुमक्खियों की तरह घेर लिया। वे सब खेरी मूर्ति के किले की दीवार के नीचे बैठ गये।

आपस में एक दूसरे को चुनौती देने के बाद घेराबन्दी शुरू हुई। लेकिन राजा रसालू को और बहुत सारे आदमी पाने के बाद भी बहुत जल्दी ही यह लगने लगा कि यह लड़ाई बेकार है और अब उसका अन्त पास है।

उसने सोचा कि उसे चूहे की तरह जाल में पकड़े नहीं जाना चाहिये बल्कि अपनी ज़िन्दगी मँहगी से मँहगी बेचनी चाहिये सो उसने अपने आदमियों को दुश्मन पर अचानक ही बहुत ज़ोर से आक्रमण करने का हुक्म दिया।

उस रात उसने रानी कोकिला के कमरे में लकड़ी इकट्ठा कर के अपने किले को आग लगा दी। और जब आधी रात के आसमान के अँधेरे में आग खूब ज़ोर से जल उठी तो उसे दुश्मनों ने भी देखा और आश्चर्य से भर गये।

अगली सुबह राजा रसालू अपने आदमियों को ले कर पत्थर की सीढ़ियाँ उतर गया और जब वह रानी के बागीचे से गुजरा तो उसने आम के पेड़ों की तरफ देखा और बोला —

"ओ आम के पेड़ या तो तुम फलों से लदे रहते हो या फिर नंगे होते हो पर अब तुम्हारे ऊपर फल कभी नहीं आयेंगे। कोकिला मर गयी है उसकी जगह खाली हो गयी है। उसकी जगह अब केवल लाल आग जल रही है।"

कह कर वह जल्दी से अपने आदमियों को ले कर दुश्मन की तरफ चला गया और जा कर उनसे हाथ मिलाया। फिर उन दोनों में सात दिन और सात रातों तक खूब घमासान लड़ाई हुई।

राजा रसालू एक शेर की तरह लड़ा। उसने बहुत सारे दुश्मनों को मार गिराया जो फिर कभी उठे ही नहीं। पर आखीर में राजा रसालू के सारे आदमी मारे गये। इस लम्बी लड़ाई के बाद राजा

रसालू खुद भी बहुत थक गया था। उसका सारा शरीर घावों से भरा हुआ था।

कि तभी वह एक नौ गज लम्बे तीर से मारा गया। वह तीर उसकी गर्दन में लग गया था। उसके मरने के बाद उसके दुश्मनों ने उसका गला काट लिया और उसे राजा होदी के महल जीत के इनाम की तरह ले गये।

इस तरह उत्तरी पंजाब के बहुत सारे कहानी कहने वालों के अनुसार उनका हीरो राजा रसालू मरा।[81]

---

[81] Some say that Raja Rasalu never died at all but he descended into River Indus and like Arthur and other mythical characters he is to come again. [This concluding chapter in the series of "The Rasalu Legend" is also partly made up from fragmaents collected from different villages.]

परिशिष्ट

विक्रमाजीत

विक्रमाजीत, बिक्रमाजीत और विक्रमदित्य तीनों एक ही आदमी के नाम हैं। ये एक बहुत बड़े योद्धा, संत और न्यायशील राजा थे। इनकी राजधानी उज्जयिनी या उज्जैन थी पर इनका राज्य पश्चिम में काबुल तक फैला हुआ था।[82] ये हर्षवर्धन की बराबरी के राजा माने जाते हैं जिन्होंने **544** एडी में म्लेच्छों को हराया था।

विक्रम संवत के विक्रमदित्य जिनका संवत **56** बीसी से शुरू होता है वह तो केवल नाम के हैं। उनके वंशजों में पुष्पभाति और प्रभाकर मालवा के राजा हर्षवर्धन के बड़े भाई राज्यवर्धन द्वारा मारे गये थे। राज्यवर्धन को राजा शशांक ने मारा था। राजा शशांक बौद्धों का बहुत बड़ा दुश्मन था।

शालिवाहन या सालिवाहन

चार्ल्स स्विनरटन का कहना है कि यह राजा शायद पंजाब में "सुलवान" या "सिरीवान" या "सरीबान" के नाम से अधिक मशहूर है। कहा जाता है कि इसने राजा विक्रमदित्य की सल्तनत को उखाड़ फेंका था। पर अगर ऐसा है तो **77** एडी का शालिवाहन भी केवल नाम का ही था क्योंकि यह घटना तो विक्रमदित्य संवत के **56** और **77** साल पहले यानी **135** साल पहले घटी थी – यानी **677** एडी में।

यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि सिन्धु घाटी और काबुल घाटी के ऊपर यूनानियों का राज्य **120** बीसी में ही खत्म हो गया था।

सिरीकप राजा

गंडगढ़ की पहाड़ियों में कूँड नाम का एक गाँव है जो सिरीकोट से करीब पाँच मील की दूरी पर है जहाँ गुलाम नाम का एक बहुत ही अक्लमन्द आदमी रहता था उसने चार्ल्स

---

[82] Wilson's "Ariana Antiqua".

स्विनरटन को बताया कि राजा सिरीकप राजा धरतिली के भाई एक मशहूर राजा भाखिरी का बेटा था। वह संगत–दी–गढ़ी या संगत के किले में रहा करता था। यह किला गंडगढ़ के किनारे पर उसकी चोटी पर सिरीकोट से आधा मील की दूरी पर था। उसने यह सिरीकोट किला जैसा कि इसका नाम है सिरों का बनवाया था। गुलाम ने बताया कि यह भी हो सकता है कि इसका नाम "सिरों का किला" न हो कर "किलों का सरदार" हो।

सिरीकप राजा के निशान देश भर में मिलते हैं। "सिरीकप का एक किला" हज़ारा के शियानकरी से जो ढाई मील दूर है में भी पाया जाता है। वहॉ कुछ सिक्के भी मिले हैं। पिंडी के पास तक्षशिला में बौद्धों का एक स्तूप मिलता है जो रानी कोकिला के किले के नाम से मशहूर है। लाहौर के पश्चिम में छह पहाड़ हैं जो राजा सिरीकप के दो भाई सिरीसुक और अम्ब और उनकी चार बहिनों – कापी, काल्पी, मूँडा और मन्देशी के नाम से मशहूर हैं।

रसालू की भूरी घोड़ी

राजा रसालू की भूरी घोड़ी के कई नाम हैं। "फ़ौलादी" या अगर उसे पंजाबी भाषा में कहो तो "फुलादी" जिसका मतलब होता है "स्टील का बना हुआ"। "बौराकी" इसका एक और नाम है जिसका मतलब होता है "भूरी घोड़ी"।

शरफ़ ने चार्ल्स स्विनरटन को बताया कि उसका सही नाम "भौंरा ईराकी" था। भौंरा एक बड़ी काले रंग की मक्खी होती है जिसे कमल के फूल से बहुत प्यार होता है। यह ईराकी घोड़े की एक खास जाति है जो खास कामों के लिये इस्तेमाल की जाती है जो मध्य एशिया में पायी जाती है। ईराक दजला और फरात नदियों के बीच के इलाके को कहते हैं।

रानी कोकिला

गाज़ी और जूमा दोनों के अनुसार तो रानी कोकिला जब किले से नीचे गिरी थी वह तभी मर गयी थी पर शरफ़ के अनुसार इसका एक और रूप ही सामने आता है।

उसका कहना था कि वह गिरते ही मरी नहीं थी वह केवल घायल हुई थी और उसकी हड्डियाँ टूट गयी थीं। वह ज़िन्दा थी कि उसके पति राजा रसालू ने उसकी और उसके प्रेमी की लाशें दो थैलों में डालीं और उन्हें राजा होदी के घोड़े पर लटका कर कहा था — "जाओ। राजा भट्टी से कहना कि उसका बेटा शादी कर के घर आ रहा है।" और इस तरह से वह घोड़ा अटक के लिये रवाना हुआ।

घोड़े ने घर के लिये सीधा रास्ता लिया। सड़क पर उस पर लदी हुई रानी कोकिला को सुन्दर और ज़िन्दा देख कर एक मेहतर या भंगी ने रोक लिया। वह रानी कोकिला को घर ले गया और उसके घावों का इलाज किया और बाद में उससे शादी कर ली।

उस भंगी से उसके चार बेटे हुए – टेहू, केहू, करेहू और सेहू। और फिर इन चार बेटों से चार जातियाँ निकलीं जो उत्तरी पंजाब में अभी भी रह रही हैं यानी शेरपुर ज़िले के तिवाना, पिंडी ज़िले के गेबा, हज़ारा के खराल और झंग के स्याल। सबकी पदवी "सरदार" है क्योंकि वे सब रानी कोकिला की शाही सन्तान हैं।

हज़ारा के लोग जब खरालों के बारे में बात करते हैं तो वे कहते हैं कि "वे वस्तव में शाही लोग हैं क्योंकि उनके अन्दर शाही गुण दिखायी देते हैं। वे हठी हैं वे घमंडी हैं। पर तभी उनके अन्दर कुछ और विशेषताऐं भी हैं जैसे कि वे कायर हैं नीच हैं लालची हैं। इस तरह से उनमें दो विपरीत तरह के गुण पाये जाते हैं जिससे पता चलता है कि वे एक तरफ से ऊँची जाति के हैं और दूसरी तरफ से नीची जाति के।

गंडगढ़ की गरज

गंडगढ़ पहाड़ के नीचे जहाँ राजा रसालू ने थिर्या को कैद किया था वहाँ भूकम्प बहुत आते हैं। हालाँकि जब जमीन बिल्कुल भी हिलती दिखायी नहीं देती यानी ऊपर से भूकम्प का कोई निशान नहीं दिखायी देता तभी भी जमीन के अन्दर से आवाज सुनायी पड़ती है। लोगों का कहना है कि निश्चित रूप से यह आवाज उस राक्षस की ही है क्योंकि वह आवाज भूकम्प की आवाज से बिल्कुल अलग है। और क्योंकि अब यह आवाज बहुत दिनों से नहीं सुनी गयी है तो लगता है कि वह राक्षस अब वहाँ नहीं है।

राजा रसालू के बाण

चार्ल्स स्विनरटन ने खुद अपनी ऑखों से राजा रसालू के इन बाणों को देखा है। ये बाण बहुत बड़े बड़े ग्रेनाइट पत्थर के टुकड़े हैं जो जमीन के ऊपर आठ दस फीट ऊँचे तक चले गये हैं। ये शायद सिन्धु नदी में बहते चले आये हैं क्योंकि ये आजकल जहाँ हैं वहाँ से **50–60** मील के घेरे में कोई ग्रेनाइट पत्थर नहीं मिलता।

एक कथा के अनुसार एक बार मुहम्मद साहब काशमीर को मुसलमानों का घर बनाना चाहते थे सो उन्होंने किसी जिन्न को उन पत्थरों को उठाने के लिये कहा ताकि वह वहाँ बड़े बड़े घर बनवा सकें पर बाद में उन्होंने अपना विचार बदल दिया सो जिन्न ने उन पत्थरों को वहीं डाल दिया और वे जमीन पर वैसे ही गिर गये जैसे कि आज वे खड़े हैं।

एक दूसरी दंत कथा के अनुसार वे राजा सोलोमन के समय के कहे जाते हैं।[83] यह कहानी बहुत ही मज़ेदार है इसलिये इसे यहाँ दिया जाता है। लोगों का कहना है कि पुराने समय में बिल्किस नाम की एक राजकुमारी थी जो शीबा की रानी थी और सूरज की पुजारी थी। पर जब उसने सच्चे भगवान[84] की पूजा करनी शुरू कर दी तब भगवान ने सोलोमन से कहा — "यह स्त्री अब मेरी पूजा करने लगी है तो अब तुम एक बहुत सुन्दर मन्दिर बनवाओ ताकि उसके लोग भी मेरी पूजा कर सकें।"

राक्षस लोग जिनके पंख भी थे और सींग भी और जो सोलोमन के नीचे काम करते थे उन सबको तुरन्त ही बुलवाया गया और उनसे मन्दिर बनाने के लिये चट्टानों से काट कर बड़े बड़े पत्थर लाने के लिये कहा गया। जब राक्षसों ने यह करना शुरू किया तो सोलोमन मर गया। उसके वज़ीर ने कहा — "यह मन्दिर तो अभी खत्म नहीं हुआ है और इतने बड़े बड़े पत्थर तो केवल राक्षस लोग ही ला सकते हैं। हमें इस काम को जारी रखना है।"

तो उसने एक बहुत बड़ा कमरा लिया और उसे चारों तरफ से चमका दिया। फिर उसने सोलोम की लाश को लकड़ी के लट्ठों के सहारे उसमें खड़ा कर दिया जिससे

---

[83] Read the story of the Queen of Sheba in "Sheba Ki Rani Makeda". Translated in Hindi by Sushma Gupta. Delhi: Prabhat Prakashan. 2016.

[84] Means "True God" – Solomon's God

कि राक्षसों को लगे कि सोलोमन अभी ज़िन्दा था और इस तरह उन्हें पता नहीं चलने दिया कि राजा सोलोमन मर गया है और कमरे में केवल उसकी लाश है वह खुद नहीं। वहाँ राजा सोलोमन एक साल तक खड़ा रहा पर समय के साथ साथ उन लकड़ी के लट्ठों को दीमक खाने लगी जिससे लकड़ी के वे लट्ठे टूट गये और वह मुँह के बल जमीन पर नीचे गिर पड़ा।

राक्षसों ने यह देख लिया तो वे बोले "सोलोमन तो मर गया।" उन्होंने जा कर दूसरे राक्षसों से यह बात कही। उस समय वे राक्षस आसमान के रास्ते से पत्थर ले कर आ रहे थे। यह खबर सुनते ही उन्होंने वे पत्थर वहीं के वहीं छोड़ दिये और वे जमीन पर नीचे आ गिरे जहाँ वे अभी भी इस कहानी को साबित करने के लिये पड़े हुए हैं।

काबुल और सिन्धु नदी जहाँ मिलते हैं उसके पास एक गाँव है जिसका नाम जहाँगीर है। वहाँ ऐसे बड़े बड़े करीब सोलह पत्थर देखे जा सकते हैं। उनका एक बड़ी अजीब घटना से सम्बन्ध बताया जाता है जैसे कि इंगलैंड के स्टोनहैन्ज[85] के बारे में बताया जाता है। ये पत्थर निश्चित रूप से इतिहास से पहले के हैं।

गुरू गोरखनाथ जी

गुरू गोरखनाथ जी तिलहर के एक बहुत बड़े संत थे। इनका पंजाब में बहुत बड़ा सम्प्रदाय है जो **1400** एडी के करीब स्थापित किया गया था। ये शिव जी के पुजारी थे। सो सियालकोट के पास पुरानी दीवारों से घिरे एक छोटे से मन्दिर में इनके सबसे ज़्यादा मशहूर शिष्य पूरन भगत केवल एक सादा सा शिव लिंग दिखायी देता है। इस मन्दिर का एक अजीब सा सच है कि कुँआरे पूरन भगत के इस मन्दिर में हजारों बाँझ स्त्रियाँ बच्चों की आशा में आती हैं।

इस बात से याद आती है एक घटना जो उत्तरी सिन्धु के गाँव वालों में बहुत लोकप्रिय है कि अगर कोई गर्भवती स्त्री उस आदमी के पाजामे का नारा पहन ले जो अपनी पत्नी के लिये वफादार हो तो उसका बच्चा आसानी से हो जाता है।

---

[85] Stonehenge of England is mysteriously arranged group of giant stones. Nobody has been able to solve its mystery as from where they came and why

अकालदेव

अकालदेव राक्षसों का एक आँख वाला राजा था। जूमा का कहना था कि उसका असली नाम बैकाल भट्ट था। जबकि शरफ का कहना था कि उसका असली नाम बगर भट्ट था। पर इस बात पर सब लोग एक राय हैं कि उसकी एक ही आँख थी।

गंडगढ़

गंडगढ़ एक बहुत बड़ा पर्त वाला पहाड़ सा है जिसके एक तरफ सिन्धु नदी और कच्छ के रन है और दूसरी तरफ हरिपुर है। उसकी चोटी पर जो **5000** फीट ऊँची है एक गड्ढा सा है जो बहुत अच्छा उपजाऊ है और वहाँ पानी की भी बहुतायत है। पानी के लिये वहाँ बहुत सारे पानी के झरने बहते हैं। यहीं सिरीकोट गाँव है पर गंडगढ़ में और भी कई गाँव शामिल हैं। करीब करीब सारे लोग यहाँ घुसपैठिये अफगानों की सन्तानें हैं जो सिन्धु के उस पार से आये थे। ये सब सुन्दर कार्यशील लोग हैं।

इस पहाड़ की सबसे ऊँची चोटी का नाम पीर ठान है। वहाँ कई गुफाऐं हैं। गंडगढ़ी गुफा भी वहीं है जो राजा रसालू की गुफा कही जाती है। गंडगढ़ का नाम गंडगढ़ कैसे पड़ा यह नहीं मालूम। गुरुमुखी भाषा में "गंड" गन्दी बदबूदार चीज़ को कहते है और गढ़ मायने जहाँ बहुत सारे लोग रहते हों तो गंडगढ़ को राक्षसों के रहने की जगह समझा जा सकता है।

चौपड़

चौपड़ भारत का एक बहुत ही पुराना खेल है। शतरंज की तरह यह खेल भी चौखानों में खेला जाता है। इसमें सोलह गोटियाँ होती हैं जिसमें चार चार गोटियाँ चार रंगों में होती हैं और सात कौड़ियाँ होती हैं जिनसे इस खेल को खेलने के लिये पाँसों का काम लिया जाता है। इसके खेलने का बोर्ड या तो कढ़ाई किया गया होता है या फिर छपा हुआ होता है। इसकी शक्ल एक क्रास जैसी होती है।

कौड़ियाँ एक तरह के समुद्री जानवर का घर होता है जो अपने घर में से निकल कर अपना घर छोड़ जाता है। बराबर में दी गयी तस्वीर में छह कौड़ियाँ दिखायी गयी है जिनमें से तीन खुली हुई हैं और तीन बन्द। इन्हीं को पाँसे की तरह फेंक कर चौपड़ खेला जाता है। अगर कोई खिलाड़ी अन्त तक किसी दूसरे की एक भी गोटी नहीं मार पाता तो वह हार जाता है।

इस खेल को ज़्यादा से ज़्यादा चार और काम से कम दो खिलाड़ी खेलते हैं। खेल शुरू करने से पहले सब खिलाड़ी कौड़िया फेंकते हैं।हर बार सारी सातों कौड़ियाँ फेंकी जाती है और उन्हें फिर इस तरह गिना जाता है —

1 सारी **7** बन्द — **7** पौइन्ट्स

2 केवल **6** बन्द — **10** पौइन्ट्स

3 केवल **5** बन्द — **2** पौइन्ट्स

4 केवल **4** बन्द — **3** पौइन्ट्स

5 केवल **3** बन्द — **4** पौइन्ट्स

6 केवल **2** बन्द — **25** पौइन्ट्स

7 केवल **1** बन्द — **30** पौइन्ट्स

8 सारी **7** खुली — **14** पौइन्ट्स

जिसके भी सबसे ज़्यादा पौइन्ट्स होते हैं वही खिलाड़ी खेल शुरू करता है। जब भी उसके ज़्यादा पौइन्ट्स होते हें तभी वह अपनी एक गोटी निकाल सकता है। **14, 25** और **30** पौइन्ट्स ज़्यादा पौइन्ट्स कहलाते हैं और उतने ही पौइन्ट्स आने पर नयी गोटी निकाली जा सकती है। पहली बार में गोटी निकालने के लिये अगर किसी के इससे कम आते हैं तो उसे अपना मौका खोना पड़ता है जब तक उसके **14, 25** या **30** पौइन्ट्स नहीं आ जाते।

यह खेल बहुत पुराना है कहते हैं कि सबसे पहले शिव पार्वती ने यह खेल खेला था। धरती पर भारतीय इतिहास में दो लोगों के चौपड़ के खेल मशहूर हैं – पहला राजा नल और उनके भाई पुष्कर के बीच खेला हुआ खेल जिसमें राजा नल अपना सब

कुछ हार कर बनवास चले गये थे। और दूसरा महाभारत में वर्णित राजा युधिष्ठिर और उनके तयेरे भाई दुर्योधन के बीच खेला हुआ खेल जिसमें राजा युधिष्ठिर अपना सब कुछ हार कर **13** साल के लिये वन चले गये थे।

यहॉ जो वर्णन राजा रसालू और राजा सिरीकप के खेल का दिया हुआ है वह राजा रसालू के बारे में गुरुमुखी में लिखी हुई एक पुस्तक से लिया गया है जो लाहौर में प्रकाशित की गयी थी।

राजा होदी

गंडगढ़ पहाड़ पर रहने वाले एक गॉव वाले गुलाम के कहे अनुसार राजा होदी की राजधानी ऊॅड[86] थी जो सिन्धु नदी के पश्चिमी किनारे पर बसी हुई थी। वही जगह थी जहॉ यूनान के महान अलैक्ज़ैन्डर ने नदी पार की थी। पर राजा होदी की एक दूसरी जगह अटक भी थी जिसका नाम ऊदी नगर था। अटक के आसपास की जगहों में आज भी ऊदी नाम कई जगहों पर मिलता है।

पर ऐसा लगता है कि राजा होदी एक मामूली से सरदार से कहीं ज़्यादा बड़ा था। लेखक को पता चला कि यह होदी या ऊदी राजा अफ्रासा के तीन बेटों में से एक था। यह अफ्रासा वही राजा लगता है जिसका नाम फारस की कहानी में "अफासिया" आता है। इसके दोनो भाइयों के नाम थे अयानपोश और दरन्त।[87]

पहली बात तो यह है कि ये तीनों किसी न किसी तरह से "हद" से जुड़े हुए थे जो जलालाबाद के पॉच मील दक्षिण में है और जो राजा होदी की गर्मियों की राजधानी मानी जाती है। वहॉ बहुत बड़े बड़े कमरे पाये गये हैं। दूसरी बात "अयानपोश" स्तूप से जुड़ा हुआ है क्योंकि जब अयानपोश स्तूप को खोला गया तो वहॉ पर एक कमरे में बहुत सारे सोने के गहने और शाही कपड़े मिले।

वहॉ दो रोमन सोने के सिक्के भी मिले जिनमें से एक "नीरो" था और दूसरा "डोमिटियन"। तीसरी बात यह है कि वे "दरन्त" से सम्बन्धित हैं जो जलालाबाद से पॉच मील से भी ज़्यादा दूर पश्चिम की तरफ है। वहॉ बहुत सारे बौद्ध स्तूप हैं।

---

[86] In English its spelling is given as "Ond"

[87] Afrassiah had three sons – Udi or Hodi, Aianposh and Darant.

लोगों का कहना है कि अफ़ासा का राज्य पूर्व में पेशावर के पास जमरूद तक था जिसे राक्षसराज के वज़ीर "फारस के नौशेरवॉ"[88] के नाम पर "बख्त भूमि" कहा जाता था। जिसके बारे में यह भी कहा जाता है कि उसने जमरूद ने सबसे पहले वहॉ का किला बनवाया। "हाद" में रहने वाले लोगों का कहना है कि तीनों भाई "अमीहमज़ा"[89] द्वारा मारे गये थे। राजा हूदी ने कई स्तूप भी बनवाये थे।

पेशावर घाटी में राजा हूदी और उसके भाइयों के बारे में यह मशहूर है कि जब पठान लोग पेशावर घाटी में आ कर बसे एक हिन्दू रानी ने रानीघाट पर एक किला बनवाया। उसके दो भाई भी उसी घाटी में रहते थे – एक चारसद्दा में और दूसरा पेशावर में। जबकि राजा ऊदी एक किले में रहते थे जहॉ से खैराबाद दिखायी देता था जो अटक के सामने ही स्थित था।

वहॉ इस तरह का इन्तजाम किया गया था कि अगर कभी कहीं से कोई हमला हुआ तो उसको बताने के लिये आग जला दी जायेगी। जब उसका धुॅआ आसमान में उड़ेगा तो बाकी सब लोग उसकी सहायता के लिये आ जायेंगे। एक बार राजा हष्टनगर ने इस बात को जॉचने के लिये आग जला दी तो धुॅआ देख कर सभी उसकी सहायता के लिये आ पहुॅचे। पर वहॉ जा कर उनको पता चला कि वह खतरे की सूचना तो उसने झूठी दी थी।

कुछ समय बाद पठानों ने रानी के ऊपर हमला किया तो रानी ने इस बात का संकेत देने के लिये आग जलायी पर कोई उसकी सहायता के लिये नहीं आया और वह हार गयी। कहा जाता है कि उसने अपने महल की छत पर खड़ी हो कर सहायता की आशा की पर वह इतनी सुन्दर चमकीली और कोमल थी कि वह सूरज की किरनों में पिघल गयी। इसी लिये उस चट्टान का नाम रानीघाट है और उस पर खून का एक धब्बा यह बताता है कि कभी वह रानी वहॉ पिघली थी।

राजा रसालू की दंत कथाओं के अनुसार राजा होदी रावलपिंडी जिले के खेरी मूर्ति में मारा गया था पर गंडगढ़ के लोगों का कहना है कि वह सिन्धु नदी के पश्चिमी तट पर मोहट में मरा था जो टौरबेला से पॉच मील नीचे की तरफ है। मोहट गढ़ी के

[88] Circa 531-579 AD

[89] Means Imam Al Hamza, Muhammad's famous Son-in-Law.

सामने पहाड़ की चोटी पर स्थित है। गढ़ी के अवशेष मीलों तक फैले हुए हैं। उसी के पास "इमरान के किला" भी है। कहते हैं कि उसके पास ही एक बहुत बड़ा खजाना गड़ा हुआ है जिसकी रक्षा एक काला साँप करता है जो तीन गज लम्बा है।

ऐसा ही कुछ अटक के किले के बारे में भी कहा जाता है। यह किला बादशाह अकबर ने बनवाया था। एक बहुत बड़ा साँप इसके खजाने की भी रक्षा करता है। इस खजाने के ऊपर एक पत्थर रखा है जिस पर सोलोमन की मुहर लगी हुई है। जिसको भी यह खजाना मिल जायेगा या जो भी इसके पास बहती हुई सिन्धु नदी के ऊपर पुल बनायेगा वह सारी दुनियाँ पर राज करेगा। अंग्रेजों ने यहाँ पुल तो बना दिया था पर इसका खजाना अभी भी निकालना बाकी है।

राजा रसालू – 3

इस भाग में राजा रसालू की वे कहानियाँ दी गयी हैं जो पुस्तकों में या इन्टरनैट पर इक्का दुक्का इधर उधर दी हुई हैं।

3–1 राजा रसालू[90]

एक बार की बात है कि एक बहुत बड़ा राजा था जिसका नाम था राजा सालबाहन[91]। उसके दो पत्नियाँ थीं। उसकी बड़ी वाली पत्नी नाम था अछरा और उसके एक बहुत सुन्दर बेटा था जिसका नाम था पूरन।[92]

उसकी छोटी रानी का नाम था लोना। हालाँकि वह बहुत रोयी कई मन्दिरों में गयी बहुत प्रार्थनाऐं कीं पर उसको खुशी देने वाला कोई बच्चा नहीं हुआ।

इसलिये एक बुरी और धोखेबाज स्त्री होने के नाते उसके दिल में जलन और गुस्सा घर कर गया। उसने राजा सालबाहन के दिमाग को उसके बच्चे छोटे पूरन के खिलाफ भड़काने वाले विचार भर दिये।

और जब छोटा पूरन बड़ा होने वाला था तो उसका पिता तो उससे बहुत बुरी तरीके से जलने लगा। एक दिन उसे इस गुस्से का दौरा सा पड़ा तो उसने उसके हाथ पैर काट डालने का हुक्म दे दिया।

---

[90] Raja Rasalu. (Tale No 19). From the Book "Indian Fairy Tales", by Joseph Jacobs, in 1912. Joseph Jacobs has taken this tale from the book "Tales of the Punjab" written by Flora Annie Steel in 1894. She has written this tale in her book in eight tales. Hindi translation of both the books by Sushma Gupta is given at https://archive.org/details/@sushma75?sort=titleSorter

[91] King Saalbaahan

[92] Elder Queen Achhra had a son named Pooran

राजा सालबाहन अपनी इस बेरहमी से भी सन्तुष्ट नहीं था तो उसने उसे एक कुँए में फेंक देने का हुक्म दे दिया।[93] खैर फिर भी पूरन मरा नहीं जैसा कि उसके पिता ने उसके लिये चाहा था या आशा की थी क्योंकि भगवान ने उस भोलेभाले बच्चे की रक्षा की।

वह कुँए की तली में आश्चर्यजनक रूप से ज़िन्दा रहा जब तक गुरू गोरखनाथ[94] जी उधर की तरफ आये। उन्होंने देखा कि पूरन ज़िन्दा है तो उन्होंने न केवल उस भयानक जेल से उसको निकाला बल्कि अपने जादू के ज़ोर से उसके हाथ पैर भी फिर से वापस ला दिये।

इस वरदान के लिये कृतज्ञ हो कर पूरन फ़कीर बन गया और अपने कानों में पवित्र कुंडल पहन कर गुरू गोरखनाथ जी का शिष्य बन कर घूमने लगा। तब से उसका नाम पूरन भगत पड़ गया।

पर जैसे जैसे समय गुजरता गया तो उसका मन अपनी माँ को देखने के लिये करने लगा सो गुरू गोरखनाथ ने उसको वहाँ जाने की इजाज़त दे दी।

वह अपने घर की तरफ चल पड़ा और एक बहुत बड़ी दीवार से घिरे हुए बागीचे में आ कर ठहर गया जहाँ वह पहले कभी अपने बचपन में खेला करता था।

---

[93] This well can still be seen on the road between Sialkoat and Kallowaal Road.

[94] Guru Gorakhnath Ji was the Brahmanical opponent of reformers of 15th century and possessed most miraculous powers, especially over snakes. By any computation Puran Bhagat must have lived before him. Puran Bhagat was the brother of Raja Rasalu. Their many stories are popular like Vikramaditya and Bhartrihari, the saint and philosopher in Southern region

वहाँ आ कर उसने देखा कि उस बागीचे की तो कोई ठीक से देखभाल ही नहीं कर रहा है। वह उजाड़ और बंजर सा पड़ा था। उसमें पानी आने जाने वाले रास्ते टूटे हुए थे। उसके पेड़ों की पत्तियाँ सब झड़ चुकी थीं। यह सब देख कर वह बहुत दुखी हो गया।

उसने वहाँ की सूखी जमीन पर अपने पीने का पानी छिड़का और रात भर उसके हरे हो जाने की प्रार्थना की। लो जैसे ही उसने प्रार्थना शुरू की कि पेड़ों में से पत्ते निकलने लगे। घास दिखायी देने लगी फूल खिल गये और फिर वह बागीचा वैसा ही हो गया जैसा पहले कभी था।

इस आश्चर्यजनक घटना की खबर तो बिजली की तरह से सारे शहर में फैल गयी। बहुत सारे लोग ऐसे पवित्र संत को देखने के लिये वहाँ आये जिसने यह आश्चर्यजनक काम किया था।

राजा सालबाहन और उनकी दोनों रानियों ने भी महल में यह खबर सुनी तो वे भी उनको अपनी आँखों से देखने के लिये वहाँ गये।

पर पूरन भगत की माँ रानी अछरा अपने प्यारे बेटे के लिये इतना रोयी थी कि आँसुओं ने उसको अन्धा सा कर दिया था। वह भी वहाँ गयी तो पर उसको देखने के लिये नहीं बल्कि उस आश्चर्यजनक फ़कीर से अपनी आँखों की रोशनी माँगने के लिये।

इसलिये बिना यह जाने कि वह किससे यह वरदान माँग रही थी वह पूरन भगत के पैरों पर गिर पड़ी और उससे अपनी आँखों की रोशनी की वापसी की भीख माँगने लगी।

और लो इससे पहले कि वह अपनी आँखों की रोशनी माँगती उसकी आँखों की रोशनी तो वापस आ चुकी थी और वह देखने लग गयी थी।

धोखेबाज रानी लोना जो इन सारे सालों में एक बेटा माँग रही थी और वह उसको नहीं मिला था, जब उसने इस ताकतवर फ़कीर को देखा तो यह भी उस फ़कीर को पैरों में गिर पड़ी और उसने उससे राजा सालबाहन को खुश करने के लिये एक वारिस माँगा।

तब पूरन भगत बोला उसकी आवाज गम्भीर थी — "राजा सालबाहन के तो पहले से ही एक बेटा है। वह कहाँ है? अगर तुम्हें भगवान से अपनी इच्छा पूरी करानी है तो सच बोलना रानी लोना तुमने उसके साथ क्या किया।"

तब स्त्री की बेटा पाने की जो पुरानी इच्छा थी उसने उसके घमंड को जीत लिया और हालाँकि उसका पति फ़कीर के सामने उसके पास ही खड़ा था उसने सच बोल दिया कि कैसे उसने उसके पिता को धोखा दिया और बेटे को मरवा दिया।

सुन कर पूरन भगत खड़ा हो गया। उसने अपने हाथ उसकी तरफ बढ़ा दिये और मुस्कुरा कर धीमे से बोला — "यह ठीक है

रानी लोना यह ठीक है। देखो मैं राजकुमार पूरन हूँ जिसको तुमने मार दिया था पर भगवान ने उसको ज़िन्दा रखा।

मेरे पास तुम्हारे लिये एक सन्देश है। तुम्हारी गलती माफ की जाती है पर भूली नहीं जा सकती। तुम्हारे एक बेटा जरूर होगा जो बहुत अच्छा और बहादुर होगा। लेकिन वह तुम्हें वैसे ही रुलायेगा जैसे तुमने मेरी माँ को रुलाया है।

लो ये चावल के दाने लो इन्हें खा लेना और तुम्हारे एक बेटा हो जायेगा पर वह बेटा तुम्हारा बेटा नहीं होगा। क्योंकि जैसे मैं अपनी माँ की आँखों से दूर रहा ऐसे ही वह भी तुम्हारी आँखों से दूर रहेगा। अब शान्ति से जाओ तुम्हारी गलती माफ की जाती है पर भुलायी नहीं जा सकती।"

रानी लोना अपने महल वापस आ गयी और जब बच्चे के जन्म का समय आया तो उसने तीन जोगियों से अपने बच्चे की किस्मत के बारे में पूछा जो उसके दरवाजे पर भीख माँगने आये थे।

उनमें से सबसे छोटे जोगी ने कहा — "वह एक लड़का होगा और वह एक बहुत बड़ा आदमी बनेगा। पर **12** साल तक तुम उसका मुँह मत देखना। क्योंकि अगर तुमने या उसके पिता ने **12** साल से पहले उसका चेहरा देखा तो तुम यकीनन मर जाओगी।

तुमको यह करना चाहिये कि जैसे ही बच्चा पैदा हो उसको नीचे तहखाने में भेज देना चाहिये और **12** साल तक उसको सूरज की रोशनी नहीं देखने देनी चाहिये।

जब **12** साल खत्म हो जायें तब तुम उसको बाहर ला सकती हो। फिर उसे नदी में नहलाना और नये कपड़े पहना कर अपने सामने मँगवाना। उसका नाम राजा रसालू होगा और उसकी प्रसिद्धि दूर दूर तक फैलेगी।"

सो जब राजकुमार पैदा हुआ तो उसको उसकी आयाओं और नौकरों आदि के साथ नीचे जमीन में बने तहखाने में भेज दिया गया। जो आराम एक राजकुमार की हैसियत से उसको मिलते वे सब उसको वहीं दे दिये गये।

उसके साथ साथ उसके लिये एक बच्चा घोड़ा भी भेज दिया गया जो उसी दिन पैदा हुआ था। एक तलवार एक भाला और एक ढाल भी उस दिन के लिये भेज दी गयी जब राजा रसालू दुनियाँ में राजा बन कर आयेगा।

सो वह बच्चा वही पलता रहा बड़ा होता रहा अपने तोते से बात करता रहा। उसकी आयाऐं और नौकर उसको वह सब सिखाते रहे जो एक राजकुमार को जानने की जरूरत थी।

सो रसालू दुनियाँ से दूर सूरज की रोशनी से दूर महल के तहखाने में रहा। इस तरह रहते रहते उसको वहाँ **11** साल बीत गये। वह बड़ा हो रहा था लम्बा हो रहा था ताकतवर हो रहा था। लेकिन केवल अपने घोड़े के साथ खेल कर और अपने तोते से बात कर के।

लेकिन जब उसका **12**वॉ साल शुरू हुआ तो उसके दिल में अपने माहौल को बदलने की इच्छा जागी। उसकी इच्छा हुई कि वह ज़िन्दगी की आवाजें सुने जो उसके पास महल की इस जेल में बाहर से आती रहती थीं।

एक दिन उसने सोचा "मुझे बाहर जा कर देखना चाहिये कि ये कहॉ से आती हैं और यह आवाजें कौन करता है। जब उसने अपनी आया से इस बारे में बात की तो उसकी आया ने उससे कहा कि उसको अभी एक साल और रुकना चाहिये। तो वह बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा और बोला — "मैं किसी भी आदमी के लिये अब इससे ज़्यादा यहॉ बन्द नहीं रह सकता।"

सो उसने अपने घोड़े भौंर ईराकी[95] पर जीन कसी। खुद उसने अपना चमकता हुआ जिरहबख्तर पहना और दुनियॉ देखने के लिये बाहर निकल पड़ा। पर उसने अपनी आया की बात मानी जो वह उससे अक्सर कहा करती थी।

सो जब वह नदी के पास आया तो वह अपने घोड़े से उतरा उसमें नहाया धोया नये कपड़े पहने। अपने नये कपड़े पहन कर वह अपने सुन्दर चेहरे और बहादुर दिल के साथ अपने पिता के राज्य में आ पहुॅचा।

---

[95] Bhaunr Iraqi was the name of the horse kept with Rasalu. But it may be "Bhaunri Raakhee" which means "kept underground", because Iraqi means Arabian and it might be an Arabian horse.

वहाँ जा कर वह एक कुँए के पास कुछ सुस्ताने के लिये बैठ गया। वहीं कुछ स्त्रियाँ अपने अपने मिट्टी के घड़ों में पानी भर रही थीं। जब वे उसके पास से जा रही थीं तो उनके भरे हुए घड़े उनके सिरों पर ठीक से रखे हुए थे।

यह देख कर नौजवान राजकुमार ने उन सब घड़ों पर पत्थर मारे और सबको तोड़ दिया। उनके घड़े टूट गये उनका पानी बिखर गया और स्त्रियाँ सारी की सारी भीग गयीं।

रोती चिल्लाती वे महल पहुँचीं और राजा से शिकायत की कि कोई ताकतवर राजकुमार चमकता जिरहबख्तर पहने तोते को अपनी कलाई पर बिठाये और साथ में एक घोड़ा लिये कुँए के पास बैठा है और उसने उनके घड़े फोड़ दिये हैं।

जैसे ही राजा ने यह सुना तो उसे पता चल गया कि वह जरूर ही राजकुमार रसालू होगा जो **12** साल से पहले ही बाहर निकल गया। जोगी की बात को याद करते हुए कि अगर उसने उसको **12** साल से पहले देखा तो वह मर जायेगा उसकी इतनी भी हिम्मत नहीं हुई कि वह अपने लोगों को भेज कर उसे पकड़वा ले क्योंकि उसको पकड़ कर फैसले के लिये तो वे उसी के पास ले कर आयेंगे।

इसलिये उसने उन स्त्रियों को समझा बुझा कर वापस भेज दिया। उनको लोहे और पीतल के घड़े इस्तेमाल करने की सलाह दी। जिस किसी के पास ऐसे घड़े नहीं थे उसको वैसे घड़े सरकारी खजाने से दिलवा दिये गये।

पर जब राजकुमार रसालू ने स्त्रियों को लोहे और पीतल के घड़े ले कर कुँए पर वापस आते देखा तो वह बहुत ज़ोर से हँस पड़ा। उसने अपने तेज़ तीर और कमान निकाली और उन तेज़ तीरों से उनके घड़ों में छेद कर दिये मानो वे मिट्टी के बने हों।

उसके बाद भी राजा ने उसे नहीं बुलाया तो वह अपने घोड़े पर चढ़ा और अपनी जवानी और ताकत के घमंड में महल की तरफ चल दिया। वह दरबार में घुसा तो उसने वहाँ अपने पिता को कॉपता हुआ बैठा पाया।

उसने इसे पूरी इज़्ज़त के साथ झुक कर नमस्ते की पर राजा सालबाहन ने उसको देखने से पहले ही उससे अपना मुँह फेर लिया और जवाब में एक शब्द भी नहीं कहा।

तब राजकुमार रसालू ने डॉटने के अन्दाज में उससे कहा जो सारे दरबार में गूँज गया —

मैं तो यहाँ आपको नमस्ते करने आया था न कि कोई नुकसान पहुँचाने
मैंने ऐसा क्या किया है जिसकी वजह से आपने मुझसे मुँह फेर लिया

राज्य और दंड की कोई ताकत नहीं जो मुझे ललचा सके
मैं तो इससे भी ज़्यादा अच्छा इनाम पाना चाहता हूँ

यह कह कर वह अपने दिल में कड़वाहट और गुस्सा लिये दरबार से बाहर चला गया। पर जैसे ही वह महल की खिड़कियों के नीचे से गुजरा तो उसने अपनी माँ के रोने की आवाज सुनी।

इस आवाज ने उसका दिल पिघला दिया। इससे उसका गुस्सा तो चला गया पर उसके दिल में एक अकेलापन छा गया क्योंकि उसके माता और पिता दोनों ही ने उसे छोड़ दिया था। वह बड़े दुख से रो पड़ा —

ओ महलों में रहने वाली तू मुझे रो रो कर मत सुना
अगर तू मेरी माता है तो मुझे कोई अच्छी सलाह दे
क्योंकि मेरी ज़िन्दगी तो अब शुरू होने वाली है

और रानी लोना ने उसको रोते रोते जवाब दिया —
मॉ तुझे यह सलाह देती है बेटे और इस सलाह को तू हमेशा अपने साथ रखना
तू चारों तरफ राज करेगा पर तू अपने आपको ठीक और शुद्ध रखना

इस तरह राजा रसालू की मॉ ने राजा रसालू को तसल्ली दी और उसने अपनी किस्मत बनानी शुरू की। वह अपना घोड़ा भौंर ईराकी और अपना तोता अपने साथ ले गया। दोनों ही उसके जन्म से ही उसके साथ रह रहे थे।

इन दोनों विश्वस्त दोस्तों के अलावा उसके दो दोस्त और भी थे – एक बढ़ई लड़का और एक सुनार लड़का, जिन्होंने यह कसम खा रखी थी कि वे राजकुमार का साथ कभी नहीं छोड़ेंगे। इस तरह से उनका एक अच्छा साथ था।

जब रानी लोना ने उनको जाते देखा तो वह अपनी खिड़की से उनको तब तक जाते देखती रही जब तक कि वे आँखों से ओझल नहीं हो गये और केवल धूल उड़ती नहीं दिखायी दी।

फिर उसने अपने हाथों में सिर रख लिया और रो पड़ी —

ओ बेटे तू मुझे अब बहुत थोड़ा दिखता है अब तो मुझे धूल ही ज़्यादा दिखायी देती है
क्योंकि जिस माँ का बेटा उससे दूर हो वह तो खुद भी धूल जैसी ही है

सो राजकुमार रसालू अपने पिता का राज्य छोड़ कर दुनियाँ देखने चल दिया। पहले दिन वह काफी दूर चला। वह एक अकेले जंगल में आ गया। फिर यह देख कर कि यह एक अकेली सी जगह है और रात कुछ ज़रा ज़्यादा ही अँधेरी है उन सबने यह तय किया कि वे लोग बारी बारी से पहरा देंगे।

उन्होंने अपने पहरे के समय को तीन हिस्सों में बाँट लिया। बढ़ई के हिस्से में पहला हिस्सा आया, सुनार ने दूसरा हिस्सा लिया और राजकुमार को तीसरे हिस्से में पहरा देना था।

तब सुनार ने अपने मालिक के लिये घास का एक बिछौना बनाया और इस बात से डरते हुए कि कहीं ऐसा न हो कि राजकुमार का दिल अपने पुराने माहौल को याद कर के खराब न हो जाये उसने उसको उत्साहित करने के लिये यह कहा —

अब तक तो तुम बहुत मुलायम बिस्तर में खेले हो
पर आज की रात घास ही तुम्हारा बिस्तर है

फिर भी तुम दुखी मत होना अगर तुम्हारी किस्मत तुम्हें खराब दिन दिखाये
बहादुर लोग उस पर ज़रा भी ध्यान नहीं देते

जब राजकुमार रसालू और सुनार का बेटा सो गये और बढ़ई का बेटा पहरा दे रहा था तो पास की एक झाड़ी से एक साँप निकल आया और सोते हुए लोगों की तरफ बढ़ा तो बढ़ई के बेटे ने पूछा — "तुम कौन हो और तुम इधर क्यों आये हो?"

साँप बोला — "मैंने अपने चारों तरफ के **12** मील के दायरे में सबको नष्ट कर दिया है। तुम कौन हो जिसने यहाँ आने की हिम्मत की है?"

कह कर साँप ने बढ़ई के बेटे के ऊपर हमला किया तो बढ़ई का बेटा उससे लड़ा और उसे मार दिया। उसे मार कर बढ़ई के बेटे ने उसे अपनी ढाल के नीचे छिपा दिया और अपने दोनों साथियों को इस बारे में कुछ नहीं बताया कि कहीं वे डर न जायें। क्योंकि सुनार के बेटे ने भी यही सोचा कि कहीं राजकुमार हताश न हो जाये।

जब पहरा देने की राजकुमार रसालू की बारी आयी तो एक अनजानी आफत[96] झाड़ी में से निकल आयी। राजकुमार रसालू ने उसका बहादुरी से सामना किया और ज़ोर से चिल्लाया — "कौन हो तुम और यहाँ क्यों आये हो?"

---

[96] Translated for the words "Unspeakable Terror" – Aafat is the original word.

तब उस आफत ने कहा — "मैंने अपने चारों तरफ के 36 मील के दायरे में सबको मार दिया है तुम कौन हो जिसने यहाँ आने की हिम्मत की है?"

इस पर राजकुमार रसालू ने अपने चमकती हुई तलवार खींच ली और उस आफत को उसने अपने तेज़ तीरों से छेद दिया जिससे वह अपनी गुफा में भाग गया। राजकुमार रसालू ने उसका गुफा तक पीछा किया और उसे मार कर फिर पहरा देने के लिये अपनी जगह शान्ति से आ गया।

सुबह होने पर राजकुमार रसालू ने अपने सोते हुए साथियों को उठाया तो बढ़ई के बेटे ने अपना इनाम यानी उस साँप का शरीर उसको दिखाया जो उसने उस रात मारा था।

राजकुमार बोला — "अरे यह तो एक छोटा सा साँप है। यहाँ गुफा में आ कर देखो मैंने क्या मारा।"

और जब सुनार और बढ़ई के बेटों ने उस आफत को देखा तो वे तो बहुत डर गये। वे उसके पैरों पर गिर गये और उन्होंने उससे शहर जाने की इजाज़त माँगी।

उन्होंने कहा — "ओ ताकतवर राजकुमार रसालू। तुम तो एक राजकुमार हो एक हीरो हो तुम तो ऐसी आफतों से लड़ सकते हो। पर हम लोग तो केवल मामूली लोग हैं। हम अगर तुम्हारे साथ रहे तो तुम यकीनन ही मारे जाओगे। ये चीज़ें तुम्हारे लिये तो कुछ नहीं हैं पर हमारे लिये तो ये मौत हैं। मेहरबानी कर के हमें जाने दो।"

राजकुमार रसालू ने उनकी तरफ बड़े दुख से देखा और कहा कि जैसा वे चाहें वैसा करें। वह बोला —

सदा न फूलें तोरियॉ ओ साथी सदा न सावन होय
सदा न जोबन थिर रहे सदा न जीवै कोय
सदा ना राजियॉ हाकिमीं सदा ना राजियॉ देस
सदा न होवे घर अपना ओ साथी जब बसें पिया परदेस

दर्शन की यह कविता दुनियॉ भर में मशहूर है। इसे अंग्रेजी में इस तरह कहा जा सकता है।[97]

सो राजकुमार रसालू के दोस्त उसको छोड़ कर शहर चले गये। कुछ समय बाद राजकुमार रसालू नीला शहर में आया। जैसे ही वह शहर में घुसा तो उसको एक बुढ़िया मिली जो रोटियॉ बना रही थी।

जब वह उन्हें बना रही थी तो वह साथ में कभी रोती जाती थी तो कभी हॅसती जाती थी। यह देख कर राजकुमार रसालू को यह जानने की उत्सुकता हुई कि वह ऐसा क्यों कर रही थी सो उसने उससे पूछा — “मॉ जी आप क्यों तो हॅसती हैं और फिर क्यों रोती हैं?”

---

[97] It is not always that Tori (a vegetable) flowers all the time, Rain doesn’t always fall
Nor stays the youth and nor anybody lives
Kings do not always reign, Nor they have land always
People do not always live in their own homes, when the husband (dear people) is not near

बुढ़िया रोटी बेलने के लिये अपने आटे की गोली बनाते हुए बोली — "तुम क्यों पूछते हो बेटा? तुमको उससे क्या फायदा होगा?"

राजकुमार रसालू अपनी मीठी आवाज में बोला — "नहीं माँ जी। अगर आप मुझे सच सच बता देंगी तो शायद हम दोनों में से किसी एक का फायदा हो जाये।"

और जब बुढ़िया ने राजकुमार रसालू के चेहरे की तरफ देखा तो वह उसे किसी दयालु आदमी का चेहरा दिखायी दिया। वह आँखों में आँसू भर कर बोली — "ओ अजनबी। मेरे सात सुन्दर बेटे थे। अब मेरे पास केवल एक बेटा ही रह गया है। बाकी के छह बेटे एक बहुत ही भयानक राक्षस ने खा लिये हैं। यह राक्षस रोज इस शहर में अपना टैक्स वसूल करने के लिये आता है – एक जवान आदमी, एक भैंस और एक टोकरी रोटी।

मेरे छह बेटे तो मारे जा चुके हैं और आज फिर यह टैक्स देने की मेरी बारी आयी है। सो आज मेरे सबसे छोटे सबसे प्यारे बेटे को भी वही भुगतना पड़ेगा जो उसके छह भाई भुगत चुके हैं। मैं इसी लिये रोती हूँ।"

यह सुन कर राजकुमार रसालू को उस पर बहुत दया आयी। वह बोला —

ना रो माता भोली ना अँसुवन ढलकाये, तेरे बेटे की इवाज में सिर देसान चला जाये
नीले घोड़िये वालिया राजा मुँछधारी सिर पग, वह जो देखते औंदे जिन खाइयाँ सारा जग

इस पर भी बुढ़िया ने अविश्वास के साथ अपना सिर ना में हिलाया और बोली — "ओ मीठा बोल बोलने वाले। पर एक के लिये दूसरा अपनी ज़िन्दगी खतरे में क्यों डालेगा।"

यह सुन कर राजकुमार रसालू उसकी तरफ देख कर मुस्कुराया अपने शानदार घोड़े भौंर ईराकी से नीचे उतरा और सुस्ताने के लिये लापरवाही से वहीं बैठ गया जैसे वह उसी घर का बेटा हो।

वह बोला — "माँ जी आप डरिये नहीं। मैं आपसे वायदा करता हूँ कि आपके बेटे को बचाने के लिये मैं अपनी ज़िन्दगी भी खतरे में डालूँगा।"

उसी समय सरकार के ऊँचे औफीसर जिनका काम उस राक्षस का खाना इकट्ठा करना था वहाँ आ गये। बुढ़िया उनको देख कर यह कहते हुए एक बार फिर रो पड़ी —

ओ नीले घोड़े और ऊँची पगड़ी बाँधने वाले राजकुमार
अपने सुन्दर दाढ़ी वाले चेहरे से कहे गये शब्द याद रखना
मुझे दुख देना वाला पास ही है

राजकुमार रसालू अपना चमकीला जिरहबख्तर पहन कर उठा और हुक्म देने के लहज़े में उनको एक तरफ हट जाने के लिये कहा।

औफीसरों के सरदार ने कहा — "ओ मीठा बोलने वाले। अगर यह स्त्री आज उसका खाना अभी नहीं देती है तो राक्षस लोग यहाँ

आ कर सारा शहर में हड़बड़ी मचा देंगे। हमको उसके बेटे को ले कर ही जाना है।"

राजकुमार बोला — "उसके बदले में मैं चलता हूँ। तुम मेरे रास्ते से हटो मुझे जाने के लिये रास्ता दो।"

औफीसरों के मना करने के बावजूद वह अपने घोड़े पर चढ़ गया और एक भैंस और बनी हुई रोटियाँ साथ ले कर उस राक्षस से लड़ने के लिये चल दिया। उसने भैंस से सबसे छोटी सड़क से चलने के लिये कहा।

जब वह राक्षस के घर के पास पहुँचा तो उसने देखा कि उनमें से एक राक्षस एक बहुत बड़ी खाल में भर कर पानी ले कर जा रहा था।

जैसे ही पानी ले जाने वाले ने राजकुमार रसालू को उसके भौंर ईराकी घोड़े पर एक भैंस के साथ आता देखा तो वह मन में बहुत खुश हुआ — "आहा। आज तो एक घोड़ा और भी है साथ में। इससे पहले कि मेरे भाई लोग इसको देखें इसे पहले मैं खा लेता हूँ।"

सो उसने खाने के लिये उसकी तरफ अपना हाथ बढ़ाया कि राजकुमार रसालू ने अपनी तेज़ तलवार से उसका हाथ काट दिया। बस वह तो डर के मारे वहाँ से भाग लिया।

जब वह भाग रहा था तो उसको उसकी एक बहिन मिल गयी तो वह बोली — "भैया तुम इतनी जल्दी जल्दी कहाँ जा रहे हो?"

भागते भागते ही वह बोला — "लगता है कि राजकुमार रसालू आ गये। यह देख अपनी तलवार के एक ही झटके से उन्होंने मेरा हाथ काट दिया।"

यह देख कर राक्षसी को भी डर लगने लगा और वह भी अपने भाई के साथ ही भाग ली। और जब वे दोनों भाग रहे थे तो वे ज़ोर ज़ोर से गाते जा रहे थे —

भागो भाइयों भागो सबसे छोटे रास्ते से भाग लो
आग बहुत ज़ोर की लगी है वह हमारे सब प्यारों को जला देगी
हमने ज़िन्दगी की खुशियाँ देखी हैं अब हमको चारों तरफ भागना है
जो हो चुका वह हो चुका अब जल्दी से कोई उपाय सोचो

यह सुन कर सारे राक्षस पलटे और अपने ज्योतिषी भाई के पास पहुँचे और उससे उसकी किताब देख कर उन्हें बताने के लिये कहा कि क्या राजकुमार रसालू वाकई में दुनियाँ में पैदा हो चुके हैं।

और जब उन्होंने यह सुना कि "हाँ वह पैदा हो चुके हैं।" तो सबने इधर उधर भागना शुरू कर दिया। यहाँ तक कि जब वे पलट कर भागे जा रहे थे तो राजकुमार रसालू ने उनसे अपने आप से लड़ने के लिये कहा — "आगे आओ। मैं राजकुमार रसालू हूँ राजा सालबाहन का बेटा और राक्षसों को मारने के लिये ही पैदा हुआ हूँ।"

तब उनमें से एक राक्षस ने आग में जैसे घी डालते हुए कहा — "तेरे जैसे न जाने कितने रसालू मैंने खा लिये हैं। जब कोई असली

रसालू आयेगा तो उसके घोड़े की एड़ी की रस्सी हमें बॉध लेगी और उसकी तलवार हमें अपने आप ही काट देगी।"

यह सुन कर राजकुमार ने अपनी एड़ी की रस्सियॉ खोल दीं और अपनी तलवार जमीन पर फेंक दी। लो उन रस्सियों ने उन राक्षसों को बॉध लिया और तलवार ने उन सबको अपने आप ही काटना शुरू कर दिया।

फिर भी सात राक्षस जो बाकी बचे थे उन्होंने भी यह कहने की कोशिश की "तेरे जैसे न जाने कितने रसालू मैंने खा लिये हैं। जब कोई असली आदमी आयेगा तो उसके घोड़े की एड़ी की रस्सी हमें बॉध लेगी और उसकी तलवार हमें अपने आप ही काट देगी।"

उन्होंने रोटी पकाने वाले सात तवे लिये और उनसे ढाल का काम लेने लगे। तो लो राजकुमार रसालू ने अपने तेज़ तीर फेंक कर इन तवों को भेद दिया और साथ में मर गये वे राक्षस भी जो उनके पीछे खड़े थे।

पर राक्षसी बच कर निकल गयी और गंडगरी पहाड़ की एक गुफा में जा कर छिप गयी।

तब राजकुमार रसालू ने अपनी एक मूर्ति बनवायी उसको चमकीला जिरहबख्तर पहनाया उसके हाथ में तलवार और ढाल और भाला दिया और उसको उस गुफा के दरवाजे पर रखवा दिया ताकि वह राक्षसी वहॉ से बाहर न निकल सके और भूखी ही अन्दर मर जाये।

इस तरह से उसने राक्षसों को मारा।

राक्षसों को मारने के कुछ समय बाद राजा रसालू होदी नगरी चला गया। वहाँ जा कर जब वह अपनी सुन्दरता के लिये मशहूर रानी सुन्दराँ[98] के घर गया तो वहाँ जा कर उसने देखा कि महल के दरवाजे पर एक जोगी बैठा हुआ है और उसके पास ही होम[99] की आग जल रही है।

राजा रसालू ने उससे पूछा — "हे पिता आप यहाँ कब से बैठे हुए हैं?"

जोगी बोला — "मेरे बेटे मैं यहाँ **22** साल से रानी सुन्दराँ को देखने का इन्तजार कर रहा हूँ फिर भी मैं अभी तक उसे देख नहीं पाया हूँ।"

राजा रसालू बोले — "आप मुझे अपना शिष्य बना लीजिये। आपके साथ मैं भी उसको देखने का इन्तजार करूँगा।"

जोगी बोला — "मेरे बच्चे। तुम तो पहले से ही चमत्कार करते चले आ रहे हो तो फिर तुम हममें से एक क्यों बनना चाहते हो?"

राजा रसालू उसके लिये ना सुनने के लिये तैयार नहीं था सो जोगी ने उसके कान बिंधवा दिये और उनमें पवित्र कुंडल पहना दिये।

---

[98] Queen Sundaran was the daughter Raja Hari Chand

[99] Hom means Yagya

नये शिष्य ने अपना चमकता जिरहबख्तर एक तरफ उठा कर रख दिया और जोगी की तरह से एक लंगोटी पहन कर ही उसके पास बैठ गया और रानी सुन्दराँ को देखने का इन्तजार करने लगा।

रात को बूढ़ा जोगी भीख माँगने के लिये गया तो उसने चार घर से भीख माँगी। उसमें से आधी भीख उसने राजा रसालू को दे दी और बाकी आधी उसने खुद खा ली।

अब राजा रसालू तो एक बहुत ही संत आदमी था एक हीरो था। इसके अलावा उसको खाने की भी ज़्यादा चिन्ता नहीं थी सो वह तो अपने हिस्से से सन्तुष्ट था पर जोगी अपने हिस्से से बिल्कुल सन्तुष्ट नहीं था।

अगले दिन भी वैसा ही हुआ और राजा रसालू तभी भी रानी सुन्दराँ को देखने के इन्तजार में आग के पास बैठा रहा। अब जोगी का धीरज छूटने लगा।

वह बोला — "ओ मेरे शिष्य। मैंने तुम्हें अपना शिष्य इसलिये बनाया था ताकि तुम भी कुछ भीख माँग सको और मुझे खिला सको। और अब देखो यह मैं हूँ जो तुम्हें खाना खिलाने के लिये भूखा रह रहा हूँ।"

राजा रसालू हँसते हुए बोला — "इसका तो आपने मुझे कोई हुक्म नहीं दिया था। अब कोई शिष्य बिना अपने गुरू की इजाज़त के कैसे जायेगा।"

यह सुन कर जोगी बोला — "तो फिर मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ कि तुम भीख माँगने जाओ और इतनी भीख माँग कर लाओ जो मेरे और तुम्हारे दोनों के लिये काफी हो।"

राजा रसालू उठा और अपनी जोगी की पोशाक में रानी सुन्दराँ के महल के दरवाजे पर जा कर खड़ा हो गया और गाया —

अलख मैं तेरी देहरी पर खड़ा हूँ तेरी सुन्दरता के चर्चे सुन कर बहुत दूर से आया हूँ
ओ बहुतायत से देने वाली सुन्दरी सुन्दराँ इस कुंडल पहने जोगी को भीख दे

जब सुन्दरी सुन्दराँ ने महल के अन्दर से राजा रसालू की आवाज सुनी तो उसकी मिठास उसके दिल को छू गयी। उसने तुरन्त ही अपनी एक दासी को बुला कर उससे उसे भीख देने के लिये कहा।

पर जब दासी दरवाजे पर आयी और बाहर खड़े हुए राजा रसालू की सुन्दरता देखी – उसका गोरा चेहरा और सुडौल शरीर, तो वह तो बेहोश ही हो गयी। वह जो कुछ उसे देने आयी थी वह सब जमीन पर गिर पड़ा।

राजा रसालू ने एक बार फिर गाया तो एक बार फिर उसकी मीठी आवाज रानी सुन्दराँ के कानों में पड़ी तो उसने अपनी दूसरी दासी को बुला कर उससे उसको कुछ भीख देने के लिये कहा। पर वह भी राजा रसालू की सुन्दरता देख कर बेहोश हो कर गिर पड़ी।

तब रानी सुन्दराँ उठी और खुद बाहर गयी – सुन्दर और शाही ढंग से। उसने दासियों को होश में लाया, बिखरा हुआ खाना उठाया और उसको एक तरफ रख दिया। फिर उसने थाली में जवाहरात भरे और उन्हें खुद ही राजा रसालू के हाथ में गर्व से यह कहते हुए दे दिये —

तुमने ये कुंडल कब पहने और तुम कब से फ़कीर बन गये
तुमने प्यार के धनुष का ऐसा कौन सा तीर खाया और तुम क्या ढूँढते फिरते हो
क्या तुम सारी स्त्रियों से भीख माँगते हो या फिर केवल मुझसे ही माँगते हो

राजा रसालू ने अपनी जोगी के स्वभाव के अनुसार उसके सामने सिर झुकाया और बड़ी नम्रता से कहा —

अपने ये कुंडल मैंने कल ही पहने हैं और कल ही मैं फ़कीर बना हूँ
और कल ही मैंने प्रेम का तीर खाया है मुझे यहाँ से कुछ नहीं चाहिये
मैं जिस किसी को देखता हूँ उन सबसे भीख नहीं माँगता
पर ओ सुन्दर रानी सुन्दराँ मैं केवल तुझसे ही भीख माँगता हूँ।

जब रसालू थाली भर कर जवाहरात ले कर अपने गुरू के पास लौट कर आया तो उस बूढ़े जोगी को तो बहुत आश्चर्य हुआ। उसने उससे कहा कि वह उन्हें वापस ले जाये और उनकी बजाय केवल खाना ले कर आये।

सो राजा रसालू फिर से महल के दरवाजे पर वापस गया और गाया —

अलख मैं तेरी देहरी पर खड़ा हूॅ तेरी सुन्दरता के चर्चे सुन कर बहुत दूर से आया हूॅ
ओ बहुतायत से देने वाली सुन्दरी सुन्दरॉ इस कुंडल पहने जोगी को भीख दे

रानी सुन्दरॉ फिर उठी – गर्व से भरी हुई और सुन्दर। वह दरवाजे के पास आयी और बाली —

तू कोई भिखारी नहीं है
तेरे मुॅह का तरकस मोतियों के तीरों से भरा है
तेरा धनुष लाल है जैसे लाल[100] होता है
राख ने तेरी जवानी को ढक रखा है पर
तेरी ऑखें तेरा रंग चमक रहा है तू मुझे धोखा मत दे

राजा रसालू मुस्कुरा कर बोला —
ओ सुन्दर रानी इससे क्या हुआ
अगर मेरे मुॅह का तरकस चमकते हुए मोतियों से और लाल से भरा है
मैं जवाहरातों का व्यापार नहीं करता चाहे वह पूर्व पश्चिम हो उत्तर हो या दक्षिण हो
आप अपने जवाहरात वापस ले लें और इनकी बजाय मुझे खाना दे दें
ये भेंटें कीमती है दुर्लभ हैं पर यह मॅहगा जादू है ये जोगी की भीख के काबिल नहीं है

तब रानी सुन्दरॉ ने वे जवाहरात वापस ले लिये और सुन्दर जोगी को एक घंटा इन्तजार करने के लिये कहा जब तक रसोई में खाना बनता है।

फिर भी वह उसके बारे में और कुछ जानकारी मालूम नहीं कर सकी क्योंकि वह दरवाजे पर बैठा रहा और एक शब्द भी नहीं

[100] This Laal means Ruby. Ruby is also red. See its picture above.

बोला। हॉ जब रानी सुन्दरॉ ने उसको एक थाल भर कर मिठाई दी और उसकी तरफ दुखी नजरों से देख कर कहा —

तुम किस राजा के बेटे हो और तुम यहॉ कब आये
तुम्हारा नाम क्या है और तुम्हारा घर कहॉ है

राजा रसालू ने उससे भीख ली और बोला —

मैं सुन्दरी लोना का बेटा हूँ मेरे पिता का नाम सालबाहन है
मैं रसालू हूँ और तुम्हारी सुन्दरता के चर्चे सुन कर मैंने राख वाला यह जोगी का रूप रखा
मैं भीख मॉगता हूँ यह देखने के लिये
कि क्या तुम इतनी ही सुन्दर हो जितना लोग कहते हैं
अब मैंने देख लिया अब मैं अपने रास्ते जाता हूँ

उसके बाद राजा रसालू मिठाई ले कर अपने गुरू के पास चला आया। उसके बाद वह वहॉ से भी चला गया। क्योंकि उसको डर था कि उसके बारे में जानने के बाद रानी सुन्दरॉ कहीं उसको बन्दी न बना ले।

सुन्दरी सुन्दरॉ जोगी की पुकार का इन्तजार करती रही और फिर जब कोई नहीं आया तो वह बाहर उस बूढ़े जोगी से गर्व से और शाही तरीके से यह पूछने आयी कि उसका शिष्य कहॉ चला गया।

बूढ़े जोगी को यह देख कर अपना आपा बहुत छोटा लगा कि वह महलों की रानी एक अजनबी के बारे में पूछने के लिये उसके

पास आयी जबकि वह **22** साल से वह वहाँ बैठा बिना कुछ बोले और इशारा किये उसके दर्शनों का इन्तजार कर रहा था।

वह बोला — “मेरा शिष्य? मैं भूखा था मैंने उसे खा लिया क्योंकि वह मेरे लिये भीख में काफी खाना नहीं लाया।”

रानी सुन्दराँ चिल्लायी — “अरे ओ राक्षस। क्या मैंने तेरे लिये जवाहरात और खाना नहीं भेजा? क्या इस सबसे भी तुझे सन्तोष नहीं मिला जो तूने इतने सुन्दर राजकुमार को खा लिया।”

जोगी बोला — “मुझे नहीं मालूम। मैं तो केवल इतना जानता हूँ कि मैंने उस नौजवान को एक सलाँख में घुसाया और उसे भून दिया और खा लिया। वह खाने में बहुत स्वादिष्ट था।”

रानी सुन्दराँ से रहा नहीं गया वह बोली — “तब तू मुझे भी भून ले और खा ले।” और यह कहने के साथ ही उसने अपने आपको उसके सामने जलती हुई पवित्र आग में फेंक दिया। वह उस सुन्दर जोगी के प्रेम में उसके साथ ही सती हो गयी थी।

और जब वह वहाँ से गया तो उसने उसके बारे में नहीं सोचा बल्कि उसका मन हुआ कि काश वह भी एक राजा होता सो उसने राजा हरि चन्द की राज गद्दी ले ली और फिर वहाँ राज किया।

कुछ साल होदी नगरी[101] में राज कर के राजा रसालू ने अपना राज्य छोड़ दिया और राजा सरकप[102] के साथ चौपड़[103] खेलने के लिये चल दिया।

पर जब वह वहाँ आया तो गरज और बिजली का एक ऐसा भारी तूफान आया कि उसको शरण लेने की जरूरत पड़ गयी। पर उसको कहीं शरण नहीं मिली सिवाय एक पुराने कब्रिस्तान के जहाँ एक सिरकटी लाश पड़ी हुई थी।

वह लाश इतनी अकेली थी कि लगता था कि उसको भी किसी के साथ की जरूरत थी। राजा रसालू उसके पास बैठ गया और बोला —

यहाँ कोई नहीं है न तो पास में न दूर, सिवाय इस बिना साँस वाली लाश के
क्या भगवान इसको ज़िन्दा कर देगा इससे बात कर के अकेलापन कुछ कम हो जायेगा

और लो वह बिना सिर की लाश तो उठ गयी और राजा रसालू के पास ही बैठ गयी। राजा रसालू ने बिना किसी आश्चर्य के कहा —

तूफान बहुत भयानक और तेज़ है, बड़ा घना बादल पश्चिम में उठ रहा है
तुम्हारी कब्र को और तुम्हारे कफ़न को क्या तकलीफ है ओ लाश
जो तुम आराम नहीं कर सकते

---

101 Hodi Nagari

102 King Sarkap (King Beheader) is a universal hero of fable who has left many places behind him connected with his memory, but who he was is not yet been ascertained.

103 Chaupad – a kind of dice game. Long before this indoor game was very popular among kings. King Nal played it with his brother Pushkar and lost it. Paandav played it with their cousins Kaurav and lost it. See the picture of dice above.

बिना सिर वाली लाश बोली —
जब मैं धरती पर था तो मैं भी तुम जैसा ही था
मेरी पगड़ी एक राजा के जैसी थी मेरा सिर सबसे ऊँचा था
मैं इधर से उधर आनन्द करता घूमता था

मैं एक बहादुर की तरह अपने दुश्मनों से लड़ता था अपनी ज़िन्दगी मौज से जीता था
पर अब मैं मर गया हूँ मेरे पाप मेरे लिये लैड[104] की तरह से भारी हो गये हैं
वे मुझे कब्र में भी चैन से नहीं रहने देते

इसी तरीके से रात गुजर गयी ॲधेरी और भयानक। राजा रसालू उस बिना सिर वाली लाश से बातें करता रहा। जब सुबह हुई और राजा रसालू बोला कि अब उसे अपनी यात्रा पर जाना है तो लाश ने उससे पूछा कि वह कहॉ जा रहा है।

राजा रसालू बोला कि वह राजा सरकप के साथ चौसर खेलने जा रहा है। तो लाश ने उससे विनती की कि वह अपने इस विचार को छोड़ दे।

उसने कहा — “मैं राजा सरकप का भाई हूँ और मुझे उसके तौर तरीके मालूम हैं। रोज नाश्ते से पहले वह अपने आनन्द के लिये दो तीन आदमियों के सिर काटता है। एक दिन उसको और कोई नहीं मिला तो उसने मेरा ही सिर काट दिया और किसी न किसी बहाने मुझे पूरा यकीन है कि वह तुम्हारा भी सिर काट देगा।

[104] Lead is a metal heavier than it looks.

फिर भी अगर तुमने वहाँ जाने का और उसके साथ चौपड़ खेलने का इरादा बना ही रखा है तो यहाँ इस कब्रिस्तान से थोड़ी सी हड्डियाँ अपने साथ ले जाओ और उनसे अपने पाँसे बना लो। इससे वे जादू वाले पाँसे जिनसे मेरा भाई खेलता है उनकी ताकत बेकार हो जायेगी नहीं तो वह हमेशा ही जीत जाता है।"

सो राजा रसालू ने वहाँ पड़ी हुई कुछ हड्डियाँ उठा लीं और उनके पाँसे बनवा लिये। उनको उसने अपनी जेब में रख लिया। फिर लाश को विदा कह कर वह राजा सरकप के साथ चौपड़ खेलने चल दिया।

दयालु और ताकतवर राजा रसालू ने अपनी यात्रा शुरू की। चलते चलते वह एक जलते हुए जंगल के पास आ गया कि उसने आग में से आती हुई एक आवाज सुनी — "ओ यात्री। भगवान के लिये मुझे इस आग से बचाओ।"

राजा रसालू आग की तरफ मुड़ा तो लो यह तो एक छोटा सा क्रिकेट था जो उससे यह बोल रहा था। अव राजा क्योंकि बहुत दयालु और ताकतवर था सो उसने हाथ आग में डाल कर उसे निकाल लिया और उसे बाहर छोड़ दिया।

तब उस छोटे से प्राणी ने अपनी कृतज्ञता दिखाने के लिये अपने आगे के दो बालों में से एक बाल तोड़ा और अपनी रक्षा करने वाले को दिया और कहा — "तुम मेरा यह बाल लो और जब भी तुम

किसी मुसीबत में पड़ जाओ तो तुम इसे आग में डाल देना मैं तुम्हारी सहायता के लिये आ जाऊँगा।"

राजा रसालू मुस्कुराया और बोला — "तुम इतने छोटे से जानवर मेरी क्या सहायता करोगे?"

फिर भी उसने वह बाल रख लिया और अपने रास्ते चला गया। जब वह राजा सरकप के शहर पहुँचा तो राजा की **70** बेटियाँ उससे मिलने के लिये बाहर आयीं – **70** सुन्दर लड़कियाँ, खुश और लापरवाह, हँसती मुस्कुराती।

लेकिन उनमें से एक सबसे छोटी वाली बेटी ने भौंर ईराकी पर चढ़ने वाले शानदार राजा को देखा तो वह तुरन्त उसके पास चली गयी और बोली —

ओ नीले घोड़े वाले राजा यहाँ से वापस चले जाओ यहाँ से वापस चले जाओ
या फिर अपना भाला नीचे कर के आओ आज तुम्हारा सिर काट दिया जायेगा
क्या तुम अपनी ज़िन्दगी से प्यार करते हो तब ओ अजनबी मैं तुमसे विनती करती हूँ
तुम वापस लौट जाओ तुम वापस लौट जाओ

पर राजा रसालू ने मुस्कुराते हुए धीमे से जवाब दिया —

ओ सुन्दरी मैं बहुत दूर से आया हूँ प्रेम और युद्ध में जीतने की कसम खा कर
राजा सरकप मेरे आने पर पछतायेगा मैं उसके सिर के चार हिस्से कर दूँगा
और फिर मैं उसके यहाँ दुलहे के रूप में आऊँगा
और तुम्हें अपनी दुलहिन बना कर ले जाऊँगा

जब राजा रसालू ने इतनी वीरता से जवाब दिया तो उस लड़की ने उसके चेहरे को ध्यान से देखा। वह कितना सुन्दर था कितना बहादुर और कितना ताकतवर था।

वह तुरन्त ही उससे प्यार करने लगी। अब वह उसके साथ दुनियॉ में कहीं भी जाने को तैयार थी। पर दूसरी 69 लड़कियॉ उससे जलने लगीं।

उसकी हॅसी उड़ाते हुए उन्होंने राजा रसालू से कहा — "इतनी जल्दी नहीं ओ बहादुर योद्धा। अगर तुमको हमारी बहिन से शादी करनी है तो पहले तुम्हें वह करना होगा जो हम तुमसे करने के लिये कहेंगे क्योंकि तब तुम हमारे छोटे भाई होगे।"

राजा रसालू ने कहा — "ओ सुन्दर लड़कियों। मुझे मेरा काम बताओ मैं उसे जरूर करूॅगा।"

सो उन 69 लड़कियों ने 100 मन[105] बाजरा 100 मन रेत में मिला कर राजा रसालू को दे दिया और उसमें से उससे बाजरे के दाने बीनने के लिये कहा।

तब उसे क्रिकेट की याद आयी। उसने उसका दिया हुआ बाल अपनी जेब से निकाला और आग में फेंक दिया। तुरन्त ही वहॉ हवा में एक ज़ज़ज़ज़ की आवाज हुई और बहुत सारे क्रिकेट वहॉ आ कर जमा हो गये। उनके साथ वह क्रिकेट भी था जिसकी उसने जान बचायी थी।

[105] One Man or Mound is 40 Seer or 39+ Kilograms.

राजा रसालू बोला — "ये बाजरे के दाने इस रेत में से अलग कर दो।"

क्रिकेट बोला — "बस यही काम है अगर मुझे यही पता होता कि तुम मुझसे इतना छोटा काम लोगे तो मैं अपने इतने सारे भाइयों को ले कर नहीं आता।"

कह कर वे अपने काम में लग गये। एक रात में ही उन्होंने बाजरे के सारे दाने रेत से अलग कर दिये।

पर जब राजा सरकप की **69** बेटियों ने देखा कि राजा रसालू ने उनका कहा काम कर दिया है तो उन्होंने एक और काम करने के लिये कहा कि वह एक एक कर के उन्हें तब तक झूला झुलाये जब तक वे थक न जायें।

इस पर वह हॅसते हुए बोला — "उस लड़की को भी गिनते हुए भी जो कि बाद में मेरी पत्नी बनने वाली है तुम लोग **70** हो। और मैं अपनी ज़िन्दगी लड़कियों को झुलाने में बर्बाद करना नहीं चाहता।

उस समय तक जब तक मैंने तुममें से हर एक को एक एक बार झूला भी झुलाया तो पहले वाली को फिर से झूला झूलने की इच्छा हो जायेगी। इसलिये अगर तुम सबको झूला झूलना है तो तुम सब एक झूले में बैठ जाओ तब मैं देखता हूं कि मैं क्या कर सकता हूॅ।"

सो सारी **70** लड़कियॉ, खुश और लापरवाह, मुस्कुराती हुई और हॅसती हुई एक झूले में चढ़ गयीं और राजा रसालू ने जो अपने

चमकते हुए जिरहबख्तर में खड़ा था रस्सी का एक सिरा अपने तीर में बाँधा और उसको अपनी ताकत से पूरा खींच कर छोड़ दिया – झूला चल दिया, एक तीर के समान, हवा में भागता हुआ, **70** लड़कियों के बोझ को सँभाले हुए जो खुश थीं लापरवाह थीं और मुस्कुराहटों और हँसी से भरी थीं।

पर जब वह झूला वापस आने लगा तो राजा रसालू ने जो अपना चमकता हुआ जिरहबख्तर पहने खड़ा था अपनी तलवार निकाली और उससे उसकी रस्सियाँ काट दीं। सारी **70** लड़कियाँ एक के ऊपर एक जमीन पर गिर पड़ीं। कुछ घायल हो गयीं कुछ की हड्डियाँ टूट गयीं।

पर उनमें से केवल एक लड़की बिल्कुल ठीक निकल आयी जिसको कोई चोट नहीं आयी थी और वह लड़की वह थी जिसको राजा रसालू प्यार करता था। वह सबसे बाद में गिरी तो वह बाकी सब लड़कियों के ऊपर थी इसलिये उसको कोई चोट भी नहीं आयी।

इसके बाद राजा रसालू **15** कदम आगे बढ़ा और उन **70** ढोलों के पास आ गया जिनको उन्हें हर एक को बजाना था जो भी राजा के साथ चौसर खेलने के लिये आते थे। उसने उन सबको इतनी ज़ोर से बजाया कि उसने वे सारे ढोल तोड़ डाले।

उसके बाद वह 70 लोहे की प्लेटों के पास आया जिनको राजा के पास जाने से पहले हथौड़े से मारना पड़ता था। उसने उनमें भी इतने ज़ोर से हथौड़ा मारा कि उसने उन सबको भी तोड़ दिया।

यह देख कर सबसे छोटी राजकुमारी, क्योंकि केवल वही भाग सकती थी डर के मारे राजा के पास भागी गयी और बोली —

सरकप, एक ताकतवर राजकुमार तोड़ फोड़ करता घोड़े पर सवार आया है
उसने हमें झुलाया, 70 सुन्दर लड़कियों को और सबको सिर के बल फेंक दिया
उसने अपने घमंड में वे ढोल भी तोड़ दिये जो आपने रखे थे वे प्लेटें भी तोड़ दीं
यकीनन वह आपको भी मार देगा ओ मेरे पिता, और मुझे अपनी दुलहिन बना लेगा

राजा सरकप उसको डॉटते हुए बोला —

बेवकूफ लड़की तेरे शब्द मुझे मेरी किस्मत बता रहे हैं जो कि बहुत छोटी से चीज़ है
अपनी शान को बचाने के लिये मैं उससे लड़ूँगा मैं उसका जिरहबख्तर तोड़ दूँगा
जैसे ही मैंने अपना खाना खा लिया मैं बाहर आ कर उसका सिर काटता हूँ

हालॉकि उसने ये शब्द बहादुरी और निडरता से बोले तो पर अन्दर ही अन्दर वह बहुत डर रहा था। उसने राजा रसालू की बहादुरी के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था।

और यह जान कर कि वह एक बुढ़िया के दरवाजे पर रुका था और तब से जब तक चौपड़ खेलने का समय आया राजा सरकप ने अपने नौकरों के हाथ कई थाल भर कर फल मिठाई भेजे जैसे किसी इज़्ज़तदार मेहमान को दिये जाते हैं। पर वह सब खाना जहर से भरा हुआ था।

राजा सरकप के नौकर जब यह खाना ले कर राजा रसालू के पास गये तो वह बड़े गुस्से में भर कर उनसे बोला — "जाओ और अपने मालिक को बोलना कि हमारा और उसका कोई दोस्ती का रिश्ता नहीं है। मैं तो उसका पक्का दुश्मन हूँ। मैं तो उसका नमक भी खाना नहीं चाहता।"

ऐसा कहते हुए उसने उनकी लायी हुई मिठाई राजा सरकप के कुत्ते को फेंक दी जो राजा के नौकरों के साथ आया था और लो वह तो उसे खाते ही मर गया।

इस पर राजा रसालू को बहुत गुस्सा आया। उसने बड़ी कड़वाहट के साथ कहा — "जाओ ओ नौकरों सरकप के पास वापस चले जाओ और उससे कहना कि राजा रसालू इस बात में कोई बहादुरी नहीं समझता कि वह अपने दुश्मन को भी छल से मारे।"

जब शाम हुई तो राजा रसालू राजा सरकप के साथ चौपड़ खेलने के लिये चला। जब वह जा रहा था तो उसे रास्ते में कुम्हार के कई भट्टे दिखायी दिये तो उसने देखा कि एक बिल्ली बड़ी बेचैनी से इधर उधर घूम रही थी।

सो उसने उससे पूछ ही लिया कि उसको क्या तकलीफ है जो वह ठीक से खड़ी नहीं हो पा रही। इतनी बेचैनी से इधर उधर चक्कर काट रही है।

वह बोली — "मेरे बच्चे एक कच्चे बर्तन में हैं जो यहीं पास वाले भट्टे में रखा है। कुम्हार ने उसमें अभी अभी आग लगायी है। मेरे बच्चे तो बेचारे उस आग में ज़िन्दा ही भुन जायेंगे। मुझे यही बेचैनी है।"

उसके शब्दों ने राजा रसालू का दिल पिघला दिया। वह तुरन्त ही कुम्हार के पास गया और उससे वह भट्टा जैसा था वैसा ही उसे बेचने के लिये कहा।

पर कुम्हार ने जवाब दिया कि वह उसकी ठीक कीमत नहीं बता सकता जब तक कि उसके बर्तन उसमें पक न जायें। क्योंकि वह यह नहीं बता सकता था कि उसमें से कितने साबुत निकलेंगे और कितने टूटे हुए।

किसी तरह कुछ सौदेबाजी करने पर कुम्हार उस भट्टे को बेचने के लिये राजी हो गया। राजा रसालू ने तुरन्त ही सारे बर्तन देखे और उसमें से बिल्ली के बच्चे निकाल कर उसकी माँ को सौंप दिये।

बिल्ली ने भी उसकी दया के बदले में अपना एक बच्चा उसको दिया और कहा कि "इसको तुम अपनी जेब में रख लो तुम्हारी मुसीबत में तुम्हारी सहायता करेगा।"

सो राजा रसालू ने उस बिल्ली के बच्चे को अपनी जेब में रख लिया और राजा के साथ चौपड़ खेलने चला गया।

खेलने के लिये बैठने से पहले राजा सरकप ने अपने दॉव बताये – पहले खेल में अपना राज्य, दूसरे खेल में दुनियॉ की सारी सम्पत्ति और तीसरे खेल में अपना सिर।

इसी तरह से राजा रसालू ने पहले खेल में अपने हथियार दूसरे खेल में अपना घोड़ा और तीसरे खेल में अपना सिर दॉव पर लगाया।

इसके बाद दोनों ने खेलना शुरू किया तो राजा रसालू की पहली चाल आयी। इस समय वह उस लाश की चेतावनी को भूल गया कि उसको कब्रिस्तान से लायी गयी हड्डियों से बने पॉसों से खेलना चाहिये नहीं तो वह सरकप के जादुई पॉसों से हार जायेगा। और वह उन्हीं पॉसों से खेला जो राजा सरकप ने उसे दिये।

इसके अलावा राजा सरकप ने अपना धौल[106] राजा नाम का चूहा भी छोड़ दिया था। वह बोर्ड के चारों तरफ भाग रहा था और चौपड़ की गोटियॉ इधर उधर कर रहा था। सो राजा रसालू पहला खेल हार गया। उसको अपना चमकता हुआ जिरहबख्तर राजा सरकप को दे देना पड़ा।

अब दूसरा खेल शुरू हुआ और एक बार फिर धौल राजा चौपड़ के बोर्ड के चारों तरफ भाग भाग कर चौपड़ की गोटियॉ इधर उधर कर रहा था। सो राजा रसालू यह दूसरा खेल भी हार गया और उसे अपना भौंर ईराकी घोड़ा हारना पड़ गया।

---

[106] Dhol or Dhaul or Dhawal (in Sanskrit) meaning white

तभी भौंर ईराकी को जो वहीं खड़ा था आवाज मिल गयी और वह चिल्लाया —

मालिक मैं समुद्र और सोने से पैदा हुआ हूँ
प्यारे राजकुमार बूढ़ा होने की वजह से मेरे ऊपर विश्वास रखो
मैं आपको इन सब बुराइयों से दूर ले चलूँगा
मेरी उड़ान बहुत ही सधी हुई होगी और चिड़िया जैसी तेज़ होगी
हजारों हजारों मील तक
और आपको जरूरत हो तो आप यहाँ ठहरें
क्योंकि आपको अभी अगला खेल भी तो खेलना है
मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप अपनी जेब में हाथ डालें

यह सुन कर राजा सरकप बहुत गुस्सा हो गया उसने अपने नौकरों से कहा कि वे भौंर ईराकी को वहाँ से हटा ले जायें क्योंकि उसने अपने मालिक को खेल में सलाह दे रहा था।

जब नौकर घोड़े को वहाँ से हटाने के लिये आया तो राजा रसालू की आँखों में यह याद कर के आँसू आ गये कि कितने सालों से वह उसके साथ था और अब... । पर घोड़ा फिर चिल्लाया —

प्यारे राजकुमार तुम रोओ नहीं मैं अजनबियों के हाथ से खाना नहीं खाऊँगा
और न ही अजनबी के घर में रहूँगा
तुम अपना दाँया हाथ लो और उसको वहीं रखो जहाँ मैंने कहा है

उसके इन शब्दों ने राजा रसालू को कुछ याद दिलाया और इसी समय जब बिल्ली के बच्चे ने कुलमुलाना शुरू किया तो उसको लाश की चेतावनी याद आयी कि उसको कब्रिस्तान से इकट्ठी की गयी

हड्डियों के बने पॉसे से खेल खेलना है वरना राजा सरकप ही जीतता रहेगा।

उसका दिल फिर एक बार उछला और उसने राजा सरकप से बड़ी बहादुरी से कहा — "मेरे हथियार और घोड़े दोनों को तुम अभी छोड़ दो। इनको ले जाने के लिये अभी बहुत समय है यह तभी होगा जब तुम मेरा सिर जीत लोगे।"

राजा रसालू का विश्वास देख कर राजा सरकप डर गया। उसने महल की अपनी सारी स्त्रियों को अपने सबसे अच्छे कपड़े और गहनों में सज कर आने और राजा रसालू के सामने खड़े होने का हुक्म दिया। ताकि वे राजा रसालू का खेल से ध्यान हटा सकें।

वे आयीं पर उसने तो उनकी तरफ देखा भी नहीं। उसने तुरन्त ही अपनी जेब से पॉसे निकाले और राजा सरकप से कहा — "अब तक मैं तुम्हारे पॉसों से खेलता रहा अबकी बार मैं अपने पॉसों से खेलूँगा।"

इसके बाद बिल्ली का बच्चा उस खिड़की पर जा कर बैठ गया जहॉ से राजा सरकप का चूहा आता था। और खेल शुरू हुआ।

कुछ देर बाद राजा सरकप ने देखा कि राजा रसालू तो बराबर जीतता जा रहा है तो उसने अपने चूहे को पुकारा पर जब धौल राजा ने बिल्ली के बच्चे को देखा तो वह तो बहुत डर गया। वह तो आगे ही न बढ़े।

इस तरह से राजा रसालू दूसरा दॉव जीत गया और उसने अपने हथियार और घोड़ा वापस ले लिये। राजा सरकप ने यह कहते हुए अपनी सारी होशियारी लगा ली —

ए मेरे बनायी हुए गोटियों आज मेरी लाज रखना
इस आदमी को शान्त रखने के लिये जिसके साथ मैं आज खेल रहा हूँ
आज मेरी ज़िन्दगी और मौत का सवाल है
जैसे सरकप करता है वैसे ही इस बार सरकप के लिये

पर रसालू ने वापस जवाब दिया —

ए मेरे बनायी हुए गोटियों आज मेरी लाज रखना
इस आदमी को शान्त रखने के लिये जिसके साथ मैं आज खेल रहा हूँ
आज मेरी ज़िन्दगी और मौत का सवाल है
जैसे भगवान करता है वैसे ही करना, भगवान के लिये

दोनों ने खेलना शुरू किया। सरकप के महल की स्त्रियॉ गोला बनाये खड़ी थीं। बिल्ली का बच्चा धौल राजा की पहरेदारी कर रहा था।

राजा सरकप हार गया – पहले अपना राज्य, फिर अपनी सम्पत्ति और आखीर में अपना सिर।

उसी समय एक नौकर आया जिसने राजा सरकप को उसके एक बेटी के जन्म की खबर दी। बुरे समय ने उसके ऊपर अपना जाल फेंका और उसने तुरन्त ही उसको हुक्म दिया कि उसको मार

दिया जाये क्योंकि वह एक बुरे समय में पैदा हुई है और अपने पिता के लिये बदकिस्मती ले कर आयी है।

उसी समय दयालु और ताकतवर राजा रसालू अपना चमकता जिरहबख्तर पहने उठा और बोला — "ओ राजा ऐसा नहीं करो। वह बिल्कुल बुरी नहीं है। इस बच्ची को मेरी पत्नी बना कर मुझे दे दो।

और अगर तुम अपने सब पुन्यों की कसम खा कर वायदा करो कि तुम दूसरे का सिर काटने के लिये फिर कभी चौपड़ नहीं खेलोगे तो मैं अभी तुम्हारा सिर बख्श देता हूँ।"

राजा सरकप ने गम्भीरता से कसम खायी कि वह फिर कभी दूसरे के सिर के लिये चौपड़ नहीं खेलेगा। उसके बाद उसने आम के पेड़ की एक ताजा शाख उठायी और नयी जन्मी बच्ची को लिया दोनों को एक सोने की थाली में रख कर राजा रसालू को दे दिया।

जब राजा रसालू महल से आम के पेड़ की ताजा शाख और उस बच्ची को ले कर गया तो रास्ते में उसको कुछ कैदी मिले। उन्होंने उससे कहा —

ओ राजा क्या तुम एक शाही बाज़ हो मेहरबानी कर के हमारी विनती सुनो
हमारी ये जंजीरें खोल दो और हमेशा सुखी रहो

राजा रसालू ने उनकी बात सुनी और राजा सरकप से कह कर उनको आजाद करा दिया। उसके बाद वह वहाँ से मूर्ति पहाड़ी[107] पर गया कोकिलाँ[108] को वहाँ एक तहखाने में रखा और वह आम की शाख उसके दरवाजे पर गाड़ दी और कहा — "बारह साल बाद जब कोकिला बड़ी हो जायेगी तब मैं यहाँ आ कर उससे शादी कर लूँगा।" बारह साल के बाद आम के पेड़ पर फूल आने लगे।

बारह साल राजा रसालू वहाँ आया और उसने कोकिलाँ से शादी कर ली जिसको उसने सरकप से उसके साथ चौपड़ खेल कर जीता था।

[107] Near Rawal Pindi to the south-east

[108] Kokilan means "a Darling". She was unfaithful and most dreadfully punished by being made to eat her lover's heart.

Books in History Series

1. **Lone Country of Thirteen Months. 12 articles. 168 p.**
   तेरह महीनों का अकेला देश

2. **Our Great People. 22 people. 164 p.**
   हमारे महान लोग

3. **Beginnings of the Books. 12 books. 148 p.**
   पुस्तकों के आरम्भ की कहानियाँ

4. **Our Great Scientists. 12 scientists. 64 p**
   हमारे महान वैज्ञानिक

5. **One Event Changed the Life. 9 people. 64 p.**
   जिनके एक घटना ने जीवन बदले

6. **Lobo's Ethiopia of 1625.**
   1625 का लोबो का इथियोपिया

7. **Birth of Proverbs. 23 proverbs. 134 p**
   कहावतों का जन्म

8. **Stories of Birbal. 25 stories. 80 p.**
   बीरबल की कहानियाँ

9. **Raja Rasalu. 21 stories. 368 p.**
   राजा रसालू

शीवा की रानी मकेडा, देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
राजा सोलोमन, देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ

Updated in 2022

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022